Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

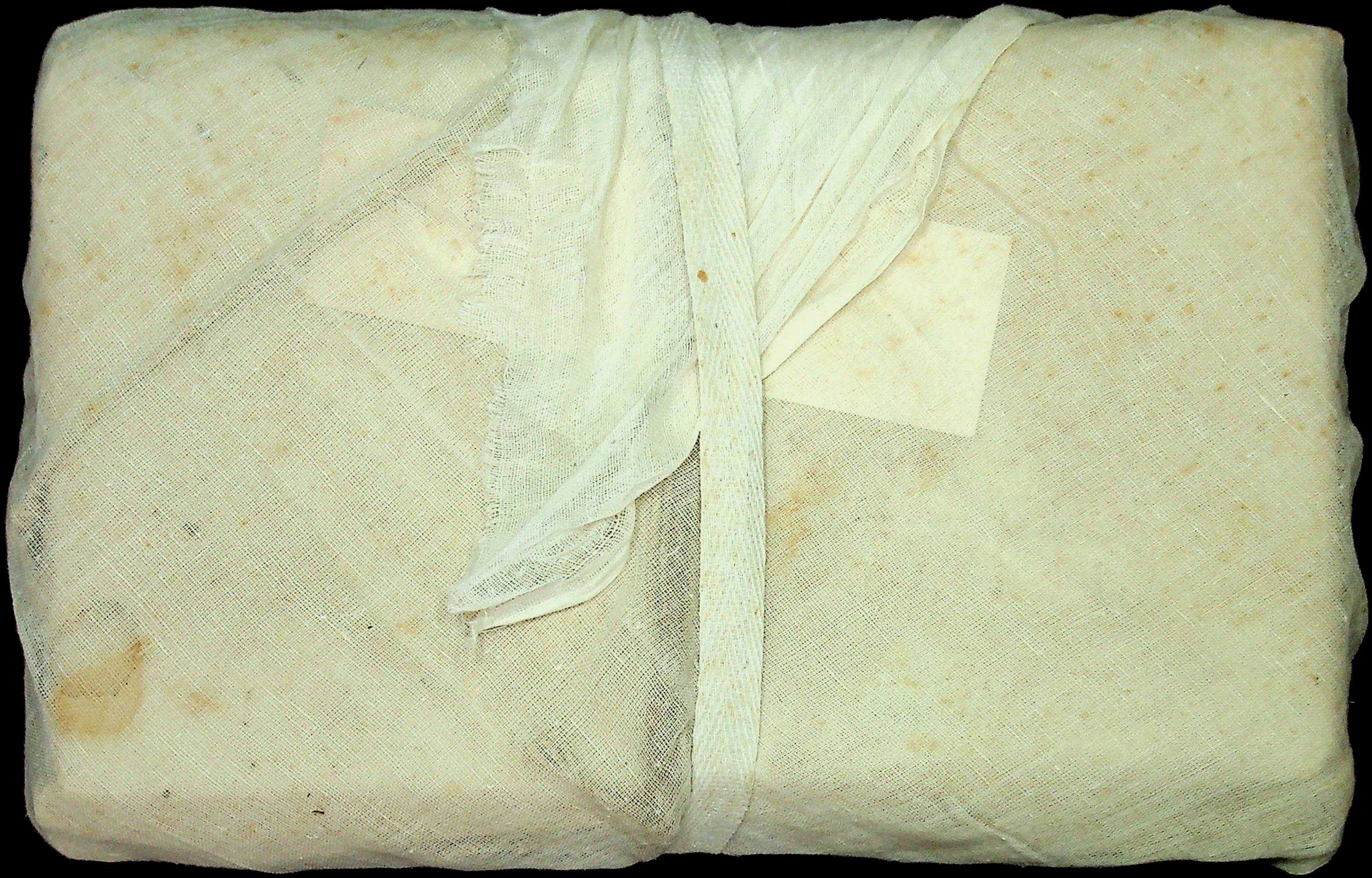

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

From—
Punamchand Mohanlal Shah
PATAN (N.G.)

वन्दे वीरम

कविता-कुञ्ज

:— रचयिता :—

जैनागम [illegible] पूज्य श्री खूबचन्दजी महाराज

:— संग्रहकर्त्ता :—

प्रवर्तक [illegible] श्री हीरालालजी महाराज

प्रथमावृत्ति १०००

मूल्य [illegible]क-पठन

वि० सं० २००३
का० सु० पूर्णिमा

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

From—
Punamchand Mohanlal Shah
PATAN (N.G.)

॥ वन्दे वीरम् ॥

कविता-कुञ्ज

—: रचयिता :—

जैनागम तत्ववारिधी पूज्य श्री खूबचन्दजी महाराज

—: संग्रहकर्त्ता :—

प्रवर्तक पं० मु० श्री हीरालालजी महाराज

प्रथमावृत्ति १०००

मूल्य
विवेकयुक्त-पठन

वि० सं० २००३
का० शु० पूर्णिमा

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

आवश्यक सूचना

एवं प्रकाशन में विलंब

प्रेस कर्मचारियों की गल्ती से पुस्तक में कई स्थलों पर त्रुटियां रहगई हैं उन्हें सुधार कर पढ़ेंगे एवं क्षमा करेंगे। अगले संस्करण में वे अवश्य ही दूर करदी जायेंगी।

युद्ध के कारण प्रैस वाली सभी वस्तुओं के समय पर न मिलने के कारण इस पुस्तक के मुद्रण में आशा से अधिक विलम्ब हो गया है। किन्तु हर्ष की यह बात हुई कि मदनगंज में श्री पूज्य श्री प्रताप मलजी महाराज के पधारने से इसके प्रकाशन, मुद्रण में पूरी २ सहायता मिली है। आपने धर्म ध्यान की पूरी प्रभावना करते हुए भी इस सम्बन्ध में बहुत अधिक परिश्रम किया है। और बडो उदारता एवं प्रेम पूर्वक सभी प्रेस कर्मचारियों के साथ व्यवहार किया है। मैं निस्संकोच स्वीकार करता हूँ कि आप ही के सुमधुर व्यवहार और कठिन परिश्रम के कारण यह पुस्तक इस चतुर मास में प्रकाशित हो सकी है प्रेसने तो बहुत अधिक विलम्ब कर ही दिया है दैवयोग से पूज्य श्री का यहां पधारना हुआ है इसे सभी प्रेस कर्मचारी चिर काल तक स्मरण रखेंगे।

मुद्रक

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

पाठकों से नम्र निवेदन

प्रातः स्मरणीय श्री मज्जैनाचार्य पूज्य श्री धर्मचंद जी मा० सा० के पाटानुपाट स्वर्गीय बाल ब्रह्मचारी अखण्ड यशधारी पूज्य श्री० मुन्नालाल जी महाराज के पट्टाधिकारी शास्त्रज्ञ धैर्यवान पूज्य श्री खूबचंद्र जी मा० सा० द्वारा विरचित "कवित कुंज" मुनि श्री हीरालाल जी म० सा० से प्राप्तकर दानी भाइयों (जिनकी शुभ नामावलि इसी पुस्तक में दूसरी जगह अंकित है) की शुभ सहायता से प्रकाशित की जा रही है अतएव इस वैराग्यमय 'कवितकुंज' को भविक वृन्द रुचिपूर्वक पढ़कर आत्म कल्याण की ओर अग्रसर बनेंगे ऐसी हमें आशा है और तभी हमारा प्रयास भी सफल होगा।

निवेदक—

सेठ देवराज भंवरलाल सुराणा

ब्यावर (रा० पू०)

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

९. ५०) श्रीमान् सेठ खेमचन्द जी जड़ावचन्द जी सुरडिया मन्दसौर।

१०. ५०) ,, ,, निहालचन्द जी बापूलाल मारू मन्दसौर वालों की तरफ से बापूलाल जी मारू के पुत्र होने की खुशी में।

११. ५०) महेता वीरचन्द भाई जवरचन्द भाई मारफत विमलाबाई पिताम्बर दास की यादगार में पालनपुर गुजरात

१२. ५०) समरथबाई ककलबाई कोठारी कालीदास भाई मायचन्द भाई खरीवाव बारपुडा पालनपुर गुजरात।

१३. २५) जयन्तीलाल लालभाई मोदीवास पालनपुर गुजरात।

१४. २१) स्थानक वासी जैन श्री संघ अम्बाला (पंजाब)।

१५. २०) श्री सेठ मगनीरामजी लछीराम जी लोढा के सुपुत्र राजमल जी मोहनलालजी लोढा कूकड़ा वाला के विवाह के उपलक्ष में।

१६. २०) देवराज कालूराम ब्यावर (राजपूताना)।

निवेदक—

सेठ देवराज भंवरलाल सुराणा

ब्यावर (राजपूताना)

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ग्रन्थ के प्रकाशन में

द्रव्य सहायकों की

सुनहरी नामावली

१. १६२॥≡)॥। श्री. महावीर जैन सभा जम्मू तवी (पंजाब)

२. १२५) श्री. सेठ रतनलाल जी सा. मित्तल फर्म लाला भीखामल जी छोटेलाल जी जैन टि. लोहा मंडी, आगरा।

३. १२५) श्रीमान् सेठ रेखराज जी नेमीचंद जी लूंकड बेलनगंज आगरा।

४. १०१) ,, मणि बाई ने खुद की दीक्षा पर पालनपुर से भेजे।

५. १००) ,, सेठ सेजराम जी बच्छराज जी अन्याव मु. बालोतरा (मारवाड़)।

६. ५१) ,, ,, माणाजी धन्नालालजी पोरवाड़ मन्दसौर।

७. ५०) ,, ,, चम्पालाल जी छगनलाल जी कुदाल खलची पुरा मन्दसौर।

८. ५०) ,, ,, सुगनचन्द जी मदनचन्द जी हिंगड़ अजमेर।

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

कविता कुञ्ज में आये हुये ।

विषय

१—दोहे	पृष्ठ	१
२—पहेलियाँ	"	५
३—कवित्त	"	६
४—गजलें	"	१०
५— स्तवन	"	२०
६—लावनियें	"	७१
७—चरित्र	"	८८

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

आवश्यक सूचना

एवं प्रकाशन में विलंब

प्रेस कर्मचारियों की गल्ती से पुस्तक में कई स्थलों पर त्रुटियां रहगई हैं उन्हें सुधार कर पढ़ेंगे एवं क्षमा करेंगे। अगले संस्करण में वे अवश्य ही दूर करदी जायेंगी।

युद्ध के कारण प्रेस वाली सभी वस्तुओं के समय पर न मिलने के कारण इस पुस्तक के मुद्रण में आशा से अधिक विलम्ब हो गया है। किन्तु हर्ष की यह बात हुई कि मदनगंज में श्री पूज्य श्री प्रताप मलजी महाराज के पधारने से इसके प्रकाशन, मुद्रण में पूरी २ सहायता मिली है। आपने धर्म ध्यान की पूरी प्रभावना करते हुए भी इस सम्बन्ध में बहुत अधिक परिश्रम किया है। और बड़ी उदारता एवं प्रेम पूर्वक सभी प्रेस कर्मचारियों के साथ व्यवहार किया है। मैं निस्संकोच स्वीकार करता हूँ कि आप ही के सुमधुर व्यवहार और कठिन परिश्रम के कारण यह पुस्तक इस चतुर मास में प्रकाशित हो सकी है प्रेसने तो बहुत अधिक विलम्ब कर ही दिया है दैवयोग से पूज्य श्री का यहां पधारना हुआ है उसे सभी प्रेस कर्मचारी चिर काल तक स्मरण रखेंगे।

मुद्रक

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

पाठकों से नम्र निवेदन

प्रातः स्मरणीय श्री मज्जैनाचार्य पूज्य श्री धुवर्मीचंद जी मा० सा० के पाटानुपाट स्वर्गीय बाल ब्रह्मचारी अखण्ड यशधारी पूज्य श्री० मुन्नालाल जी महाराज के पट्टाधिकारी शास्त्रज्ञ धैर्यवान पूज्य श्री खूबचन्द्र जी मा० सा० द्वारा विरचित "कवित कुंज" मुनि श्री हीरालाल जी म० सा० से प्राप्तकर दानी भाइयों (जिनकी शुभ नामावलि इसी पुस्तक में दूसरी जगह अंकित है) की शुभ सहायता से प्रकाशित की जा रही है अतएव इ। वैराग्यमय 'कवितांकुंज' को भविक वृन्द रुचिपूर्वक पढ़कर आत्म कल्याण की ओर अग्रसर बनेंगे ऐसी हमें आशा है और तभी हमारा प्रयास भी सफल होगा।

निवेदक—

सेठ देवराज भंवरलाल सुराणा

ब्यावर (रा० पू०)

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

९.	५०)	श्रीमान् सेठ खेमचन्द जी जड़ावचन्द जी मुरडिया मन्दसौर।
१०.	५०)	,, ,, निहालचन्द जी बापूलाल मारू मन्दसौर वालों की तरफ से बापूलाल जी मारू के पुत्र होने की खुशी में।
११.	५०)	महेता वीरचन्द भाई जवरचन्द भाई मारफत विमलाबाई पिताम्बर दास की यादगार में पालनपुर गुजरात
१२.	५०)	समरथबाई कंकलबाई कोठारी कालीदास भाई मायचन्द भाई खरीचाव वारपुडा पालनपुर गुजरात।
१३.	२५)	जयन्तीलाल लालभाई मोदीवास पालनपुर गुजरात।
१४.	२१)	स्थानक वासी जैन श्री संघ अम्बाला (पंजाब)।
१५.	२०)	श्री सेठ मगनीरामजी लछीराम जी लोढा के सुपुत्र राजमल जी मोहनलालजी लोढा कुकड़ा वाला के विवाह के उपलक्ष में।
१६.	२०)	देवराज कालूराम ब्यावर (राजपूताना)।

निवेदक—

सेठ देवराज भंवरलाल सुगणा

ब्यावर (राजपूताना)

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

ग्रन्थ के प्रकाशन में

द्रव्य सहायकों की

सुनहरी नामावली

१. १६२॥≡)॥। श्री. महावीर जैन सभा जम्मू तवी (पंजाब)

२. १२५) श्री. सेठ रतनलाल जी सा. मित्तल फर्म लाला भीखामल जी छोटेलाल जी जैन ठि. लोहा मंडी, आगरा।

३. १२५) श्रीमान् सेठ रेखराज जी नेमीचंद जी लूंकड बेलनगंज आगरा।

४. १०१) ,, मणि बाई ने खुद की दीक्षा पर पालनपुर से भेजे।

५. १००) ,, सेठ सेजराम जी बच्छराज जी अन्याव मु. बालोतरा (मारवाड़)।

६. ५१) ,, ,, माणाजी धन्नालालजी पोरवाड़ मन्दसौर।

७. ५०) ,, ,, चम्पालाल जी छगनलाल जी कुदाल खलची पुरा मन्दसौर।

८. ५०) ,, ,, सुगनचन्द जी मदनचन्द जी हिंगड़ अजमेर।

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

कविता कुञ्ज में आये हुये ।

विषय

१—दोहे	....	....	....	पृष्ठ	१
२—पहेलियाँ	....	....	....	,,	५
३—कवित्त	....	....	....	,,	६
४—गजलें	....	....	....	,,	१०
५—स्तवन	....	....	....	,,	२०
६—लावनियें	....	....	....	,,	७१
७—चरित्र	....	....	....	,,	८८

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

❀ ॐ ❀

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

प्रातः स्मरणीय त्यागमूर्ति जैनागम तत्ववारिधि श्रीमज्जैनाचार्य स्वर्गीय पूज्य श्री खूबचन्द्रजी महाराज विरचित एवं पंडित मुनि श्री हीरालालजी महाराज द्वारा संग्रहित

जैन कविता कुंज

※ दोहा ※

अरिहन्त सिद्ध आचार्यजी, उपाध्याय अणगार। खूब कहे सुमरो सदा, हो जावो भवपार ॥१॥ खूब गुरु उपदेश से, हो अज्ञान का नाश। रहे अंधेरा जिम नहीं, सविता (सूरज) के प्रकाश ॥२॥ सत्य शील निर्लोभता, दया क्षमा भरपूर। खूब कहे उस सन्त की सेवा करो जरूर ॥३॥ गुरु वैद्य माता पिता, और भूप के पास। खूब कहे पूछें तभी, दीजे साफ प्रकाश ॥४॥ शूर पुरुष देखे नहीं, सकुनादि तिथी वार। खूब सदा ही निडरता, ताकू कहां विचार ॥५॥ सिर मुँडाय साधु होवे, काम दाम तज धाम। खूब कहे उस खत को, कहां दाम से काम ॥६॥ साधु सेठ और वैद्य के, अवश्य मुलामी होय। खूब कहे इन तीन की, शोभा करे सब कोय ॥७॥ दुनिया में दाता घणां, आशा हित दे दान। खूब मोक्ष के हेत दे वे विरला नर जान ॥८॥ खूब साज दियो वक्त पै, आखिर अपनो जान। नुगरो ते गुण भूल के, निकल्यो डांस समान ॥९॥ खूब दान चौड़े करे अपनी महिमा काज। टुकड़ा भी देवे नहीं, जो द्वार खड़ा मोहताज ॥१०॥ दुखी वियोगी बावरो, क्रोधी शठ इन्सान। खुब बोलतां पाँच को, रहे नहीं कुछभान ॥११॥ पक्ष नहीं पैसो नहीं, खाली जणावे जोर। खूब कहे वो मानवी, सींग पूँछ विन ढोर ॥१२॥ उद्यम कबहु न छोड़िए, यद्यपि कष्ट पड़ंत। खूब कहे उद्यम कियां, कीड़ी शिखर चढ़ंत ॥१३॥ परउपकारी ना हुवो, बड़ो होय जग

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

मांय । खूब कहे किस काम का, जैसे तरु बिन छांय ॥१४॥ खूब कभी ना कीजिए, लापर वचन प्रमाण । जहाँ तीर मरियो कहे, वहाँ मिले न किंच निशान ॥१५॥ माता से लड़तो रहे, परणी को करे पक्ष । खूब कहे वाँ पुरुष की, कोई कहे न दक्ष ॥१६॥ आम वृक्षको छोड़ के, जाय एरंड के पास । खूब कहे वां पुरुष की, कैसे सफल हो आस ॥१७॥ खूब वस्तु जैसी हुवे, वैसी अच्छेकोय । मूँह से भी वैसी कहें, जे समदृष्टि होय ॥१८॥ यौवन माया जो समय, बहता पानी जाय । खूब कहे ये चारों ही, मुड़करआवे नाय ॥१९॥ भाई-भाई के देखिया, जहां तहाँ कु संप । खूब कहे कोइक जगह सायत होगा संप ॥२०॥ कवि वैद्य तपस्वी मुनी, भेदु भूप भटियार । खूब कहे इन सात से, नहीं करना तकरार ॥२१॥ वैद्य और राजा मुनी, मुखिया पंच कहाय । ये चारों जूना भला, खूब कहें समझाय ॥२२॥ मूर्ख वैद्य लोभी गुरु, न्यायहीन सरकार । खूब कहे इन तीन से, कभी न होय सुधार ॥२३॥ मूँजी धन कण कीड़ियां, संचय कर मर जाय । खूब कहे दोनो कभी, नहीं खरचे नहीं खाय ॥२४॥ पापी जन की जगत में, खूब कहे पहिचान । दया दान भक्ति नहीं, अगे अति अभिमान ॥२५॥ खूब कहे पुन्यवान की, जग में यह पहिचान । दया दान भक्ति बने, अगे नहीं अभिमान ॥२६॥ मेघ मुनी नृप देवता, दाता होय दयाल । खूब मुदित पांचों हुवे, छिन में करे निहाल ॥२७॥ पाप थकी पीछे रहे, धर्म मांह अगवान । खूब कहे वह मानवी, सुगती का महमान ॥२८॥ धर्म थकी पीछो रहे, पाप माँहि अगवान । खूब कहे वह मानवी, दुर्गती का महमान ॥२९॥ लज्जा को गिरवे धरी, लोपी कुल की कार । खूब कहे मोटा थई, डोले सब बाजार ॥३०॥ सुनी बात माने सही, निर्णय काढ़े नांय । खूब कहे या जगत में, लोग भेड़परवाय ॥३१॥ हाकिम रिश्वत खात है, साधु सत्य के बाहर । खूब कहे कानून से, दोनों ही गुन्हेगार ॥३२॥ ओछा नर के साथ में, लटपट होना नाय । ढबसे काम निकालनो, खूब कहे समझाय ॥३३॥ सुसरा की लज्जा करे, पितु न देवे मान । कलियुग आता देखिया ऐसे निवड़े बाल ॥३४॥ बालक बेंडो बान्दरो, राजा श्वान भुजंग । खूब कहे इन छहों को, अति भलो नहीं संग ॥३५॥ खूब कैंची दो दो करे, ते धरनी टकराय । सुई करावे एकयता, चढ़े शीश पर जाय ॥३६॥ खूब पाय सुख सम्पदा, तज दीजे अभिमान । सदा वक नहीं एकसी, मान मान नर मान ॥३७॥ हो तो गुणी के गुण करो, अवगुण तज दो यार । खूब नहीं तो चुप रहो, यही समझ का सार ॥३८॥ ऊंग्यो टूँग्यो गिर पड्यो चोर जुँआरी पांच । खूब पूछतां तुरत ही, कभी न बोले साँच ॥३९॥ खूब कहे साधु सती, बिन टाइम बिन काम । फिरे डोलता

घर घरे, क्यों न होय बदनाम ॥४०॥ एक इन्द्रिय के वश पड़े, प्राण तजे तत्काल । खूब पाँच के वश पड़े, उनका कौन हवाल ॥४१॥ खूब कहें जो मानवी, कार किया अति नीच । लोग बतावे आँगुली, धिग् जीव्यो जग बीच ॥४२॥ खूब ऊँच के संग से, बधे तेज प्रताप । नीचे की संगत कियां, उल्टी जावे आब ॥४३॥ खूब देख पर संपदा, दुष्ट भाव मत लाय । जो जैसी करणी करे वैसा ही फल पाय ॥४४॥ स्वारथ को संसार है, बिन स्वारथ नहीं कोय । ज्यों पंडित की पत्रिका, वर्ष लग आदर होय ॥४५॥ तन बुद्धि मुँह प्रकृति अरु भाषा भोग्य विचार । खूब कहें सब मनुष्य में, मिले नहीं इकसार ॥४६॥ अधो वाय खांसी हंसी, छींक उभासी डकार । खूब कहे सब मनुष्य में, मिलती है इकसार ॥४७॥ खूब मीन सज्जन मुनि, ना किसको कुछ केत । तांको बिन अपराध ही, दुर्जन जन दुःख देत ॥४८॥ खूब योग्य नर जाण के, शरण लहे कोई आय । आप निभावे जन्मभर, पिछले को कह जाय ॥४९॥ नारी नारी एक है, सकल जगत भरपूर । भगनी भार्य्या सोच कर चतुर पुरुष रहे दूर ॥५०॥ खब पात्र अन्न वस्त्र के, पग ठोकर दे देय । मैं तो बड़ों के मुँह सुनी, अशुभ जानते येय ॥५१॥ मिष्ट बोल करजो लहे हर्षित खूब अपार । जब वो आवे माँगवा, लडवा होय तैयार ॥५२॥ बिना काम बिन पुँछिया, रे मानव मत बोल । खूब मौन कर रीजिये, तजिए हँसी किलोल ॥५३॥ खूब देख कुल जाति का, कर लेते उनमान । अब तो हुवे बहुरूपीया, होती नहीं पहिचान ॥५४॥ भाषण देवे जोशीला मिस्टर बाबू साहब । खब लोग माने नहीं, उनके ढंग खराब ॥५५॥ खूब पेट में कपट है, दीखत के नर नेक । नारंगी फल मारिखा, भीतर फाँक अनेक ॥५६॥ खूब तुरत समझे सभी, ते खरबुज समान । दीखत फांक अनेक है, भीतर एक ही जान ॥५७॥ खूब मान जग में बुरो, मान वहां अपमान । न्याय दशारण भूप को लीजो समझ सुजान ॥५८॥ मास्टर दुर्व्यशनी हुवे उनकी संगती मांय । बिगड़े क्यों न विद्यार्थी खूब कहे समझाय ॥५९॥ दो विभाग एक खेत के, बोयो बीज दोई वीर । खूब साख का निपजना, है अपनी तकदीर ॥६०॥ खूब बात देखी सुनी, कहन योग नहिं होय । राखो पूर्ण गम्भीरता, प्रकट करो मत कोय ॥६१॥ चूक देख शिक्षा करे, कठिन शब्द में कोय । खूब कहे हित मानिये आगे पर गुण होय ॥६२॥ सेवा तपस्या सरलता, शुभ्र पठन वैराग । इन बातों पे अब कहां खूब पूर्ण अनुराग ॥६३॥ खूब बड़ों के प्रेम से, करे सेव नर कोय । गुणी बने ज्ञानी बने, सर्व कार्य सिद्ध होय ॥६४॥ मेवाड़ का पानी घणा, अधिक मान को घेंग । जोखम मोखम जीमणो, बड़ो हुकम ने सींग ॥६५॥ चित्त हरणी घरणी मिली, भृत्यक चतुरंग सेन ।

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

राज वैभव सुत मित्र है, जब लग खुले दो नैंना ॥६६॥ आँधा लुला लंगड़ा परणे, धोला चमके केसां में। खूब कहे बहिरा भी परणे, करामात है पैसा में ॥६७॥

पहेलियां-प्रश्न-एक ऋषि डंडे पर डटा, खूब शीश पर लम्बी जटा। निलाम्बरी माला नहीं फेरे, वृद्ध होय जब धोला पहरे। उ० 'भुट्टा'
प्र०-लंब पयोधर पतली काय, उगो कमल नाभि के मांय। खून मांस तन उपर नाय, खूब नशा चौड़े दरशाय ॥२॥ उत्तर-तराजू(तकड़ी)
प्र०—पय पायां पीवे घणो, जरे नहीं उर मांय। नर फुटे भुती रहें, खूब बिछात बिछाय ॥ ३ ॥ उत्तर--मशक।
प्रश्न—पांव बिना डूँगर चढ़े, विना मुखे खन खांय। खूब पसरे वायू लगे, जल पायां मर जाय ॥४॥ उत्तर—अग्नि (आग)।
प्रश्न--खूब नार पग पांच की, तीन नैत्र से नाले। एक पांव ऊंचो रक्खे, चार पांव से चाले ॥५॥ उत्तर--मोटर।
प्रश्न--पाप कर्म करते "रहो" जो सुख चाहो सेण। खूब कहे मानो सही, ये सतगुरु के वेण ॥६॥ उत्तर ठहरो।
प्रश्न- सुता मात सासु बहु, ननँद भोजाइ आय। खूब कहे छे पुड़ियां, कितनी २ खाय ॥७॥ उ०-दो दो (माता बहु बेटी ये तीन थी
प्रश्न-पिता पुत्र सालो बहनोई, मामो भाणेज और नहीं कोई। खूब कहे नव घेवर लाये, कितने २ सबने खाये। उ०-३-३(पिता,पुत्र साला तीनथे)
प्रश्न-रहे पयोधर लटकता, पतलो तास शरीर। खूब उठाया नर फिरे, के घर के जल तीर ॥६॥ उत्तर-कावड़।
प्रश्न-वन में देखी "कोकिला", थे, शिर पर दो पांय, खूब कहे मानो सही, इण में संशय नांय ॥१०॥ उत्तर-पदच्छेद करके पढो।
प्र०-नो से का गज लावजो, भूपति आला दीन। खूब कहे एक पाद के, अर्थ होत हैं तीन ॥११॥ उ०-कागज, काग जलावजो, गज लावजो
प्र०-जो मिलिया सो दोय में, एक में मिले न कोय। जो एक में जा मिले, दो में मिले न कोय ॥१२॥ उ०--जंगम, स्थावर, सिद्ध में,

कुछ तुक्कें-(एक) रास्ता को आम १, फायदा को काम २, जागीरी को नाम ३, घर बैठा दाम ४, मुफ्त में नाम ५, (दो) खल लड़े लातां से १, मूर्ख लड़े हाथां से २, पण्डित लड़े बातां से ३, श्वान लड़े दांतां से ४, (तीन) मिलणो वीरा को १ व्योपार हीरां को २, जीमणो सीरा को, बगार जीरा को ४, (चार) एको नायाँ को १, वैर भायां को २, गाणो बायां को ३, दूध गायां को ४, (पाँच) भोजन में राड़ १, रास्ता में खाड़ २, नदी में झाड़ ३ (छः) किवाड़ की कील १, जंगल में भील २, आकाश में चाल ३, राज में वकील ४, (सात) बैल बिना गाड़ी १, लाड़े बिना लाड़ी २ फूल बिना वाड़ी ३, जंगल बिना झाड़ी ४, रंग बिना साड़ी ५, भैंस

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

बिना पाड़ी ६, (आठ) सोना सेजों का १, बैठना मेजों का २, मरना हैजों का ३, (नो) कर्मों के लिहाज नहीं, नागा के लाज नहीं २, रंक के राज नहीं ३, समुद्र के पाज नहीं ४, (दस) कुबद कांणां की १, समझ स्याणां की २, करामात नाखां की ३, (इग्यारा) राड़ हाल्या की १ गोट बाल्याँ की २, लड़ाई लाल्याँ की ३, (बारह) गद्धा के ज्ञान नहीं १, दातरा के म्यान नहीं २, बेडों के छान नहीं ३, (तेरह) सभा सोहे राजा से १, व्याह सोहे बाजा से २, महल सोहे छाजा से ३, (चवदह) जल में कभी न लागे आग १, आग में कभी न लागे बाग २, गूँगो कभी न गावे राग ३, धोयां उज्वल होवे न काग, एता होय तो मोटा भाग (पन्द्रह) हाकमी गर्म की १, साहूकारी भर्म की २, बहु बेटी शर्म की ३, दुकानदारी नर्म की ४, (सोलह) गाड़ी को भय टूटण को १, काया को भय कुट्टण को २, माया को भय लूटण को ३, बूढ़ा को भय उठण, ४, साधु को भय झूँठण को ५, (सतरह) करजे लड़ाई तो बोलजे आड़ो १, करजे खेती तो राखजे गाडो २, राखजे भैंस तो बान्धजे बाड़ो ३, (अठारह) ताण में टेकी १, धर्म में नेकी २, जोबन में सेखी ३, (उन्नीस) पंच राणा १, पंच स्याणा २, ३ पंच कांणा ३, पंच धूल खाणा ४, पंच खेंचा ताणा ५, (बीस) देघाणां गांसाणां १, सेठाणं गंयाणं २, राजाणं दुकमाणं ३, गोलाणां गप्पाणां ४, (इक्कीस) करे सो भरे, फूटा सो झरे २, झूँठा सो डरे ३ पाका सो खरे ४, जन्मे सो मरे ५, (बाईस) कुत्ता बिना गांम कहा १, गुण विना नाम कहा २, पाणी बिना कूप कहा ३, न्याय बिना भूप कहा ४, (तेईस) घणाँ पटेला बिगड़े गांव १, घणां भोपां से उठे धाम २, चड्या कचेरी खुट्या दाम ३, पूत कपूतां उठयो नाम ४, (चौबीस) प्रश्न—सुसरा के घर नितको रेणो १, माँग परायो पहिरे गेणों २, छतां पईसो राखे देणो ३, उत्तर—इन तीनों को मूर्ख कहजो (सतावीस) दोहा—खुशी मनाई राख्यो बेटो, थोड़ा दिनाँ में माँड्यो खेटो। घर को फूट फजीतो कीदो, बेची नींद ओजको लीदो॥ (अठावीस) जोड़ी प्रीत पेट में आँट्या, भेरा खाय गोट में बाल्याँ निर्लज्ज होय लड़े ज्यों हाल्यां, दे धिक्कार पड़ोसी डाल्यां (उनतीस) घणी दवा से बिगड़े तन्न, पर धन देखी बिगड़े मन्न, बिना भाव तो खावे अन्न, ये तीनों ही मूरख जन्न॥ (तीस) बिना काम को परघर जाणो, बिना भूख को भोजन खाणो, बिना अवसर को गायन गाणो, बिना लाभ को खरच बढाणो, इन चारों को मूरख जाणो॥ (इगतीस) नीची नजर मयूर सी बोली, कर में रहे समरणी। बाहिर संत सरीखा दर्शे, भीतर बहे कतरणी। खूब मुनि कहे जो नर ऐसा, उनसे बचते रहो हमेसा॥ (बत्तीस) गली बीच की तीन लाख, बारह लाख बजार की। चुगल खोर के मुँह ऊपर, पन्द्रह लाख पेजार की॥१॥

५

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

कवित्त—अरिहन्त स्तुतिः—पहले पद अर्हन्त, चारु कर्म किया अन्त, लिया है मुगती पंथ, केवल के धारी है, चौंतीसे अतिशै पुन, मोटा है, द्वादश गुण, तीन लोक माँही, प्रभु कीरति पसारी है॥ अनंत बली है जांके, नहीं है गुणाँ को पार, शत्र विस्तार प्रभु घोर ब्रह्मचारी है। खूबचन्द्र कहे कर जोड़ के नमाऊं शीश, ऐसे अरिहंत ताको वन्दना हमारी है ॥१॥ सिद्धस्तुतिः - दूजे पद सिरी सिद्ध हुआ है पन्दरा भेद, मैंने भी उम्मीद तोरे दर्शनों की धारी है। आठों ही करम ठेल, पाया है मुगति महल, अनंत सुखों की टहल जान, जान रह्या सारी है॥ रंग रूप कर्म काया, मोहने ममता माया, दुःख ने दरिद्र रोग, सोग सेन्या टारी है। खूबचन्द कहे कर जोड़ के नमाऊं शीष, ऐसे सिद्धराज ताको, वन्दना हमारी है ॥ २ ॥ आचार्य स्तुति--आचारज तीजे पद, छाँड दिया आठ मद, करत करम रद, अष्टगुण धारी है। छत्तीस गुणा सोहन्त, शरीर स्वरूप कन्त, संघ में सोहन्त तेसो पर उपकारी है ॥ छः काया के प्रतिपाल, ऐसा है दयाल, जिन वचन रसाल, जामें चित्त रम्यो भारी है। खूबचन्द कहे कर जोड़ के नमाऊं शीष, ऐसे आचारज ताको वन्दना हमारी है॥ ३। उपाध्याय स्तुति--चौथे पद उवज्झाय, पच्चीस गुणां के वाय, नमूँ नित पाँय, जाने प्रगन्या पसारी है। चवदा पूरब अंग, इग्यारह उपांग बारह, भणे ते भणावे आप, ऐसा उपकारी है॥ रुचि है लगन, ज्ञान ध्यान में मगन, शिवपुर की लग, लग रही अति भारी है। खूबचन्द कहे, कर जोड़ के नमाऊं शीष, ऐसे उपाध्याय ताको, वन्दना हमारी है ।४॥ साधु स्तुति--सुनके जिनन्द वाणी, अन्तर वैराग्य आणी, संसार अनित्य जाणी, हुआ व्रतधारी है। गुण हैं अठारे नव, बोलत मधुर रव, सुधारे मनुष्य भव, सुमति विचारी है। दिपावे श्री जिन धर्म, तोड़े आठों कर्म, पद पावे है परम, सदा जांकी बलिहारी है। खूबचन्द कहे कर जोड़ के नमाऊं शीष, ऐसे मुनिराज ताको, वन्दना हमारी है ।५॥ परमेष्ठी गुण--अरिहन्त देवजी विराजमान बारे गुण, सिद्धजी विराजमान अष्ट गुणधारी है। आचारज दो अठारह गुणों से विराजमान, दश आठ सात से उपाध्याय शुद्धाचारी है। सत्तावीश गुणां करी साधुजी विराजमान, मोक्ष अभिलाषी जग जाल को निवारी है। खूबचन्द कहे कर जोड़ के नमाऊं, शीष, ऐसे पाँचों पद ताको वन्दना हमारी है ॥६॥ गुरु प्रशंसा--राजा जो प्रसन्न होय गामादि बख्शीश करे, सेठजी प्रसन्न होय नौकरी बढ़ाय दे। मा पितु प्रसन्न होय बतावे गुपत वित्त, पति जो प्रसन्न होय जेवर घड़ाय दे॥ देवता प्रसन्न होय पुत्र और धन देत, उस्ताद प्रसन्न होय इलम पढ़ाय दे। खूबचन्द कहे गुरुदेव जो प्रसन्न होय, जनम मरण भव दुःख से छुड़ाय दे॥७॥ गुरु की

६

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

अप्रसन्नता--राजा जो कुपित होय फाँसी शूली कैद करे, सेठजी कुपित होय घर से निकास दे। मा पितु कुपित होय धन्न से निराश करे, पति जो कुपित होय मार ताड़ त्रास दे। देवता कुपित होय पुत्र जोरु धन हरे, उस्ताद कुपित होय पद बदमाश दे। खूबचन्द कहे गुरुदेव जो कुपित होय, आग नाग बाघ जैसे छिन्न में विनाश दे। गुण विना नाम--नाम तो शीतलदास छेड्या सेती क्रोध करे नैनचन्द नाम पण जनम को अन्ध है। दयाचन्द नाम दिल दया की रहस्य नाँही, ज्ञानचन्द नाम नित करे खोटा धन्ध है॥ नाम तो अमरचन्द जीयो है अलपकाल, सदा सुख नाम पण दुःख को सम्बन्ध है। खूबचन्द कहे अणी दृष्टांत सुजान नर, गुण विना नाम जैसे श्वान पै सुगन्ध है॥ ६॥ नाम तो लक्ष्मी बाई छाणा बीणे बन माँही, रूपा बाई नाम, रूप काग से सवायो है। दया बाई नाम पण जूँआं लीखां मारे नित, स्याणी बाई नाम जनम राड़ में गंवायो है। नाम तो जड़ाव बाई पास न ताँबा को तार, राजी बाई नाम राखे होवड़ो चढायो है। खूबचन्द कहे ऐस; गुण बिना नाम, जैसे मोतियों को हार मानो भैंस ने पहिनायो है ॥१०॥ रुचि बिना--रुचि बिना ज्ञान ध्यान, रुचि बिना दान मान, रुचि बिना खान पान कैसे, बण आवेरे। रुचि बिना दया सत्य शील ने सन्तोष बलि, रुचि बिना बणज व्योपार नहीं थावेरे॥ रुचि बिना जप तप, रुचि बिना करे खप; रुचि बिना धर्म कथा कान न सुहावे रे। खूबचन्द कहे अणी दृष्टान्त सुजान नर, अन्तस की रुचि हु तो फेर काँई चावे रे ॥११॥ पाप को घड़ो--सेर की हाँडी में मुड़ दो सेर घालन लागो, ज्ञानी कहे देख भाई ऐतो न समायगो। दो दिन को प्यासो भूखो, नीठ कर मिली तोकूँ, भूख तो घणी छे ऐतो खीचड़ी न खायगो॥ मूरख न मानी सांच, लगाई अगनी आँच, ढकण ढक्यो छै पण, पीछे पछतायगो। खूबचन्द कहे, अणी दृष्टान्त सुजान नर, पाप को घड़ो तो कोई दिन फूट जायगो॥ १२॥ लालची कुत्ता—श्वान एक अति भूखो, जाको वालीलूखो सूको, नीठ कर मिल्यो टूको, मुढ़नहीं खावेरे मुँह में लेईने हाल्यो, नदी के किनारे चाल्यो,आपको आकार जल मांही दरशावेरे। दूसरो रोटी को टूको जाणी ने लेवण ढूको, मूल ही को खोयो, पीछो नज़र न आवेरे। खूबचन्द कहे अणी दृष्टान्त सुजान नर, लालच करे सो निज गाँठ को गमावेरे ॥१३॥ बिल्लियों का न्याय--दो बिल्ली एक रोटी, मिली तब सलाह घोटी, बन्दर के पास जाय हिसाब करावे रे। छोटा मोटा टूक करी, तराजू के मांही धरी, नमे जिसे कपि रोटी, ज्यादा तोड़ी खावेरे। सूँपो थें तो रोटी म्हारी, न्याय न कराँवाँ में तो, कपि सब खागयो तब, बिल्ल्याँ पछतावेरे। खूबचन्द कहे, अणी दृष्टान्त सुजान नर, कपटी के पास जाय न्याय

क्यों करावे रे ॥१४॥ बन्दर की मूर्खता—तरखान नदी के तीर, लक्कड़ रह्यो तो चीर, अधूरो छोड़ि ने फाँदो, घाली घर आयो है। इतने तुरत तिहां बन्दर आईने बैठो दोनों चीर बीच निज, पूंछ ने फंसायो है॥ चंचल स्वभावी फाँदो, पकड़ हिलायो तब, निकल गयो छे, मांही पूँछ पकड़ायो है। खुबचन्द कहे अणी, दृष्टान्त सुजान नर, पर को बिगाड्यो काज तेही दुख पायो है ॥१४॥ भेड का न्याय—मीठी दाख तणी बेल, ऊंची गई जमीं को ठेल, तरु पै रही थी फैल, तिहां बन माँही रे। भेड़ाँ चरे चार कोडी, तिण में से एक मोडी, हौंस कर दोडी, पण मुँह पूगो नांही रे। मोडी पीछी फिरी तद, दूजी भेड्याँ पूछो जद. मुंह को बिगाड़ बेल, कड़वी बताई रे। खूबचन्द कहे ऽतो स्वारथ न पूगे जब अवगुण बतावे मूढ़ गुणी जन मांई रे॥ १६ ॥ बिया और बन्दर का न्याय—बियो कहे बन्दर भणी, मौसम बरसात तणी, उद्यम करेनी मूढ़, बैठो रेवे कांई रे। मानुष री देह थांरे, दुःख में क्यों दिन गारे, रेवण के काज घर लेवेनी बणाई रे। हितकारी देनां सीख, क्रोध में हुओ अधिक, बन्दर बिया को घर। तोड नाख्यो आई रे! खूबचन्द कहे अणी दृष्टान्त सुजान नर ऐसे मुढ़ जन ताको सीख दीजे नांई रे ॥ १७ ॥ काग हंस का न्याय—काग हंस अष्ट पेहर, दोनों जणा रहे लेर, कागलो कुबुद्धि लायो, हंस ने उडाय रे। नृप घबराय, वन्न मांही सूतो तरु छाँह, तेहनी डाल ऊपर, बैठा दोनों आय रे। काग हड्डी लायो ऊठ, मुँह थकी गई छूट, भूपति पै गिरी काग, भागी दूर जाय रे। खुबचन्द कहे एती, नीच की संगति सेती, नृप मार्‌यो बाण दियो हंस ने पोढाय रे ॥१८॥ काग सुवा का न्याय--काग सुवा दोनों मित बागां मांही रहे नित, फल फूल खावे तिहाँ, माने अति सुख रे। काग कहे सुन सुवा, अठे घणां दिन हुवा, चालो म्हारे वन बिलां, खायाँ भागे भूख रे। तेरां आयो सुवो; बिला देखी ने चकित हुओ, खाता भागी चोंच, तब करे अति कूक रे। खुबचन्द कहे अणि दृष्टान्त सुजाण नर मूढ की संगत मत, कीजे मूल चूक रे॥ १९ ॥ रंक का न्याय--रंक एक बन मांडी, सुतो तब नींद आई, सुपना में हुओ जैसे पृथ्वी को नाथ रे,। छत्तर धरावे शीश, उमराव मोला बत्तीस खमा २ कर केई जोडी दोनों हाथ रे। याचकां ने देवे दान, घुरे है निशान चली, रत्न सिंहासन बैठो हुकम चलात रे। खुबचन्द कहे अणी दृष्टान्त सुजाण नर, सुपना सी सम्पत्ति में क्यों राचे दिन रात रे ॥२०॥ बजाज का न्याय---लाभोजी बजाज, परदेश में कमावा काज, चाल्यो कर मिजाज त्रिया कहे झट आवजो। कमाई हुवा से म्हारे, बींदी बीछिया बाजू झेला, हार माला नथ चूँप घडाई ने लावजो, ओढन के कांज एक लावजो रेशमी चीर। नव ही रकम आप भूल मत जावजो। खूबचन्द

८

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

कहे नागी, धूतारी यों बोली नाँही, आगरा को पेचो एक थांके लेता आवजो ॥२१॥ सप्त व्यसन का न्याय--प्रथम व्यसन सतगुरु की करीजे सेव, दूजो यो व्यसन जीव दया नित कीजिये । तीजो यो व्यसन सत्य वचन धारण कर, चोथो यो व्यसन तूं शील में दृढ़ रीजिये । पांचमो व्यसन नित्य नियम धारण कर, छट्टो यो व्यसन तूं सुपात्र दान दीजिये । सातमो व्यसन मन सन्तोष धारण कर, खूब मुनी कहे इन शिव पुरी लीजिए ॥२२॥ कुछ काम नहीं आवे --सोनारा के पावणो आवे तो घड़े सोनो चाँदी, कुँभार के आवे ताँसु हाँडला घड़ावेरे । दरजी के आवे, तासुं वस्त्र सिवावे, और छींपा के आवे, तासुं चुँदड़ी बंधावेरे । खाती के आवे, तासुं लकड़ घड़ावे और, किसान के आवे, तासुं हल ने हंकावेरे । खूबचन्द कहे तंत, सुनो हो विवेक वंत, बाण्यां का पावणा कुछ काम नहीं आवेरे ॥२३॥ पिता पुत्र का न्याय- पिता ले पुत्र के तांई, व्याहन आयो चलाई, सगो रूस गयो तब, रुपैया गिणावेरे । एते बींद, आई नींद पिता कहे शीघ्र आई, उठ बेटा फेरा लेले, सगो परणावेरे । जान्या है बहुत लेरां, जाने तूं देई देफेरा, मीठी मीठी नींद आवे, मोने क्यों जगावेरे । खूब चन्द कहे अणी दृष्टान्त सु जाण नर, धर्म में प्रमाद कियां पार किम पावेरे ॥२४॥ झूठ का न्याय— धन वत नर जाँके झूंठ को नहीं है डर, हांसी में कहत, धावो धावो चोर आया है । तुरत सुणी ने कई सुभट दौड़ी ने आवे, ताको कहे मैं तो यूंही वचन सुनाया है । ऐसे ही करत ताके एक दिन चोर आया, दौड़ो दौड़ो कहे पण कोई न सिधाया है । खूबचंद कहे सत प्रतीत उठावो मत, प्रतीत उठाई जाने प्राण ही गमाया है ॥२५॥ कौन काम की --राज महाराज पायो, घोड़ा गजराज पायो, खजाना अखूट फिरे आण निज नाम की । कुटुम्ब संयोग पायो, उत्तम सुभोग पायो, शरीर निरोग है, अत्यंन्त छवि चाम की । ऊंचा सा आवास पायो, दासी अने दास पायो, बुद्धि को प्रकाश निगरानी सब काम की । खूबचन्द कहे भाई सब ही संपति पाई, दया धर्म बिना जिन्दगानी कौन काम की ॥२६॥ गुजरी मेवाड़ की—नन्दजी के लाल, थारो नाम गऊपाल, तूं तो गऊवाँ चरावे, बैठो रहे छाया झाड़ की । दोड्यो २ आवे नेड़े म्हांके क्यों लग्यो है केड़े । गरीबा ने छेड़े थारी फूटी हिया नाड़ की, इच्छा है तो मान कान दूध ने दही को दान, दांगा, थने आवे जद मौसम असाढ़ की । खूबचन्द कहे कानो देखत ही रह गयो, जवाब देई ने गई गुजरी मेवाड़ की ॥२७॥ मारवाड़ी साधुओं का कहना--मेवाड़ मालवा मांही माँकण घणां छे भाई, बटका भरे छे पूरी नींद नहीं आवेरे । मच्छर मकोड़ा वटे, घणां पाड़े फोड़ा, और डाँस माँस सभी चटा चट चटकावेरे । उत्तराध्यन शूत्र का दूसरा अध्येन

६

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

मांही पांचमो परीसो सहतां दोहिलो बतावेरे। खूबचन्द कहे इम बोले मारवाड़ी साधु, मेवाड़ मालवा मांही किण विध आवेरे ॥२८॥ बिना चतुराई वाली औरत—माथो ऊपर टाट टाट जुंआँ को छटके। गूंगा भरिया नाक, आंख में कीचड़ लटके। सेडो निकले बाहर लार मुंडा से टपके। खूब सूगली नार देख मारुजी मटके ॥२९॥ चोमासो करावनो—चारों ही मास बखाण करे, समभाव से शूत्र सुहावणो है। चौपी रसीली हो कंठ कला, मालु राग मल्हार को गावणो है। कोड़ी को खर्च भी नांय पड़े, बस धर्म की ज्योत दीपावणो है। खूब कहे ऐसे संत मिले तब, क्योंनी चोमासो करावणो है ॥३०॥ सुधारे—ज्यों दरजी पट सार अमोलक, वेंत करी, कटका कर डारे, ज्यों तर खान करोती बिसोले से काष्ट को फाड़ के छोड़ उतारे। ज्यों कुम्भकार मिटी वर भंजन लेकर थापक थापक मारे। या विध खूब कहे गुरु देव भी, सच्ची सुनाय के जन्म सुधारे ॥३१॥ खुशी है—गाज आवाज मयूर सुनी खुश, चन्द्र को देख चकोर खुशी है। मात को देख के पुत्र खुशी, और ज्यूं चकवो रवि देख खुशी है। फूल सुगंधित देख अली खुश, चातक मेघ को देख खुशी है। या विध खूब कहे निशिवासर, धर्मी को देख के धर्मी खुशी है ॥३२॥

पंजाब की बोल चाल की भाषा—असी २ (हम) तुसी २ (तुम) साड़े २ (हमारे) सानु २ (मुझे) काली २ (जल्दी) कोल २ (नजदीक) कुड़ी २ (लड़की) काम में। जेड़ा २ (जौनसा) केड़ा २ (कौनसा) लोड़ २ (चाह) चंगा २ (अच्छा) तिमी २ (औरतें) रोला २ (जोर के शब्द) गल २ (बात) गाम में। चुक २ (उठालो) टुरो २ (चलो) काकी २ (छोटी लड़की) काको २ (छोटा लड़का) आखो २ (बोलो) मुँडो २ (बड़ा लड़का) नीको २ (छोटा लड़का) नाम में। खूबचन्द कहे स्याणा, झूँठी हो तो पूछ लेणा। सुणी २ कहूं ऐसी बोली है पंजाब में ॥३३॥ पहेलियां—एक बगीचे में पुत्र पिता अरु, तीजो सालो अने चौथो बहनोई। पाँचमो मामो ६ छट्टो भाणेज है याँके सिवा, वंस और न कोई। दो २ लड्डु लेके एक ही थाल में, जीम लिये वस शामिल होई। खूब कहे लड्डू थे कितने, जो जोड़ बतावे, सो पण्डित सोई ॥३४॥ उत्तर—६ लड्डू थे जीमने वाले पुत्र, पिता और साला ये तीन थे। मुनीराज—इण जिन शासन में केई मुनिराज हुवे, ज्ञान के भंडार जिन मारग दीपावरे। तिरन तारन जहाज सारे आत्मा का काज, ऐसे मुनिराज नित्य मिथ्यात्व ऊड़ावेरे। कोई में तप्स्या का गुण, कोई में विनै का गुण, व्यावच का गुण केई स्वर्ग सिधावेरे। खूबचन्द कहे मेरे गुरु नन्दलालजी के, चरण नम्याँ से भव २ सुख पावेरे ॥३५॥ नं० १—अरिहन्त सिद्ध वन्दना—तर्ज-पारश प्रभु से अर्ज हमारी

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

है दिन रात, मेरे तो वही देव है अरिहन्त सिद्धवर। करता हूँ उसे बन्दना में सिर झुकाय कर ॥टेक॥ हैं गुण अनन्त ज्ञानादि सब द्रव्य के ज्ञाता। सुरेन्द्र और नरेन्द्र भक्ति करते हैं आय कर। करता हूं० ॥१॥ विषय कषाय जीत कर कहलाते वीतराग। खड्-गादि शस्त्र ना रखें वे धैर्य लाय कर। करता हूँ०। २॥ महिमा अपार सार जिनकी त्रिहुं लोक में। फिर पाते हैं शिवधाम सब दुःख को मिटायकर। करता हूं० ॥३॥ सिद्धों के सुख की ओपमा न कोहि बता सके। नहीं आते मुड़के फिर अचल गति को पाय कर। करता हूं० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलाल जी मुझ पै करी मया। शुद्ध देव की पहिचान दी सागे बताय कर। करता हूं० ॥५॥ २ नं०—सुगुरु बन्दना तर्ज–पूर्वबत–जो साधु संयम के गुणों में दिल रमाते हैं। ऐसे गुरु के चरण में हम सर झुकाते हैं ॥टेक॥ जो हिंसा झूठ चौरी मैथुन परिग्रह। पाँचों ही आश्रम त्याग के त्यागी कहाते हैं। ऐसे० ॥१॥ मान या अपमान, लाभ या अलाभ हो। सुख दुःख निन्दा स्तुति में समभाव लाते हैं ऐसे० ॥२॥ गृहस्थ या कोई क्षेत्र से न ममत्व भाव है। नवकल्पविहारी कथा निर्वद्य सुनाते हैं। ऐसे० ॥३॥ प्रतापना और भूख प्यास शीत उष्ण का। सहते परिषह आप न चित को चलाते हैं। ऐसे० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलाल जी कहते सही सही। वोही मुनि भव सिन्धु से तिरते तिराते हैं। ऐसे० ।५॥ नं० ३ हितोपदेश गज़ल--पाई है तू अन-मोल ऐसी ज़िन्दगी ऐ नर। इस लोक की परवाह नहीं परलोक से तो डर ॥टेक॥ सन्तों का कहना मान के जुल्मों को छोड़ दे। नहीं तो जिया आगे तुझे पड़ जायगी खबर। इस० ॥१॥ दिन चार का महमान तू विचार तो सही। तैंने क्या किया शुभ काम यहाँ पृथ्वी पै आय कर। इस० ॥२॥ चौरासी लक्ष योन में टकराता तू फिरा। निकल गया 'अन्धियारा अब तो होगई फजर। इस०॥३॥ मान से वस जाति या परजाति धर्म में। तैंने डलाई फूट किसी नरक पै कमर। इस० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी देते हितोपदेश। मञ्जूर करले फिर तो है सुरलोक की सफर। इस० ॥५॥ चेतावनी—-[तर्ज़—लाखों पापी तिर गए सत्संग के परताप से] कहने वाला क्या करे तेरी तुझे मालूम नहीं। कुपन्थ में अब क्यों चले तेरी तुझे मालूम नहीं ॥टेक। आया था किस काम पै और काम क्या करने लगा। खास मतलब क्या हुआ तेरी तुझे मालूम नहीं, कहने० ॥१॥ पाया जो धन माल कुछ शुभ काम में निकला नहीं। कुकार्य में पैसा गया तेरी तुझे मालूम नहीं, कहने० ॥२॥ लोह की गठरी बांध के तैंने उठाई शीष पै। पार होना सिन्धु से तेरी तुझे मालूम नहीं, कहने० ॥३॥ ज़हर खाकर जीवना प्रतिबोध सुते सिंह को यों पाप का फल है बुरा तेरी तुझे मालूम नहीं, कहने० ॥४॥ मेरे

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। अब दाव आया मोक्ष का तेरी तुझे मालूम नहीं, कहने० ।५॥ नं. ५ कर्मफल—कर्म यहाँ जैसा करे वैसा वह ही फल पायगा। इस लोक या परलोक में वैसा ही वह फल पायेगा ॥टेक॥ शास्त्र का फरमान है, हठ छोड़ के कर खोजना। पूर्ण ज्ञानी कथ गए वह ही कथन मिल जायगा, इस लोक० ॥१॥ कोई सुखी दुःखी कोई रंक है कोई राजवी। कोई धनी कोई निर्धनी यह अवश्य ही मिल जायेगा, इस० ॥२॥ कोई चरिन्द कोई परिन्द कोई छोटे-मोटे जीव हैं। अपने २ कर्म से सुख दुख सभी भर जायगा, इस लोक० ॥३॥ कृष्णजी के भ्रात गजसुखमालजी हुए मुनी। बदला उन्होंने भी दिया कैसे तू छूट जायगा, इस० ॥४ शालिभद्रजी को मिली रिद्धि सुपात्र दान से। निज हाथ से कर दान तू भी ऐसा ही फल पायगा, इस० ॥५॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। सब कर्मों का संग छूटने से मोक्ष का फल पायगा, इस० ॥६॥ ६—संसार की अस्थिरता—कौन यहाँ अमर रहा तू समझ ले अच्छी तरह। उमर तेरी जा रही तू समझ ले अच्छी तरह ॥टेक॥ डाबाग्र जल बिन्दु जैसी उमर तेरी अल्प है। दो पचास बस हद है तू समझ ले अच्छी तरह, कौन० ॥१॥ कई सागरोपम लगे सुख भोगते सुर लोक में। वह भी स्थिति पूरी होवे तू समझ ले अच्छी तरह, कौन० ॥२॥ पवन या मन की गति ज्यों वेग नदी का बहे। स्थिर नहीं सूर्य्य शशी तू समझ ले अच्छी तरह, कौन० ॥३॥ राज पाया मुल्क का किसी रंक ने ज्यों स्वप्न में। वह ठाठ कितनी देर का तू समझ ले अच्छी तरह, कौन० ।४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। सफल कर इस वक्त को तू समझ ले अच्छी तरह, कौन० ॥५॥ नं. ७ शुभ काम क्या किया मानुष का भव पाय के शुभ काम तैंने क्या किया। अपने किया औरों के लिए शुभ काम तैंने क्या किया ॥टेक॥ नामवर जीमन किया दुनिया में वाह वाह हो रही। भूला फिरे गरूर में शुभ काम तैंने क्या किया, मानुष० ॥१॥ मित्र मिल गोटां करी वेश्या नचाई बाग़ में। माल खा गए मश्करे शुभ काम तैंने क्या किया, मानुष० ॥२॥ तन से या धन से बड़ा, नहीं जाति की रक्षा करी। प्रेम नहीं सत्संग से शुभ काम तैंने क्या किया, मानुष० ॥३॥ दिन गँवाया खाय के और निश गँवाई नींद में। यों वक्त तेरा सब गया शुभ काम तैंने क्या किया, मानुष० ॥४। मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। विद्वान् हो तो समझ ले शुभ काम तैंने क्या किया, मानुष० ।५॥ नं. ८ सत्संग महिमा—सत्संग से ज्ञानी बने तू चाहे जिससे पूछ ले। मोक्ष भी हासिल करे तू चाहे जिससे पूछ ले ॥टेक। कई पापी हो चुके वे तिर गए सत्संग से। शक हो तो मेरी है रज़ा तू चाहे जिससे पूछ ले ॥सत्संग॥ १॥ जैसे पत्थर नाव

१२

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

के संग नीर में तिरता रहे। परले किनारे वह लगे तू चाहे जिससे पूछले, सत्संग ॥२॥ यों हलाहल ज़हर को भी वैद्य की संगत मिले। अमृत बनादे औषधि तू चाहे जिससे पूछ ले, सत्सग ॥३॥ सोनी सुवर्ण को उठा कर जलती पावक में धरे। फूँक कर निर्मल करे तू चाहे जिससे पूछ ले, सत्संग ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का नित यही उपदेश है। सुधरे पशु भी संग से तू चाहे जिससे पूछ ले, सत्संग ॥५॥ नं० ९–धर्म का असली स्वरुप—सच मान सन्तों का कहा यह खास असली धर्म है। किन्ही पण्डितों से पूछ लें यह खास असली धर्म है ॥टेक॥ जीवों की रक्षा करे और झूँठ ना बोले कभी। चोरी का त्यागन करे यह खास असली धर्म है, सच० ॥१॥ ब्रह्मचर्य का पालना संग परिग्रह का परिहरे। रात्रि भोजन न करे यह खास असली धर्म है, सच० ।२॥ पाँचों इन्द्री को दमे क्रोधादि चारों जीत ले। समभाव शत्रु मित्र पै यह खास असली धर्म है, सच० ।३॥ दान दे तप जप करे नरमी रखे सबसे सदा। शुभ योग में रमता रहे यह खास असली धर्म है, सच० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का नित यही उपदेश है। गुण पात्र की सेवा करे यह खास असली धर्म है, सच० ॥५॥ नं० १० श्रावक के गुण—समणोपासक के सदा गुण ऐसे होना चाहिये। अनुराग रक्ता धर्म में गुण ऐसे होना चाहिए ॥टेक॥ आवश्यक करके सुबह गुरुदेव के दर्शन करे। बाद फिर शास्तर सुने गुण ऐसे होना चाहिए, समणोपासक० ॥१॥ गुरुदेव आवे द्वार पै तब उठ कर आदर करे। दान दे निज हाथ से गुण ऐसे होना चाहिए, समणो० ॥२ हितकारी चारों संघ के समभाव सम्पत विपत में। गुण पात्र की स्तुति करे गुण ऐसे होना चाहिए, समणो० ॥३। धर्म से डिगते हुए को सहायता दे स्थिर करे। उदास रहे संसार से गुण ऐसे होना चाहिए। समणोपासक ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। न्यायी हो निष्कपटी हो गुण ऐसे होना चाहिए, समणो० ॥५॥ नं० ११, सुशिष्य के लक्षण–आज्ञा गुरु की मानता जो वही शिष्य सुशिष्य है। आज्ञा को पालन न करे जो वही शिष्य कुशिष्य है ॥टेक॥ वन्दना करके सुबह ही पूछले गुरुदेव से। आज्ञा हो वैसा करे जो वही शिष्य सुशिष्य है ॥ आज्ञा ॥१॥ आते जाते देख गुरु को हो खड़ा कर जोड़के। भाव से भक्ति करे जो वही शिष्य सुशिष्य है, आज्ञा० ॥२॥ लेन में या देन में या खान में और पान में। कार्य करे सब पूछ के जो वही शिष्य सुशिष्य है, आज्ञा० ॥३। जो २ सब दिन रात की क्रिया वही करता रहे। चारित्र में माने मजा वही शिष्य सुशिष्य है। आज्ञा० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। निज दाव जीते मोक्ष का जो वही शिष्य सुशिष्य है, आज्ञा० ॥५॥ नं० १२–पतिव्रता के लक्षण–पति का

१३

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

हुकम पाले सदा पतिव्रता वही नार है। सुख में सुख दुःखी में दुःखी पतिव्रता वही नार है ॥टेक॥ कुटुम्ब को सुखदायिनी सुसम्प से मिलजुल रहे। सुमनी सुभाषिणी पतिव्रता वही नार है। पति का० ॥१॥ विपत में अनुकूल रहे चित्त अस्थिर हो तो स्थिर करे। उपदेश दाता धर्म की पतिव्रता वही नार है। पति का० ॥२॥ सीता सती राजिमती जैसे रहे सुदृढ़ धर्म में। पर पुरुष को वञ्छे नहीं पतिव्रता वही नार है। पति का० ॥ ३॥ रोष में पति कुछ कहे नहीं सामने बोले कभी। ज्यों त्यों दिल को खुश करे पतिव्रता वही नार है, पति का० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। दासी बन रहे चरण की पतिव्रता वही नार है, पति का० ॥५॥

नं. १३ हिंसा निषेध--नाहक सतावे ओर को यह तेरे हक़ में है बुरा। मान या मत मान ऐ नर तेरे हक़ में है बुरा ॥टेक। अपने अपने कर्म से जिस योन में पैदा हुए। तू बेगुनाह मारे उसे यह तेरे हक़ में है बुरा, नाहक० ॥१॥ सुख लिए पंखी पशु फिरते छुपाते जान को। रहम के बदले सताना तेरे हक़ में है बुरा। नाहक़० ॥२॥ पीछे जो बच्चे रहें कौन पालना उनकी करे। परवश पने वे भी मरें यह तेरे हक़ में है बुरा। नाहक० ॥३॥ तेरे जब काँटा लगे तब दुःख तुझे मालूम हुवे। इस तरह सब में समझ यह तेरे हक़ में है बुरा, नाहक० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। रहम जब तक दिल में नहीं यह तेरे हक़ में है बुरा। नाहक०॥५॥

नं. १४ मृषावाद निषेध—याद रख नर झूंठ से तारीफ तेरी है नहीं। बदल जाना बोलके तारीफ तेरी है नहीं ॥टेक॥ झूंठ से प्रतीत उठे झूंठ से झूंठा कहें। लोग सब लापर गिनें तारीफ तेरी है नहीं। याद रख० ॥१॥ वसु राजा का सिंहासन सत्य से रहता अधर। वह झूंठ से गया नरक में तारीफ तेरी है नहीं। याद रख० ॥२॥ नीच वञ्छे झूंठ को ओर ऊंच तो वञ्छे नहीं। झूंठ निन्दे सब जगत तारीफ तेरी है नहीं। याद रख०॥३॥ झूंठ से साधु को भी आचार्य पद आता नहीं। व्यवहार सूत्र माँही लिखा तारीफ तेरी है नहीं। याद रख० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। तू झूंठ में माने मजा तारीफ तेरी है नहीं। याद रख० ॥५॥

नं. १५ अस्तेय निषेध—साफ हुकम है शास्त्र का नर छोड़ दे तू तस्करी। तेरे हक़ में ठीक है नर छोड़ दे तू तस्करी ॥टेक॥ बद-नीत तस्कर की रहे करुणा न जिसके अङ्ग में। सब जाति में चौरी करे नर छोड दे तू तस्करी, साफ० ॥१॥ सुर स्थान या शिवस्थान या यह धर्म का स्थान है। मस्जिद मन्दिर न गिने नर छोड़ दे तू तस्करी, साफ० ॥२॥ सम जगह विषम जगह चोरी करे मारे मरे। समुद्र में चोरी करे नर छोड़ दे तू तस्करी, साफ० ॥३। सरकार में पावे सज़ा वह कैसे कैसे दुख सहे। उसको न मिलने दें किसी

१४

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

से नर छोड़ दे तू तस्करी, साफ० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। एक साधु जन इससे बचे नर छोड़ दे तू तस्करी, साफ० ॥५॥ **१६—अब्रह्मचर्य निषेध-** इज्जत बनी रहेगी सदा परनारी का संग छोड़ दे। अब भी समझ कोई डर नहीं परनारी का संग छोड़दे ॥टेक॥ राजा कीचक द्रौपदी पै चित्त दियो तब भीम जी। छत उठा स्तम्भ बीच धरा परनारी का संग छोड़दे, इज्जत० ॥१॥ कई धन खोकर चुप रहे कई जान से मारे गए। कई रोग से सड़-सड़ मरे परनारी का संग छोड़ दे, इज्जत० ॥२॥ कई जूतियों से पिट गए कई जाति से खारिज हुए। कई राज में पकड़े गए परनारी का संग छोड़ दे, इज्जत० ॥३॥ शील में सीता सती फिर दृढ़ रही राजिमती इस तरह तू दृढ़ रह परनारी का संग छोड़ दे, इज्जत० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। शील में सुख है सदा परनारी का संग छोड़ दे, इज्जत० ॥५॥ **१७—परिग्रह निषेध**--माया को तू अपनी कहे अब तक तुझे मालूम नहीं। यह किसी की हुई ना होयगी अब तक तुझे मालूम नहीं ॥टेक॥ आया था जब नग्न होकर साथ कुछ लाया नहीं। पीछे पसारा सब हुआ अब तक तुझे मालूम नहीं, माया० ॥१॥ भाई-भाई सासु जमाई पुत्र और माता पिता धन के लिए शत्रु बने अब तक तुझे मालूम नहीं, माया० ॥२॥ बाबर अलाउद्दीन महमूद अकबर हुए बादशाह। वे भी खज़ाना छोड़ गए अब तक तुझे मालूम नहीं, माया० ॥३॥ अकृत्य कार्य तू करे दिन रात पच पच के मरे। क्या ठीक कौन मालिक बने अब तक तुझे मालूम नहीं, माया० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। सन्तोष घर आराम का अब तक तुझे मालूम नहीं, माया० ॥५॥ **१८—क्रोध निषेध**—क्रोध मत कर ऐ जिया सुन हाल छट्ठे पाप का। क्रोध की ज्वाला गरम रख खोफ इसकी ताप का ॥टेक॥ क्रोध जिसके छा रहा वहां सत्य का क्या काम है। सरलता नहीं, नम्रता नहीं रहे क्षमा गुण आपका, क्रोध की० ।१॥ एक क्रोधी जिसके घर सब कुटुम्ब को क्रोधी करे। दिल चाहे जो बकता रहे नहीं ध्यान रहे माँ-बाप का, क्रोध की० ॥२॥ क्रोधी अपनी जान या परजान को गिनता नहीं। अवगुण निकाले और के यह काम नहीं सराफ का, क्रोध की० ॥३॥ प्रीति टूटे क्रोध से गुण नष्ट होवे क्रोध से। हित बात पर गुस्सा करे फिर काम क्या चुप चाप का, क्रोध० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। क्रोध से बचते रहो टल संजाय दुख ताप का, क्रोध की० ॥५॥ **१९--मान निषेध**--मान करना है बुरा जहाँ मान वहां अपमान है। लाभ या नुकसान इससे तुझको नहीं कुछ भान है ॥टेक॥ लाखों रुपैया हाथ से बरबाद कर दिया मान से। शुभ काम में दमड़ी

१५

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

नहीं तू काय का इन्सान है; मान० ॥१॥ सीता को देना हाथ से रावण को मुश्किल होगया। मर मिटा वह भी मर्द अभिमान ऐसी तान है, मान० ॥२॥ संसार में या धर्म में तैं बीज बोया फूट का। दिल को किया राज़ी यहाँ आखिर नरक स्थान है, मान० ॥३। दुनिया में कई होगये फिर और भी हो जायेंगे। घूमते गजराज जिनके स्थान अब वैरान है, मान० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। छोड़ दे जो मान उसका तुरत ही सन्मान है, मान० ॥५॥ २०--कपट निषेध--कपट करना छोड़ दे निष्कपट रहना ठीक है ॥टेक॥ सीता सती को कपट से लंका में रावण ले गया। आखिर नतीजा क्या मिला निष्कपट रहना ठीक है, ॥१॥ कपटी पुरुष का जगत में विश्वास कोई करता नहीं। कपट का घर झूठ है निष्कपट रहना ठीक है, कपट० ॥२॥ लेन में या देन में छल कपट से डरता नहीं। वह राज में पावे सज़ा निष्कपट रहना ठीक है, कपट० ।३। माया से नर नारी हुए नारी से नपुन्सक बने यह कपट का फल है सही निष्कपट रहना ठीक है, कपट० ॥४। मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। निष्कपट से इज्जत बढ़े निष्कपट रहना ठीक है, कपट० ॥५॥ २१-लोभ निषेध—लोभ नवमा पाप है तू लोभ तज सन्तोष कर। निर्लोभ में आराम है तू लोभ तज सन्तोष कर॥टेक॥ लोभ से हिंसा करे और झूँठ बोले लोभ से। लोभ से चोरी करे तू लोभ तज सन्तोष कर, लोभ० ॥१॥ लोभ से माता-पिता और पुत्र के अनबन रहे। हित मीत सगपन ना गिने तू लोभ तज सन्तोष कर॥२॥ लोभवश जिनपाल जिनरख जहाज़ में चढ़ कर गए। समुद्र में जिनरख मरा तू लोभ तज सन्तोष कर, लोभ० ॥३॥ लोभ जहां इन्साफ नहीं तू देखले अच्छी तरह। सब पाप की जड़ लोभ है, तू लोभ तज सन्तोष कर, लोभ० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। निर्लोभ से मुक्ति मिले तू लोभ तज सन्तोष कर, लोभ० ॥५॥ २२--राग निषेध--मोह नींद है अनादि इसको टाल टाल टाल। तेरे कौन है संघाति जरा नाल, नाल नाल ॥टेक॥ यह मोक्ष पन्थ शुद्ध है तू चाल चाल चाल। एक आत्मा तुल्य जान दया पाल पाल पाल। तेरे० ॥१॥ रहेगा धरा यह यहां का यहाँ धन माल माल माल। दुर्गत में तेरी आत्मा तू मत डाल डाल डाल, तेरे० ॥२॥ मत कर गरूर देख तू काले बाल बाल बाल। तेरे सिर पर ज़बरदस्त है वो काल काल काल, तेरे० ॥३॥ नन्दलाल मुनि गुणवान की आज्ञा पाल पाल पाल। ले धर्म रत्न शीघ्र कंकर डाल डाल डाल, तेरे ॥४॥ २३--कुसम्प निषेध--सन्तों का कहना मान के तुम छोड़दो कुसम्प को। प्रेम से मिल जुल रहो तुम छोड़ दो कुसम्प को, ॥टेक॥ भाई भाई या बाप बेटा राज तक जो चढ़ गए। बर्बाद पैसे का किया तुम छोड़ दो कुसम्प

१६

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

को, सन्तों० ॥१॥ राज रावण का गया पञ्चों की गई पंचायती। साधु की गई सत्यता तुम छोड़ दो कुसम्प को, सन्तों० ॥२॥ कई तो खुद मर गए और कई को मरवा दिए। कई गए प्रदेश में तुम छोड़ दो कुसम्प को, सन्तों० ॥३॥ कई की इज्जत गई कई धर्म में हानि करी। भरम घरका खोदिया तुम छोड़ दो कुसम्प को, सन्तों० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलाल जी का यही नित उपदेश है। सम्प में सुख है सदा तुम छोड़ दो कुसम्प को, सन्तों० ॥५॥ २४--नं० बुराई का निषेध—कर के बुराई और की क्यों पाप का भागी बने। बहकाने वाले बहुत हैं क्यों पाप का भागी बने ॥टेक॥ सत्य हो चाहे झूठ हो निर्णय तो करना ठीक है। अपनी अपनी तान के क्यों पाप का भागी बने करके० ॥१॥ कानें सुनी झूंठी होवे आँखों से देखी सत्य है। देखी भी झूंठी हो सके क्यों पाप का भागी बने, करके० ॥२॥ मुख से बुराई निकले ज्यों हाट हो चर्मकार की। यह न्याय निन्दक पै सही क्यों पाप का भागी बने, करके० ॥३॥ नीर को तज खीर पीवे हंस का यह धर्म है। तू भी गुण ले इस तरह क्यों पाप का भागी बने, करके० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलाल जी का यही नित उपदेश है। निन्दा पराई छोड़ दे क्यों पाप का भागी बने, करके० ॥५॥ नं० २५—ईर्षा निषेध—देख कर पर सम्पति क्यों ईर्षा करता है तू। जैसा करे वैसा भरे क्यों ईर्षा करता है तू ॥टेक॥ लक्ष्मी भर पूर फिर व्यौपार में दुगने हुए। अपने अपने पुण्य हैं क्यों ईर्षा करता है तू, देख० ॥१॥ पुत्र पौता आदि मनोहर बहुत ही परिवार है। मौज करे रंग महल में क्यों ईर्षा करता है तू, देख० ॥२॥ जात या परजात या पंचायत या सरकार में। पूछ जिनकी हो रही क्यों ईर्षा करता है तू, देख० ॥३॥ दयावन्त दानेश्वरी उपदेश दाता धर्म का। महिमा सुनि गुणवान की क्यों ईर्षा करता है तू, देख० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। द्वेष बुद्धि छोड़ दे क्यों ईर्षा करता है तू, देख० ॥५॥ नं० २६—सत्योपदेश—ये स्वार्थी स्वजन इनमें राचिए नहीं। तू मान मान मान मान मान तो ही ॥टेक॥ तू क्यों करे अभिमान बहुत वक्त है नहीं। लेना है यहां विश्राम आखिर पन्थ तो वही, तू मान० ॥१॥ तेरे दिल में कुछ और मुंह से कहत है कई अधर्म में तमाम उमर बीत यों गई, तू मान० ॥२॥ दिल चाहे सो कर मित्र यहाँ तो पूछ है नहीं। कर्मों का तो इन्साफ तेरा होगया वहीं, तू मान० ।३॥ मेरे गुरु नन्द लाल जिनकी कहन है यही। कर लीजिये भलाई इक धर्म में रही, तू मान० ॥४॥ नं० २७—उपदेश—जिया मान ले मुनी राज सच्ची कहते हैं अरे। ले मुक्ति को सामान अब ढील क्यों करे, ॥टेक॥ ये पुत्र मात तात भ्रात जिनसे नेह करे। न तुझको तारण हार क्यों इनके जाल में परे, ले० ॥१॥ है थोड़ी

१७

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

सी जिन्दगानी तू न पाप से डरे । बिन पाल्या धर्म नियम कैसे आत्मा तरे, ले० ॥२॥ हो जाऊं मैं धनवान ऐसी कल्पना करे । न भाग बिना पावे नाहक डोलतो फिरे, ले० ॥३॥ महामुनि नन्दलाल जी है सन्त में सरे । संसार सागर घोर आप तारे और तरे, ले० ॥४॥ नं॰ २८ कंजूस की दशा—मूंजी अपने हाथ से नहीं जीते जी कभी दान दे । रात दिन जोड़े जमा नहीं जीते जी कभी दान दे ॥टेक॥ पुत्रादिक को दान देते देख ले मूंजी कभी । तो खुद करे एकासना नहीं जीते जी कभी दान दे, मूंजी० ॥१॥ चाहे कोई कुछ भी दे उसका फिकर मूंजी करे । जहां तक बने करदे मना नहीं जीते जी कभी दान दे, मूंजी० ॥२॥ दीन दुखिया द्वार पै कोई सवाल डाले आन कर । करुणा का जिसके काम क्या नहीं जीतेजी कभी दान दे, मूंजी० ॥३॥ खाना बद बद पहनना चाहे कोई भी त्यौहार हो । माया का मजदूर वो नहीं जीते जी कभी दान दे, मूंजी० ॥४॥ मेरे गुरु नन्द लाल जी का यही नित उपदेश है । मूंजी पूंजी धर जायगा नहीं जीतेजी कभी दान दे, मूंजी० ॥५॥ नं॰ २९ माता पिता का कर्तव्य –[तर्ज:–पारश प्रभू से अर्ज़ हमारी है रात दिन] बचपन से ही माँ बाप शुभ आचार सिखाते । मक़दूर क्या जो पुत्र वो कुपूत कहलाते ॥टेक॥ अपना अदब गुरु का विनय की रीत बताते । बुलवाते जी जी कार तो यश जगत में पाते मक़दूर० ॥१॥ जो हिंसा झूंठ चोरी कुकर्मों से डराते । पहले हिदायत होती तो क्यों नाम लजाते, मक़दूर० ॥२॥ गुरु से सिखाई गालियां फिर वो हाथ उठाते । खींचे पकड़ के बाल न कुछ भी तो शरमाते, मक़दूर० ॥३॥ जैसे की रहे संग में गुण वैसे ही आते । इस न्याय को विचार के सुसंग लगाते, मक़दूर० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलाल जी सच बात बताते । सुपुत्र दीपक की तरह निज कुल को दीपाते, मक़दूर० ॥५॥ नं॰ ३० गुरु की स्तुति—गुरु देव की मुझ सेव पुण्य योग से मिली । सुन्या बैन खुल्या नैन मेरी भ्रमना टली ॥टेक॥ प्रकृति है मुलायम ज्यों गुलाब की कली । सब मन की मेरी आस बहुत दिन से फली, सुन्या० ॥१॥ निर्पक्ष हो के कहते कथा ज्ञान को भली । मुझे आवे स्वाद मुंह में ज्यों मिष्टान की डली, सुन्या० ॥२॥ है ज्ञान के दरियाव धोवे पाप की कली । न मान माया लोभ है वैराग्य की झलि, सुन्या० ॥३॥ महा मुनि नन्दलाल जी सन्तोष की सली । तस शिष्य को गुरु कृपा से सुख सम्पति मिली, सुन्या० ॥४॥ नं॰ ३१ स्थिवर मुनि श्री **नन्दलालजी महाराज के गुण**—जैसे शशि है सोम ऐसी दीपति रति । गुरु आपका उपकार मैं तो भूलतो नथि ॥टेक॥ विद्या के सागर आप पूरे जैन में यति । उपजे अति मुझ प्रेम ऐसी सूरत शोभति गुरु० ॥१॥ भव जीवों के हित आप कथा कहते यूं कति ।

१८

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

उपदेश की छटा को पारन पावे सुरपति, गुरु० ॥२॥ चरचा में है निपुण करे बात सूत्रति । जिन धर्म की फते फते बजाते हो अति, गुरु० ॥३॥ मेरे गुरु नन्दलाल जी की दीपति रति । मैं आपका निजदास दीजो मोक्ष की गति, गुरु० ॥४॥ नं० ३२ चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त को उपदेश-(तर्ज—कव्वाली) ब्रह्मदत्त मान ले कहना, वक्त यह फिर न आवेगा । नाहक भोगों में ललचा के, नफा तू क्या उठावेगा ॥टेर॥ पूर्व भव का है तूं भाई, कहूं मैं साफ दर्शाई । और हित के लिए तुझको कौन सच्ची सुनावेगा ॥१॥ कुटुम्ब निज मित्र और न्याति, यह तो सब स्वार्थ के साथी । तुझे जब काल के मुंह सेन्हीं कोई छुड़ावेगा ॥२॥ मेरी यह मेरी यों करके, असल में जहाँ की जहाँ धरके । चली जा रही है सब दुनियाँ तूं भी ऐसे ही जायगा ॥३॥ स्वजन धन फोज चतुरंगी कोई किस का नहीं संगी । याद रख एक दिन नृप तूं अकेला ही सिधावेगा ॥४॥ मुनि नन्दलाल गुरु ज्ञानी, जिनकी सुन प्रेम से बानी । दया के कुण्ड में न्हाले दुःखों की दाह बुझावेगा ॥ ब्रह्मदत्त मानले कहना, वक्त यह फिर न आवेगा ॥५॥ नं० ३३ असल में कौन—(तर्ज-पूर्ववत) बता दे नाम तू उसका असल में कौन है तेरा । जिया सत्संग करने से. मिटे चौरासी का फेरा ॥टेर॥ रानी देवकी के अंग जाया, द्वारिका नाथ कहलाया । कुटुम्ब कोई काम नहीं आया. जिन्हों के अन्त की वेरा ॥१॥ चौथा चक्रवर्त साराया रूप देखन को सुर आया । बिगड़ गई छिनक में काया, उनको जब रोग ने घेरा ॥२॥ धन्न इब्यों का था घर में, जहाज चलती थी सागर में । सेठ कहलाते नगर में, यहां पर वह भी नहीं ठेरा ॥३॥ पूर्ण समकित में दृढ़ताई, श्रेणिक नृप था बड़ा न्याई । छोड़ कर राज सब यांही, नरक में जा किया डेरा ॥४॥ देख संसार की रचना, नाहक योंही पाप में पचना । हो तो विद्वान तूं बचना, मुनी नन्दलाल गुरु मेरा ॥ बतादे नाम तूं ॥५॥ नं ३४ हितोपदेश-(तर्ज-पूर्ववत्) समझ नर क्यों गाफिल हो के वक्त अनमोल खोता है । मुक्ता फल छोड़ के असली, क्यों झूंठा पोत पोता है ॥टेर॥ ठगों की नगरी है सारी, इसमें तूं आया व्योपारी । तुझे कुछ भी नहीं मालुम, सुबह का शाम होता है ॥१॥ खर्च कितना किया वह लेख, कमाई क्या करी सो देख । आम उखाड के जड़ से, आक का बीज बोता है ॥२॥ निगाह कर देख तो घर की, बुराई क्यों करे पर की । ज्ञान की गहरी नदियों में पाप मल क्यों न धोता है ॥३॥ फिरे तूं हो के मद-माता धर्म के पंथ नहीं आता । पड़ा मोह जाल के फंद में, जैसे पिंजरे में तोता है ॥४॥ मुनि नन्दलाल हित आनी, कहे सो मान भव प्राणी । सड़क सीधी है शिवपुर की, देख किस तर्फ जोता है ॥ समझ नर क्यों ॥५॥ नं० ३५ नशा निषेध—(तर्जः-माता मरु

१६

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

देवी के लाल मोक्ष की राह बताने वाले) मत कर नशा कंदना मान तूं अपना हित चाहने वाले ॥टेर॥ जो करते नशा अज्ञान, उनको रहे नहीं कुछ भान, सब ही लोग कहे वेईमान, कुल का नाम लजाने वाले ॥१॥ केई कपड़ा माल गमाते, केई गलियों में गिर जाते, कुत्ते उनके मुंह चाट जाते, मक्खियों को न उड़ाने वाले ॥२। वह निर्लज होते चोड़े, फिर संग छोकरा दोड़े, घर के वर्तन बासन फोड़े, हाँ २ हँसी कराने वाले ॥३॥ न रहे हिताहित खयाल, मुंह से बोले आल पंपाल, करते लोग हाल वेहाल, उड़ा म्हा मोज उड़ाने वाले ॥४॥ हे बहुत मजे का टेम, तेरे नित्य रहेगा नेम, दिल से करदे झटपट नेम, अपनी इज्जत बढाने वाले ॥५॥ गुरुवर मेरे श्री नन्दलाल, है सब जीवों के प्रतिपाल, देते मिथ्या भर्म को टाल सच्चा ज्ञान सुनाने वाले ॥ मत कर नशा० ॥६॥

नं० १ चौबीसी जिन गुण—(तर्ज:—आज रंग बरसेरे २ म्हारा नेमकुंवर बिन जिवड़ो तरसेरे) शुभ फल पावो रे २ चौबीस जिनन्द जी का नित गुण गावोरे ॥टेर॥ धर्म जिनेश्वर चन्दा प्रभुजी ऋषभ प्रथम अवतारी रे । महावीर कुन्थु जिन जपतां, जय जय कारी रे ॥ शुभ० ॥१॥ शान्ति नाम से शाता वरते, अनन्त सुपार्श्व ध्यावे रे । सुमति नाथ प्रभु पार्श्व परसतां पाप पुलावेरे ॥ शुभ० ॥२॥ रिष्ट नेम श्री मुनि सुव्रतजी, विमल निर्मल गुण धारी रे । पद्म प्रभु अभिनन्दन, आवागमन निवारी रे ॥ शुभ ॥३॥ श्री श्री सम्भव नमि मल्लि, महाराज पाप मल हरिया रे । वासु पूज्य शीतल जिन, सुख शिवपुर का वरिया रे । शुभ० ॥४॥ सुविधि नाथ श्री अजित प्रभु, पच्चीस भावना पाली रे, अरह नाथ श्रेयाँश अचल पद, लियो सम्भाली रे ॥ शुभ० ॥५॥ इण विध जाप जपै जिनवर का, पेष्ट तणे पर आवेरे । अरति भय दुःख दूर टले, कमला घर आवेरे ॥ शुभ० ॥६॥ फरिद कोट पूज्य मुन्नालालजी, नवठाणा से आयारे । महा मुनि नन्दलाल तणा शिष्य, जिन गुण गाया रे ॥ शुभ० ॥७॥

नं० २ वीर गुण गान—(तर्ज संग चलूं जी पिया) मत भूलो कदारे, मत भूलो कदा । वीर प्रभु के गुण गाओ सदा ॥टेर॥ ज्यो २ भाव प्रभु प्रगट किया, गणधर सूत्रों में गूंथ लिया । मत० ॥१॥ प्रभुजी की वाणी को आज आधार, सुन २ सफल करो अवतार । मत० ॥२॥ जल से नहाया तन मैल हटे, प्रभुजी की वाणी से पाप कटे । मत० ॥३॥ तुरत फुरत सब विपति टले, जिहां तिहां वञ्छित आश फले । मत० ॥४॥ मुनि नन्दलाल जी हुकम दिया, जद रावल पिंडी चौमासा किया । मत० ॥५॥

नं० जिन गुण—(तर्ज-पूर्ववत्) जिन राज ऐसा रे, जिन राज ऐसा । निस दिन म्हारे मन में बसा ॥टेर॥ जगत में जहाज सहाज जगदीश, शत्रु मित्र पर राग न रीश । जिन० ॥१॥ गुण तो अनन्त दीठा नेण ठरे,

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

इन्द्रादिक सुर पाँय परे। जिन० ॥२॥ वाणी तो बरसे ज्यों अमृत धार, भव जीव सुणे जांके हर्ष अपार । जिन० ॥३॥ जिहाँ तिहाँ विचरे श्री भगवान, धर्म को उद्योत करे जिम भान। जिन० ॥४॥ मांडलगढ़ में मुनि नन्दलाल, तिस शिष्य जोड़ बनाई रसाल। जिन० ॥५॥ ४—जिन-वाणी—[तर्ज़-पूर्ववत्] जिन वाणी ऐसी रे। जिन वाणी ऐसी। कुमति गई ने म्हारे सुमति बसी। टेर। सुनत मिटत दुष्ट कर्म अरी, जो भव जीव सुने भाव धरी। जिन०॥१॥ जो जन वाणी परकाशे जिनराज, इन्द्रादिक आवे सुनवा के काज, जिन०॥२॥ सुन-सुन उत्तम जीव अनेक, उतर गया भव सागर देख। जिन०॥३॥ काम क्रोध मद लोभ की झाल, शीतल होय सुनतां तत्काल। जिन० ॥४॥ मुनि नन्दलाल तणा शिष्य जान, गायो चित्तौड़ में करिये प्रमान। जिन० ॥५॥ ५—परमेष्ठी गुण-[अवधु सो जोगी गुरु मेरा] आछो आनन्द रंग वरसायो, मैं तो देख सभा हुलसायो ॥टेर॥ अरिहन्त नमूँ पद पहले, भव जीवां ने शिवपुर मेले, लोक लोक को स्वरूप बतायो। आछो०॥१॥ दूजे पद श्री सिद्ध ध्याऊँ, कर जोड़ी ने शीश नमाऊं जनम मरण को दुःख मिटायो। आछो० ॥२॥ आचारज तीजे पद सोहे, चारों तीरथ के मन मोहे, ज्ञान ध्यान में चित्त रमायो। आछो० ॥३॥ उपाध्याय मेरे मन भावे, कई सन्तों को ज्ञान भणावे, जांकी बुद्धि को पार न पायो॥ आछो० ॥४॥ सर्व साधुजी गुण का दरिया, जाने पाप सद्दु पर हरिया, मोकूँ मुक्ति को पंथ बतायो। आछो० ॥५॥ ये तो पाँचों ही पद भज भाई, नित एक चित्त ध्यान लगाई, कारज सिद्ध हुवे मन चहायो। आछो० ॥६॥ नन्द-लाल मुनि गुणधारी, तस शिष्य कहे हितकारी, मैं तो मंगलीक आज मनायो॥ आछो० ॥७॥ ६—गौतम-गुण-[तर्ज़—रे जीवा जिन धर्म कीजिये] गौतम गण धर वंदिने। पूरण लब्धि भंडार ॥टेर॥ चौबीस मां वर्धमान के, चेला चतुर सुजान। सब साधां में शिरोमणि, ऊगा जगत में भान। गौतम० ॥१॥ चवदे पुरवना पाठीया, ज्ञान चार बखान। तपस्या करी चित निर्मली, नहीं मच्छ गिल्यान। गौतम० ॥२॥ परबत में मेरु बड़ा, सीतां नदियाँ के माँय। स्वयंभू रमण दधियाँ विषे, एरावत गज मांय। गौतम० ॥३॥ सब रस में इक्षु रस वड़ा, दान में वड़ा अभयदान। ऐम अनेक है ओपमा, कहाँ लग करूँ जी बखान। गौतम० ॥४॥ सर्व बाणँ वर्षनो आउखो, दश जुग रया घर माँय। पीछे एवा गुरु भेटिया, चौबीस मां जिनराय॥ गौतम० ॥५॥ तीस बरस छद मस्त रया, पीछे केवल ज्ञान। द्वादश वर्षनो पालने, पहुँचता निर्वाल। गौतम० ॥६॥ अनन्त सुखां में विराजिया, माता पृथ्वी का नन्द। खूबचन्द कहे थारा नाम से, भयो मगन आनन्द। गौतम० ॥७॥ ७—सुधर्म गणधर के गुण—(संग चलूंजी पिया) कर कुमति विदा २ स्वामी सुधर्मा

२१

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

जी ने वन्दु सदा ॥ठेर॥ वीरजी के विराज्या परथम पाट, सुधी बताई जाने मुगति की वाट । कर० ॥१॥ सो वर्ष को आऊँ खो पाया तास, पच्चास वर्ष रहीया गृहवास । कर० ॥२॥ संजम लियो धार नीके अंग जात, गुरु भेटया जाने त्रिलोकीनाथ । कर० ।३॥ मति श्रुत अवधि मन पर्यव ज्ञान, चवदा पुरव विद्या को प्रमान ॥ कर० ॥४॥ बयालीस वर्ष ध्याता निर्मल ध्यान, प्रकट हुओ पीछे केवल ज्ञान । कर० ॥५॥ रूप दीपे जांको भगमग ज्योत, देवता से पण अधिक उद्योत । कर० ॥६। जम्बू सरिखा जाके शिष्य है वनीत, रात दिवस जांको चरणा में चित ॥ कर०॥७॥ वाणी प्रकाशी जैसे अमृत धार, सूत्र रचा जाँको आज आधार ।'कर०॥८। आठ वर्ष केवल परवर्जया पाल, मुगतिविराज्या पीछे दीनदयाल ॥ कर० ॥९॥ पाट विराजे जाँके जम्बू अणगार, परम वैरागी घणो कियो, उपकार। कर ॥१०। चम्मालीस वर्ष पाल्यो केवल ज्ञान, ते पण पाया प्रभु शिवपुर स्थान । कर० ॥११॥ सुधर्मा स्वामी ने जम्बू अणगार, चरण नमूँ जाँके बारम्बार । कर० ।१२॥ खूबचन्द कहे मेरे गुरु नन्दलाल, तिण प्रसादे गायो त्रेपन के साल। कर० ।१३॥

८-जिनेश्वर जन्म—[तर्ज—हरिश्चन्द्र राजाजी] जिनेश्वर रायाजी, स्वर्ग थकी चव आवे, प्रजा सुख पावे, हो जिनेश्वररायाजी ॥१॥ जिनेश्वर रायाजी गगन निर्मलो दर्शे, वर्षा सम वर्षे, हो जिनेश्वर रायाजी ॥२॥ जिनेश्वर रायाजी शाखाँ निपजे सारी, पुन्याई थारी हो जिनेश्वर रायाजी ॥४॥ जिनेश्वर रायाजी आछो बधायां आवे, के हर्ष मनावे, हो जिनेश्वर रायाजी ॥५॥ जिनेश्वर रायाजी, शकुन मिले सब ताजा, आदर देवे राजा, हो जिनेश्वर रायाजी ॥६॥ जिनेश्वर रायाजी, गुरु नन्दलालजी ध्याऊँ, सदा गुण गाऊं, हो जिनेश्वर रायाजी ॥७॥

९--जिन जन्म महिमा--[तर्ज—तू सुन म्हारी जननी आज्ञा देवो तो संजम आदरूँ] जिन जन्म की महिमा, करवाने आया देवी देवता । टेर॥ सक्र इन्द्र ईशान इन्द्रजी, तिजा सनतकुमार । महिन्द्र ब्रह्म लंतक महा शुकरः बलि इन्द्र संसार ॥ पाण इन्द्र और अचू इन्द्र आये, लेकर सब परिवारजी ॥ जिन० ॥१॥ सहस्त्र चौरासी अस्सी बहोतर, सीतर साठ बखान। पच्चास चाली तीस बीस दश, सामानिक सुर जान ॥ चार गुणा सामानिक सुर से आतम रक्ष परमानजी ॥ जिन० ॥२। बारा सहस्त्र चवदा बलि सोला, तीन परिषदा माँय । दो दो सहस्त्र कम करके ऊपर, दो दो सहस्त्र बढ़ाय ॥ छै इन्द्र तक इणविध लीजो, चतुर हिसाब लगायजी ॥ जिन ३॥ सहस्त्र पान से ढाई से अती फेर सत्रासो थाय । दुगुणा २ तीन दफे तुम लीजो जोड़ लगाय ॥ इतने सुर एक एक इन्द्र के, तीन परिषदा माँयजी ॥ जिन० ॥४॥ लक्ष जोजन का लम्बा चौड़ा, आयारच विमान । एक सहस्त्र जोजन की सबके,

२२

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

महिन्द्र ध्वजा परिमान ॥ सुघोषा महाघोषा, घंटा, पांच पांच के जानजी । जिन० ॥५॥ चमरिन्द्र बलइन्दर प्रमुख, भवनपति के बीस । काल और महाकाल आदि दे व्यतर के बत्तीस ॥ चन्द्र सूर्य इन्द्र मिल होगए, चार बीस चालीसजी ॥ जिन० ॥६॥ अथ लक्ष जोजन लम्बा चौड़ा, असुरां का विमान । धरणिन्द्रादिक अष्टादश के, सहस्र पच्चीस प्रमान । व्यतरिन्द्र और रवि शशि के, सहस्र जोजन का मान जी ॥ जिन० ॥७॥ वैमानिक से आधी ऊंची, जानो असुर कुमार । नवनिकाय के ढाई से की, महिन्द्र ध्वजा विस्तार ॥ सौ ऊपर पच्चीस जोजन की, व्यतर जोतिषी धारजी ॥ जिन० ॥८॥ इण विध हुओ समागम सुर को, जिन महिमा के काज । मेरे गुरु गुण आगर मानूं, नन्दलाल महाराज । रावलपिन्डी जोड़ बनाई, सरिया वंच्छित काजजी । जिन० ॥० ॥६॥ १०--झूलना--[तर्ज—जिनंद जश जग में] माताजी हुलरावे, पुतर ने राग सुनावे रे ॥टेर॥ रतन जड़ित पालनियो जाने रेशम सेती बनियो ॥ धन जननि नन्दन जनियो रे । माता० ॥१॥ सोना की साँखल बांधी, फिर पालणिया में फांधी । जांके अधबीच झूमर बांधी रे । माता०॥२॥ कोई चकरी भंवरा लावे, कोई नृत्य करी रींझावे । कोई घूघरियां घमकावे रे । माता० ॥३॥ कोई सिर पर टोपी मेले, कोई अधर हाथ में झेले । ई ज्यूं ज्यूं बालक खेले रे ॥ माता० ॥४॥ कोई कान में बातां कहवे, कोई गोदी माँही लेवे । कोई काजल टीकी देवेरे ॥ माता० ॥५॥ जब चमक नींद से जागे, तब रमझम करता भागे । जाकी सूरत सोहनी लागे रे । माता० ॥६॥ माता अचला देवीजी का नन्दा, अश्वसेन राय कुल चंदा । जाने सेवे सुर नर वृन्दा रे ॥ माताजी० ॥७॥ खूबचन्द कहे पुन योगे, या ऋद्धि पाई संजोगे । यह तो करनी का फल भोगेरे ॥ माता० ॥८॥ ११--जिनेन्द्र प्रताप--[तर्ज़—मुगत पद पाया हो भरतेश्वर मोटा राजवी] आनन्द वरते हो जिनन्दा, थारा नाम सूं ॥टेर॥ प्रभु नाम को सुमरण मोटो, जाप जप्या मन माँय । मन वांछित कारज सिद्ध थावे, पातिक दूर पलाय ॥ आनन्द ॥१॥ समरथ जान शरण में आयो, अवर देव कुण जांचे । आम स्वाद जिण चाख लियो तो, इमली में कुण रांचे । आनन्द ॥२॥ रत्नाकर मिलियो पुन योगे, हियो बहुत हुलसावे । सफल काज हो गया कहो फिर कंकर कौन उठावे ॥ आनन्द ॥३॥ कृपानिधि शिवपुर के वासी, यह मेरी अरदास । चार तीर्थ में कुशल रहे, सुख सम्पति लील विलास । आनन्द ॥ क्षीर समुद्र भरयो मुख आगे, कुण करे नाडी आस । मुनि नन्दलाल तणा शिष्य कहे, मुझ प्रगटी सुख की रास । आनन्द० ॥५॥ १२--मुनिराज--[तर्ज़—सोरठ] धन जग में मुनि राया, ज्याने कर लीना मन चाया रे ॥टेक॥ सुमति गुपति नित चाव तिरन को,

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

तामें चित्त रमाया रे ॥ धन ॥१॥ काम क्रोध मद लोभ तरसना, दूर तजी मोह माया रे। धन०॥२॥ कर कर ज्ञान प्रकाश हिया में, वैराग्य रहे नित छाया रे। धन० ॥३॥ कर्महणी कई शिवपुर पाया, कई सुरलोक सिधाया रे। धन०॥४॥ मुनि नन्दलाल तणां शिष्य जग में, जिहाँ तिहाँ जश पाया रे ॥धन० ॥५॥

१३–वीर मिलन की लालसा--[तर्ज़—हो गये नीत हीन कितनेक कलु के मानवी] मैं तो शिवपुर को वासी वीर जिनन्द से मिलसूं रे ॥टेर॥ तिसलादे माता के नन्दन, पिता सिद्धारथ राय। बहत्तर वर्ष की आयुष ज्याँकी, कंचन वरणी काय ॥ मैं तो० ।२॥ सुर नर के पुजनीक प्रभु रया, तीस वर्ष घर माँय। संजम ले फिर कर्म काट कर, मोक्ष बिराजा जाय॥ मैं तो० ॥२॥ मैं इन भरत क्षेत्र के मांहि, आप मोक्ष के माँय। अब अन्तस को लग्यो उमावो, दर्श करूं कब आय। मैं तो० ॥३॥ जिन रस्ते प्रभु आप पधारया, शिवपुर आसन ठायो। वो रस्तो ढूँढ़त फिरयोस पण, ना मुझ कणी बतायो ॥ मैं तो०॥४ लुच्चा सौदा बहुत मिल्या मुझ, उलटी राह बताई। निर्लोभी सतगुरु मिल्या जब सूधी बाट दिखाई। मैं तो० ॥५॥ अब मैं बाट कभी नहीं छोड़ूं, जल्दी जल्दी दोडूं। जहां होगा वहाँ आन मिलूंगा, संग कदी नहीं छोडूं ॥ मैं तो० ॥६॥ नन्दलालजी महाराज प्रसादे, खूबचन्द इम गावे। प्रभु थारा प्रताप सेस म्हारे, सदा नवे नन्द थावे, मैं तो॥७॥

१४-वीर की क्षमा—[तर्ज़—नाम की निज बूंटी निज बूंटी] मेरे प्रभु वीरजी वीरजी। कांई क्षम्या करी भरपूर ॥ टेर ॥ कठिन कर्म को काटवा, गया देश अनार्य मुझार। मेरे॥१॥ कम से कम छट तप किया, काँई उत्कृष्ट किया छे मास ॥मेरे० ॥२॥ मिला उड़द का बाकला, काँई बोर कुटा को अहार ॥मेरे० ॥३॥ आप खड़ा जब ध्यान में, काँइ लम्बी भुजा पसार। मेरे० ॥४॥ बाल खेंच धक्का दिया, कांइ दी मार अनारज लोग। मेरे० ॥५॥ कुत्ता लगाया काटना, कांइ कर छुछुकार अयोग ॥ मेरे०॥६॥ देव मनुष्य तिर्यंचका, काँइ उपसर्ग सहे अपार ॥ मेरे० ॥७॥ अधिक द्वादश वर्ष में, काँइ उपनो केवल ज्ञान ॥ मेरे० ॥८॥ दया धर्म फैलाय के, कांइ किया मोक्ष में वास ॥ मेरे० ॥९॥ गुरु नन्दलालजी का हुक्म से, किया रामपुरे चौमास। मेरे० ॥१०॥

१५–गुरुदेव दर्शन—[तर्ज—आज रंग बरसे रे, आज मन भायो रे २ गुरुदेव आपका दर्शन पायो रे ॥टेर॥ तारन तिरन जहाज आप, शिव मारग सूधो लीधोरे। बहुत दिनों से होती आश, भलो दर्शन दीधोरे। आज० ॥१॥ कल्पतरु गुरु पारस सम छो, पूरण पर उपकारी रे। निज गुण की चहुँ दिशि फैल रही, महिमा थारी रे ॥ आज० ॥२॥ गुरु ज्ञान के भान अंग में, अभिमान नहीं दरशे रे। संजम रुचि वैराग्य झलक, मुख ऊपर बरसे रे, आज॥३॥आचारी पूरे ब्रह्मचारी छो नव

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

नव कल्प विहारी रे। करूं कहां तक गुण वर्णन, तुच्छ बुधि हमारी रे ॥ आज० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनि की, चाहुं निरन्तर सेवा रे। है यकीन मुक्ति का निश्चय मिलसी मेवा रे ॥ आज० ॥५॥ १६-गुरु गुण—[तर्ज़—गूंथी लावो ए फूलां मालन म्हारे गेंद गजरो] म्हारा गुरुजी गुणवन्त आछो ज्ञान सुनायो ॥टेर॥ जीवयो अनादि मोह नींद में छायो । ज्ञान को जल छांट मोकूं आप जगायो ॥ म्हारा० ॥१॥ प्यासीयाने ठार निर्मल नीर ज्यूं पायो । भूखा ने खीर खाँड को जिम भात जिमायो ॥ म्हारा० ॥२॥ राग सुण ज्यूं नाग रहे बहुत घुमायो । भादवे बरसात ज्यूं झड़ आप लगायो ॥ म्हारा० ॥३॥ घोर यो संसार सागर आप फरमायो। डूबताँ इण माँय मोकूं आप बचायो । म्हारा० ॥४॥ महामुनि नन्दलालजी तस शिष्य हुलसायो । उगणीसे तिरेसठ माँय गढ़ चित्तौड़ में गायो ॥ म्हारा० ॥५॥ १७-दीक्षार्थी को माता की शिक्षा—[तर्ज—पूर्ववत्] सुणो लाल संजम पाल वेगा मोक्ष में जाज्यो ॥टेर॥ विनय करी खूब गुरुदेव रिझाज्यो । होय तो अपराध वारम्वार खमाज्यो । सुणो० ॥१॥ सीखज्यो बहु ज्ञान परमाद घटाजो । मेघ ज्यूं तपस्या की झड़ी खूब लगाजो ॥ सुणो० ॥२॥ आज ज्युं दिन रात थे वैराग्य वधाजो । सार दया धर्म तामें चित्त रमाजो । सुणो० ॥३। फेर दूजी मात के मत कूंख में आजो । जन्म जरा मरण का सब दुःख मिटाजो । सुणो० ॥४॥ ऐतली तुम सीख ऊपर ध्यान लगाजो । महा मुनि नन्दलालजी सुख सम्पति पाजो । सुणो० ॥५॥ १८-गुरु की शोभा-(तर्ज—गुरु निग्रन्थ नहीं जोया जीव तैने गुरु) गुरुजी विराजा सोहे सभा में, गुरुजी विराजा सोहे रे ॥टेर॥ समता के सागर गुण रतनागर, सुर नर का मन मोवेरे । ज्ञान सरोवर में करत किलोला, पाप तणा मल धोवेरे । गुरु० ।१। नरनारी बहु हिल-मिल आवे, निरख २ मुख जोवेरे । मधुर वचन से भव जीवों का, मिथ्या भर्म सब खोवेरे । गुरु० ॥२॥ ग्राम नगर मेरे गुरुजी पधारे, जहां बीज धर्म को बोवेरे । मुनि नन्दलाल तणा शिष्य कहे, मेरो रोम २ खुश होवेरे । गुरुजी० ॥३॥ १६-पूज्य दर्शन--(तर्ज—चेतन चेतोरे) दर्शन कर सारे २ म्हारा पुन्य योग से पूज्य पधारया रे ॥टेर॥ गाम नगर पुर पाटन विचरत, पूज्यजी आज पधारया रे । सुर तरु सम मन वाञ्छित म्हारा, कारज सारया रे । दर्शन० ॥१॥ उपगारी गुणधारी जांकी, सुर नर सेवा सारे रे । भव जीवाँ ने भव सागर से पार उतारे रे । दर्शन० ॥२॥ कोई कहे मैं दर्शन करसां, कोई कहे सुणसां वाणी रे । कोई कहे मैं प्रश्न पूछसां, छे बहु नाणी रे । दर्शन० ॥३॥ कोई बैठा गज तुरी ऊपरे, कोई कोई पाला जावेरे । कोई चढ़या रथ म्याना में जाँका, हिया हुलसावेरे । दर्शन० ॥४॥ कोई जावे कोई आवे

२५

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

पाछा, छगे मगे रह्यो लागीरे। कोई कहे तू चाल में आयो, लेर सु भागी रे। दर्शन० ॥५॥ कोई बैठा निज मन्दिर अपने, पूज्य की भावना भावेरे। कोई इक दृष्टि जोय रह्या, कोई शकुन मनावेरे। दर्शन० ॥६॥ नन्दलालजी महाराज प्रसादे, खूबचन्द इम गावेरे। धन जाँको अवतार पूज्य की सेवा पावेरे। दर्श० ॥७॥ २०--गुरु सेवा--(तर्ज--क्या तन मांजता रे) गुरुजी आपकी रे गुरुजी आपकी रे मोकूं सेवा मिली पुन योग ॥टेक॥ क्षमावंत ज्ञानादिक गुण के तुम हो सिन्धु समान। मिथ्या तिमिर के नाश करन को, प्रगट हुवे हो भान। गुरु० ॥१॥ तांता तोड़ दिया तृष्णा का, नहीं किसकी दरकार। अपने दिल में समझ लिया, कंचन पत्थर इकसार॥ गुरु० ॥२॥ मन को जीत लिया विषयां से, धर्म-ध्यान में लीन। निज आतम सम जान जगत को, अभय दान तुम दीन। गुरु० ॥३॥ क्षण मात्र भी तुम पुरुषों का, संग करे नर कोय। सच्चा ज्ञान मिले फिर उनकी, क्यों नहीं मुक्ति होय। गुरुजी० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनीश्वर, बहु सुखी विद्वान। पर उपकार जान हम सबको, दी शिक्षा हित आन। गुरु० ॥५॥ २१--ज्ञानी गुरु का निर्णय-(तर्ज:-फाग) ज्ञानी गुरु बिना कौन करे निरणा॥टेर॥ कुँवर सुबाहु पंच दश भव करने। आखिर मोक्ष गति वरणा। ज्ञानी० ।१। परदेशी नृप का हुआ निस्तारा। केसी स्वामी का भेट्या चरणा। ज्ञानी० ॥२॥ मेघ मुनि युगल भव गज का। न्याय सुनाय के स्थिर करणा। ज्ञानी० ॥३॥ कुण्डरिक पुण्डरिक दोनों भाई। करणी जैसा दुःख-सुख भरणा ज्ञानी० ॥४॥ मुनि नन्दलाल तणा शिष्य गावे। लो देव गुरु धरम शरणा। ज्ञानी० ॥५॥ नं० २२--(तर्ज--पूर्ववत्) ज्ञानी गुरु बिना कौन कहे सांची ॥टेर॥ कठिन कहे मुनि जो समें आवे। ढोर के नाय लगे टाँची। ज्ञानी० ॥१॥ चित्त मुनि कही ब्रह्मदत्त नहीं मानी। नर्क गयो भोगों में राची। ज्ञानी० ॥२॥ जो निज सुख चाहो अहो! मानव। करणी करो आछी आछी। ज्ञानी ॥३॥ आये हो परभव का दुःख देखी। अब वो बाट मत लीजो पाछी। ज्ञानी० ॥४॥ मुनि नन्दलाल तणां शिष्य गावे। शुद्ध देव गुरु धर्म लीजो जाची। ज्ञानी० ॥५॥ २३--वीर वाणी--[मुगत पद पाया हो भरतेश्वर मोटा राजवी] आछी लागे म्हाने वीर-धीर की वाणी रे ॥टेर॥ सभा बीच जगनाथ विराजे, विस्मयवंत दीदार। शुभ लक्षण तन पूरण ज्ञान गुण, करुणा के भंडार॥ आछी ॥१॥ प्रेम सहित वाणी का प्यासा, राजादिक नरनार। आय-आय चरणों में झुके, गुण बोले बारम्बार। आछी० ॥२॥ पैंत्र बोल की कहे आस्ती, दो विध धर्म उदार। सुर नर इन्द्र विद्याधर सुन सुन, हर्षित होय अपार। आछी० ॥३॥ महाव्रत अनुव्रत त्याग नेम कहि, धारत है नर नार। धर्म कथा खाली नहीं जावे, अवश्य होय उपकार। आछी० ॥४॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

श्रोता चाहे वीर वाणी हम सुनते रहें हर वार। मुनि नन्दलाल तणां शिष्य दिल्ली, जोड़ करी तैयार। श्राछी० ॥५॥ २४--संत--[तर्ज़ पंजाबी] संतो में संत वही है, जो पालक पंचाचार का ॥टेर॥ श्रातम सम जाने पर प्राणी, झूठ त्याग बोले सत्य वाणी। रज़ा विना कछु लहे न जाणी, तज दिया फिकर संसार का, सब जग से निरमोही है ॥ संतों में० ॥१॥ एक जगह स्थिर वास न रहना, सुन दुर्वचन कुछ नहीं कहना, भिक्षा माँग गुजर कर लेना, दिल रखे सभी पर सार का। चाहे राजा रंक कोई है ॥ संतों में० ॥२॥ माया से मुहब्बत नहीं जोड़े, विषयों से अपना मन मोड़े। क्रोध कपट निन्दा को छोड़े, नहीं संग करे बदकार का। ॥ दुर्मति दूर खोई है। संतों में०। ३॥ दुनिया से हरदम रहे न्यारा, कुव्यसनों से करे किनारा, ऐसा संत ईश्वर को प्यारा, करे धन्धा ज्ञान विचार का, तब सुधरे भव दोई हैं ॥ संतों में० ॥४॥ गुरु नन्दलाल महामुनिराया, कृपा कर ज्ञानामृत पाया, नयाशहर में भजन बनाया, गुरु किया काम उपकार का। हिये ज्ञान वेल बोई है ॥ संतों में० ॥५॥ २५-गुरु महिमा—[तर्ज़—पूर्ववत्] सब मिथ्या भ्रम खोते हैं, मुनिराज ज्ञान भंडार है ॥टेर॥ छोड़ दिया गृहस्थी का नाता, जोड़े नहीं फिर प्रेम का ताँता, करते फक्त धर्म की बातां, उनका यही व्यौपार है। नहीं बुरी नजर जोते हैं ॥ सब मिथ्या० ॥१॥ राव रंक की रखते नाहीं, सबको देते साफ़ सुनाई, निर्लोभी और बेपरवाही, दृग्दृष्टि बुद्धि अपार है, समकीत का बीज बोते हैं ॥ सब मिथ्या० ॥२॥ शम दम और सांच के सूरे, निशदिन रहे कपट से दूरे, तप करके कर्मों को चूरे, जो दम्यावंत अनगार है, सुमति की सेज होते हैं ॥ सब मिथ्या० ॥३॥ दोष टाल लेते अन पानी, कभी न बोले सावद्य बानी। गुरु हुकम रखते अगवानी, फिर क्यों न सफल अवतार है। सुर नर का मन मोहते हैं ॥ सब मिथ्या० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनी हैं, जिन शासन में बड़े गुनी हैं, जिसने पहले बानी सुनी है, वह याद करे हरबार है। पुन योग दर्शन होते हैं ॥ सब मिथ्या ० ॥५॥ २६--अहिंसा—[तर्ज़—पूर्ववत्] मत प्राणी के प्राण सतारे, कर दया धर्म का मूल है ॥टेर॥ छोटे बड़े कई जीव विचारे, सबको अपने प्राण पियारे। आतम सम लख न्यारे न्यारे, यह समदृष्टि का रूल है। मरते की जान बचारे। मत० ॥१॥ रुच रुच अशुभ अकृत्य कमाये, जिनसे योन पशु की पाये, विषम स्थान गिरि जंगल मांहे, ना कोई जिनके अनुकूल है। फिरे इत उत मारे मारे० ॥ मत०२॥ कई पशु रहते बिच बन के, भूख प्यास और शीत उष्ण के, कभी न कह सकते दुःख तन के, कौन पूछे तेरा क्या शूल है। अब महरबान बन जा रे ॥ मत० ॥३॥ जो था मतंग रहम दिल वाला, पाँव तले सुसले को पाला, मर कर हुआ नृप घर

२७

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

लाला, जिनमत का यही असूल है। क्यों दिल से दया बिसारे। मत० ॥४॥ गुरु नन्दलाल हुकम फरमाया, अब चौमास आगरे ठाया, जोड़ सभा में भजन सुनाया, जब तुझकूं दया कबूल है। तब होगी माफ खता रे। मत० ॥५॥ २७—सत्य—[तर्ज--पूर्ववत] क्यों असत्य मुँह से भाखे सत्य निर्वद्य बोल विचार के ॥टेर॥ सतवादी सम बात बनावे, कर छल कपट पलट झट जावे, उस नर की परतीत न आवे, सब निन्दे लोग बजार के। फिर कदर कोई नहीं राखे। क्यों० ॥१॥ जो नर सत्य धर्म को चाहते, उनपै कष्ट कभी नहीं आते, सुर नर मददगार हो जाते, कहे धन धन सब संसार के। चरणों में झुके आ आके। क्यों० ॥२॥ सत्य से विष अमृत होजावे, पड़े पहाड़ से चोट न आवे, शास्तर में ज्ञानी फरमावे, टले विघ्न कई प्रकार के। जिया देख ज़रा अजमा के, क्यों॥३॥ हरिश्चन्द्र राजा सतधारी, बेची हाथ से तारा नारी, जिसने भरा विप्र घर वारी, तब गया सर्व दुःख टाल के। खुद इन्द्र स्वर्ग से आके०। क्यों ॥४॥ मुनि नन्दलाल साफ फरमावे, सत् की महिमा सब जन गावे, छोड़ झूँठ जिन से सुख पावे, रख याद हिया में धार के। मेरे गुरु कहे समझा के। क्यों० ॥५॥ २८—जुँआ निषेध—[तर्ज—पूर्ववत्] जुँआ का खेल मत खेले, यूं सन्त कहे समझाय के। टेर॥ जुँआ और सट्टा यह दोई, इन कामों में लगा जो कोई, वह निज सम्पत बैठा खोई, कुछ लम्बी नजर लगाय के। तू सोच हिताहित पहले। जुँआ० ॥१॥ करते रंज दाव जब हारे, मन में खोटी नीत विचारे, निर्दय होय मनुष्य को मारे, कोई मरते शस्तर खाय के। कोई डोलत फिरे अकेले। जुँआ ॥२॥ सब दिन रात सरीखे जाते, पर सुख देख देख पछताते, कुआचरण जिनके हो जाते, कहे अँगुली लोग बनाय के। यह कुल कपूत शठ टेले। जुँआ० ॥३॥ पांडु पुत्र जो थे बलधारी, राज सहित द्रौपदी हारी, नल राजा भी ले निज नारी, वह निकला राज गमाय के। ग्रन्थों से निर्णय ले ले॥ जुँआ० ॥४॥ गुरु नन्दलालजी का फरमाना, जो तूँ है विद्वान सयाना, प्रथम व्यसन के संग न जाना, कहूं राग पंजाबी गाय के। तेरी कीरत चहुँ दिशि फैले। जुँआ० ॥५॥ २९—सद्‌बोध—[तर्ज—पूर्ववत्] नर क्यों पर जान सतावे, फिर बदला दिया न जायगा। टेर॥ गेंद दड़ी ज्यों फिरा भटकता, मनुष्य जन्म में आया अटकता, वह दुःख तुझको नहीं खटकता, कर भला भला हो जायगा, सत् गुरु तुझे चेतावे। नर क्यों० ॥१॥ अन्तर कपट मुख मीठो बोले, पर का छिद्र देखतो डोले, जाति न्याति में विग्रह घोले, जो फूला वह कुम्हलायगा। यों ऋषि मुनि सब गावे॥ नर क्यों० ॥२। गुरु ज्ञान असली नहीं पाया, वृथा यों ही जन्म गँवाया, रत्न छोड़ कर कंकर उठाया, कहो मोल

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

कहीं भी पायगा। फिर आखिर में पछतावे। नर क्यों० ॥४॥ मुनि नन्दलाल मेरे गुरु देवा, जिन शासन में सुरतरु जेवा, तन मन से कोई करले सेवा, गुरु ऐसा ज्ञान बतायगा। सब मिथ्या भ्रम मिट जावे॥ नर क्यों० ॥५॥ नं० ३०--[तर्ज--पूर्ववत्] नर क्यों पच पच मरता है; तेरे कौन साथ में आयगा ॥टेर॥ करे हिफाजत कुटुम्ब को पाले, वह भी तेरे हुकम में चाले, चूक पड़े होंगे मतवाले, तुझे क्षण में छेह दिखायगा। क्यों पाप पिंड भरता है। नर क्यों ॥१॥ दुनिया में थोड़ा सा जीना, जिसमें बोल लाभ क्या लीना, सच्चे मारग को तज दीना, न जाने कहाँ धस जायगा। फिर कारज क्या सरता है। नर क्यों ॥२॥ सच्चे गुरु की सुने न वाणी झूठी बात तुरत ले ताणी, न्याय अन्याय की बात न छाणी, तेरा यश अपयश रह जायगा, ना परभव से डरता है। नर क्यों० ॥३॥ फूला फिरे होय लटपट में, खोया जन्म झूठी खटपट में, करले अब कुछ भी झटपट में, फिर ऐसा न मौका पायगा, तेरा क्षण क्षण आयु खरता है। नर क्यों० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनि है, जिन शासन में बड़े गुणी हैं, जिणने पहले वाणी सुनी है, वह हर्ष हर्ष गुण गायगा। जो भवोदधि से तिरता है। नर क्यों० ।॥ ३१--संसार सराय--[तर्ज--पूर्ववत्] मेरी मान मुसाफिर अहो रे, क्यों सोवे बीच सराय के ।टेर। चार द्वार की यह सराय है, कई आय और कई जाय है, जिनकी गिनती कछु नाय है, कहे गुरुदेव जितलाय के, होशियार हमेशा रहो रे। मेरी मान० ॥१॥ राव रंक यहाँ सब ही आते, जो आते वही वापिस जाते, कोई खोते और कोई कमाते, कोई पूँजी मूल गंवाय के, वह चले गये बद होरे मेरी मान० ॥२॥ तेरा यहाँ पर होगया आना, आलस तज के लाभ कमाना, सोने का है नहीं जमाना, तू झूठा नेह लगाय के। अनमोल वक्त मत खोरे॥ मेरी मान० ॥३॥ इस सराय में ठग रहते हैं, गाफिल को वहीं ठग लेते हैं, खबरदार अब कर देते हैं, हम तो तुम्हें जगाय के। गफलत की नींद मत सो रे॥ मेरी मान० ।४॥ गुरु नन्दलाल मुनि हैं मेरे, न्याय बात कहे हक में तेरे। सत् पुरुषों का संग करले रे, दुर्लभ अवसर पाय के। लटपट मत कोई से हो रे॥ मेरी मान० ॥५॥ ३२ -सच्चा मेल --[तर्ज़- ख्याल] सुगति को मेलो करलो प्रेम से, अवसर मत चूको ॥टेर॥ साधु साध्वी श्रावक श्राविका चार तीर्थ गुणधारी। जिनकी सेवा करो तरो भव सिन्धु रहो हुशियारी रे॥ अवसर ०॥१॥ आगम वाणी सुन हो प्राणी, मिट जावे सब साँसा। चार गति में आवागमन का हो रहा अजब तमाशा रे॥ अवसर० ॥२॥ दया धर्म की गोठ करो नित, भांग भजन की पीवो। नियम नशा की लाली लावो, इण विध जुग जुग जीवो रे। अवसर० ॥३॥ जो होगा गुणवान जिन्हों के,

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

यह मेला मन भावे। दूजा मेला माँय जाय वह गांठ को दाम गँमावेरे। अवसर० ॥४॥ कहे मुनि नन्दलाल तणा शिष्य सुन लेना सब भाया। करी जोड़ अजमेर शहर सावन के महीने गाया। अवसर० ॥५॥ ३३- धर्म की दुकान—[तर्ज—ख्याल] तुम माल खरीदो त्रिशला नन्दन की खुली दुकान रे॥ टेर॥ शास्त्र रूप भरी पेटियाँ मुनिवर बड़े बजाजी। वजह वजह का माल देखलो कर अपना मन राजी रे॥ तुम० ॥१॥ जिन वाणी को गज है सांचो जरा फर्क मत जान। माप माप सत्गुरु देवे छे मत कर खेंचा तान रे॥ तुम० ॥२॥ जीव दया की मलमल भारी शुद्ध मन मिसरू लीजे। डबल जीन समता तणो सरे चावे सो कह दीजे रे॥ तुम० ॥३॥ तपस्सा को वंधागर भारी साड़ी ले संतोष। ऐसा कर व्यौपार जिन्हों से चेतन पावे मोक्ष रे॥ तुम० ॥४॥ महा मुनि नन्दलाल तणा शिष्य खूबचन्द कहे सार। काम नहीं टोटा तणो सरे नफो मिले व्यौपार रे॥ तुम० ॥५॥ नं० ३४—वैद्य गुरु—[तर्जः—पूर्ववत] ज्ञानी गुरु मिलिया वैद्य हकीम जी तुम दवा खरीदो॥ टेर॥ अष्ट कर्म का रोग अभ्यन्तर जनम मरण दुःख भारी। तुरत फुरत सब रोग मिटे लो दवा बहुत गुण कारी रे॥ तुम दवा० ॥१॥ छोटी बड़ी कई मीठी कड़वी तप गोली तैयार। आँख मींच कर झटपट ले लो मत कर और विचार रे॥ तुम० ॥२॥ समझ सयाना बार बार यह जोग मिले नहीं ऐसा। हित मुफ्त की दवा खिलावे कौड़ी लगे पैसा रे॥ तुम० ॥३॥ जिन वाणी का चूर्ण लिया कर व्याधि हरे तमाम। जो इतना भी शौक रखे तो हुवे परम आराम रे॥ तुम० ॥४॥ महा मुनि नन्दलाल तणा शिष्य जोड़ करी इम गावे। ऐसा मौका आन मिला कि रोग सोग मिट जावे रे॥ तुम दवा० ॥५॥ नं० ३५—गुरु वाणी— तर्जः—पनजी मुँडे बोल] वाणी साँची रे २ म्हारा ज्ञानी गुरु कही सो हिवड़े राची रे॥ टेर॥ अनन्त गुणी साकर से मीठी श्री जिनवर की वाणी रे। ठाम ठाम सुत्रों के माँही जाने दया वखाणी रे॥ वाणी० ॥१॥ अनन्त जीव सुन सुन ने तिरिया वली अनन्ता तिरसी रे। कई जीव व्रत मान काल में एक भव करसी रे॥ वाणी० ॥२॥ तीन तत्त्व कोई चतुर हुवे तो धारे असल हिया में रे। देव अरिहन्त गुरु निग्रन्थ अरु धर्म दया में रे॥ वाणी० ॥३॥ अनन्त काल कु गुरु ने भेंट्या भ्रम जाल में फँसी-योरे। अब के सत गुरु ज्ञानी मिल्या वन सुमति को रसीयो रे॥ वाणी० ॥४॥ अमृत ढोल हंसे मन मूरख जहर हलाहल चाखे रे। जोग बोल दश केरो मिलियो अब काँई ताके रे॥ वाणी० ॥५॥ भाँत भाँत मुनिवर समझावे चेते सो सुख पासी रे। रखो आस्ता वचन ऊपर निष्फल नहीं जासी रे॥ वाणी० ॥६॥ महा मुनि नन्द लाल गुरुजी, आछो ज्ञान बतायो रे। तिण प्रसादे खूब चन्द कहे तन मन

३०

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

हुलसायो रे ॥ वाणी० ॥७॥ नं० ३६--क्रोध निषेध--[तर्जः—पूर्ववत] क्रोध मत कीजो रे २ इण न्याय सुजान क्षम्या कर लीजो रे ॥ टेर ॥ परदेशी नृप को रानी विष मिश्रित आहार जिमायोरे। सबर करी सम भाव पणे सुर लोक सिधायो रे ॥ क्रोध० ॥१॥ गज सुख माल मुनि शम शाने नेम ध्यान को लीनो रे। सिर पर आग सही सोमिल पर कोप न कीनो रे ॥ क्रोध० ॥२॥ खन्दक मुनि की खाल उतारन भूप हुक्म फरमायो रे। सञ्चित वैर चुकाय आप मुक्ति पद पायो रे ॥ क्रोध० ॥३॥ कामदेवजी श्रावक त्रण उपसर्ग से से चलिया नाहीं रे। दृढ़तोई सुर देख गयो अपराध खमाई रे ॥ क्रोध० ॥४॥ मेतारज मुनि गुणी आप शुद्ध संजम में चित राख्यो रे। दया काज मर मिथ्या कुरकट को नाम न दाख्यो रे ॥ क्रोध० ॥५॥ वीर प्रभु सुर नर तिर्यंच का सह्या परीषह भारी रे। मेरु जिम रह्या अचल आप समता दिल धारी रे। क्रोध० ॥६॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनि की यही सिखावण खासा रे। उगणी से अस्सी के साल अजमेर चौमासा रे ॥ क्रोध० ॥७॥ नं ३७--मान निषेध--[तर्जः—पूर्ववत] मान मत कर जो रे २ श्री वीर प्रभु शास्तर में वरजो रे ॥ टेर ॥ तन को मान घणो मन माँही नव नव नखरा करतो रे। काल बली से जोर ने चाले ज्यूं घणो अकड़तो रे ॥ मान० ॥१॥ जो नर धन को मान कियो वह धन खोई न बैठा रे। आरम्भ कर कर कर्म बाँध वह नर्क में पैठा रे ॥ मान० ॥२॥ जोवन में रंग रातो मातो ऊँची रखतो अंखियाँ रे। वृद्ध भयो तब पर वश पड़ियो उड़े न मखियां रे ॥ मान० ॥३॥ विद्या बहुत पढ्यो मन चाही बुद्धि को विस्तारो रे। दया धर्म बिन सिख्यां गयो योंही हार जमारो रे ॥ मान० ॥४॥ तीन पांच मद में सुध भूल्यो सत्संगत से दूरो रे। मातंग कुल में जन्म लेही हो गयो भंड सुरो रे ॥ मान० ॥५॥ नीठ नीठ मानव भव पायो निर अभिमानी रहज्योरे। कहे मुनि नन्दलाल तणां शिष्य शिवपुर लीज्योरे ॥ मान० ॥६॥ नं ३८--कपट निषेध--[तर्जः—पूर्ववत] कपट मत कीजो रे २ थांने न्याय बात कहूँ सो सुन लीजो रे ॥ टेर ॥ कपट करी सीता को रावण ले गयो लंका माँही रे। काम कछु न सरयो जिसने अप कीरति पाई रे। कपट० ॥१॥ तीजे अंगे चौथे ठाणे फरमान वीर जिनवर को रे। माया गुढ़ माया से आयुष बाँधे तिर्यंच को रे ॥ कपट० ॥२॥ मल्ली जिन पूरब भव में तपस्या में कपट कमायो रे। जयन्त विमान से चवी वेद स्त्री को पायो रे ॥ कपट० ॥३॥ कपट करी कुड माप तोल कर मन में अति सुख पायो रे। पावे सजा सरकार बीज जब व पछतायो रे ॥ कपट० ॥४॥ नर से नारी होय कपट से नारी नपुं-सक थावे रे। गोतम पृच्छा माँही साफ ज्ञानी फरमावे रे ॥ कपट० ॥५॥ कहे मुनि नन्दलाल तणां शिष्य कपट बुरो जग मांही रे।

३१

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

उगणी से अस्सी में जोड़ अजमेर बनाई रे ॥ कपट० ॥६॥ नं—३९ लोभ निषेध—[तर्ज:—पूर्ववत] लोभ बलटी.जे रे २ जब भलो होय कहूं सो सुन लीजे रे ॥ टेर ॥ दो माशा सुवरण से अधिको कपिल लोभ बढ़ायो रे। लोभ थकी मन फिरयो जभी केवल पद पायो रे ॥ लोभ० ॥१॥ जिन रिख ने जिनपाल दोऊ मिलके पर [illegible] रे। जहाज फटी समुदर में जिनरिख प्राण गमाया रे ॥ लोभ० ॥२॥ लोभ अपाज कह्यो जिनवर ज्यूं गगन को अन्त न आवे रे। भव्य मुनि जो लोभ त्याग जग में यश पावे रे ॥ लोभ० ॥३॥ कई लोभ वश अकृत्य कर कर मन माँही सुख पावे रे। लोभ पाप को बाप लोक यों सब जग गावे रे॥ लोभ० ॥४॥ क्रोध मान और माया लोभ इन चारों का संग छोड़ रे। जब वितरागी होय कर्म बन्धन को तोड़े रे ॥ लोभ० ॥५॥ मेरे गुरु नन्दलाल कहे सन्तोष सदा सुख दायी रे। चतुर्मास अजमेर कियो सित्तर दश माहीं रे ॥ लोभ० ॥६॥ नं० ४०—हितोपदेश—[तर्ज:—पूर्ववत] समझ अभिमानी रे २ थारी नदी पूर ज्यों जाय जवानी रे ॥ टेर ॥ मैला ख्याल जोवन जावे बागाँ में गोट बनावेरे। सन्तन की सेवा में आवताँ काम बतावे रे ॥ समझ० ॥१॥ करी कान संझा का भान ज्यों डाभ अग्र को पानी रे। बिजली का भल कासी सम्पति वीर बखानी रे ॥ समझ० ॥२॥ एक सरीखी टोली मिल गप्पा में वक्त गमावे रे। प्रभु भजन नित नेम करत तुझे आलस आवे रे ॥ समझ० ॥३॥ टेढ़ी पगड़ी ऐंट घणी नित नया करे सिनगारा रे। धर्म बिना कई गया पशु जिम हार जमारा रे ॥ समझ० ॥४॥ कोई जीव को मती सता तूं प्याला प्रेम का पीजे रे। दुर्लभ नर भव पाय सार सत्संगत कीजे रे ॥ समझ० ।५॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनि तो न्याय बात फरमाई रे। जोड़ करी अजमेर पैंठ पन्द्रह के मांई रे ॥ समझ० ॥६॥ नं०—४१ बुढापा—[तर्ज:—पूर्ववत] बुढापो ऐसो रे २ मैं सांच कहूं यो है जम जैसो रे ॥ टेर ॥ जोबन जब लग बन्यो रहे नित मोज करे मनमानी रे। बुढापो आ लग्यो तो फिर नहीं रहे जवानी रे ॥ बुढापो० ॥१॥ अंजन मंजन का सब नखरा देवे भुलाई भोला रे। दाढी मूंछ चोटी ने पटा करदे सब धोला रे ॥ बुढापो० ॥२॥ नाक झरे मुख लार पड़े सब इन्द्रियां बल हट जावे रे। पड्यो रहे पोली में कोई नज़दीक न आवे रे॥ बुढापो० ॥३॥ उठत बैठत हालत चालत बुड्ढा को तन कम्पे रे। डगमग डगमग पांव पड़े मुख से कुछ जंपे रे ॥ बुढापो० ॥४॥ सच्चा साथी कोई न तेरे दिल में बात जमालेरे। जब लग जरा न आई तब लग धर्म कमाले रे॥ बुढापो० ॥५॥ तन से धन से ले ले लाभ यह वक्त फेर कब आवे रे। मेरे गुरु नन्दलाल मुनि साँची फरमावे रे॥ बुढापो० ॥६॥ नं०—४१ बधाई—[तर्ज:—पूर्ववत] बधाई गासां रे २

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

आनन्द से यहां पर हुआ चौमासा रे। टेर॥ जो जो भाव शास्तर के मांही वीर जिनन्द प्रकाशा रे। सुन सुन के भव जीव सफल कीनी मन आशा रे॥ बधाई॥१॥ दया धर्म का बजा नगारा झूंठ नहीं एक माशा रे। चार संघ में रही खुशी यह बात खुलासा रे। बधाई०॥२॥ मैंरे मुख से आज दिन तक निकली कड़वी भाषा रे। कर खमावना सबके साथ अतिहर्ष मनासाँ रे॥ बधाई०॥३॥ सब भाया मिल भुलने रहिजो मैं तो विहार कर जासाँ रे। दया धर्म का शरणा ले पासो सुख खासा रे। बधाई०॥४। साधु-साध्वी उत्तम पुरुष की रखजो फिर अभिलाषा रे। लीजो लाभ भक्ति का फले मुक्ति की आशा रे॥ बधाई०॥५॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनि के चरणों शीष नमासाँ रे। दिल में लग रही बहुत उमंग अब दर्शन पासाँ रे॥ बधाई०॥६॥ नं०-४३ जिन वाणी—[तर्जः-पूर्ववत] सुन जिन वाणी रे २ मत धर्म बिना खोवे जिन्दगानी रे॥ टेर॥ मनुष्य जन्म अरु आरज क्षेतर उत्तम कुल में आयो रे। दिर्घायु तन निरोग इन्द्रीय पूरण पायो रे॥ सुन०॥१॥ श्रमण महाण की सेवा करके ज्ञानामृत रस पीजे रे। साँची श्रद्धा धार धर्म में पराक्रम कीजे रे॥ सुन०॥२॥ यह दश बाताँ सर्व जीव को दुर्लभ श्री जिन भाखी रे। खोजी हो तो कर निर्णय शास्तर है साखी रे॥ सुन०॥३॥ मुढ हिताहित सुकृत दुष्कृत कबहूं नाहिं विचारयो रे। चिंतामणि सम मनुष्य जन्म सब फोकट हारयो रे॥ सुन०॥४॥ क्रूर कर्म हिंसादिक तजने भली भावना भावो रे। मेरे गुरु नन्दलाल मुनि को है फरमावो रे॥ सुन०॥५॥ नं०—४४ पाप छिपाया नहिं छिपे—[तर्जः—पूर्व वत] जिन फरमाया रे २ यह गुपत पाप नहीं छिपे छिपाया रे॥ टेर॥ बोयो बीज खेत में पूछाँ नाम नहीं बतलावे रे। उग बारने निकले तब चौड़े दर्शावे रे॥ जिन०॥१॥ घास फूस को ढेर करीने भीतर आग छिपावेरे। भशक भशक बलती बलती वह बाहिर आवे रे॥ जिन०॥२॥ आम पाल में दिया कहाँ तक छिपा छिपा कर रखसी रे। पाक गया तब हाथों हाथ हटियों पर बिकसी रे॥ जिन०॥३॥ लस्सण आदिक बाँट मसाला त्वाद करन दिल ठानी रे। गुप चुप दियो बघार रहे नहीं बदबू छानी रे॥ जिन०।४॥ या विध जुल्मी जुल्म करीने खूब किया मन मीठा रे। गुरु नन्दलाल कहे वह आखिर पड़सी फीटा रे॥ जिन०॥५॥ नं०-४५ नर तन से लाभ—[तर्जः—पूर्ववत] लाहो ले ले रे २ नर भव को टाणों नीट मिल्यो छे रे॥ टेर॥ पायो लक्ष्मी पुण्य प्रमाणे हालो तू सगलाने रे। करे राज को काज बात सब दुनियाँ माने रे॥ लाहो०॥१॥ कमठाणो चल रह्यो रात दिन बहुविध आरम्भ कीनो रे। खर्च किया बहु दाम नाम जग में कर लीनो रे॥ लाहो०॥२॥ बड़े बड़े रईसां से तूं ने मोहब्बत भी कर लीनी रे।

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

सन्त मुनि गुणी जन की संग पल भर नहीं कीनी रे ॥ लाहो० ॥३॥ बड़ो होय फूले मत थारे कौन कौन संग आसी रे। धर्म दलाली करी हरी जिनवर पद पासी रे ॥ लाहो० ॥४॥ कहे मुनि नन्दलाल तणां शिष्य सुन लो चित लगाई रे। मारवाड़ की शहर सादड़ जोड़ बनाई रे ॥ लाहो० ॥५॥ नं०-४६ शील—[तर्ज़ः—पूर्ववत] शील सुखदाई रे २ शुधपाल कई गया सुगति माईं रे ॥ टेर ॥ राजमती संजम लेकर गई गिरि गुफा के माईं रे। राख्यो शील मुनि को प्रति बोधी मोक्ष सिधाई रे॥ शील ॥ १ ॥ काम अंध रावण सीता को ले गयो लंका माईं रे। पूरण राख्यो शील लेई जस सुरपद पाई रे ॥ शील ॥ २ ॥ पद्मनाभ नृप सुर साधन कर द्रौपदि को मंगाई रे। चतुराई से राख्यो शील हरि लायो जाई रे ॥ शील ॥३॥ सुभद्रा के शिर सासू ने दीनो कलंक चढ़ाई रे दूर कियो सुर कलंक जगत में सुयश पाई रे ॥ शील ॥ ४ ॥ दुर्गति टले मिले सुख साता इनमें संशय नाई रे। मुनिनन्द लाल तणां शिष्य दिल्ली जोड़ बनाई रे ॥ शील ॥ ५ ॥ नं०-४७—कठिन कहेगा—[तर्ज — पूर्व वत] कठिन कहेगा रे २ जो वे पर चाही नहीं दवेगारे ॥ टेर ॥ इखुकार नृप भग्गू पुरोहित को छंड्यो धन मँगवायो रे। वमन कियो क्यों लियो राणियां साफ सुनायो रे ॥ कठिन० ॥१॥ रहनेमी मुनि को चित चलियो जाग्यो विषय विकारो रे। राजमती स्थिर कियो वचन को दे धिक्कारो रे ॥ कठिन० ॥२॥ राजा परदेशी को जड़ मुढ कहा केशी मुनी गुणधारी रे। धर्म पंथ में लाय आप दियो जन्म सुधारी रे ॥ कठिन० ॥३॥ सेणिक नृप को मुनि अनाथी दियो साफ फटकारी रे। राजा तू भी खुद अनाथ जरा बोल बिचारी रे ॥ कठिन० ॥४॥ उगणीसे अस्सी पन्द्रा में जेठ मास के माँई रे। मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य दिल्ली जोड़ बनाई रे ॥ कठिन० ॥५॥ नं०-बिगाड़ चार जनों से—[तर्ज—पूर्ववत] चतुर विचारो रे २ ई चार जणा नहीं करे सुधारो रे ॥ टेर ॥ राजा का परधान लोभ वश तुरंत न्याय को छंडे रे। भूंठ ने साचो कर दे साँचा ने दंडे रे। ॥ चतुर० ॥१॥ जाति न्याति में मोटो बाजै मुखियो पंच कहावे रे। मूका खाय जीमण में भर भर छाब उड़ावे रे ॥ चतुर० ॥२॥ साधु होकर बैठ सभा में मुगति पंथ बतावे रे। धनवंता को लिहाज रखे नहीं साफ सुनावे रे ॥ चतुर० ॥३॥ मूरख वैद्य दवा नहीं जाने उनसे दवा करावे रे। आयुष बल से बचे नहीं तो प्राण गंमावे रे ॥ चतुर० ॥४॥ महामुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य शहर जावरे शावेरे। फूटे पाप को भाँडो तब चारों पछतावे रे ॥ चतुर० ॥५। नं०-४६—सुधार चार जनों से—[तर्जः—पूर्ववत] चतुर विचारो रे २ इण चार जनाँ से हुवे सुधारो रे ॥ टेर ॥ निर्लोभी परधान होय खुद सदा ऐन में चाले रे। नीतिवंत

प्रतीतवंत प्रजा को पाले रे ॥ चतुर० ॥१॥ करे जाति की हमदर्दी जो मुखियो पंच कहावे रे ॥ मर्याद भंग को सुद्ध करे रिश्वत नहीं खावे रे ॥ चतुर० ॥२॥ साधु बैठ सभा के माहीं सत्यात्य दर्शावे रे। राजा होय चाहे रंक सभी को साफ सुनावे रे॥ चतुर० ॥३॥ वैद्यराज वैद्यक के वेता बुद्धिवंत कहावे रे। चारों कारण मिल्याँ तुरत ही रोग मिटावे रे॥ चतुर० ॥४॥ महा मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य जोड़ करी इम गावे रे। सांच कहूं यह चारों जणाँ जग में जश पावे रे॥ चतुर० ॥५॥ नं०—५०—बाई का कहना—[तर्ज-पूर्ववत] किण विध आऊं रे २ म्हारा घर सब थाने हाल सुनाऊं रे॥ टेर॥ देवर, जेठ ननद भौजाई सब ही को मन राखूं रे। घर में दानो सुसरो मांगे अमल तमाखू रे॥ किण० ॥१॥ घर मोटो छोटा नहीं मैं तो बड़ा घराँ की बाजूं रे। पग में बीछाँ नहीं बाजना आता लाजूं रे॥ किण० ॥२॥ घर में टावर छोटा माँगे गेहूँ का फुलका पोऊं रे। भोजन थाल परोसी पीछे छाछ बिलोऊं रे॥ किण० ॥३॥ सारो दिन धंधा में बीते पहर रात की पोढूं रे। पहर रात की पाछी उठूं घट्टी घमोड़ूं रे॥ किण० ॥४॥ मटकी ले पनघट के ऊपर पानी भरवा जाऊं रे दिन दोपहर चढ़े तब तक फुरसत नहीं पाऊ रे॥ किण० ॥५॥ कहे मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य घर धंधा यों ही चाले रे। उस बाई को धन्यवाद जो टाईम निकाले रे॥ किण० ॥६॥ नं०—५१—पैसे का खेल—[तर्जः—आसावरी] पैसा देखो जगत में ऐसा, यह तो काम बनावे कैसा। टेर॥ जो जो वस्तु चाहत दिल में ते ते ही जोग मिलावे। जो पैसा नहीं पास हुवे तो कोई नहीं बतलावे॥ पैसा० ॥१॥ राजादिक को वश कर लेवे न्याय अन्याय करावे। वैर विरोध करावन वाला पैसा ही भूंठ बुलावे॥ पैसा० ॥२॥ द्वादश जुग में होगया पैसा बुड्ढे का ब्याह करावे। बिन पैसे बिन रहत कुंवारा यही तो अचरज आवे॥ पैसा० ॥३॥ बड़े बड़े विद्वान जिन्हों को देश परदेश भ्रमावे। हंस हंस बात करावन वाला पैसा ही हेत तुड़ावे॥ पैसा० ॥४॥ पुण्य छता पुण्य बांध ले प्राणी यह अवसर कब आवे। मुनि नन्द लाल तणां शिष्य तुझने हित कर ज्ञान सुनावे॥ पैसा० ॥५॥ नं०—५२—काची काया—[तर्ज़ः—मल्हार] काची काया को रे कौन बिसास॥ टेर॥ हाड़ को पिंजर चाम लपेट्यो, जीव कियो तामें वास॥ काची० ॥१॥ दरपन देख देख तन निरखे, उपजावे मन हांस॥ काची० ॥२॥ कर कर स्नान सिन्गार बनावे, कर तो भोग विलास। काची० ॥३। मन ममता मेवा मिष्ठ आरोगे, आखिर जँगल वास॥ काची० ॥४॥ मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य अपनो, कर कर गुण पर कास॥ काची० ॥५॥ नं०—५३—अजब तमाशा—[तर्जः—तूं सुन म्हारी जननी आज्ञा देवो संजम

आदरु] जिनवर फरमायो रे सुन ले तमाशो इण जीव को ॥ टेर ॥ चौरासी लख जोनि जीवकी एक एक के मांय । जन्म मरण कर लिया अनन्ता कहुं तुझे समझाय रे ॥ जिनवर ॥१॥ स्वर्ग आठवां थकी चवी ने तिर्यंच भव में आय । अंत मुहुर्त को आयु पा ने गयो सातवीं मांय रे ॥ जिनवर ॥२॥ भूख प्यास शी उष्ण वेदना पर वश सही अनन्त । अब ही साम लूट जिन धर्म में सांच कहे छे सन्त रे ॥ जिनवर० ॥३॥ दीर्घ काल डुलतो हुवो सरे चहुं गति कियो निवास । जिहां जिहां जिन जिन भव मांही पूरण हुई न आश रे ॥ जिनवर० ॥४॥ उगणी से इकसठ चौमासो कीन्हो गढ़ चित्तौड़ । मुनि नन्द लाल तणां शिष्य गावे जुगत बनाई जोड़ रे ॥ जिनवर० ॥५॥ नं०—५४—छैल छबीला—[तर्ज:—ममत मत करजो राज मन में] कुमति को बनियो रे छैलो, थे दियो सुमती ने ठेलो ॥ टेर ॥ सुख सम्पति दातार मुनिश्वर चेताने देई हेलो । धर्म काम में ढील करे मत, नीठ मिल्यो तुझ मेलो ॥ कुमति० ॥ ॥ तृष्णा वश अति कूड़ कपट कर धन कीन्हो बहु भेलो । जहाँ को तहाँ रहेगा पृथ्वी पर जासी आप अकेलो ॥ कुमति० ॥२॥ मुख सेती बोले अति मीठो मन मांही अति मैलो । पर को धन ठग ठगने खावे खरचे नहीं अधेलो ॥ कुमति० ॥३॥ षट रस खातो होय रह्यो मानो जैसे रूई को थैलो । तपस्या कर तन को नहीं गाले तो परभव सुख किम लेलो ॥ कुमति० ॥४॥ कहे मुनि नन्दलाल तणां शिष्य सूरत सम्भाल सबेलो । इण अवसर में ले ले लाभ फिर सद्गुरु याद करेलो ॥ कुमति० ॥५॥ नं०—५५ सद्बोध—[तर्ज:- मूं थने नहीं छिड़ानूं रे बीरा] मत कर रे अनीति भाया तुझे साँच कहे ऋषि राया ॥ टेर ॥ लंकपति सीता हर लाया, तो जग में अपयश पाया ॥ मत० ॥१॥ पद्मोत्तर नृप द्रौपदी मंगाई, तो कर्मों से राज गमाया । मत० ॥२॥ कंस पिता को पिंजर घर दीनो, तो हरि परभव पहुँचाया । मत० ॥४॥ श्रीदामराजा को नन्द कुमति से, जैसा ही ते फल पाया ॥ मत० ॥५॥ इम जान प्राणी छोड़ अनीति, तुझे न्याय करी समझाया ॥ मत० ॥६॥ मुनि नन्दलाल तणां शिष्य गावे, तो नीति से बहु सुख पाया ॥ मत० ॥७॥ नं०—५६—भाग्य—[तर्ज:-डगमग नहीं करना नहीं करना] भाग्य बिन नहीं पावे नहीं पावे तेरा चित ने क्यों ललचावे ॥टेर॥ पुत्र के कारण पीर पैगम्बर देवी देव मनावे । इम करतां जो तुष्ट हुवे तो रंक राव हो जावे ॥ भाग्य० ॥१॥ लोभ के काज कई दक्षिण में कई पूरब में ध्यावे । अर्थ मेलवा कोई उत्तर में कोई पच्छिम जावे ॥ भाग्य० ॥२॥ सिंहल देश और सब्बर देश कोई मरुधर देश सिधावे । तृष्णावश निज कुटुम्ब आपको कोई याद नहीं आवे ॥ भाग्य० ॥३॥ पुत्र पिता और पिता पुत्र को नार पति ने चावे । स्वारथ जो

रण नहीं हो तो परभव में पहुँचावे ॥ भाग्य० ॥४॥ कहे मुनिलाल तणां शिष्य दमड़ी संग नहीं जावे । दया धर्म दिल धार जिन्हों
भव भव में सुख पावे ॥ भाग्य० ॥५॥ नं०—५७—दो मुखी दुनियां—[तर्जः—आसावरी] ऐसी दुनिया को कांई पतियारो
से बच कर रहिये न्यारो ॥ टेर ॥ साँच भी बोले झूँठ भी बोले बोल बोल नट जावे । पंचां में परतीत न जांकी सौ सौ सौगन्द
ावे ॥ ऐसी० ॥१॥ झूंठी साख भरे मतिहीना साँची कर दर्शावे । पल में पलटताँ देर न लागे लाज शरम नहीं आवे ॥ ऐसी० ॥२॥
योढा दूना करे वस्तु में तोपण कसर बतावे । कर कर बहुत बढाव जुगत से भोला ने भरमावे ॥ ऐसी० ॥३॥ मुनि नन्दलाल तणाँ
ष्य गावे कई नर झूँठ चलावे । अन्त के तन्त तो न्याय चलेगा साँच ने आँच न आवे ॥ ऐसी० ॥४॥ नं०—५८—काची काया
का गर्भ—[तर्जः—ज्ञानी गुरु मत भूलो एक घड़ी] जीया काँई फूले रे काची काया, काची काया रे ज्ञानी फरमाया ॥ टेर ॥ गोरे
दन सुख माल घणेरो, हारे रूप मनोहर तूं पायो ॥ जीया० ॥१॥ माता को रुद्र ने शुक्र पिता को हाँरे दोई मिल बन्धी ॥ काया ॥
ीया० ॥२॥ नौ महीना तूं रहयो मात गर्भ में हांरे चाम चिडी जिम लटकाया ॥ जीया० ॥३॥ महा अशुचि को ठाम जणी मे हांरे
ास बस्यो काँई सुख पाया ॥ जीया० ॥४॥ जन्म ले इने दुःख भूल गयो तूं हांरे नखरा करे अब मन चाया ॥ जीया० ॥५॥ नर भव
ाय निरंजन जपले हाँरे साँच कहे तुझे मुनिराया ॥ जीया० ॥६॥ मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य ऐसे संजीत जोड़ करी ने गाया ॥
ीया० ॥७॥ नं०-५९—ज्ञान को फटको—[तर्जः—लाल त्रिशला को प्यारो रे] सुनावे गुरु ज्ञान को फटको रे ॥ टेर ॥ ज्ञान
जेलो होत हिया में, मिटे मिथ्या तम घटको रे ॥ सुनावे० ॥१॥ जागो जागो जिया आंख उघाड़ो, नीर वैराग्य को छिटकोरे ॥
ुनावे० ॥२॥ अशुचि पिण्ड अनित्य तन यह तो, जैसे मिट्टी को मटको रे ॥ सुनावे० ॥३॥ कर पर निन्दा अनाहुत बोली, मक्खी
म मत दो चटको रे ॥ सुनावे० ॥४॥ संध्या को भान करी कान ज्यूं थारो, अथिर जोबन को लटको रे ॥ सुनावे० ॥५॥ तप जप
ान दया मग सूधो, कभी बीच में नहीं अटको रे ॥ सुनावे० ॥६॥ यह सब ठाठ रैन सुपने का, रखो पर भव को खटकोरे ॥ सुनावे०
॥७॥ मुनि नन्दलाल दयाल की वाणी, सुन्या से मिटे भव भव भटको रे ॥ सुनावे० ॥८॥ नं०-६०-कर्म गति—[तर्जः—पदम प्रभु
पावन नाम तिहारो] चेतन रे या कर्मन की गति न्यारी, कर सुकृत एम विचारी ॥ टेर ॥ रावण राय त्रिखंड को नायक ले गयो
राम की नारी । लक्ष्मण हाथे परभव पहुंचो, जाने दुनिया सारी ॥ चेतन० ॥१॥ अयोध्या नगरी को हरिश्चन्द्र राजा तारा दे तस घर

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

नारी । माथे पुरी लेय हाट में बिकिया कुंवर रोहितास लारी ॥ चेतन० ॥२॥ कृष्ण नरेश्वर त्रिखंड भुगता यादव कुल अवतारी । अन्त समय जाय मुआ अकेला वन कुसुम्बी मुझारी ॥ चेतन० ॥३॥ कुण्डरीक राय वैराग्य धरी ने लीनो संजम भारी । कायर होय पीछा घर मांही आया पहुँचे नरक मुझारी ॥ जेतन० ॥४॥ चन्दनराय मलयागिरि रानी पुत्र सायर नीर भारी । कर्म जोगे बिछुड़ो पड्यो जाके पुण्य से सम्पति पाया सारी ॥ चेतन० ॥५॥ खूब चन्द कहे या कर्मों की रचना सुण लीजो नर नारी । इम जाणी ने धर्म अराधो सुख मिले आगे त्यारी ॥ चेतन० ॥६॥ नं०-६१—भलाई—[तर्ज़ः—पूर्ववत] चेतन रे तू ले जग बीच भलाई, एहवो जोग मिले कब आई ॥ टेर ॥ पुण्य प्रभाव सब ही सम्पति, पायो नर भव माँही । कुछ सुकृत का काम बने तो कर तेरी है समथाई ॥ चेतन० ।१॥ कृष्ण नरेश्वर पडोहो बजायो नगरी द्वारका मांही । उत्तम जन सुण संजम लीनो देखो ज्ञाता माही ॥ चेतन० ॥२॥ चरण तले सुशल्या ने राख्यो हस्ती का भव माही । शुभ परिनाम संसार घटायो कीनी जबर कमाई ॥ चेतन० ॥३॥ नेम प्रभु ने बन्दन जाता गोविन्द मारग माईं । ईटाँ को पुंज देख बुढा का फेरा दिया मिटाई ॥ चेतन० ॥४॥ भवसागर तिरजारे भोला सतगुरु देत चेताई । मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य गावे पारसोली के माँईं ॥ चेतन० ॥५॥ नं०—६२—कैसे निस्तार—[तर्जः—प्रभु माने आपको आभार] कैसे तेरा होयगो निस्तार, पर भव की तुझे नाय परवा करत कुछ विचार ॥ टेर ॥ अलप आयुष अनन्त तृष्णा रहत मग्न मुझार । खूब रुच रुच बाँध लीनो पाप को सिर भार ॥ कैसे० ॥१॥ मन मते बहु ज्ञान पढ़ने रीझवे नर नार । वाद विवाद कर जन्म खोयो काढ्यो नहीं कुछ सार ॥ कैसे० ॥२॥ आलसी धर्म नेम करता पाप में हुशियार । जनम भर जस नाँहि लीनो नहीं कीनो उपकार ॥ कैसे० ॥३॥ महा मुनि नन्द लालजी अति दीपता अनगार् । कहत यों तस शिष्य निश्चय झूंठ यो संसार ॥ कैसे० ॥४॥ नं०-६३—विवेकी आत्मा—[तर्जः—क्या तन माँजता रे एक दिन मिट्टी में मिल जाना] विवेकी आतमा रे अरे तूं अब तो निर्मल होजा ॥ टेर ॥ गुरु सेवा की गंगा इनमें पाप मैल को धोजा । भारी हो रहा बहुत दिनों से हलका करले बोझा ॥ विवेकी० ॥१॥ ज्ञान रूप दर्पण के अन्दर निज आतम को जोजा । बार बार सतगुरु समझावे एब दोष सब धोजा ॥ विवेकी० ॥२॥ मुक्ति का मेवा चखे तो ममता मही विलोजा । जो अब मौका चूक गया तो खुले नर्क में रोजा ॥ विवेक० ॥३॥ अमृत फल की इच्छा होय तो बीज धर्म का बोजा । कर नेकी का काम बदी से अब तो दूर खलोजा ॥ विवेकी ॥ ४ ॥ सत्य धर्म की

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

सेज बिछी है सोना हो तो सोजा। कहे मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य मिले मोक्ष मोजा ॥ विवेकी ॥ ५ ॥ —परदेशी मानवी—

नं० ६४ [तर्ज पूर्व वत] प्रदेशी मानवी रे अरे तूं इधर उधर क्या जोता ॥ टेर ॥ मेरा मेरा कहे मुँह से कहने से क्या होता। विन स्वारथ बिन कोई न तेरा पुत्र नार क्या पोता ॥प्रदेशी०॥१॥ घर धंधा में लदा फिरे ज्यों परजापत का खोता। ठाठ पडा रहेगा पृथ्वी पर कुटुम्ब रहेगा रोता ॥ प्रदेशी ॥ २ ॥ तन मंदिर को छोड़ जायगा ज्यों पिंजरे से तोता। खडे रहेंगे मित्र देखते आप खायेगा गोता ॥ प्रदेशी० ॥३॥ हुवा उजेला जागी नींद से बहुत वक्त का सोता। सच्चा मोती छोड़ दिवाने झूंठा पोत क्यों पोता॥ प्रदेशी० ॥ ॥ ४ ॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनि की वाणी सुनले श्रोता। नैया पार लगे एक छण में सब कारज सिध होता ॥ प्रदेशी० ॥ ५ ॥

नं० ६५ — सच्चाझूला —[चतुर नर ईण विध चौपड़ खेलरे] चतुर नर इण विध झूले झूलरे, अरे म्हारा प्राणीयाँ ॥ टेर ॥ भाई विनय मूल दरखत बोईये, चतुर नर ज्ञानकी शाख फैलायरे। अरे म्हारा प्राणीया ॥ चतुर ॥ १ ॥ भाई दग डरजा की रासड़ी चतुर नर गाडी गांठ लगायरे ॥ अरे ॥ चतुर ॥ २ ॥ भाई पाट कड़ी समकीत भलो चतुर नर गाडा पांव ठेरायरे ॥ अरे ॥ चतुर ॥ ३ ॥ भाई तप संजम गोडी लीजिये चतुर नर डर मत आन लगार रे ॥ अरे ॥ चतुर ॥४॥ भाई सन्मुख हींदो मोक्ष को चतुर नर सूधो हीजाजे ठेठ रे ॥ अरे ॥ चतुर ॥ ५ ॥ भाई पच्छिम हींदो पुग्लो चतुरनर तो पण है सुरलोक रे ॥ अरे ॥ चतुर ॥६॥ भाई यह झूलो ऋषि झूलते चतुर नर जावे मोक्ष मुझार रे ॥ अरे ॥ चतुर ॥ ७ ॥ भाई श्री श्री गुरु नन्दलाल जी चतुर नर नित नित नमो चरणारे ॥ अरे ॥ चतुर ॥ ८ ॥ भाई खूबचन्द कहे नीमच विषे चतुर नर एहिज झूलो सार रे ॥ अरे ॥ चतुर ९ ॥

नं० —६६ — अर्ज — [तर्ज:-ख्याल] अर्ज हमारी सुन लीजिये श्री मंदिर जिनजी ॥ टेर ॥ विदेह क्षेत्र में आप विराजो मैं इण भरत मुझार। किण विध अंतर बात सुनाऊं लग रही दिलमुझार हो ॥ श्री ०॥१॥ चर्म जिनेश्वर हुआ भरत में त्रिशला नन्दन वीर। जिनके आगे था चहुँ नाणी गौतम जैसा वजीर हो॥श्री०॥ २ ॥ सैणिक राजा थो पर मत में नहीं त्याग पच्च खान। भव अंतर पहिला जिन होसी भाख्यो श्री भगवान हो ॥श्री०॥ ३ ॥ राज गृही को अर्जुन माली पाप किया था भारी। छः महीना के माँयने सरे मेल्यो मोक्ष मंझारी हो ॥ श्री ॥ ६ ॥ परदेशी राजा का रहता लोही खरड्या हाथ। उनको एक भव अंतरे सरे मोक्ष कही साक्षात हो ॥ श्री ० ॥ ५ ॥ एवंता कुमार लघु था तिण हिज भव के मांय। वीर जिनन्द सुदृष्टि करने दीना मोक्ष पहुचाय हों ॥ श्री० ॥६॥ कई स्वर्ग कई शिवपुर मेल्या एक भव में शिव पासी।

३६

दे वल ज्ञानी मुझ किम भुल्या दिल में उपजे हांसी हो ॥ श्री ॥ ७ ॥ आप कहो तु हाजिर नहीं थो निर्णय किण विध थावे । हाजिर रहने निर्णय करतो तो किम नाय बतावे हो ॥ श्री० ॥ ८ ॥ मृगो लोडो थो घर मांही कब वह दर्शन आया । कर दिना निस्तार वीर प्रभु शास्तर में फरमाया हो ॥ श्री० ॥९॥ मुझे भरोसा आपका खरे सुन हो दीन दयाल । खुबचन्द की यही अर्ज है सुख देवो दुःख टाल हो ॥श्री० ॥ १० ॥ नं० ६७ -कलियुग के मानवी-[तर्ज-थारो धर्म बिना यह मनुष्य जन्म कांई काम को] हो गये नीत हीन कितनेक कलु के मानवी ॥ टेर ॥ जहाँ तक साता सर्व बात की धर्म प्रताप बतावे । जराक जामें कष्ट पड़े तो तुरत ढसल हो जावे ॥ होगये०॥१॥ पांच जणा मिल करे पानड़ी हाथां से लिख जावे । मांगे तो दमड़ी नहीं देवे घुर को कर नट जावे ॥ होगये ॥२॥ स्वधर्मी की सार न पूछे उलटो अवगुण गावे । धरयो हुओ धर्मादो सो भी आप हजम कर जावे ॥३॥ होगये० ॥ एक एक की पक्ष करे नहीं लम्बी नजर लगावे । धर्म काम में घाले गबोला सकत पंच बन जावे ॥ होगये ॥४॥ झूठ बात नहीं कही जगत में सबही को दर्शावे । महामुनि नन्दलाल तणां शिष्य कोटा शहर में गावे ॥ होगये ॥ ५ ॥ नं० ६८ --- क्यों हारे --- [तर्जः-- पूर्ववत] क्यों सूतो होय नचींत जाग सुख पायगा ॥ टेर ॥ यह सब ठाठ रैन सुपने का अल्प उमर खुट जायेगा । छोड़ सराय मुसाफिर ज्यों बिन टेम कभी उठ जायगा॥ क्यों ॥ १ ॥ थोड़ा सा जीवत के खातिर जो तू जुल्म कमायगा । आम स्वाद के काज राज तज दियो जिम पछतायगा ॥ क्यों ॥ ॥२॥ दुनियां तो सब है मतलब की जो इन में ललचायगा । तेरा किया तूं भुगतेगा जद कोई काम नहीं आयगा ॥ क्यों ॥ ३ ॥ जो जो वक्त अमोलक तेरी गई न पिछी आयगा । दया धर्म बिन अहो मानव तूं भव भव गोता खायगा ॥ क्यों ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनी वैराग्य झडी बर सायगा । करी जोड़ अजमेर शहर सब मिथ्या भ्रम मिट जायगा ॥ क्यों ॥ ५ ॥ नं० ६९-चेतावनी - [तर्ज - पूर्ववत] क्यों हारे तूं अनमोल मनुष्य भव पाय के ॥ टेर ॥ जो जो किया नेक बद कामा देख हिसाब लगाय के । अकड मकड में भूल मत अखियों पे ऐनक लगाय के ॥ क्यों ॥ १ ॥ सत्पुरुषों का संग किया नहीं रहा दूर शरमाय के । कुव्यसनी से किया प्रेम हाथों से हाथ मिलाय के ॥ क्यों ॥ २ ॥ स माया जोडी गरीबों की जान सताय के । ज्यों त्यों अपना काम बनाया झूठी जाल फैलाय के ॥ क्यों ॥ ॥ ३ ॥ दया धर्म का ले ले लाभ यों सन्त कहे समझाय के । नहीं तो लोह बनियां ज्यूं आगे रोवेगा पछताय के ॥ क्यों ॥ ४ ॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनी तो सच्ची कहे सुनाय के । जैपुर शहर चार सन्त मिल कर कियो चौमासो आयके ॥ क्यों ॥ ५ ॥ नं० ७० कांई काम को

४०

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

[तर्ज -पूर्ववत] थारो धर्म बिना यो मनुष्य जन्म कांई काम को ॥ टेर ॥ सज पोशाक सैल करवाने जावे सुबह और श्याम को । धन जोबन का मद में छकियो भूल गयो प्रभु नामको ॥ थारो ॥१॥ सत्गुरू की परवा नहीं थारे लोभ लग्यो नित दाम को । पाप कर्म में मन दौडे ज्यों घोडो बिना लगाम को ॥ थारो ॥ २ ॥ क्या फूले तू देख देख तन हाड मांस लोही चाम को । उमर भर जस नाहीं लियो थें कियो काम बद नाम को ॥ थारो ॥३॥ कुटुम्ब काज मेहनत कर कर धन भेलो कियो हराम को । निज हाथों से कभी नहीं सुकृत दियो छदाम को ॥ थारो ॥४॥ मेरे गुरू नन्दलाल मुनी बतलावे पंथ शिव धाम को । दया दान तप नेम पाल पद मिले तुझे आराम को ॥

नं० ७१ —निन्दक— [तर्ज-म्हांने वीतराग की वाणी प्यारी लगे रे] निन्दक पर के मांस सदा खुश रेवे रे ॥ टेर ॥ दिया ज्ञान गुरू देव दया कर धर्म पंथ में लाया । भूल गया उपकार सहा शठ उलटी करे बुराया ॥ निन्दक ॥ १ ॥ चौपद मांही श्वान नीच पंखी में काग विशेष । निन्दक सब में नीच बतायो नीती शास्त्र लो देख ॥ निन्दक० ॥ २ ॥ अंडशरो कणकुंडो छांडी विष्टा पर चित देवे । ज्यों निन्दक अवगुण के काजे छिद्र ताकतो रेवे ॥ निन्दक० ॥ ३ ॥ सुनी बात सांची झूठी को निर्णय करे न कोय । फक्त रहे निन्दा कर वा में दियो जमारो खोय ॥ निन्दक० ॥ ४ ॥ होय अशुचि साफ उदक से निन्दक मुख से चाटे । जुग जुग सदा जीवतो रहिजे मुझ आतम हित माटे ॥ निन्दक० ॥ ५॥ पाप पन्दर मो लागे निन्दक निन्दा छोड़ परयई । महा मुनि नन्दलाल तणां शिष्य दिल्ली जोड़ बनाई ॥ निन्दक ॥६॥

नं० ७२—ज्ञान बिना—[तर्जः-पूर्ववत] ज्ञान बिन कभी नहीं तिरना, करा तुम अच्छी तरह निरना ॥टेर॥ ज्ञान दया का मूल रुल यह फरमाया वीत राग । ज्ञान बिना सोहे नहीं ज्यूं हंस सभा में काग ॥ ज्ञान० ॥ १ ॥ गृहस्थ धर्म और मुनि धर्म ये दोनो ज्ञान आधार । ज्ञान बिना संसार का सरे चले नहीं व्यवहार । ज्ञान० ॥ २ ॥ पहिले सीखते ज्ञान गुरू से देखो सूत्र का न्याय । फिर शक्ति अनुसार तपस्या करते वो मुनि राय ॥ ज्ञान० ॥ ३ ॥ विद्या बिन नर पशु सरिखा फक्त मनुष्य को रूप । विद्या है धन मित्र सभा में आदर देवे भूप ॥ ज्ञान० ॥ ४ ॥ ज्ञानी रहे पाप से बचकर ज्ञान पढो दिन रैन । मेरे गुरू नन्दलाल मुनि की यही हमेशा केन ॥ ज्ञान० ॥ ५ ॥

नं०७३—हितोपदेश —[तर्जः-फाग] कांई फिर तो रे ओर अवासो में ॥ टेर ॥ दिन कर ज्ञान सुनावत ज्ञानी तू समझ, समझ इण सानी में ॥ काँई ॥ १ ॥ नर भव रत्न चिंतामणी सरीखो, क्यूं तू हारे इक ओनी में ॥ काँई ॥२॥ बस दिन ढोर कोन छीपने की, जब आवेगो काल निशानी में ॥ काई० ॥ ३ ॥ पाप की पोट धरी शिर तें ।, प्रभु नहीं भज्यो जिंदगानी में ॥ कांइ० ॥ ४ ॥ मुनि

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

नन्दलाल तणा शिष्य मन में, मगत मीन जिम पानी में ॥ काँई० ॥ ५ ॥ नं०७४—हितोपदेश—[तर्जः-पूर्ववत] पर भव में तब पछतावे लो ॥टेर॥ ज्ञानी गुरू ज्ञान झडी बरसावे। जो इनमें नहीं नहावे लो ॥पर०॥१॥ दान दया बिन नर यों ही। जो तू ऐल गमावे लो ॥ पर०॥२॥ कर कर पाप कर्म धन संचे। तू संग काँई ले जावेलो ॥ पर० ॥३॥ स्वजनादिक तेरे कोई न साथी। जद धका नर्क में खावे लो ॥ पर० ॥ ४ ॥ मुनि नन्दलाल तणा शिष्य गावे। तू करणी जैसा फल पावे लो ॥ पर० ॥ ५ ॥ नं०७५—रसना-[तर्ज़-खोटो लालची यो] रसना मतवाली मत बिना बिचारी बोल ॥ टेर ॥ पर निन्दा में प्रसन्न घणी तू। कलह करावन हार ॥ रसना० ॥१॥ स्वजन स्नेही मित्र के। तू भेद पडावन हार ॥ रसना० ॥२॥ स्वाद में बडी चटोकडी। कई भ्रष्ट किया नर नार ॥ रसना ॥३॥ बात बिगाडे बोलने ने। तू खाय बिगाड़े अहार ॥ रसना० ॥ ४ ॥ खूब मुनि तो इम कहे। गुणि का गुण गाहर वार ॥ रसना० ॥५॥ नं० ७६–बेटी को शिक्षा [तर्जः-पूर्ववत] बाई सुन हित शिक्षा तू जातिवंत कुलवंत ॥ टेर ॥ सासू सुसरा जेठ की। तू करजे शर्म सदीव॥ बाई०॥१॥ चूक पड्या देवे ओलम्भो। तू गलती लीजे मान ॥ बाई० ॥२॥ कभी करे मत रूसनो। तू सबस रखजे प्रेम ॥ बाई० ॥३॥ करजे सेवा संतन की तू पालजे धर्म आचार ॥ बाई ॥४॥ खूब मुनि दिल्ली विषे। करी बिदा समझाय ॥ बाई० ॥५॥ नं०७७—तपस्या—[तर्जः-कैसो जोग मिल्यो छेरे] तपस्या घणी कठिन छेरे। अन्न त्याग मन को बश करनो घणो कठिन छेरे ॥ टेर ॥ दिन में खावे निस में खावे खावे सांझ सबेर। कलह मचावे तपे तपावे जो होवे कुछ देर ॥ तपस्या० ॥१॥ अन्न पेट में पड्या बिना कुम्हलावे कोमल सुवा काचो पाको कुछ गिने नहीं भूंडी बरन भूख ॥तपस्या० ॥ ३ ॥ बस्तर बेचे शस्तर बेचे बरतन बेची खावे। जिम तिम करने पेट भरे पण भूखो रह्यो न जावे ॥ तपस्या० ॥ ४ ॥ महा मुनि नन्दलाल तणा शिष्य जोड़ करी रतलाम। ताको धन्य तपस्या करके मन को रखे मुकाम ॥ तपस्या ॥ ५ ॥ नं०७८—जोबन—[तर्जः-महाड] जोवन थारो है यह पतंग को रंग, इम जाणी करो सतसंग ॥ जोवन॥ टेर ० ॥ श्याम घटा की बीजली रे ज्यूं पीपल को पान। नदी पूर किलोल दधि को मान चाहे मत मान ॥ जोवन० ॥१॥ बाट बटाऊ पाहुणा रे जेम खलानो धान। बाजीगर ना खेल सरीखो जेम संझा को भान ॥ जोबन० ॥ २ ॥ मयुर अवाज सुणी अहि भागे जैसे इस्पेशल रेल। धनुष थी बाण छूटा जिम जावे पवन के आगे पेल ॥ जोबन० ॥ ३ ॥ भूले मती जोबन के मटके सब सुपना को ठाठ। कर ले कमाई है मध्य वेला यह बुधवारयो हाट ॥ जोबन० ॥ ४ ॥ मेरे गुरू नन्दलाल कहे छे समझ समझ नर एम। वृद्धअवस्था जब लग

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

दूरी तूं पाल धर्म को नेम ॥ जोबन० ॥ ५ ॥ नं०७६—कर्म गति—[तर्ज:-पूर्ववत] कर्म गति जाने कौन सुजान, कोई मत करज्यो
अभिमान ॥ टेर ॥ मैं हिज हुँ सुख सम्पति वाला मुझ सम जग में नांय । लाखों विमान के नाथ सुरेन्द्र उपजे एक इन्द्री में आय ॥
कर्म० ॥ १ ॥ पुत्र पिता बंधव निज नारी कोई न किसका होय । सूरो कंथा कोणिक मणि रथ को सुत्र से लीजि जोय ॥ कर्म० ॥२॥
पाँचों ही पांडव बारह वर्ष तक दुख भुगते बनवास । नगरी वैराट रहे छिप छाने नृपति के घर दास ॥ कर्म० ॥३॥ भूखा मरता मानवी
रे साल छपन के माँय । कई सूवा कई भ्रष्ट थया ॥ रडबडिया अकुलाय ॥ कर्म० ॥४॥ शास्त्र की वाणी सुन ले प्राणी कर ज्यो दीर्घ विचार
मेरे गुरू नन्दलाल मुनिश्वर कहे छै वारम्बार ॥कर्म०॥५॥ नं० ८०-तपस्या-[तर्ज पूर्ववत] मानव शुद्ध तपस्या कर इण न्याय थारा
कर्म पुंज झड जाय ॥ टेर ॥ सिंह तणा सुण शब्द तुरत ही मृग भागे वन माँय । सूर्य प्रकाश के आगल जैसे अंधकार विर लाय
॥ मानव० ॥ १ ॥ पिंजण की फट कार लग्या जिम जाय रूई नो पेल । आग के आगे बारूद न ठहरे साबुन के संग मेल ॥ मानव० ॥
॥ २ ॥ सहस वर्ष में नर्क जीवों के कर्म क्षय नहीं थाय । इतना कर्म मुनिवर जी तोड़े चउथ भक्त के माय ॥ मानव० ॥ ३ ॥ जिव
मखन जिम काया कटोरी तप अग्नि की आंच । कर्म मेल की जलत खटाई समझु मानो सांच ॥ मानव० ॥ ४ ॥ मेरे गुरू नन्दलाल
मुनिश्वर कहे छे वारम्बार । भव भव में सुख होय निरन्तर निज आतम गुण धार ॥ मानव० ॥ ५ ॥ नं०८१-पाप की काट जंजीर-
[तर्जः-पूर्ववत] समझ नर पाप की काट जंजीर पायो दुर्लभ मनुष्य शरीर ॥टेर॥ आतम गुण सेवन कर प्राणी निर्भय थई मत सोय ।
सुरेन्द्र आस करे इस तन की फोकट में मत खोय ॥ समझ० ॥ १ ॥ यह तन साधन मोक्ष को रे और गति में नाय । समझु थई ने क्यों
न विचारे मानव नाम धराय ॥ समझ० ॥२॥ काचो कुम्भ ज्यों काच की शीशी जिम वालू नो ढंग । विनशत वार कछु नहीं लागे छिन
छिन में रंग विरंग ॥ समझ० ॥ ३ ॥ माणक हीरा मोती से मुंघो मोले मिलतो नांय ॥ मोक्ष पहुंचा मुनिवर केई आवागमन मिटाय ॥
॥ समझ० ॥ ४ ॥ मेरे गुरू नन्दलाल कहे तुझे प्यारा लगे पकवान । आखिर यह तन तेरो नहीं मान चहे मत मान ॥ समझ० ॥ ५ ॥
नं०८२—सद् बोध— तर्ज पूर्ववत्] कुमति संग छोड़ो छोड़ो छोड़ो छोड़ो छोड़ो रे । सुमति संग जोड़ो जोड़ो जोड़ो जोड़ो जोड़ोरे
॥ टेर ॥ मानुष्य को भव दुर्लभ पायो देव करे तेहनी आश । मांग्यो मिले नहीं मोल मिले नहीं मिलिये तो करिये तलाश हो ॥ कुमति०
॥ १ ॥ रतन जड़ित की सुवर्ण चर्वी चुल्हे दीनी चढाय । चन्दन बाले मांही खल राँधे एहवो तू मत थाय हो ॥ कुमति० ॥ २ ॥ करज-

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

दार पहले होई बैठो फिर लावे करज उधार। चुकाया विन सूत्र सम्भालो नहीं होगा छुट कार हो ॥ कुमति० ॥ ३ ॥ जन जन सेती बैर बसावे होय रह्यो अलमस्त। पीपल पान ज्यों भान संभ्या को आखिर होवे छे अस्त हो ॥ कुमति० ॥ ४ ॥ अब के जोग मिल्यो मत चुको याद करोला फेर। मुनि नन्दलाल तणा शिष्य कहे छे जोड़ करी अजमेर हो ॥ कुमति० ॥ ५ ॥ नं० ८ —सत्योपदेश— [तर्जः-पूर्ववत्] कलयुग का मानव मानो मानो मानो मानो रे। थाने पर भव निश्चय जानो जानो जानो जानो रे ॥ टेर ॥ साधु जन की आय समीपे सुने न हित की बात। दुनियां की खट पट में तेरा बीत गया दिन रात रे ॥ कलयुग० । १ ॥ ये तन ये धन ये बल बुद्धि ये सामर्थ सब थोग। करना होय सो करले भला फिर ऐसा मिले कब जोग रे ॥ कलयुग० ॥ २ ॥ निज स्वजन पालन पोषण में बन्यो रहे इक ध्यान। धर्म कियो नहीं नेम कियो नहीं कर से दियो नहीं दानरे ॥कलयुग० ॥३॥ रंक को राज मिल्यो दो घडी को दीनो व क्तगुजार। इण विध पछतावो पडसी जद पहूँचेलो आन करार रे ॥ कलयुग० ॥४॥ उगणी से छियन्तरे रे अलवर राज स्थान। कहे मुनि नन्दलाल तणां शिष्य अब भी चेत सुजान रे ॥ कलयुग० ॥ ५ ॥ नं० ८४—वर्ष का तरुवर— [तर्जः-पूर्ववत्] चेतन थारा तरुवर का फल लूण। थाने साँच कहेला फेर कूण ॥ टेर ॥ दश सहस्त्रवली आठ सेरे फल लागे सब कूल। अठारसे ऊपरे कोई अस्सी उघडे फूल ॥ चेतन० ॥ १ ॥ मोटो पेड़ सुहावनो रे शाखा दो दो आठ। छोटी शाखा है घणी कोई तीन सो ऊपर साठ ॥ चेतन० ॥ २ ॥ साँच कहूं सूतर थकी रे पत्र असंख्या थाय। एक थी दूजो निकले कांई तुरत फुरत झड जाय ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ तज आलस्य प्रमाद ने रे शुद्ध क्रिया के साथ। जो सेवे तन मन थकी जांके विघ्न सरु टल जात ॥चेतन०॥४॥ महा मुनि नन्दलाल जी ने पंडित में परमाण। गुप्त भेद तस्य शिष्य कहे काँई समझे चतुरसुजान ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ न० ८५—फोकट श्रावक— [तर्जः-पूरो सुख नहीं पंच में आरे] ऐसो श्रावक नो नहीं आचारो ॥ टेर ॥ श्रावक नाम धराय लिया, जांके त्रसस्थावरकी नहीं छे दया, शुद्ध नहीं जाके नवकारो ॥ ऐसो ॥ ॥ १ ॥ थापण मेले जांको दव्व करे, सूख खाय खोय ने कूडो शाख भरे, डर नहीं पर भव जावा रो ॥ ऐसो ॥ २ ॥ चोरीकरे पर धन्न हरे, बली कुडा तोला ने कुडा माप करे, खोटो बणज करे न्यारो ॥ ऐसो० ॥ ३ ॥ घर की नहीं मरजाद करे, पर दारा सेती गमन करे, काण कायदो नहीं जारो ॥ ऐसो० ॥ ४ ॥ धन के काज अराज करे, तेतो किण विध कहो संसार तिरे, आरम्भ करे अति विस्तारो ॥ ऐसो० ॥ ५ ॥ बन्न कटावे बहु भार भरे, बलि शस्तरना संयोग करे, ताल सरोवर की फोडा वेपारो ॥ ऐसो० ॥ ६ ॥ धर्म स्थान कभी

४४

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

नहीं आवे, बलि रामत देखण ने जावे, काम नहीं प्रति कमणा री ॥ ऐसो० ॥ ७ ॥ निरमल पालयो जाने श्रावक पणो, जाँको पुकार में बिस्तार घणो, जोर लगाई किये खेवा पारो ॥ एसो० ॥ ८ ॥ छप्पन वैशाख शुद्ध चौदश खरी, शहर सीतामङ्क में जोड़ करी, खूब कहे बारम्बारो ॥ ऐसो ॥ ६ ॥ नं० ८६—फोकट श्रावक—[तर्जः-ख्याल] प्रगट कहूं सो तुम सुण लेना उसे फोकट श्रावक कहना ॥ टेर ॥ जीव दया में कछू न समझे भाषा मर्म की बोले। सूंख खाय कुलेख लिखे पर नार ताकतो डोले ॥ प्रगट० ॥१॥ ख्याल देखनो फिरे आप संतां के आवतां लाजे। सौगन लेकर देवे तोड़ खुद धोरी धर्म को बाजे ॥ प्रगट० ॥ २ ॥ त्रस स्थावर को हसो पहाड़ चढ मेले जाय मिजाजी। पुण्य पाप को भेद न जाने पर निन्दा में राजी ॥ प्रगट० ॥ ३ ॥ हुका चिलम बीड़ी भंग पीवे उलटी बात जचावे। नीर निवांण मांय कूद कर भैंसा रोल मचावे ॥ प्रगट० ॥ ४ ॥ सन्तां सेती करे कपट शठ उलट पुलट समझावे। आप हे न्यारो को न्यारो कुबुद्धि कुबध भिडावे ॥ प्रगट० ॥ ५ ॥ पक्ष ग्रही अभिमानी द्वेष वश कूड़ा कलंक चढावे। ऐसा कर्म कसाय जैन को नाहक नाम लजावे ॥ प्रगट० ॥६॥ अवगुण तज गुण को पाले जब शुद्ध श्रावक कहलावे, परभव सुधरे आप को सरे इण भव शोभा पावे ॥ प्रगट० ॥ ७ ॥ उगणी से अस्सी को कीनो चतुर मास चित चावे। जोड़ करी अजमेर मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य गावे ॥ प्रगट० ॥ ८ ॥ नं० ८७—जीव दया से नरक दूर—[तर्जः--दूसरी] जो जिन बचन प्रमान करे, ऐसी जीव दया से नरक परे रे ॥ टेर ॥ सर्व धर्म को मूल दया है, पूरे पंडित साख भरे रे ॥ ऐसी० ॥ १ ॥ आतम सम पर आतम जाने, फिर उन के दुःख दूर करे रे ॥ ऐसी० ॥ २ ॥ त्रसस्थावर सुख के अभिलाषी, दुःख स्थानक से दूर टरे रे ॥ ऐसी० ॥ ३ ॥ मुनि नन्दलाल तणां शिष्य गावे, रावलपिंडी जोड़ करे रे ॥ ऐसी० ॥ ४ ॥ नं० ८८—तम्बाकू निषेध—[तर्जः ख्याल] पिया छोड तम्बाकू बदबू की लपटाँ मुख से नीकले ॥ टेर ॥ महीने की महीने धरेस तुं आठाना पर आग, । एक वर्ष का खर्चे में स थारे बने सभी पोशागरे ॥ पिया० ॥ १ ॥ हाथ होठ कपड़ा जलेस थारो जले कलेजो दंत। बार बार मैं मना करूं मत पिवो तमाखू कंत रे ॥ ॥ पिया० ॥ २ ॥ टोली मिल हट्टी के ऊपर सुलफा आप उडावे, । लाभ खर्च जान्यो नहीं स थांने उंगली लोग बतावे रे ॥ पिया० ॥ ३ ॥ दक्षिण देश गुजरात में सरे इण विध अरदो होय ॥ पिया० ॥ ४ ॥ लीप्यो भर भर कुरला डाले जात को कारण नहीं छे कोय, । सारा घर में राख बखेरी देख्यो माजनो थारो रे ॥ पिया० ॥ ५ ॥ फोड चिलम और छाव्यो बहुत मजा को कियो आंगणो कारो, ।

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

ढोल तम्बाखू सीधी तरह समझाऊं। सारा शहर में शोभा होसी कहसी लोग कमाऊ रे ॥ पिया० ॥ ६ ॥ छोड़ तमाखू जो सुख चाहे गुरु रह्या समझाई । महा मुनि नन्दलाल तणां शिष्य जैपुर जोड़ बनाई रे ॥ पिया० ॥ ७ ॥ नं० ८६ –सप्तव्यसन निषेध– [तर्ज़ः–बनजारा] जिया सात व्यसन मत सेवे, यों ऋषि मुनि सब कहवे ॥ टेर ॥ जूआ खेले दाँव लगावे, पर धन पर इच्छा जावे जी, मोटो अनरथ भी कर लेवे ॥ जिया० ॥ १ ॥ माँस आहार करे नर भूंडा, वह जावे नर्क में ऊंडा जी, दिल दया न जिनके रहवे ॥ ॥ जिया० ॥ २ ॥ मद पान नशा का करना, तन धन हानि दुःख भरना जी, शुद्ध बुद्धि होस नहीं रहवे ॥ जियो० ॥ ३ ॥ वेश्या से नेह लगावे, ताको शरम आबरू जावे जी, कोई भला मनुष्य नहीं कहवे ॥ जिया० ॥ ४ ॥ सज शस्त्र अहेडे जावे, पर जीवों का प्राण सतावे जी, वह दुर्गति का दुःख सेवे ॥ जिया० ॥५॥ करे चोरी वह चोर कहावे, जो राज में पकड़ा जावेजी, ताको बहुत तरह दुःख देवे ॥ जिया० ॥६॥ पर नारी से प्रीति लगाके, कोई रैहा नहीं सुख पावे जी, पाले शील वही सुख लेवे ॥ जिया० ॥७॥ नन्दलाल मुनि गुरु देवा, मिलि पुण्य योग सुभ सेवा जी, गुरु चौथी शिक्षा देवे ॥ जिया० ॥८॥ नं० ९०—सुमति का कथन—[तर्ज़ः—लोभी पनवाजी] लोभी जीवा जी घर आवो सुमति का छेल ॥टेर॥ शिवपुर पाटन चालनो, पूरण सुख की ठौर। निर्भय मारग पाधरो, काँई कुमति को संग छोड़ ॥ लोभी० ॥१॥ कुमति ठगारी जगत में, लिए लेवी अनुराग। प्रत्यक्ष सुख छे प था, पण पीछे फल किंम पाक ॥ लोभी० ॥२॥ सहस्र वर्ष कुण्डरीक जी, पाल्यो संजम भार। कुमति वश वर आइयो तो पहुँचो नरक मंझार ॥ लोभी० ॥३॥ सुमति संगे बहु मानवी, पाया भव को पार। वीर जिनेश्वर भाखियो, काँई शास्तर में विस्तार ॥ लोभी० ॥४॥ कुमति को संग छोड़ के, सुमति से कर हेत। महा मुनि नन्दलालजी, तणा शिष्य कहे अब चेत ॥ लोभी० ॥५॥ नं०—९१ शिक्षा—[तर्ज़ः—भाव धरी जिन वन्दिये] वीर जिनन्द दीनी आगन्या, आठ बोलां में नहीं करिये प्रमाद के। ठाणायंग ठाणे आठ में, सुनकर ज्ञान हो राखो हिवड़ा में याद के ॥ टेर ॥ विनय करी गुरु देव को, सिखी जे हो अपूरव ज्ञान के। बिना ज्ञान सोहे नहीं, बिन इन्दु हो जिम रजनी सुजान के ॥ वीर० ॥१॥ ज्ञान सीख्यो अति खप करी, पर्यटना हो कीजे बारम्बार के। बिन पर्यटन ठहरे नहीं, किम पावे हो शोभा जगत मझार के। वीर० ॥२॥ त्याग से आश्रव रोकिये, तपो बन्धन हो नहीं कर्म को थाय के। भवोदधि में रुते नहीं, जिम रुंध्या हो छिद्र किस्ती के न्याय के ॥३॥ भव भव का जो संचीया, तप करके हो, कर्म ने काय के। जिम नव नित में छाछड़ी, नहीं

छीजे हो बिन अगनि की ताप के ॥ वीर० ॥४॥ धर्म वली संसार में, नहीं दीसे हो जिनके पग लगार के। तिनको आधार देधारिये, पयी मोटो हो क्रिवो छे उपकार के ॥५॥ रोग करी तन पीडियो, वली तपस्या थी हो थया अति गिलयान के। आलस्य तज व्यावच्च करो, मन भूंडो हो नहीं ध्याइये ध्यान के ॥ वीर० ॥६॥ नव शिष्य को अहोनिषी सदा, क्रिया माँही हो तेने करिये निपुण के। गुरु को मिले नहीं भ्रोलम्भो, फिर कर से हो जन दोहु ना गुण के ॥ वीर० ॥७॥ साधर्मी में खिंच गई, मोटो पड़ियो हो झगड़ो माहो माय के। न्यायवन्त निरपक्ष थई, तेहनो दोजे हो विरोध मिटाय के ॥ वीर ॥८॥ इण आठों ही बोल में, नित कीजे हो उद्यम नर नार के। महा मुनि नन्दलालजी तस्य शिष्य ने हो कीनी जोड़ रसाल के ॥ वीर० ॥९॥ नं०-६२----पोषध के अठारह दोष----[तर्ज:-धन धन्नो धन सुन्दरी जाने पाल्यो शील अखण्ड] जी श्रावक दोष अठारे दोषा तणा तुम मूल की दूर निवार, जी श्रावक मूल थी दूर निवार ॥टेर॥ स्नान करे शोभा कारने कांई घाले पटा माँहीं तेल, जी श्रावक घाले पटा माँही तेल ॥ चोथो अधर्म सेवे सही करे स्त्री संगाते केल ॥ जी श्रावक० ॥१॥ बार बार भोजन करे कांई वस्त्र धुवावे तेम, जी श्रावक वस्त्र धुवावे तेम। रात्रि तणा भोजन करे तेतो ज्ञानी गुरु कहे एम ॥ जी श्रावक० ॥२॥ पोषा के पहिले दिने सेव्यां यह पट दोष न जान, जी श्रावक पट दोष न जान। पोषो लियां पीछे इम करे यह तो द्वादश दोष बखान ॥ जी श्रावक० ॥३॥ खुला तणी व्यावच करे वलि वलि सँवारे केश, जी श्रावक वलि वलि सवारे केश। मैल उतारे शरीर को काँई निद्रा लेवे विशेष ॥ जी श्रावक० ॥४॥ खाज खने बिन पूंजियाँ ठालो बैठो विकथा करे चार, जी श्रावक ठालो बैठो विकथा करे चार। पर दूषण परगट करे तेने नवमो दोष विचार ॥ जी श्रावक० ॥५॥ संसार ना सौदा करे कांई निरखे अंग उपंग, जी श्रावक निरखे अंग उपंग। चितवे काम संसार का काँई बोले मुख अभंग ॥ जी श्रावक० ॥६॥ देव मनुष्य तिर्यंच को भय आणे मन मुझार, जी श्रावक भय आणे मन मुझार। लाग दोष अठारमो ते तो टालिये बारम्बार ॥ जी श्रावक० ॥७॥ आतम हित के कारणे कांई सतगुरु देवे छे सीख, जी श्रावक सतगुरु देवे छे सीख। दोष अठारा ही टालसी तेहने मुक्त पुरी छे नजीक ॥ जी श्रावक० ॥८॥ मुनि नन्दलाल जी दीपता तस्य शिष्य कहे हुलसाय, जी श्रावक शिष्य कहे हुलसाय। जोड़ करी अति दीपती गायो मांडलगढ़ के माय ॥ जी श्रावक० ॥९॥ नं० ६३—बुड्ढे बाबा की चंचलता—[तर्ज:—फाग] बुड्ढा बाबा को हुआ नहीं मन वश में बुड्ढा बाबा को ॥ टेर ॥ बालक के मिस ख्याल तमाशा, देखत जावे नहीं मन वश में ॥बुड्ढे०

दीजे हो विन अगनि की ताप के ॥ वीर० ॥४॥ धर्म वली संसार में, नहीं दीसे हो जिनके पक्ष लगार के। तिनको आधार देधारिये, पथी मोटो हो किनो छे उपकार के ॥५॥ रोग करी तन पीडियो, वली तपस्या थी हो थया अति गिलयान के। आलस्य तज व्यावच्च करो, मन मूंडो हो नहीं ध्याइये ध्यान के ॥ वीर० ॥६॥ नव शिष्य को अहोनिषी सदा, क्रिया माँही हो तेने करिये निपुण के। गुरु को मिले नहीं ओलम्भो, फिर कर से हो जन दोहु ला गुण के ॥ वीर० ॥७॥ साधर्मी में खिंच गई, मोटो पड़ियो हो झगड़ो माहो माय के। न्यायवन्त निरपक्ष थई, तेहनो दीजे हो विरोध मिटाय के ॥ वीर ॥८॥ इण आठों ही बोल में, नित कीजे हो उद्यम नर नार के। महा मुनि नन्दलालजी तस्य शिष्य ने हो कीनी जोड़ रसाल के ॥ वीर० ॥९॥ नं०-६२----पोषध के अठारह दोष----[तर्जः-धन धाञ्ञो ध । सुन्दरी जाने पाल्यो शील अखण्ड] जी श्रावक दोष अठारे दोषा तणा तुम मूल की दूर निवार, जी श्रावक मूल थी दूर निवार ॥टेर॥ स्नान करे शोभा कारने कांई घाले पटा माहीं तेल, जो श्रावक घाले पटा माँही तेल ॥ चोथो अधर्म सेवे सही करे स्त्री संगाते केल ॥ जी श्रावक० ॥१॥ बार बार भोजन करे कांई वस्त्र धुवावे तेम, जी श्रावक वस्त्र धुवावे तेम। रात्रि तणा भोजन करे तेतो ज्ञानी गुरु कहे एम ॥ जी श्रावक० ॥२॥ पोषा के पहिले दिने सेव्यां यह पट दोष न जान, जी श्रावक पट दोष न जान। पोषो लियां पीछे इम करे यह तो द्वादश दोष बखान ॥ जी श्रावक० ॥३॥ खुला तणी व्यावज करे वलि वलि सँवारे केश, जी श्रावक वलि वलि सवारे केश। मैल उतारे शरीर को काँई निद्रा लेवे विशेष ॥ जी श्रावक० ॥४॥ खाज खने विन पूंजियाँ ठालो बैठो विकथा करे चार, जी श्रावक ठालो बैठो विकथा करे चार। पर दूषण परगट करे तेने नवमो दोष विचार ॥ जी श्रावक० ॥५॥ संसार ना सौदा करे काँई निरखे अंग उपंग, जी श्रावक निरखे अंग उपंग। चितवे काम संसार का काँई बोले मुख अभंग ॥ जी श्रावक० ॥६॥ देव मनुष्य तिर्यंच को भय आणे मन्न मुझार, जी श्रावक भय आणे मन्न मुझार। लागे दोष अठारमो ते तो टालिये बारम्बार ॥ जी श्रावक० ॥७॥ आतम हित के कारणे कांई सत्गुरु देवे छे सीख, जी श्रावक सतगुरु देवे छे सीख। दोष अठारा ही टालसी तेहने मुक्त पुरी छे नजीक ॥ जी श्रावक० ॥८॥ मुनि नन्दलाल जी दीपता तस्य शिष्य कहे हुलसाय, जी श्रावक शिष्य कहे हुलसाय। जोड़ करी अति दीपती गायो मांडलगढ़ के माय ॥ जी श्रावक० ॥९॥ नं० ६३—बुड्ढे बाबा को चंचलता—[तर्जः—फाग] बुड्ढा बाबा को हुआ नहीं मन वश में बुड्ढा बाबा को ॥ टेर ॥ बालक के मिस ख्याल तमाशा, देखन जावे नहीं मन वश में ॥बुड्ढे०

॥१॥ गावे बजावे तिहाँ तान मिलावे, सुणवाने जावे नहीं मन वश में ॥ बुढ्ढे० ॥२॥ सांठा सिंघोड़ा गिरि बेर छुहारा, स्वाद करे नहीं मन वश में ॥ बुढ्ढे० ॥३॥ कलप बनावे ने इतर लगावे, नैना अंजन नहीं मन वश में ॥ बुढ्ढे० ॥४॥ हंसी कतूहल अति मन भावे, होली में जावे नहीं मन वश में ॥ बुढ्ढे० ॥५॥ पांचों इन्द्रीय की छोड़ विषय को. अब तक नहीं कियो मन वश में ॥ बुढ्ढे ॥ ॥६॥ मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य गावे, कहाँ तक कहुँ नहीं मन वश में ॥ बुढ्ढे० ।७॥ नं० ६४—मानव जन्म की खेती—

[तर्जः—पूर्ववत] खेती करले रे मानव भव तूं पायो खेती करले रे ॥ टेर ॥ काया को कूप बण्यो अति भारी, आयुष पूर्ण भरयो वारी ॥ खेती० ॥१॥ सासोश्वास की चडस वढोरी, रात दिवस जुनिया धोरी ॥ खेती० ॥२॥ ज्ञान की खेती न बीज धर्म को, खरड बध्यो खोद आठों कर्म को ॥ खेती० ॥३॥ ध्यान को गोफ खम्याँ केरो कंकड़, काक प्रमाद उडावो झटकर ॥ खेती० ॥४॥ नेम की नाड़ी ने डोर हर्ष की, ऐसी खेती कर नर भव की ॥ खेती० ।५। श्रद्धा को सर ने प्रतीत को जूडो, यह सब देवे सद्गुरु रुडो ॥ खेती० ॥६॥ ऐसी खेती कोई भव जीव करसी, खूब कहे आसा सह्य फलसी ॥ खेती० ॥७॥ नं० ६५—चंचल माया—

[तर्जः—भजन] चंचल माया में क्यों चेतन ललचावे । टेर । स्वजन और पर जन मित्रादिक जिनसे नेह लगावे । जैसे मेलो बिछुड़ जाय तिम यह सब निज निज स्थान सिधावे चंचल० ॥१॥ ख्याल रच्यो बाजीगर खलकत दौड़ दौड़ ने आवे । डुगडुगी हुई बन्द वहां फिर खाली फिरे तब सब भग जावे ॥ चंचल० ॥२॥ गाज बीज बादल और वर्षा उमड़ उमड़ कर आवे । हवा चली जब मेघ घटा मिट तुरत गगन निर्मल दर्शावे ॥ चंचल० ।३॥ नाना विध पक्षी मिल तरुवर निशिभर वास बसावे । दिवस भयो तब दशों दिशि उड़ कहाँ से आये और किधर सिधाये ॥ चंचल० ।४॥ राज रंक को मिला सुपन में इच्छित मौज उड़ावे । आंख खुली तब कहाँ ठाठ वह चहुँ दिशि देख देख पछतावे ॥ चंचल० ॥५॥ उगणीसे अस्सी सोलह सुद तीज जेष्ठ की आवे मुनि नन्दलाल तणां शिष्य दिल्ली जोड़ करी जग में जस पावे ॥ चंचल० ।६॥ नं० ६६—सीताजी से मिलने हनुमान का आगमन—

[तर्जः—पूर्ववत] सीताजी से मिलन पवन सुत आयो ॥ टेर ॥ सीताजी की सुध भई तब राम अति सुख पायो । सब राजेश्वर कर मनसूबो हनुमंत कंवर ने लंक पठायो ॥ सीताजी० ॥१॥ देव कुंवर ज्यों सन्मुख ऊभो घूंघट में दर्शायो । सीता पूछे कुण तूं वीरा, तब हनुमत सब भेद सुनायो ॥ सीता जी० ॥२॥ पिय हाथ की देख मूंदरी नैना नीर भरायो । राम मिलन की है अब तयारी

४८

हनुमंत कुंवर यो गाढ बंधायो ॥ सीताजी० ॥३॥ सीता को दुःख देख हनुमंत बन्दर रूप बनायो । लंकपति को बाग विनास्यो देख रहो सीता बहु समझायो ॥ सीताजी० ॥४॥ रावण राणो रोष भराणो बन्दर पकड़ मंगायो । नमक हरामी लाज न आई रावण करडो बोल सुनायो ॥ सीताजी० ॥५॥ रोष चढ्यो हनुमंत तुरत ही बन्धन तोड बगायो । लंकपति का मुकुट पाड़ने उछल गगन में बेग सिधायो ॥ सीताजी० ॥६॥ सोध करी हनुमंत आयो तब सबको मन हुलसायो । कहे मुनि नन्दलाल तणा शिष्य जोड़ करी जग में जश पायो ॥ सीताजी० ॥७॥ नं० ६७—रावण को मंदोदरी की शिक्षा—[तर्जः—सीता सतवंती नार सदा गुण गाव-नारे] राजा रावण से इम बोले नार मन्दोदरी रे । सुन सुन लंकपति सिरदार अनीति क्यों करी रे ॥ टेर ॥ थारे इन्द्राणया सम राणयाँ कई हजार छेरे । तो पण जरा सबर नहीं आई, छल कर लायो नार पराई । जग में बाज्यो चोर अन्याई, ऐसी कठिन सुनाई पतनी पति से ना डरी रे ॥ राजा रावण० ॥१॥ मैं तो खुद जाकर समझाई, नाहिक मांडनेरे । सीता रही शील में राची, वह मर मिटे हटे नहीं पाछी, उनको अच्छी तरह ली जाची, कहूं छूं साँची जिनकी च ज है उनको दो परी रे ॥ राजा रावण० ॥२॥ स्याणी सुन्दर सुन पर नार लाय किम आप सूं रे । उनको चित खुश करके, निज नारी कर थाप सूं रे ॥ टेर ॥ माने सोख त्रिया की जो नर मूढ अजान छे रे । सीता पाछी उसे दिलावे, तोकूं जरा शरम नहीं आवे । मोकूं ऐसी राह बतावे, सबला आगे कोई न आवे, पुण्य प्रताप सूं रे ॥ स्याणी० ॥३॥ चंचल हनुमान श्रीराम लछमण महा बली रे । दल ले लेकर जब वो चढसी, नभचर उछल उछल कर पड़सी, कहो तब कौन सामने अड़सी, सुवरण लंका मिलसी नास, आज कहूँ छूं खरी रे ॥ राजा रावण० ॥४॥ फिरता डोले जंगल मांय युगल वनबासिया रे । बिच में सागर भरयो अपारे, यहां तक कब वो आवे विचारे । शूरे सुत और भ्रात हमारे, पड़सी उनके लारे, थारे वेग सिताप सूं रे ॥ स्याणी० ॥५॥ थारे सगा विभीषण कुम्भकरण दोई भ्रात छे रे । प्यारा इन्द्रमेघ सुत शूर, यह सब रहेंगे बदल कर दूर । दिल में सोचो नाथ जरूर, मेलो दूर गरूर, नहीं तो मरजी रावरी रे ॥ राजा रावण० ॥६॥ हित की शिक्षा देवे कोई सत्य कर मानिए रे । सित्तर ऊपर नव के साल, मेरे गुरु मुनि नन्दलाल । मोकूं दीनो हुकम दयाल, कीनो रामपुरे चौमास, जोड़ सुगतो करी रे ॥ राजा रावण० ॥७॥ नं० ६८—रावण को समझाना—[तर्जः—ख्याल] कहे यों रावण को समझाय अति-चतण कुम्भकरण दोई भाय ॥ टेर ॥ राजन पति राजा थाज्यो थाने ई बातां नहीं छाजे । पर नारी पर धन हर्ता वह चोर अन्यायी

४६

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

पाजे ॥ कहे० ॥१॥ राम लछमण दशरथ सुत को होसी यहां पर आवो । लंका को कर देगा नाश जद पड़सी तुम पछतावो ॥ कहे ॥ ॥२॥ सीता पीछी सौंप दो ल थे मानो बात हमारी । कठिन शब्द मैं आज कहाँ छाँ लीजो नाथ विचारी ॥ कहे० ॥३॥ मैं हूं थारे भरत को स्वामी कौन अठे मुझ सामे । तुम कायर सब दूर रहो मेरा जोर आवसी कामे ॥ कहे० ॥४॥ महा हठीलो हठ नहीं छोडी गति जैसी मति आवे । करी जोड़ अजमेर मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य गावे ॥ कहे० ॥५॥ नं० ९९ सीता की रावण को फटकार — [तर्ज:—मझाड़] सीताजी बोली सुनहु लंकपति, मैं तो चंहूं नहीं परपती ॥ टेर ॥ जन्म देई जननी सुत पाले, प्रेम करे चित लाय । ते पण निज मर्याद तजी ने मारे जहर पिलाय ॥ सीताजी० ॥१॥ चन्द्रथकी खीरा झरेरे, सूर्य करे अन्धकार । सिंह छाली सम होय कदापी, शील न खंडू लगार ॥ सीताजी० ॥ २ ॥ आम न जाम न कल्पतरु के कण्टक कहदे कोय । अरणी घिसे चाहे अमृत निकसे, कमल उपल पे हाय ॥ सीताजी० ॥ ३ ॥ साधु थई सत्य मारग छोडे समुन्दर कार लो पाय । सूरो थई रण खेतथी भागे नृपति मूंके न्याय ॥ सीताजी० ॥ ४ ॥ इतनी बातां होय तो होओ शील से चूकूं नाय । मुनि नन्दलाल तणां शिष्य कहेछे रावण मुख बिलखाय ॥ सीताजी० ॥ ॥ नं० १००—राजमती का ब्याह— [तर्ज:—नं० चलूं जी पिया] ऐसो जादू पती रे ऐसो जादूपती, परणवा पधारे राजमती ॥ टेर ॥ उग्रसेन राजा की पुत्री ऐसी, सूत्र में कह्यो आभा बीज जसी ॥ ऐसो० ॥ १ ॥ तेहने ब्याहन जावे नेम कुंवार, बहुविध सज साथे कृष्ण मुरार ॥ ऐसो० ॥२॥ शक्र इन्द्र ब्राह्मण रूपधारी, सन्मुख आय इन अरज करी ॥ ऐसो० ॥३॥ लगन में दीसे कोई अदूर, इण अवसर नहीं परणो जरूर ॥ऐसो० ॥४॥ कृष्ण कहे रे ब्राह्मण आजो इहाँ पीलो चाँवल थाने कोन दिया ॥ ऐसो० ॥ ५ ॥ ब्राह्मण दूर हुवो तिण वार, तोरण पर आवे नेम कुंमार ॥ ऐसो० ॥ ६ ॥ पशुवां को बाट में बाड़ो भरयो, करुणा करी ने प्रभु पाछे फिरयो ॥ ऐसो० ॥ ७ ॥ संजम लिलियो त्यागी ऋद्ध छती कर्म हरी ने पाया सिद्ध गती ॥ ऐसो० ॥ ८ ॥ मांडलगढ़ में मुनि नन्दलाल, तस्य शिष्य जोड़ बनाई रसाल ॥ ऐसो० ॥ ६ ॥ नं० १०१ —ब्राह्मण रूप से शकेन्द्र का आगमन— [मईयां मोरी नेमीश्वर बनड़ा ने गिरनारी जासां राज] यादव ऊभा रहो ॥ टेर ॥ शक्र इन्द्र सुर लोक में हो काँई बैठा सभा के मांहीं आप हो ॥ ॥ यादव० ॥ १ ॥ ध्यान से जाना नेम की हो काँई खूब बनी है बरात हो ॥ यादव० ॥ २ ॥ आप बुड्ढा ब्राह्मण तणो हो काँई रूप रच्यो तत्काल हो ॥ यादव० ॥ ३ ॥ डग डग धूजे लेनी गीवा हो काँई धूजे तेनो सकल शरीर हो ॥ यादव० ॥ ४ ॥ कर में लकड़ी

५०

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

रूयड़ी हो कांई पाग में धर्‌यो पंचरंग हो ॥ यादव० ॥ ५ ॥ सन्मुख आय वरात में हो कांई हरि जी से करे है सवाल हो ॥ यादव० ॥ ६ ॥ रहेसी कुंवारा नेम जी हो कांई कभी नहीं होवे यांको व्याह हो ॥ यादव० ॥ ७ ॥ दीनी दक्षिणा तेहने हो कांई विदा करि दीनो तत्काल हो ॥ यादव० ॥ ८ ॥ वल तो ब्राह्मण इम कहे हो कांई जद जानूं लावो पर नाय हो ॥ यादव० ॥ ९ ॥ महा मुनि नन्दलाल जी हो कांई तस्य शिष्य नेमजी को दास हो ॥ यादव० ॥ १० ॥ -नेमजी की वरात- नं० १०२ (तर्ज-आज रंग वरसे रे) नेम वनड़ा के रे २ संग वरात चढ़ी वड़ी धूम धड़ाके रे ॥ टेर ॥ कृष्ण और वलभद्र साथ दोई वरात के मांई रे। समुद्र विजय राजादिक संग कर कर जलुसाई रे ॥ नेम० ॥ १ ॥ यादव वंशी राज कुंवर का जोड़ जगामग चमके रे। मणि सुवर्ण का भूषण अंग दामन ज्यों दमके रे ॥नेम०॥२॥ पचरंगी पोशाकां कर कर जान्या रंगिया चंगिया रे। गज रथ घोड़ा वैठ पालकी चले उमगिया रे ॥नेम०॥३॥ गज इन्दर पर नेम कुंवर जी सुर इन्दर सम दर्शे रे। साँवरिया की छवि देख सुर नर मन हर्षे रे ॥नेम०॥४॥ जीव दया के काज व्याह तज तुरत नेमजी फिरिया रे। संजम ले फिर कर्म काट मुगति सुख वरियारे ॥ नेम० ॥ ५ ॥ उगणी से छी अंतर तेरस भादव वुध के मांई रे। मुनि नन्दलाल तणों शिष्य अलवर जोड़ वनाई रे ॥ नेम० ॥ ६ ॥ महारानी देवकी का संशय निवारण-नं० १०३ (तर्ज—मेवाड़ा जी हुकम कराओ तो हाजर ऊभी) विनय करीने पूछे देवकी कांई संशय मेटन काज मुनिवरजी । टेर ॥ हो जी आज्ञा लेई प्रभू नेम की कांई भ्राता मैं हूँ अनगार ॥ मुनिवर जी० ॥ तीन सिंघाड़े आया गोचरी, कांई द्वारिका नगरी मुझार ॥ मुनिवर जी। विनय० ॥ १ ॥ होजी प्रथम सिंघाड़ो फिरताँ थकाँ काँई देवकी के आयो आवास ॥ मुनिवर जी ॥ देवकी सन्मुख जाय ने कांई वांध्या चित्त हुलास ॥ मुनिवर जी। विनय करी० ॥ २ ॥ हो जी मोदक वहराया निज हाथ से, कांई ते तो फिर चाल्या अनगार ॥ मुनिवर जी ॥ दूजो भी सिंघाड़ो इम जाण जो, कांई तीजो भी आयो तिणवार ॥ मुनिवर जी ॥ विनय० ॥ ३ ॥ हो जी प्रतिलाभी ने पूछे देवकी, कांई धन धन तुम अनगार । मुनिवर जी ॥ तुम मुझ पुण्य उदय करी कांई फिर फिर आया तीजी वार। मुनिवरजी ॥ विनय० ।४ ॥ हो जी मुनिवर कहे सुण देवकी, कांई मैं छाँ सगा छैहूँ भाय ॥ मुनिवर जी ॥ नाग सेठ का सुत हमें कांई सुलसा मां की माय ॥ मुनिवर जी ॥ विनय० ॥५॥ हो जी वत्तीस २ नारयाँ तजी, कांई परिग्रह से तज दियो प्रेम ॥ मुनिवर जी ॥ संजम लियो तिण दिवस थी कांई छट छट कीनो नेम ॥ मुनिवर जी ॥ विनय ॥ ६ ॥ हो जी थारे घर आया गोचरी कांई तीन

५१

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

सिंघाड़े आज ॥ मुनिवर जी ॥ वे का वे ही मत जान जे कांई इम कही गया मुनिराज ॥ मुनिवर जी ॥ विनय ॥ ७ ॥ हो जी देवकी मन प्रसन्न हुई कांई धन धन मात अनूप ॥ मुनिवर जी ॥ रत्न सरीखा निज पुत्र ने कांई दिया जिनवर जी ने सूंप ॥ मुनिवर जी ॥ ॥ विनय ॥ ८ ॥ हो जी संवत उगणी से छियोतरे कांई अलवर शहर चौमास ॥ मुनिवर जी ॥ महा मुनि नन्द लाल जी कांई तस्य शिष्य कहत हुलास ॥ मुनिवर जी ॥ विनय० ॥ ६ ॥ -माता देवकी का चिन्तन- नं० १०४ (धीरा चालो व्रज का वासी) बोलो बोलो माजी मन खोली। सब बात हिया में तोली रे ॥ टेर ॥ माता देवकी जिनवर भेंटी, सब मन का भ्रमणा मेटी, घर आय सिंहासन बैठी रे ॥ बोलो० ॥ १ ॥ तब हरी शृंगार बनाया, माता का दर्शन पाया। चरणों में शीष नमाया रे ॥ बोलो० ॥ २ ॥ कर जोड़ी ने गिरधर भाखे, माजी किम आंसू नाखे। करूं सफल कहो दिल थाँके रे ॥ बोलो० ॥ ३ ॥ माजी सब वृत्तान्त सुनायो, तब वचन दियो हरी राया। सब मन का सोच मिटाया रे ॥ बोलो० ॥ ४ ॥ पौषधशाला में आई, सुर समरयो ध्यान लगाई। थारो होसी व्हालो लघु भाई रे ॥ बोलो० ॥ ५ ॥ दिन ऊगां पौषध पारा, माजीका काज सुधारा। हुआ गज सुखमाल कुमारा रे ॥ बोलो० ॥६॥ नन्दलाल मुनि गुण धारी, तस्य शिष्य कहे हितकारी। निज पुण्य से जय जय कारी रे ॥ बोलो० ॥ ७ ॥ गजसुखमाल मुनिकी क्षमा नं० १०५ (तर्ज—मेवाड़ा जी हुकम करो तो हाजर ऊभी) मुनिवर जी साध पणो शुद्ध आदरयो कांई धन धन गज सुखमाल ॥ मुनिवर जी ॥ टेर ॥ होजी नेम जिनन्द भगवान की, कांई आज्ञा लेई ऋषिराय ॥ मुनिवर जी ॥ तरु हेटे जाई शमशान में ॥ कांई ऊभा ध्यान लगाय ॥ मुनिवर जी ॥ साधपणो ॥ १ ॥ हो जी सोमिल ब्राह्मण तिण समे, कांई जातो नगरी मुझार ॥ मुनिवर जी ॥ तिण वाटेथई निकलयो, काँई ओल खिया अनगार ॥ मुनिवर जी ॥ साध पणो० ॥ २ ॥ हो जी लघु भाई गोविन्दना, म्हारी बेटी में बतायो कांई दोष ॥ मुनिवर जी ॥ बिन अपराधे पर हरी; कांई अधिक भरानो रोष। मुनिवरजी॥ साधपणो० । ३ ॥ हो जी आली माटी लायो सरतणी, काँई बांधी मुनि के सिर पाल ॥ मुविवर जी ॥ दुष्ट दया आनी नहीं, कांई सिर धरया खैर अंगार ॥ मुनि वर जी ॥ साधपणो ॥ ४ ॥ हो जी मुनिवर मन्दिर गिरि समो, काँई नहीं कियो क्रोध लगार ॥ मुनिवर जी॥ ध्यान थकी चूक्या नहीं कांई चढ़ियो परणाम की धार ॥ मुनवर जी ॥ साध पणो० ॥ ५ । हो जी चार कर्म दूरा हुआ, काँई पाया केवल ज्ञान ॥मुनिवरजी॥ आठों ही कर्म खपायने, काँई पहुंचा शिवपुर स्थान ॥ मुनिवर जी ॥ साधपणो ॥ ६ ॥ हो जी एहवा मुनि का गुण गावतां कांई पावे

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

सुख भरपूर ॥ मुनिवर जी ॥ खुबचन्द कहे तस नाम से काँई कारज सिद्ध जरूर ॥ मुनिवर जीं ॥ साधपणो० ॥ ७ ॥ **दिक्षार्थी को माता का कहना** नं० १०६ (तर्ज—पन जी मुँडे बोल) व्हाला मोरी मान, मान मान मुगति का लोभी, काँई हठ लागो रे ॥ टेर ॥ संजम जाया अति दोहिलो, शूरवीर कोई लेसी रे । कोमल तन बावीष परीसा तू किम सहसी रे ॥ व्हाला० ॥ १ ॥ सन्मुख जोय रही तुझ अबला, इनको छेय न दीजे रे । तृप्त थई फिर विषय भोग तज संजम लीजेरे ॥ व्हाला ॥ २ ॥ संच्यो धन बड़ेरा घर में ले ले हाथ को लावो रे । ऊमर तक नहीं निठे रीतिसर खर्चो खावो रे ॥ व्हाला ॥ ३ ॥ कुल वृद्धिकर मैं भी जितने हो जावां परलोके रे । जोवन वय ढल गया बाद, थांने कुण रोके रे ॥ व्हाला ॥ ४ ॥ महामुनि नन्द लाल तणां शिष्य शहर आगरे साचे रे । चढ्यो रंग वैराग्य कहो फिर किम ललचावेरे ॥ व्हाला० ॥ ५ ॥ **माता का दीक्षार्थी को संजम की कठिनता दिखाना** नं० १०७ (तर्ज—राजा भरथरी रे राजाभरथरी) व्हाला लालजी रे व्हाला लाल जी ॥ टेर ॥ लाल जी साधपणो अति दोहिलो, नहीं सोहिलो, पहिले जोहिलो, थांने कहूं समझाय मानो मानो मोरी बाय, हठ कोजिये नांय ॥ व्हाला० ॥ १ ॥ लाल जी इहां पलंग पर पौढनो, सीरक ओढनो, दिन चोढनो, ऊहां ज़ंगल मांय, जो भी तरुवर छाय, दुख सह्यो नहीं जाय ॥ व्हाला ॥ २ ॥ लालजी घर घर भिक्षा जावणो, नहीं शरमावणो मांगी खावणो, लेणो शुद्ध आहार, दे या नहीं दे दातार, दूषण होणो नहीं लगार ॥ व्हाला० ॥ ३ ॥ लालजी संजम भार उठावणो, पार लगावणो, गम्म खावणो निर्वध्य बोलणो बैन, चालणो गुरूजी की कैन, नहीं लोपणी पेन ॥ व्हाला० ॥ ४ ॥ लाल जो वैराग्य रंग छायो सही, माता कह रही, ललच्यो नहीं, मेरे गुरु नन्द लाल, षट काया प्रतिपाल, दीन्यो ज्ञान रसाल ॥ व्हाला० ॥ ५ ॥ **दीक्षार्थी को भगवान के समर्पण करना** नं० १०८ (महाड़) प्यारो लाल हमारो, भवसागर तारो, तारो दीन दयाल ॥ टेर ॥ कोमल काया सरल स्वभावी, बड़भागी गुण खान । उमर पुष्प ज्यों दुर्लभ दर्शन, रतना का करंड समानणे प्यारो ॥ १ ॥ आज सुणी बानी प्रभु थारी । विषय भोग रोग सम जानी, ललच्यो नहीं महासागरे ॥ प्यारो ॥ २ ॥ मात पिता ने अति सुख देसी, ये हतो पूर्ण विचार । जायो तो आज हुई निर्मोही, शिव मग लीनो धाररे ॥ प्यारो ॥ ३ ॥ यह मुझ व्हालो आप भरोसे, छोड़े जग जंजाल, शीत उष्ण वर्षा ऋतु मांही, कर जो सार सम्भालरे ॥ प्यारो ॥ ४ ॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनीश्वर, तारण तिरन जहाज, सुगुरु चरण की शरण लियांसे सरसी वंछित काजरे ॥ प्यारो ॥ ५ ॥ **ताराराणी का नृपति को दृढ़ करना** नं० १०६ (म्हारो मही मत लूटो जी मैं छूं गोकल

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

की काला गूजरी] राजा मत घबराओ जी, सत्य से निज सम्पति निश्चय पाओगे ॥ टेर ॥ काशी के बाजार बीच में बेची तारा रानी, जाती देख हरिश्चन्द्र नृप के नैना बह रयो पानी जी ॥ राजा ॥ १ ॥ रानी बोली सुन महाराजा क्यों इतना घबरावे, सुख दुख का जोड़ा जगमांही शास्तर में सब गावेजी ॥ राजा ॥ २ ॥ मोती महल सुवर्ण की सेजां ड्योढ़ीवान रखवाला। दासी दास नौकर और चाकर हुकम उठानेवाले जी ॥ राजा ॥ ३ ॥ गज घोड़ा रथ पालकी सरे, पलटन फौज रसाला। राज तख्त धन का भंडार, जय विजय वधाने वाला जी ॥ राजा ॥ ४ ॥ सिर का मुकट कान का कुण्डल गल मोत्यों की माला। कर भूषण कटि सुत सुवरन का कम्बल सर्ज दुशाला जी ॥ राजा ॥ ५ ॥ राम लक्ष्मण दोनों भाई सीता जिनके साथ। दुःख सह्या वनवास में सरे देखो द्वारिका नाथ जी ॥ राजा ॥ ६ ॥ सत्य के कारन राज तज्यो तुम ही शूरा रजपूत। निज सम्पति के नाथ बनोगे रहो जरा मजबूत जी ॥ राजा ॥ ७ ॥ वनिता होय विनीत पति को दे पूरण विश्वास, मुनि नन्दलाल तणां शिष्य कहे मैं गुरु चरण को दास जी ॥ राजा ॥ ॥८॥ भिक्षाके लिये आमंत्रण। नं० ११०[तर्जः-मैं हं आओ क्यूं नी कांई गाड़ा होय रय]जियो गुरुजी आओ क्यूं नी गाडा होयरया ॥ टेर ॥ मैं तो नित की भावां थारी भावना, मैं तो नित की नारु थारी वाट,॥ जियो ॥ १ ॥ म्हारे कमी नहीं किण बात री, म्हारे लग रया पुण्यका ठाठ ॥ जियो ॥ २ ॥ म्हारे दूध दही घृत मोकला, लीजे गोरस गुडबली खाँड ॥ जियो ॥ ३ ॥ म्हारे चावल दालने खी-चड़ी, भरी मालपूआ तणी छाव ॥ जियो ॥ ४ ॥ म्हारे खाजा पूड़ी घणा खीचीया, तरिया पापड़ लेवो तइयार ॥ जियो ॥ ५ ॥ म्हारे दही वड़ाने कचौरियाँ, तार फीड़ी ने घेवर सार ॥ जियो ॥ ६ ॥ म्हारे घणा पेठाने पकौड़ियाँ, लुच्चा पेडा अने सेव दाल ॥ जियो ॥ ॥ ७ ॥ नन्दलाल मुनि तणां शिष्य कहे, इम कर रया जन मनवार ॥ जियो ॥ ८ ॥ तप में शूरा ॥ नं० १११ [तर्जः-पूर्ववत] शूरा हो तप में भूंझिया ॥ टेर ॥ ईतो सुत्तर का वाजा वजरया, ढाल चौपी का घुल रया ढोल ॥ शूरा ॥ १ ॥ ईतो शूरा चढ्या संग्राम में,ईतो कायर रया उभा देख ॥ शूरा ॥ २ ॥ जाने तपस्या का तीर चलविया, सन्तोष को शेल सम्भाल ॥ शूरा ॥ ३ ॥ यह तो ढाल क्षम्या की पीठ पे, हुआ शुद्ध मन अश्व सवार ॥ शूर ॥४॥ सच वचन का पाखर पेरिया, निर्लोभकी कर तलवार ॥ शूरा ॥ ५ ॥ जाने सेना लीधी साथे साँमठो, दृढ़ दान शील तप भाव ॥ शूरा ॥ ६ ॥ जाने आठ करम वैरी जीतिया, लीनो मोक्ष को क़िल्लो खास ॥ शूरा ॥ ७ ॥खूब मुनि कहे सांभलो, कुछ पराक्रम दीजे बताय ॥ शूरा ॥ ८ ॥ -काया की रेल-नं० ११२[तर्जः-गुरु निर्ग्रंथ नहीं

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

जोया जीव तेने २] काया की रेल हमारी रे लोगो काया की रेल हमारी रे ॥ टेर ॥ सीधी सड़क शुद्ध संजम पाले जंकशन मोक्ष मुरारी रे, । धोखा मेट दिया दुर्गति का, उपट राह हम टारी रे ॥ काया ॥१॥ तन अंजन मन पेच दबाते, जाते इच्छा अनुसारी रे । सत्य उपदेश की सीटी देते, फिरते मुलक मुभारीरे ॥ काया ॥ २ ॥ तप अगनी और कर्म कोयले डाल के करते छारी रे । नाडी तार का लग रया खटका, प्रतिबन्ध सिगनल डाली रे ॥ काया ॥ ३ ॥ समदृष्टि दुर्बीन लगाकर करते करुणा तुम्हारी रे, । दानादिक अच्छे डिब्बे की करते कोई यक सवारी रे ॥ काया ॥ ४ ॥ नेम का टिकट दिया मुझ सतगुरू बाबू जी पर उपकारी रे, । स्टेशन सुरलोक ठहर फिर लेंगे अचल पुर धारी रे ॥ काया ॥ ५ ॥ कहे मुनि नन्दलाल तणां शिष्य, सुन लेना नरनारी रे, । उणीसे तेहत्तर अलवर माही जोड़ कीनी तइयारी रे ॥ काया ॥ ६ ॥ जम्बू स्वामी के गुणानं १९३ [तर्ज.—पुज मुन्नालाल जी नित ध्यावोरे] वंदों नित जम्बू स्वामी सौभागी रे, हुआ जगत में परम वैरागी रे ॥ टेर ॥ माता धरणी नन्दन जाया रे, पूर्व पुण्य से बहु ऋद्ध पाया रे । इम सोलह वर्ष में आया ॥ वंदो ॥ १ ॥ तिण अवसर सुधर्मा स्वामीरे, पान से मुनि संग शिवगामी रे, आया विचरत अन्तर्यामी रे ॥ वदो ॥ २ ॥ आया जम्बूजी वन्दन काजेरे, तिहाँ सुधर्म स्वामी विराजे रे, सुन वाणी वैराग्य में छाजे ॥ वंदो ॥ ॥ ३ ॥ अष्टनारी एक दिन परणीरे, । जांकी काया कंचन वरणी रे, । नहीं जोया सन्मुख जान वैतरणी ॥ वंदो ॥ ॥ ४ ॥ पान से सत्तावीस साथेरे, सम्भाग एकण राते रे । लीनो संजम सह परभाते ॥ वंदो ॥ ५ ॥ सुधर्म स्वामी जैसे गुरू भेट्या रे, सब फंद जगत का मेट्यारे, करनी कर संसार समेट्या ॥ वंदो ॥ ६ ॥ सोलह वर्ष रहे घर मांही रे, फिर साधू हुये हुलसाई रे । रहे छद्मस्त वीस वर्ष तांई ॥ वंदो ॥ ७ ॥ बहु गुण रतनों की खानो रे, ध्याता अहो निशि निर्मल ध्यानो रे । पीछे पाया केवल ज्ञानो ॥ वंदो ॥ ८ ॥ चम्मालीस वर्ष केवल पालो रे, मुनि अष्ट कर्म ने बाली रे, पहुंचा मोक्ष बहु गति टाली ॥ वंदो ॥ ९ ॥ कहे खूब मुनि तस नामो रे, सहू सीजे वंछित कामोरे । ऋद्धि सिद्धि नवे नन्द पामो ॥ वंदो ॥ १० ॥ लोभ त्याग-नं. ११४ [तर्जः—डगमग नहीं करना नहीं करना] काम नहीं आसी रे माया २ तज लालच भज जिन राया ॥ टेर ॥ ब्राह्मण कुल में जनम लियो, धन धन कंपिल ऋषिराया । सुवर्ण लोभ तज राज सभा में, केवल पद पाया ॥ काम ॥ १ ॥ जिनरिख जिन पाल दोनों भाई, ते परदेश सिधाया, । बार ग्यारह लाभ कमाई वापिस निज घर आया ॥ काम ॥ २ ॥ द्वादसमी विरिया फिर

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

चाले, लालच नहीं मिटाया। मात पिता बरजा नहीं माना, तो जिरखि प्राण गवाया ॥ काम ॥ ३ ॥ सातम खंड साधनने चाल्यो संभूम चक्री राया। वार वार सुर मना करे पण लालच मांय लुभाया ॥ काम ॥४॥ समुदर मांही चल्या शीघ्र से बैठ जहाज में राया, डूबी जहाज सागर के माँही सातमी नरक सिधाया ॥काम॥५॥ निशदिन दौड़े बहु धन जोड़े धूप गिने नहीं छाया। कर्म बाँधकर नर्क सिधाया जहां कूटे जमराया ॥काम ६॥ चार तीर्थ का शरणो लीधो जग मांही जश पाया। महामुनि नन्दलाल तणां शिष्य यह उपदेश सुनाया ॥ काम ॥ ७ ॥ सत्य सुखदाई-नं० ११५ [तर्जः—रे पण्डित की जो अर्थ विचारी] मानव साँच सदा सुखदाई ॥ टेर ॥ जनक सुता* को रुपीया लेकर कीनी तुरत सगाई, व्याह किये विन कूट पीटने सासरीये पहुँचाई रे॥ मानव ॥ १ ॥ उस कन्या को बिन अपराधे सरवर तट लटकाई। सर्दी गर्मी सहन करे पण तन ढाँकन पट नाहीरे॥ मानव ॥ २ ॥ बतलाया किनसे नहीं बोले मौन में रहत सदाई। हाकिम हुकम से मार सहे जद सच सब देत सुनाई ॥मानव॥३॥ रात दिवस कछु खावे न पीवे सासरिया के माँही। मुआँ वाद पिता से मिले वह पाछी पीहर में आईरे॥ मानव ॥ ४ ॥ ते सरीखा सत्यवादी हो ज्यो ते दिल में दृढ़ता राखो। क्रोध लोभ भय हाँस वसे तुम झूंठ कभी मत भाखोरे ॥ मानव ॥ ५ ॥ तीन दिवस को अवधि आपी दीजो अर्थ बताई, । मुनि नन्दलाल तणां शिष्य कहे छे राम पुरा के मांई रे ॥ मानव ॥ ६ ॥ -सद् गुरु की संगति-नं० ११६ [तर्जः—प्रणमू वास पूज्य जिन नायक सदा सहायक तू मेरो] सतगुरु की संगति कर ले रे चेतन, पावे सुख सवायारे, । कर्म हणीने शिवपुर जासी तू देख परदेशी रायारे ॥ टेर ॥ नगरी सितम्ब कानो राज करे छे, महा अधर्मी रायारे, । धर्म कर्म को मूल न जाणे, रहता लोही से हाथ भरायारे ॥ सतगुरु ॥ १ ॥ जब शोधन के काजे राजा, कई मनुष्य मरायारे, । घाल तराजू के माँही तोलतो पिण जरा नहीं घटायारे ॥ सतगुरू ॥ २ ॥ इण कारण से राय परदेशी, एक माने जीव कायारे, । चित प्रधान सरीखा पुण्यवंत, मुनिवर का जोग मिलायारे । सतगुरू ॥ ३ ॥ राजा प्रधान दोही रथ माही बैठा घोड़ा बहुत दौड़ायारे। राजा अति घबराय गयो तब तुरत बाग माही आयारे। सतगुरू ॥ ४ ॥ मुनिवर देखी ने राजा कोप्यो ई कुण जड़ मूढ़ आयारे। चित जी कहे यह तो जैन का साधु

* ठठेरे के यहाँ बनी हुई घड़ियाल।

५६

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

जुदा माने जीव काया रे ॥ सतगुरु ॥४॥ चर्चा करतें राय परदेशी तुरत मुनि पै आया रे; केशी श्रमण सा सतगुरु मेट्या तो छिन मांही भरम मिटाया रे॥ सतगुरु ॥६॥ जहर जोग से अनशन करने. ते सुर पदवी पाया रे; विदेह क्षेत्र में मुक्त जावेगा सूतर में फरमाया रे॥ सतगुरु ॥७॥ साल पिच्चावन कियो चौमासो श्रावक बहु हुलसाया रे; मुनि नन्दलाल प्रसादे खूबचन्द नीमच मांही गाया रे॥ सतगुरु ॥ ८ ॥ -नारी प्रेम- नं ११७ [तर्ज:-तू सुन म्हारी जननी] सुन चतुर सयाना नारी को नेह निवार जे ॥ टेर ॥ परदेशी राजा तणीसरे सूरी कंता नार । एक दिन जाग्रण जागतासरे मन में कियो विचार ॥ पिउजी तो इण राजकोसरे नहीं करे सार सम्भाल रे॥ सुन चतुर ॥ १ ॥ इण विध कर विचारता सरे दिन ऊगो तिणवार; तत्क्षण वेग बुलावियो सरे सूरी कंत कुमार । प्रच्छन्न पणे पुत्र भणीसरे बोले वचन विचार रे ॥सुन २॥ धर्म गेलियो तुझ पिता. सरे छोड़ दियो सब राज; जहर शस्त्र प्रयोग से सरे. पूरण करदे काज । महोत्सव कर मंडाण से सरे देसु तुझने राज रे॥ सुन ॥ ३ ॥ पुत्र सुनी या वार्ता थर थर कंपी काय; बोल्यो अण बोल्यो रह्यो सरे आयो तिन दिश जाय । पुत्र पिता ने कह देसी तो कीजे कौन उपायरे॥सुन॥४॥भोजन सरस बणावियोसरे मांही नाख्यो जहर, । नरपति नौत जिमावियोसरे दियो नशा ने घेर ॥ आतम ज्ञान लगावियोसरे जरा न आनी लहर रे॥सुन ॥ ५ ॥ तत्क्षण उठ्यो नरपतिसरे आयो पोषधशाला मांय; अवसर आयो जाणनेसरे दियो संथारो ठाय । सांचो जिण धर्म पालने सरे गयो स्वर्ग के माय रे॥ सुन ॥ ६ ॥ इम जाणी ने नीकलेसरे नारी नेह छिटकाया; शुद्ध संजम आराधता सरे धन धन ते मुनिराय ॥ खूब मुनि कहते मुनिवर का नित नित प्रणमू पायरे ॥ सुन ॥ ७ ॥ -भरत वैराग्य- नं ११८ [तर्ज:-आज रंग बरसे रे] भरत मन मांही रे २ वैराग्य भाव में रहे सदा ही रे ॥ टेर ॥ प्रथम जिनेश्वर समो शरण में प्रगट बात फरमाई रे; भारत भूपति जासी मोक्ष इणहिज भव मांही रे॥ भरत ॥ १ ॥ विषय भोग आरम्भ परिग्रह में रहे सदा मुरझाई रे; कैसे मोक्ष होगा एक नर यूं बात चलाई रे॥ भरत ॥ २ ॥ भरत सुनी यह बात तुरत ही लीनो उसे बुलाई रे; पूर्ण कटोरो भर के तेल दियो हाथ के मांही रे ॥ भरत ॥ ३ ॥ बीच बजार होकर लावो तुम रहीजो सग सिपाही रे; एक बूंद भी गिरे तो दीजो शीष उडाई रे ॥ भरत ॥ ४ ॥ विविध भांति वस्तु हटियों पर दीनी खूब सजाई रे; उस रस्ते होकर उस नर को सौंप्यो लाई रे॥ भरत ॥ ५ ॥ क्या क्या देखी चंगी चीज आवत रस्ता के मांई रे; फक्त कटोरा बीच ध्यान चित गयो न कांई रे॥ भरत ॥ ६ ॥ यों मुझ मन वैराग्य वसे, नहीं

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

आरम्भ परिग्रह मांई रे; न्याय सहित इस मानव को दियो भरम मिटाई रे ॥ भरत ॥ ७ ॥ उगणी से पचास ऊपर छब्बीस साल के माई रे; मुनि नन्दलाल तणां शिष्य अलवर जोड़ बनाई रे ॥ भरत ॥ ८ ॥ -सती काली रानी- नं ११६ [तर्ज -भजन बिन कांई होसी रे तेरो मूल]कालीयो रानी सफल कियो अवतार, तेतो पामी छे भवोदधि पार ॥टेर॥ कोणिक रायनी छोटीहो माता, श्रेणिक नृपनी नार: वीर जिनन्द की वाणी सुनीने लीनो संजम भार ॥ काली ॥ १ ॥ चंदन बाला जी जैसी मिली हो गुराणी के नित २ नमी चरणार; विनय करीने भणी अंग इग्यारे, तेहनी निर्मल बुद्धि अपार ॥ काली ॥ २ ॥ सुमत गुपत शुद्ध संजम पालत, चढ़ी हो प्रणाम की धार; आज्ञा लेई न सती निज गुरणी की, तपस्या मांडी है सार ॥काली॥ ३ ॥ शरीर शकती जानी सती ने अराध्यो रत्नावली तपनो हार; चार लडी सम्पूरण कीनी, तेनो आठमें अंग अधिकार ॥काली॥४॥ पाँचवर्ष तिनमास दो दिन कम लागो इतनो काल; । धन्य महासती तप अराध्यो तेहने वंदना छे बारम्बार ॥ काली ॥ ५ ॥ आठ वर्ष कुल संजम पाल्यो कर्म किया सब छार; जनम जरा और मरण मिटायो पहुँची मोक्ष मुझार ॥ काली । ६ ॥ मुनि नन्दलाल तणा शिष्य गायो; शहर भिलाडा मुझार; ऐसी सती का सुमरण सेती मुफ वरते मंगलाचार ॥ काली ॥ ७ ॥ -सती अंजना- नं० १२० [तर्ज:-महाड़] सीयल सुध पालो मन वच काय । तासे विघन सहू टल जाय ॥ टेर ॥ मोटी सती हुई अंजनारे पुत्र थयो वन माँय; निश दिन सुर सेवा करे कांई सिहनो रूप बनाय ॥ सीयल ॥ १ ॥ बिल २ रोवे अंजनारे पूरव बात चितार; बालासस वैरी हुआ कांई जिनवर को आधार ॥ सीयल ॥ २ ॥ वसंतमाला इम बीन वेरे बाई कर संतोष: कर्म कमाय। आपणा कोई किणने दीजे दोष ॥ सीयल ॥ ३ ॥ इतने मामा आवियोरे तिन अटवी के माँय, बाई तूं रोवे मती भट लीनी कंठ लगाय ॥ सीयल ॥ ४ ॥ बैठाई विमान में रे वसंतमाला पिण लार, मामोजी घर आपणे काँई ले चाल्यां तिणवार ॥ सीयल ॥ ५ ॥ बालक मोती भूमको रे देख्यो लिण विमाण, लेवण काजे उछल्यो काँई हेटे पडियो आण ॥ सीयल । ६ ॥ आल न आयो लाल के रे मात थई दिलगीर, मामो जी लायो तोकने कांई मेटो मन की पीर ॥ सीयल ॥७॥ हनुमंत पाटन वेग सेरे लेय गयो निज स्थान । मामाजी महोत्सव कीयो कांई नाम दियो हनुमान ॥ सीयल ॥८॥ महामुनि नन्दलाल जी रे ज्ञानतणाँ दातार, सीयलतणा प्रसाद से काँई वरते मंगलाचार ॥ सीयल ॥ ९ ॥ -समकितधारी श्रेणिक नृपति- नं १२१ [तर्ज:-इण आऊखो टूटाने सांधो को नहीं रे] समकीत धारी महीपति पहथो रे ॥ टेर ॥ नगरी तो राजगृहीनो वासियो रे, श्रेणिक

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

नामा छे रायरे । धर्मनो पूरण अनुरागी थयोरे ॥ तिण दिनथी भेख्या मुनिरायरे ॥ समकीत॥१॥ बनमें तो भावे निजभावनारे, जो इहां प्रभू महर करायरे ॥ तो हर्ष धरी ने वंदू वीर ने रे, सफल दीहाड़ो मुझ धन्य रे ॥ समकीत ॥ २ ॥ राजगृही ने भीतर बाहरणे रे पडहो फेरायो महिपाल रे, । प्रभु पधारया मुझ मालूम करे रे, करसूं मैं तिणने निहालरे ॥सम॥३॥ भगवंत विचरत आया तिण समे रे, लोकों मिल खबर दी तत्काल रे । जे जे बधाई आपी तेहने रे कीना छे नृप निहाल रे ॥ समकीत ॥ ४ ॥ सजी सवारी आयो वंधवारे, तिहां विराजे नाथरे, श्रेणिक नृप रानी चेलना रे, प्रभु ने बांध्या जोड़ी हाथ रे । समकीत ॥ ५ ॥ सेवा तो कीनी निर्मल जोग सूं रे, वाणी सुन आयो निज गेह रे । कर कर दलाल्या अति धर्मनीरे, गोत्र तीर्थ कर बांध्यो तेहरे ॥ समकीत ॥६॥ पहला तीर्थ कर होसी भरतमें रे, शास्तर में घणा अधिकार रे; मुनि नन्दलाल तणां शिष्य इम कहेरे, जिन धर्म पाल्या जै जै काररे ॥ समकीत ॥ ७ ॥ --सुदर्शन सेठ-- नं० १२२ (तर्ज:--ख्याल) सुदर्शन श्रावक पूरण प्रिय धर्मी श्री महावीर नो । टेर ॥ राजगृही का बाग में सरे वीर विचरता आया, । सुनी बात सुदर्शन श्रावक हृदय हर्ष भराया, ॥ ले आज्ञा निज मात तातरी तुरंत वंदवा आया रे ॥ सुदर्शन ॥ १ । देवाधिष्ठ कोप्यो थको स तिण अवसर अर्जुन माली । नगरी के चहुं फेर फिरे स कर में मुद्‌गल झाली ॥ बीत गया छै मास हणे नित छ: छ: पुरुष एक नारी रे ॥ सुदर्शन ॥ २ ॥ ते तिणने रस्ता में मिलियो देख रहा नर नारी । सागारी अनशन कर लीनो मन में निश्चय धारी ॥ कुछ नहीं चाल्यो जोर देवता निकल गयो तिणवारी रे ॥ सुदर्शन ॥ ३ ॥ अनशन पार लार लेई तिण को आया बाग में चाली, वीर वांदवाणी सुन संजम लीनो अर्जुन माली ! छ: महीने में मोक्ष गये सब जनम मरण दुःख टाली रे ॥ सुदर्शन ॥ ४ ॥ ऐसा श्रावक होय गुरु की सदा भक्ति मन भावे, कभी कष्ट व्यापे नहीं सरे जगत मांही जश पावे ॥ महा मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य जोड़ करी इम गावे रे ॥ सुदर्शन ॥ ५ ॥

गोपीचन्द की लावनी — नं० १२३ (तर्ज:-मारग में काँइ को खड़ा रे चले जाना) चले जाना, अरे हो रे चले जाना, महलों के नीचे काहे कूं खड़ा रे ॥टेर॥ गोपीचन्द को भेख देख कर बहिन बैन फरमावे । भोग छोड़ कर जोग लिया क्यों यहां पर अलख जगावे रे ॥ चले० १ । मरजो माँ मैनावती जो तुझ बालक ने भरमायो । दूजो मरजो सतगुरु थारो तुझे भेख पहनायो रे ॥ चले० २ । धन माल सब छोड़ दिया तुझ दिया कुमति ने घेरा । बंगाले का राज छोड़कर हुआ गुरु की लेरा रे ॥ चले० ३ ॥ वह आदर कहो

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

कहाँ रहा बोल में, कहा कहूँ तुभ एतो । मीठा भोजन ठंडा पानी यो फौजाँ संग रहती रे ॥ चले० ४ ॥ इतने कड़वे बोल सुनाकर फिर महलों में आई । मोत्यों की भर थाल हाथ से भिक्षा देने लाई रे ॥ चले० ५ ॥ ना चाहिये मोती आदिक में ठंडा टुकड़ा चाहूं । खुशी होय तो दे दे नहीं तो अपने आश्रम जाऊं रे ॥ चले० ६ ॥ कहे बहिन तू जा नहीं ले तो क्षमाधार चल आया । मुनि नन्दलाल तणा शिष्य गावे ऐसे स्वर्ग वह पाया रे ॥ चले० ७ ॥ **मृगा पुत्र का वैराग्य**—नं० १२४ (तर्ज:—वनो लोंग बिखेर गयो रे) मृगा पुत्रजी वैरागी थयारे, कांई मुनिवर को देख स्वरूप ॥ टेर ॥ होजी सुग्रीव नग्र का वासिया रे, कांई बलभद्र रायना नन्द । ॥ मृगा० १ ॥ होजी रानी मृगावती अंग उपना रे कांई बहत्तर कला में हुशियार ॥मृगा०२॥ होजी रत्न जड़ित आँगनारे कांई रान्यां को बहु परिवार ॥ मृगा० ३ ॥ होजी कई दिना के आंतरे रे, कांई बैठा है महल मुझार ॥ मृगा ४ ॥ होजी विविध वाजिंतर बाजता कांई नाटक का भणकार ॥ मृगा० ५ ॥ होजी तिण अवसर थई निकल्या रे कांई महलों के नीचे अणगार ॥ मृगा० ६ ॥ होजी नजर पड़ी धूनी ऊपरे रे कांई मन में मांही करत विचार ॥ मृगा० ७ ॥ होजी जाति स्मरण ज्ञान ऊपनो रे, कांई जान्यो है सकल विचार ॥ मृगा० ॥८॥ होजी मन मांही वैराग्य लायने रे, कांई लीनो है संजम भार ॥ मृगा० ९ ॥ होजी बहुत वर्षां को संजम पालने रे, कांई पहुँचा है मुक्ति मुझार ॥मृगा० १०॥ होजी खुबचन्द कहे जी रण मांयने रे कांई जिन धर्म पाल्याँ जै जै कार ॥११॥

चन्द्रसेन राजा श्रावक—नं० १२५ (तर्ज :—सुगणा साधुजी हो के मुनिवर थारो मन चालियो तू घेर) श्रावक श्री वीरता होके भवियण क्षम्यावंत गुणधार ॥ टेर ॥ कनकपुरी नगरी तणो होके भवियण चन्द्रसेन महिपाल । वीर जिनन्द ने वांदवा होके भवियण आयो सुन तत्काल के ॥ श्रावक० १ ॥ वाणी सुन वितरागिनी होके भवियण श्रावकना व्रत लीद । हीये हर्ष अति ऊपनो होके भवियण उडी मोह की नींद के । श्रावक २ ॥ प्रभू पासे नृप आदर्यो होके भवियण एवो नेम मन तोल । जब तक दीपक नहीं बुझे होके भवियण रहसूं ध्यान अडोल के ॥ श्रावक ३ ॥ प्रभु वन्दी आयो महल में होके भवियण ऊभा ध्यान लगाय । दासी देख विचारियो होके भवियण दिया राय साथे राय के ॥ श्रावक ४ ॥ तरत दीपक जोयो सही होके भवियण ते नहीं जान्यो भेद । बलि बलि तेल जो सींचवे होके भवियण नृप पायो अतिखेद के ॥ श्रावक० ५॥ दिन ऊगो तब नरपति होके भवियण पूरण पाल्यो नेम । द्वेष भाव आण्यो नहीं होके भवियण अनशन कीधी तेम के ॥श्रा०॥६॥ एक दिवस कोंपालियों हो के भवियण श्रावक धर्म आचार द्वादश ।

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

मां सुरलोक में होके भवियण पाया सुर अवतार के ॥ श्रावक ७ ॥ विदेह क्षेत्र में सीझसी होके भवियण करसी शिवपुर वास। महि मुनि नन्दलालजी होके भवियण तस शिष्य कहत हुलास के ॥श्रावक ८॥मुनि नन्दीसेन कुमार—नं० १२६ (तर्ज—चंद गुपत राजा सुनो) नंदीसेण मुनि वांदीए ।।टेर॥सेणिक राय नो डीकरो,नंदीसेण कुमारो रे । वीर तणी वाणी सुनी, वैरागी थयो तिण वारो रे॥ नंदीसेण ॥१॥ संजम लेवा त्यारीहुओ, एक सुर कहे आई ए मोरे । कर्म सोगावली बाकरे, हिवडा संजम लेवे के मोरे ॥ नंदीसेण २॥ बहु विध कर समझाबियो,मानी नहीं एक बातांरे । संजम लीनो वैराग्य से, वीर दियो माथे हाता रे ॥ नंदीसेण ३ ॥ ज्ञान भणया स्थेवर कने, थया छे एकल विहारी रे । विना उपयोग चलया गया वेश्या के घर तिणवारी रे ॥ नंदीसेण४॥ वेश्या मर्म प्रकाशियो, वचन सुणी ने मुनीराया रे । साडा बारा क्रोड सो नैया, लब्धि करी बरसाया रे ॥ नंदीसेण५॥ वैश्या तुरत आडी फिरी, लिया मुनि ने ललचाई रे । समकीत में सेंठा रह्या, यह पणथई अधिकाई रे ॥ नंदीसेण ६॥ एहवो अभिग्रह धारीयो; दश दश नित समझावेरे। वीर समी पर मोकले, धर्मी पुणे बनावे रे ॥नंदीसेण ७ ॥इम साडा बारावरस निकल्या, एक दिन नव समझायारे । एक घटे योग ना मिल्यो, विविध उपाय लगायारे॥नंदीसेण८॥ वैश्या कहे किम साहिबा, थया हो आप उदासी रे । सब वृतान्त सुणावियो, वैश्या बोली कर हांसी रे ॥ नंदीसेण ९ ॥ दशमा तुम पूरा हुओ, ढील न करी ये लगा रो रे । वचन लग्यो जिम ताजणो, निकल्या थई अणगारो रे ॥ नंदीसेण १० ॥ बहु वर्षों का संजम पालने, निर्मल केवल लीधोरे । खूब कहे ते मुनिवरू, काम किया सब सिधोरे ॥ नंदीसेण ११ ॥धर्म-रुचि-नं० १२७ (तर्ज:—जला की)मुनिवर धर्म घोषना शिष्य तपस्वी गुणधारी हो, धर्म रुचि अणगार थाँ पर वारी अणगार । धर्म घोषना शिष्य तपस्वी गुणधारी हो मुनि ॥१॥ मुनिवर विचरत २ चम्पानगरी आया हो, धर्म रुचि अणगार। विचरत २ चम्पानगरी आया हो मुनि ॥२॥ मुनिवर आज्ञा लई शिष्य गोचरी सिधायाहो। धर्मरुचि अणगार आज्ञा लई शिष्य गोचरी सिधायाहो मुनि॥३॥मुनिवर मास खमणके पारने शहरमें आयाहो । धर्म रुचि अणगार मास खमणके पारनेशहरमें आयाहो मुनि॥४॥ मुनिवर फिरतां२ नाग श्री के घर आयाहो । धर्म रुचि अणगार फिरतां २ नाग श्री के घर आया हो मुनि ॥५॥ मुनिवर कड़वा तुम्बा को आहार मुनि ने बहरायो हो। धर्म रुचि अणगार कड़वा तुम्बा को आहार मुनि ने बहरायोहो मुनि ॥६॥ मुनिवर जहर हलाहल जाण गुरुजी फरमायो हो । धर्म रुचि अणगार जहर हलाहल जाण गुरुजी फरमायोहो मुनि ॥७॥ मुनिवर देखी निरवद्य स्थानजाई

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

परठावो हो। धर्म रुचि अणगार देवी निरवद्य स्थान जाई परठावो हो मुनि॥ ८॥ मुनिवर परठण आया अजयणा जाणी हो। धर्मरुचि अणगार परठण आया अजयणा जाणीहो मुनि॥९॥ मुनिवर आहार कियो सब खीर खाँड जाणीहो। धर्मरुचि अणगार आहार कियो सब खीर खाँड सम जाणीहो मुनि॥१०॥ मुनिवर अनशन करके सर्वार्थ सिद्ध पधारयाहो। धर्म रुचि अणगार अनशन करके स्वार्थ सिद्ध पधारया हो मुनि ॥११॥ मुनिवर तिहाँ थी चवी महाविदेह में मुक्ति सिधा से हो, । धर्म रुच अणगार तिहां थी चवी महाविदेह में मुक्ति सिधा से हो मुनि ॥१२॥ मुनिवर कहे खूबचन्द आनन्द मुनि गुण गाया हो। धर्म रुचि अणगार कहे खूबचन्द आनन्द मुनि गुण गाया हो मुनि ॥ १३ ॥ कपिलमुनि—नं० १२८ (तर्ज पूर्ववत्) मुनिवर कंपिल ब्राह्मण नगर उज्जैनी में रहतो हो। कंपिल मुनिराज कंपिल ब्राह्मण नगर उज्जैनी में रहतो हो मुनि॥१॥ मुनिवर तिहां नृप दान दो मासा सोना नित्य देते हो। कंपिल मुनिराय तिहां नृप दान दो मासा सोना नित्य देते हो मुनि ॥२॥ मुनिवर नारी कहन से जाव सोनो हाथ नहीं आवे हो। कंपिल मुनिराय, नारी कहन से जावे सोनो हाथ नहीं आवेहो मुनि ॥३॥ मुनिवर रात अंधारी प्रभात समय दर्शावे हो। कपिल मुनिराय रात अंधारी प्रभात समय दर्शावे हो मुनि ॥४॥ मुनिवर मारग जातां हरे, जान घेरयो गिरत मांहीहो। कपिल मुनिराय मारग जातां हरे जान घेरयो गिरत मांही हो मुनि ॥५॥ मुनिवर नृप निर्णय कर कहे तू मांग देऊं सो ही हो। कपिल मुनिराय नृप निर्णय करके तूं मांग देऊं सो ही हो मुनि ॥६॥ मुनिवर एकान्त विचारी ने अधिको लोभ बधायो हो। कपिल मुनिराय एकान्त विचारीने अधिको लोभ बँधायोहो मुनि ॥७॥ मुनिवर मन सुलट्यो श्रेणी चढ़ता केवल पायोहो। कपिल मुनिराय मन सुलट्यो श्रेणी चढ़ता केवल पायो हो मुनि ॥८॥ मुनिवर ओघा पात्र लाय मुनि को देव ने दीना हो। कपिल मुनिराय ओघा पात्र लाय मुनि को देव सु दीनाहो मुनि ॥९॥ मुनिवर खूबचन्द कहे मुनिराज अनन्त सुख लीधोहो, कपिल मुनिराय खूबचन्द कहे मुनिराज अनन्त सुख लीधो हो मुनि॥१०॥

जूँआ निषेध—नं० १२९ (तर्ज ... चौपाई) ऊँच निवार सुनज्यो सब भाई, ... ने धूम मचाई। सेठ साहब की नारी बोली, ले लपक के ... खोजी ॥ १ ॥ सेंतीस हजार खोया सट्टा में, ... हजार गया सट्टा में। तेरह हजार तास की पत्ती. बोहत्तर हजार पर सेली बती ॥ २ ॥ हर्ष हर्ष जूंआ खेल्या, हाट हवेली गिरवे मेल्या। घर को सारो भ्रम उतारयो, नौ नौ बार दिवालो काढ्यो ॥ ३ ॥ एकण ओटा की जे नगरा ताको; ते पण जाय होली में नाखो। ... साठ कटोरा

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

६३

छप्पन छल्यां ॥ ४ ॥ गया कठेई आज सम्भालया, पूछ्यो नो दी सो सौ गाथा । छनाल पोती रेशमी बाघां, नौ की छ में बेची पाघां ॥४॥ गोटादार रेशमी साड़ा, खोल गांठरी लेगया काडी । ढोल्या पलंग गोदड़ गाबा, आई खबर न हो गया बाबा ॥ ६ ॥ गिलास गडवा ले गया ताणी, अबे काहि से पीओगा पाणी । पैसो एक कभी नाहीं बाल्यो, घर को की गे आल्यो पाल्यो ॥ ७ ॥ संग जूआ को छोडो आगो, नेम धर्म के मारग लागो । शिक्षा दी घर बाला सारे नस फट्ट क कहू न लागे ॥ ८ ॥ समचे बात कही सब आगे, लहे बाज ने अबकी लागे । पच्च खेंचने कमको केम, बुरी लागे तो कर दो नेम ॥ ९ ॥ खूब सुन सट्टा की रास्यो, फड़ बन्द चौड़ प्रकाश्यो । जूंआ खेल कभी मत खेलो, सुख चाहो तो सौगंद लेलो ॥ १० ॥ —धन्ना सेठ— नं० १३० (तर्ज:—महलां में बैठी हो रानी कमलावतो) सांभल हो श्रोता शूरा ने लागे वचन ज्युं ताजणो, कायर ने लागे नाहीं कोय ॥ टेर ॥ नगरी राजगृही ना बासीया, सेठ धन्ना जी जग में सार । पूर्व पुण्य थी बहु रिद्ध पामीया आठ नारयां ना भरतार ॥ सांभल ॥ १ ॥ एक दिन धन्नो जी बैठा बाठले, स्नान कर छे तिण बार । आठों ही नारयां मिलने प्रेम से, कूड रही छे जलधार ॥ सांभल ॥ २ ॥ सुभद्रा नारी चौथी तेहना मन में थई छे दिलगीर । आसूं तो निकाल्या तेहना नैन से, संजम लेवे छे मुझ वीर ॥ सांभल ॥ ४ ॥ प्रेम धरी ने धन जी पूछियो कामण क्यों थई छे उदास । शंका मत राखो थे मुझ आगले कारण तो कहो नी बिमास ॥ सांभल ॥ ४ ॥ कामण कहे छे कंथा माहरा, बीरा ने चढियो छे वैराग । एक एक नारी नित की परिहरे, संजम लेबा की रही छे लाग ॥ सांभल ॥ ५ ॥ धनजो कहे छे भोली बावली कायर दीसे छे थारो वीर । संजम लेणो तो दिल में धारियो तो किम करनी फिर ढील ॥ सांभल ॥ ६ ॥ सुभद्रा नारी कहे छे कन्त ने मुख से बनावो फोकट बात । यह सुख छांडी ने बाज्यो शूरमा प्रीतम जब जानू थाँकी बात ॥ सांभल ॥ ७ ॥ तत्क्षण धन्नो जी उठने बोलीया कामन रही जो तुम दूर । संजम लेवांगा अब इन अवसरे जब मैं बाज्यां ला जग में शूर ॥ सांभल ॥ ८ ॥ बे कर जोडीने सुन्दर बीनवे कह्यो हंसी के बस बोल । काची की सांची न कीजे साहिबा हिवडे बिचारी ने बाहिर खोल ॥ सांभल ॥ ९ ॥ संजम लेनो तो साहिबा सोहिलो चलनो छे कठिन बिचार । बावीस परीसा सहना दोहिला ममता मारी ने समता धार ॥ सांभल ॥ १० ॥ उत्तर पर उत्तर हुआ अति घणा आया साला के भवन उच्छाव । दोऊ मिल साथे संजम आदर्यो कायर उतरेगो पार ॥ सांभल ॥ ११ ॥ साला बहनोई मिल संजम लीयो आ बीर जिनन्द जी के पास । सालीभद्र जी स्वार्थ सिद्ध गया धन्ना जी शिवपुर बास ॥ सांभल ॥ १२ ॥ संवत उगणी से इकसठ साल में कीनो गठ ६१

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

चितौड़ चौमास । मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य गावियो वंछित फलेगा सब आस ॥ सांमल ॥ १३ ॥ **-गोकुल की गुजरियां-** नं० १३१ (तर्जः-मंदिर में काई ढूं ढतो डोले थारे घट में श्री भगवान , आवो ये सब राय तो मेलो गऊ पालो यूं नहीं समझे लो ॥ टेर ॥ गोकुल की गुजरियां आपस में कर रही हेलम हेलो । इण रस्ते से लाभ धर्यो छे क्यों ना सम्भाले बीजो गेलो ॥ आवो ॥ १ ॥ यो कानो ना तो मतवालो कूड कपट को थेलो । दही दूध की फोड़े जावण्यां कर देवे रेलम ठेलो ॥ आवो ॥ २ ॥ यूं डरियां तो काम न चाले दुनिया भरम घरेलो । कूट पीटने करदो सीधो यो पिण याद करेलो ॥ आवो ॥ ३ ॥ कुण जाणे बड़ो मात यशोदा ऐसो नन्द जनेलो । कंसराय ने अर्ज करां तो क्यों नहीं न्याय करेलो ॥ आवो ॥ ४ ॥ जो पुण्य पोते होय जणी का दुर्जन कांई करेगो । मुनि नन्दलाल तणा शिष्य कहे छे सबही सुलटि परेलो ॥ आवो ॥ ५ ॥ **-गोकलकी गुजरीयां-** नं० १३२ (तर्जः- तू सुन मारी जननी आज्ञा देवो तो संजम आदरू' म्हारो मही मत लूटो जी, मैं छूं गोकल की काना गूजरी ॥ टेर ॥ खारक खांड खोपरा मिश्री जिनको लागे दान । दान मही को कभी न सुनियो, बाबा नंद की आनरे ॥ म्हारो॥ १ ॥ मन में आण जरा डर काना, किमै थे छोडी लाज । मथुरा में जरासिंध जमाई कंस करे छे राज रे ॥ म्हारो ॥ २ ॥ इण जमना के घाट पर तू आकर करे किलोल । भेरा करी ग्वाल्या बटकियां, फोड़े मार गिलोल रे ॥ म्हारो ॥ ४ ॥ मन माने ज्यों करे कन्हैया तुझ में हाल न बीती । सीधी तरह समझावां हम सब मतना मांड अनीती रे ॥ म्हारो ॥ ४ ॥ गोकुल और मथुरा के बीच में यो जमना को घाट । दही दूध ले जावे गुजरी, तू बीच पाडे वाटरे ॥ ५ ॥ सोलह वर्ष गोकुल विषे सरे, लीला करी अनेक । खूब चन्द कहे जो पुण्य पोते चले न किसकी एक ॥ म्हारो ॥ ६ ॥ **-श्री कृष्ण जन्म-** नं० १३३ (तर्जः-अष्ट पदी) पुरुषोत्तम प्रगट्या अवतारा, जगत में महिमा विस्तारी ॥टेर॥ देवकी को नन्दन है नीको, हुवो जादव कुलमें टीको । भादवा बदि दिन्न अष्टमी को जन्म जब हुओ हरिजी को । दोहा-तिण अवसर बसुदेव जी, मन का सोच मिटाय । कोमल कर में लेई लाल को, जावे गोकुल मांय ॥ तुरत फुरती से हुआ त्यारी, पुरुषोत्तम प्रगटे अवतारी ॥ १ ॥ भवन से आया उतर हेठा, द्वार के ताला जड्या सेंठा। कंस का पहरा बाहर बैठा, निकल जाने को नहीं रस्ता ॥ दोहा-चरण अंगुष्ठ लगावियो, गोविन्द को तिण वार । खड खड ताल्या टूट पड्या कोई, सड सड खुल्या द्वार ॥ अखंडित निकल गये बाहरी ॥पुरुषोत्तम ॥ २ ॥ अंधेरी रात घटा छाई, जोर से गाजे गगन मांई, चमकती बिजल्यां दर्शाई, बायरो वाजे जोश खाई ॥ दोहा-अति उमंग आकाश से, पड़ रही जल की धार । सहस्र नाग छाया कर दीनी, पड़े न

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

बुन्द लगार ॥ जिन्हों का पुण्य बड़ा भारी, पुरुषोत्तम..... ॥ ३॥ निकल मथुरा स गोकुल ध्यावे, अपट जमुना जी पूर जावे। निकलवा भारग नहीं पावे, विविध मिसलत मन में ठावे ॥ दोहा–पग फरस्यो गऊपाल को, जमुना हुई दो भाग। वसुदेव जी तुरन्त निकल गये, हुलस्यो हियो अथाग ॥ गोकुल में पहुंचे गिरधारी, पुरुषोत्तम ॥४॥ यशोदा के हाथ जाय दीनो, प्रेम से गिरधर को लीनो। नंद जी महोच्छव खूब कीनो, दान बहु याचक ने दीनो ॥ दोहा– आये मथुरा में निज घरे, वसुदेव जी चाल। दिन दिन बीज कला ज्यों बढ़ता, आनन्द में नन्दलाल ॥ कोई नहीं जाने नर नारी, पुरुषोत्तम.. । ५॥ कृष्ण दिन्न दिन्न भया मोटा, हाथ में दंड लिया छोटा। ग्वाल संग रमे दडी दोटा, शत्रु के हुआ जेम सोटा ॥ दोहा–सोला वर्ष गोकुल विषे, लीला करी अनेक। तीन खण्ड का नाथ हुआ तूं, पूरब पुण्य तो देख ॥ जगत बल्लभ कहे नर नारी, पुरुषोत्तम......दलाल्यां धर्म तणी कीनी, शास्त्रमें शाख दख लीनी। सजनपर सुदृष्टि कीनी, भलायां जग में बहु लीनी ॥ दोहा–महामुनि नन्दलाल जी, तस्य शिष्य कहे एम। पुण्य प्रताप वांछित फल पावे, रखो धर्म का नेम ॥ मांडल गढ़ जोड करी त्यारी, पुरुषोत्तम ..॥७॥ **पुण्य की महिमा**- नं० १३४ (तर्ज:—पूर्व वत) पुण्य की महिमा सब गावे, पुण्यसे बांछित फल पावे ॥ टेर ॥ पुण्यसे मनुष्य जन्म पावे पुण्य से उत्ताम कुल पावे। पुण्य से तन निरोग पावे, पुण्य से दीर्घायु पावे ॥ दोहा–पुण्य उदय सत्गुरु मिले, मिले सूत्र के बैन। जीव।दिक नव तत्व पिछाने, खुलें जिगरके नैन ॥ पुण्य से धर्म हाथ आवे ॥पुण्य की० ॥१॥ पुण्य से नरेन्द्र पद पावे, पुण्य से सुरेन्द्र पद पावे। पुण्य से अति आदर पावे, पुण्य से विनश्रम धन पावे। दोहा—विपिन पहाड़ जल अगन में, मिले पुण्य से साज। दशों दिशी जन-जन के मुख से जस की सुने अवाज ॥ पुण्य से सरस शब्द पावे ॥ पुण्य की० ॥ २ ॥ पुण्यसे सुर आते दौड़ी, हुक्ममें रहते कर जोड़ी। पुण्यसे टले विघन कोडी, पुण्य देते बन्धन तोड़ी ॥ दोहा—मेरे गुरु नन्दलालजी, कहते साफ सुनाय। रामपुरामें जोड़ बनाई, सबके पुण्य सहाय ॥ सजन सनके यकीन लावे ॥ पुण्य की०॥३॥ **चतुर गति वर्णन**—नं० १३५ (तर्ज—पूर्ववत) पाय नर भव की जिन्दगानी, समझ अब भज अरिहन्त प्रानी ॥ टेर ॥ विश्व में तूं फिरता आया, जाग अब सोवे मत भाया नर्क बिच तेंने दुःख पाया, गोता वैतरणीमें खाया ॥ दोहा–तृत्त सांमली ऊपरे जिण कंट बनाय। पकड़ देव यम डाल दिया, तेरी सकल बिंधाणी काय ॥ तुरत ही खेंच लिया तानी ॥समझ० १॥ यम्म पशुओंका रूप करके, पक्षी बिच्छू अहि अजगर के। खाया तुम्ह तनका दे करके, सहा दुःख जब पल्ल सागर के ॥ दोहा—नर्क पाल तुझ नर्क में, मथ्यो जमी पर डाल। दया रहित मदगल से तेरा,

६५

किया हाल बेहाल ॥ कौन गिनते राजा रानी ॥ समझ० ॥२॥ कभी जिबघात भूंठ बोला, किया कुडमापा कुड तोला [illegible] पर नार संग डोला, पाप अपना पर शिर ढोला । दोहा–मर्म उघाड्या पार का, कुड [illegible] चित लाय । सत्पुरुषोंकी करी बुगायां, अगन होयसन माय ॥ कहै यमराज न्याय छानी ॥ समझ० ॥३॥ मांस का अहार किया चुप-चाप, स्वाद कर करके पीया शराप । आज [illegible] पधारे आप, आडो नहीं आवे माय और बाप । दोहा– जैसा कर्म यहां पर किया, वै [illegible] यहां [illegible] । [illegible] कर गर्म गम यम, तुझ को दिया पिलाय ॥ शास्त्र में फरमा गये ज्ञानी, ॥ समझ० ॥ ४ ॥ योनि तिर्यंच की तू पाया, पशु और पच्ची कहलाया । विषम सम जगह जन्म पाया, पिया जल मिला यही खाया ॥ दोहा– भाड़ खाड बिल पहाड में [illegible] माला मांय । शीत उष्ण का सहा महा दुख, कहां तक दूं दर्शाय ॥ ऊपर से बरस रहा पानी, ॥ समझ० ॥ ५ ॥ कभी तू [illegible] में जल गया, कभी तू पानी में गल गया । कभी तू घानी में पिल गया, कभी तू मिट्टीमें मिल गया ॥ दोहा– पशु हुआ बन्धन रहा, [illegible] मांय । कहां कुटम्बी कहां [illegible], यह हुआ कर्मका न्याय ॥ [illegible] पर कहां चुगा पानी ॥ समझ ॥६॥ किसीने तेरा सींग तोड़ा, किसी [illegible] । किसीने तेरा पूंछ मोड़ा, किसीने हल रथ में जोड़ा ॥ चाम रोग नख कारणे, दुष्ट दिया तुझ मार । सेक भूंज तन [illegible], नहीं [illegible] सुनी पुकार । जरा तू सोच अभिमानी ॥ समझ ॥ [illegible] तू हुआ मनुष्य कुजात, हीन और निर्धन दीन अनाथ । दुःखमें [illegible] दिन रात, कौन पूछे सुख दुःख की बात ॥ दोहा–रहेवा [illegible] घर नहीं, तन ढाकन पट नाय । मालिक का हलकी गाली सुन, मौन रखी मन मांय । [illegible] यह है किन से छानी ॥ समझ ॥ ८ ॥ [illegible] का दुःख तेंने पाया, अधो सिर रहा तू लटकाया । सवा नौ मास स्थान ठाया, मूत्र मल से तन लिपटाया ॥ दोहा– जन्म समय तू रुक गया, माता किया बिलाप । काट काट तुझे बाहर निकाला, पूर्व जन्म के पाप ॥ बात [illegible] भी तेंने जानी ॥ समझ ॥ ६ ॥ कभी पाया सुर अवतारा, हुआ तू नृत्य करन हारा । कन्दर्पी किंकर पद धारा, सूत्र में देख [illegible] ॥ दोहा– किल्विषी हुआ देवता, नहीं ऊंचा स्थान । उत्तम सुर तुझ को नहीं मीटा, कहां तक करूं बयान ॥ छोड दे सब [illegible], ॥ समझ ॥ १० ॥ कथन यह शास्तर से बरना, चतुर सुन हिये मनन करना । चाहो भवसागर से तिरना, दया और सत्य का लो शरना । दोहा– मेरे गुरु नन्दलाल जी, शिक्षा दी मुझ सार । चतुर मास अलवर कर आये, जयपुर ठाणा चार ॥ बनो तुम [illegible] दानी ॥ समझ ॥ ११ ॥ -चौवीसी नं. १३६

(तर्ज:–प्रभावती) चौबीसी जिन राज जगत में सुख संपति आनन्द बरसाया ॥ टेर ॥ [illegible] नगरी जिहां नाभि राजा, मरु देवी नन्द

ऋषभ जिनराया । चौरासी लाख पुर्वनो आयु, पांन से धनुपनी ऊंची काया ॥ चौवीसी ॥ १ ॥ अयोध्या नगरी जित शत्रु राजा, विजिया-
नन्द अजित जिनराया । बहत्तर लाख पुर्वनो आयु, साडी चार से धनुपनी ऊंची काया ॥ चौवीसी ॥ २ ॥ सावत्थी नगरी जितारथ
राजा, सेना दे रानी संभव जिनराया । साठ लाख पुर्वनो आयु, चार से धनुपनी ऊंची काया ॥ चौवीसी ॥ ३ ॥ वनिता नगरी सम्वर
 राजा, सिद्धारथ नन्द चौथा जिनराया । पचास लाख पुर्वनो आयु; साडी तीन से धनुपनी ऊंची काया ॥ चौवीसी ॥ ४ ॥ कौशम्बी
नगरी मेघरथ राजा, सुमगलानन्द सुमति जिनराया । चालीस लाख पुर्वनो आयु, तीन से धनुपनी ऊंची काया ॥ चौवीसी । ५ ॥
कौशम्बी नगरी श्रीधर राजा, सुसमा दे नन्द पद्म प्रभु जिनराया । तीन लाख पुर्वनो आयु, अढाई से धनुपनी ऊंची काया ॥ चौवीसी
॥ ६ ॥ वाणारसी नगरी प्रतिष्ट राजा, पृथ्वी दे नन्द सुपास जिनराया । बीस लाख पुर्वनो आयु; दो से धनुपनी ऊंची काया ॥ चौवीसी
॥ ७ ॥ चन्द्रपुरी नगरी महासेन राजा, लखनादे नन्द चन्द प्रभु जिन राया । दस लाख पुर्वनो आयु, डेढ से धनुपनी ऊंची काया ॥ चौवीसी
॥ ८ ॥ काकन्दी नगरी सुग्रीव राजा, रामा दे नन्द सुविधि जिन राया । दोय लाख पुर्वनो आयु, एक सो धनुपनी ऊंची काया ॥ चौवीसी
॥ ९ ॥ भद्दिल पुर नगरी दृढरथ राजा, नंदा दे नन्द शीतल जिनराया । एक लाख पुर्वनो आयु नेऊ धनुपनी ऊंचो काया ॥ चौवीसी
॥ १० ॥ सिंहपुर नगरी विष्णु राजा, विष्णु दे नन्द श्रेयांश जिनराया । चौरासी लाख वर्षनो आयु अस्सी धनुपनी ऊंची काया ॥ चौवीसी
॥ ११ ॥ चंपा पुर नगरी वसु पुज्य राजा, जयादे नन्द वासु पुज्य जिनराया । बहत्तर लाख वर्षनो आयु, सित्तर धनुपनी ऊंची काया
चौवीसी ॥ १२ ॥ कपिल पुर नगरी कीर्त वर्म राजा, सामादे रानी विमल जिनराया । साठ लाख वर्षनो आयु, साठ धनुपनी ऊंची
काया ॥ चौवीसी ॥ १३ ॥ अयोध्या नगरी सिंहसेन राजा, सुजसा नन्द अनन्त जिनराया । तीस लाख वर्षनो आयु, पचास धनुप नी
ऊंची काया ॥ चौवीसी ॥ १४ ॥ रतनपुर नगरी भानु राजा, सुब्रता धर्म जिनराया । दीस लाख वर्षनो आयु पैंतालीस धनुपनी ऊंची
काया ॥ चौवीसी ॥१५॥ हस्तनापुर नगर अश्वसेन राजा, अचलादे नन्द शान्ति जिनराया । एक लाख वर्षनो आयु, चालीस धनुपनी ऊंची
काया ॥ चौवीसी ॥ १६ ॥ गजपुरी नगरी तिहां सुर राजा, सुरादे नन्द कुन्थु जिनराया । पिचानु सहस्र वर्षनो आयु पैंतीस धनुपनी ऊंची
काया ॥ चौवीसी ॥ १७ ॥ नागपुरी नगरी सुदर्शन राजा देवकी नन्द अरह जिन राया । चौरासी सहस्र वर्षनो आयु, तीस धनुपनी ऊंची
काया ॥ चौवीसी ॥ १८ ॥ मिथिला नगरी तिहां कुम्भ राजा, प्रभावती नन्द मल्ली जिनराया । पचावन सहस्र वर्षनी आयु, तीस धनुपनी

ऊंची काया ॥ चौवीसी ॥ १९ ॥ राज गृही नगरी सुमित्र राजा, पद्मावती नन्द बीसवां जिनराया। तीस सहस्र वर्षनों आयू बीस धनुष नी ऊंची काया ॥ चौवीसी ॥ २० ॥ मथुरा नगरी विजयसेन राजा; विपुला दे नन्द नमि जिनराया। दस सहस्र वर्ष नो आयु, पन्द्रह धनुष नी ऊंची काया ॥ चौवीसी ॥ २१ ॥ सोरि पुर नगर समुद विजय राजा, सेवादे नन्द नेमी जिनराया। एक सहस्र वर्षनो आयु, दश धनुषनी ऊंची काया ॥ चौवीसी ॥ २२ ॥ वाणारसी नगरी अश्वसेन राजा, वामादे नन्द पारस जिनराया। एकसो वर्षनो पूरो आयु, नव हाथ नी ऊंची काया ॥ चौवीसी ॥ २३ ॥ क्षत्रीय कुंड ग्राम सिद्धारथ राजा, त्रिशला दे नन्द वीर जिनराया। बहत्तर वर्षनो सर्व आयु सात हाथ नी ऊंची काया ॥ चौवीसी ॥ २४ ॥ सम्वत उन्नीसे साल पचावन, जिन गुण गाय हिया हुलसाया खुबचन्द कहे नन्द लाल गुरुजी नीमच माहीं अति सुख पाया ॥ चौवीसी ॥ २५ ॥

-श्रीरतनचन्द जी महारज का गुणानुवाद-

नं० १३७ तर्ज़:-(ते गुरु चरणारे नमिये) रतन मुनि गुणी जन रे पूरा, हुआ तप संजम में शूरा ॥ टेर ॥ गांव कंफेडी रे गिरि में, तिहां जन्म लिया शुभ घड़ी में। जोवन की वयजद रे आया, मन वैराग मजीठ का छाया ॥ रतन ॥ १ ॥ गुरु राज मलजी के पासे, लियो संजम आप हुलासे। साथे देवीचन्द जी रे साला, तै तो निकल्या दोनूं लारां ॥ रतन ॥ २ ॥ निज घर नारी रे छोड़ी, ममता तीन पुत्र से तोड़ी। छः वर्ष पीछे रे ते पिण, सब निकल गया तज सग पण ॥ रतन ॥ ३ ॥ छत्तीस वर्ष संजम रे पाल्यो, जाने नर भव लाभनिकाल्यो। अठारा से अठोतर में जाया, उन्नीसे पचासमें स्वर्ग सिधाया ॥ रतन ॥ ४ ॥ उगणी से इकोतर के मांही, जांकी जश कीर्ति मुख गाई। कभी तो होगा रे तिरना, मुझे नन्दलाल गुरुजीका शरना ॥ रतन ॥ ५ ॥

-गुरु नन्दलालजी महाराजका गुणानुवाद

नं० १३८ (तर्ज -पुज्य मुन्नालाल जी नित ध्याओ रे) अहो म्हारा मन का मनोरथ फलिया रे, नन्दलाल गुरुजी म्हाने मिलिया ॥ टेर ॥ ईतो संजम लेई शुद्ध पाले रे, भव जीवों के घट दया घाले रे। ईतो न्याय मारग में चाले ॥ अहो ॥ १ ॥ ईतो पाप अठारह ने त्यागी रे, जाकी मिथ्या भ्रमना भागी रे। जांकी सुरत मुगत से लागी ॥ अहो ॥ २ ॥ ईतो बावीस परीसा जीते रे, ईतो चाले गुरु की रीति रे, आको दिन दया धरम में बीते ॥ अहो ॥ ३ ॥ ईतो निर्मल महाव्रत पाले रे, नित दोष बयालीस टाले रे। ईतो विषय कषाय निवारे ॥ अहो ॥ ४ ॥ ईतो अमृत बैन सुनावे रे; भव जीव सुन तृपत थावे रे। जांको रोम रोम हरषावे ॥ अहो ॥ ५ ॥ जाने तजीया सब घर धंधा रे, जाने मेट्या जगत का फंदा रे। जाको नाम लिया नव मंदा ॥ अहो ॥ ६ ॥ सांधो मुगति पंथ बतावे रे, जाने सुर

नर शीष नवावे रे बांका खूबचन्द गुण गावे ॥ अहो ॥ ७ ॥ -पूज्य श्री मुन्नालाल जी महाराज के गुणानुवाद- नं १३६ (तर्जः—ख्याल की] पूज्य मुन्नालाल जी शीतल स्वभावी गुण भंडार हैं ॥ टेर ॥ बैठ सभा के बीच करते ज्ञान प्रकाश । वाणी सुन श्रोता के हृदय सुमति का निवास रे ॥ पूज्य ॥ १ ॥ गुरु गम्भ करी धारणा पूज्य जी बहुत सूत्र के जान । अर्थ पाठ भिन्न २ समझावे सबको पड़े पिछान रे ॥ पूज्य ॥ २ । क्रियावंत बाल ब्रह्मचारी सागर वर गम्भीर । क्षम्या भाव शुद्ध संजम पालक शूरवीर महावीर रे। पूज्य ॥ ३ ॥ दर्शन किया मन प्रसन्न होत है शशी सम सोम दिदार । क्या तारीफ करूं पूज्य जी का, गुण हैं अपरम्पार रे ॥ पूज्य ॥ ४ ॥ सोमवार शुद्ध चौथ इक्यासी श्रावण मास शुभ आया । महा मुनि नन्दलाल तणां शिष्य हर्ष हर्ष गुण गाया रे ॥ पूज्य ॥ ५ ॥

—पूज्य श्री मुन्नालाल जी का गुणानुवाद-- नं० ४० [तर्जः —मन हो मोयो रे प्यारा लागे रे २ श्री मुन्नालाल जी हैं पूज्य सागे रे ॥ टेर ॥ रतनपुरी प्रसिद्ध शहर है, मुल्कों में सब जाने रे । जंगी नगर के बीच जनम पूज लीनो थाने रे ॥ प्यारा ॥ १ ॥ बाल वय में संजम पूज जी, पिता संग में लीनो रे । उदय सागर के चरण कमल में, चित धर दीनो रे ॥ प्यारा ॥ २ ॥ सेवा करके पूज्य पाद की, सूत्र ज्ञान बहु कीनो रे । संजम मांही लीन चित; वैराग्य में भीनो रे ॥ प्यारा ॥ ३ ॥ सागर सम गंभीर पूज्य के, मान दंभ नहीं दरसे रे । वाणी जैसे मधुर आपकी, अमृत बरसे रे ॥ प्यारा ॥ ४ ॥ प्रकृति बड़ी शान्त आपकी, क्रोध नजर नहीं आवे रे। करके दर्शन पूज्य राज का, आनन्द पावे रे ॥ प्यारा ॥ ५ ॥ न्यायवंत और सरल स्वभावी, ज्ञान गुणाकर भारी रे, कहां तक करूं बखान पूज्य जी का, है बलिहारी रे ॥ प्यारा ॥६॥ जय विजय सदा होवे आपकी, जहाँ पर आप पधारो रे, धर्मध्यान का लगे ठाट, होवे उपकारो रे ॥ प्यारा ॥ ७ ॥ उगणी से गुणयासी आदवो, मदसोर के मांही र मुनि नन्दलाल तणां शिष्य, ऐसे जोड़ बनाई रे ॥ प्यारा ॥

—मुनिराजों के गुणानुवाद— नं० १४१ (तर्जः - ख्याल) पूज्य मुन्नालाल जी, मीठी मनोहर वाणी आप की ॥ टेर ॥ मही मंडल में विहार विचरते बहुत वर्षों में आये । ज्ञान वंत गुणवंत संत गण नोल संग में लाये । रतनपुरी महाराज पधारे रोम राम हुलसाये रे ॥ पूज्य ॥ ॥ १ ॥ वादी मान मर्दक स्थवेर, मुनि नन्दलाल विख्यात । पंडित हैं मुनि देवीलाल जी सूत्र रहस्य के जान ॥ शीस राज जी मुनि गुणी अर्थ भाव लो जान रे ॥ पूज्य ॥ २ ॥ खूब मुनि लन्दों का दास मुनि चौथमल विख्यात । केशरीमल कस्तूरचन्दजी सगा हैं दोनों भ्रात, शकर लाल और राधाकृष्ण जी सेवा करे दिन रात रे ॥ पूज्य ॥ ३ मोतीलाल जी विनय वान और

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

वय दया में भरपूर । ... जी तपस्वी मोटा धर्म करे चकचूर ॥ प्यारे लाल हजारीमल जी रहत हुकम हजूर रे ॥ पूज्य ॥ ४ ॥ कजोडीमल भैरूं लाल और छगन लाल सुखदाई । चाँदमल और वृद्धिचन्द खुश तप संजम के मांई रे ॥ रामलाल और नाथूलाल ये आठों ही गुरु भाई रे ॥ पूज्य ॥ ५ ॥ भेरूं लाल और नाथूलाल जी गुलाबचन्द गुणवान । इकठाणा सुखलाल जी सरे गायन कला निधान ॥ शोभालाल और छगनलाल जी संसमल विशाल रे ॥ पूज्य ॥ ६ ॥ देवीलाल के सब संतों की है सेवा का शौख । नाम बताये अलग अलग गुणतीस संत का थोक ॥ वखान की लग रही झड़ी बीच सदर चांदनी चौक रे ॥ पूज्य ॥ ७ ॥ तप संजम आचार वंत मुनिवर का दर्शन पाया । साल गुणयासी ज्येष्ठ बदि शुभ अष्टमी का दिन आया ॥ महा मुनि नन्दलाल तणां शिष्य संतों का गुण गाया रे ॥ पूज्य ॥ ८ ॥ नोट—इस वर्ष मुनि श्री संतोषचन्द्र जी महाराज पं० श्री मुनि मगन लाल जी महाराज पं० श्री मुनि प्रताप मल जी महाराज व्यावची श्री मुनि लखमीचन्द जी महाराज पं० श्री मुनि हीरालाल जी महाराज आदि की दीक्षा हुई ।-पूज्यश्री श्रीलालजी महाराजका गुणानुवाद--नं० १४२(तर्ज:—ख्याल) पूज्य जी शीतल चन्द समान देख लो गुण रत्नों की खान ॥ टेर ॥ जिन मारग में दीपता सरे तीजे पद महाराज । कलूकाल में प्रगट हुआ एक आप धर्म की जहाज ॥ पूज्यजी ॥१॥ पूर्व जन्म में आप पूज्य जी पूरा पुण्य कमाया । धन्य छे माता आपकी सरे ऐस्यां नन्दन जाया ॥ पूज्यजी ॥ २ ॥ भव जीवाने तारता सरे कृपा करी दयाल । रामपुरे महाराज बिराज्या रया कलपतो काल ॥ पूज्यजी ॥ ३ ॥ मीठी वाणी सुनी आपको खुशी हुआ नर नार । फागुन सुद पूनम के ऊपर घणो कियो उपकार ॥ पूज्यजी ॥ ४ ॥ उगणी से लिरेसठ में पूज्य जी ठाणा एक दस आठ । रामपुरा में खूब लगायो दया धर्म का ठाठ ॥ पूज्य जी ॥ ५ ॥ हाथ जोड़ने करूं विनती अर्जी पे चित दीजे । बनी रहे सु नजर आपकी दर्शन वेगा दीजे ॥ पूज्य जी ॥ ६ ॥ महा मुनि नन्द लाल तणाँ शिष्य कहे सुनो गुरु देवा । वो दिन भलो ऊगसी सम्हाने मिले आंपकी सेवा ॥ पूज्यजी ॥ ७ ॥ --तपस्वी श्री बालचन्द्र जी महाराजका गुणानुवाद-- नं० १४३ (तर्ज:—आज रस बरसे रे) निज गुण परख्या रे २ मुनि बाल चन्द्र जी ने नैणा निरख्या रे ॥ टेर ॥ मालवा देश सुशोभित जानो रतन पुरी सुखदाई रे । ओस वंश में जन्म लियो जैनी कुल मांई रे ॥ निज ॥ १ ॥ जोबन वय में सुनी पूज्य श्री उदयचन्दजी की वाणी रे, लियो मुनिपद धार जगत् सुपनो सम जाणी रे ॥ निज० ॥२॥ कियो

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ज्ञान अभ्यास आप नित इच्छुक शुद्ध क्रिया के रे। महिमावंत संत गुणआगर पुंज दया के रे॥ निज० ॥३॥ मन्त्र सूत्र स्वाध्यायवीच शुद्ध प्रभु जाप के जपीया रे। चौथ भक्त आदि तप तन से बहुविधि तपीया रे॥ निज० ४॥ मारवाड़ मेवाड़ देश वली मालव में फिर आया रे। स्यालकोट जम्बू तक अति उपकार कराया रे॥ निज० ५॥ जैनाचार्य श्री मुन्नालालजी सुयश जग में पाया रे। धर्म प्रेम आपस में मिल-जुल खूब निभाया रे॥ निज० ॥६॥ पुज्य श्री और तपसीजी के अन्योअन्यहित पूरा रे। संजम का दिया साज अन्त तक रया न दूरा रे॥ निज० ७॥ चौरासी के साल चैत बद चौथ शनीश्चर आया रे। रतनपुरी में अनशन कर सुरलोक सिधाया रे॥ निज० ८॥ वादी मान मर्दक स्थेवर नन्दलाल महामुनि राया रे। तस्य शिष्य होय मग्न आज गुण गाय सुनाया रे॥ निज० ६॥ शाली भद्रकुमार—नं० १४४[तर्ज:-यूं ही मत जाओ जमारो हार]दान सुपात्र दिया जिन्होने सफल किया अवतार, धन्य श्री शालभद्र कुमार॥ टेर॥ पूर्व जन्म ग्वाल्या का भव में निर्धन निर आधार नीठ कर करता गृह गुजार। माता करे मजदूरी लड़का लेकर वाछड़ लार। चराबा जावे वन मुंझार॥ झेलो॥ सांझ पड़्या पीछा घर आतां, इम करता कई दिन जातां २, जिकर सुनो नरनार॥ धन्य० १॥ लड़के को कई खीर खिलाई तृपत हुआ अपार, दौड़कर घर आया तत्कार, कहे मात से खीर खिला मुझ बोले वारम्वार, मात जब मन में करे विचार॥ झेला॥ इस लड़के ने जब हठ कीनी; चार जना मिल वस्तू दीनी २, हो गई खीर तईयार॥ धन्य० २॥ माता पुत्र को शीघ्र बुलाकर थाल परोसी खीर; आप तो गई भरने को नीर। उसी वक्त पुन योग पधारे शूरवीर और धीर, तपस्वी मोटा गुण गम्भीर॥झेला॥ घर आये बालक हुलसाई; मुनिराज को खीर बहराई २ परत किया संसार॥ धन्य० ॥३॥ मुनिराज तो गया ठिकाने मात आई उस बार। देखकर मन में करे विचार। इतनी खीर खागयो पुत्र, नित काटे भूख अपार, मात की लाग गई टूकार॥ झेला॥ उसी वक्त मर गया कुंवर, राजगृहा नगरी के अन्दर २, लिया जिन्होंने अवतार॥ धन्य० ४॥ जन्म लिया गऊभद्र सेठ घर होरहे मंगलाचार, शहर में हुलसे बहु नरनार। जोबन वय मे आयो कुंवर को व्याही बतीसी नार, भोगवे पुण्य तणाँ फल सार॥ झेला। गऊभद्र सेठ जब संजम लीनो, अन्त समय जब अनशन कीनो २, पाया सुर अवतार॥धन्य० ५॥ ज्ञान लगाकर देखा पुत्र पर जाग्यो मोह अपार। जिन्हों की निशदिन करतो सार। वस्त्र आभूषण भोजन केरी तैंतीस पेटी सार। देवता मेले नित्य संवार॥ झेला॥ देखो जिन्हो का पुण्य सवाया। श्रेणिक नृप जिनके घर

७१

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

आया २, देखन शाल सुगार ॥ धन्य॥ ६ ॥ सब ऋद्धि को आनकार शी तजी बत्तीसी नार । जिन्होंने लिया है संजम धार । अनशन कर स्वारथ सिद्ध पहुंचे:चवलोसी भाव पार,जिन्हों का चौपी में अधिकार॥फेला॥खूबचन्द कहे मन्दसोर में दान, सुपात्र शी मुनिवर ने २, बेग हुवे निस्तार ॥ धन्य० ॥ ७ ॥ -दान शील तप भाव- नं० १४५ तर्ज:- छोटी कड़ी] जो चाहो शीघ्र इस भव सागर से तिरना, तम दान शील तप भाव आराधन करना ॥ टेर ॥ एक संगम नामा ग्वाल पूर्व भव माँडे, ले खीर थाल में भली भावना भाई, एक मुनि पधारे उसी वक्त के मांई, दिया दान हाथ से महान खुशाली छाई: हुवे शाल भद्र यह कथन दान का वरना ॥ तुम ॥ १ ॥ अभया रानी सुदर्शन सेठ के तांई; हो विषय अंध महलों में लिया बुलवाई,नहीं छोड़ा शील तब रानी कूक मचाई, बिन न्याय किया नृप शूली दियां चढ़ाई; सुर करी सहाय यह कथन शील का वरना ॥ तुम ॥ २ । एक धन्ना मुनि हुवे छठ छठ तप के धारी, कर आमिल पारणे स्वाद दिया सब टारी; श्रेणिक नृप आगे वीर कीर्ति विस्तारी, गये स्वार्थ सिद्ध नव मास संजम शुद्ध पारी; सहा विदेह में जासी मोक्ष मेट जर मरना ॥ तुम ॥ ३ ॥ हुवे ऋषभ देवजी के पुत्र भरत महाराया,श्रृंगार सर्व तज काच महल में आया, शुद्ध अनित्य भावना भाय केवल पद पाया, मुनिराज होय दश सहस्र भूप समझाया, फिर गये मोक्ष यह कथन भाव का वरना ॥ ॥ ४ ॥ यह दानादिक गुण चार जिन्हों में पाता, उनके सबही दुःख बादल ज्यों विरलाता, किया दिल्ली शहर चौमास रही सुख साता, बासठ बत्तीस में जोड़ लावनी गाता; कहे खूब मुनि मुझ ज्ञानी गुरू का शरना ॥ तुम ॥ ५ ॥ -सम्पत्ति का गर्व- नं० १४६ [तर्ज:—बहरत बील] संपति का साहिब तूं बनकर क्यों मगरूरी लाता है । तेरे सरीखे हुवे बहुत उनका भी पता नहीं पाता है ॥ टेर ॥ शंभुम नामा चक्रवर्त शो कथा उनके रिद्ध थोड़ी थी; चौरासी लख हाथी रथ घोड़ा पैदल छिनु कोडी थी ॥ चौसठ सहस्त्र अंतेवर जिनके एक सरीखी जोडी थी । नौ निधान चौदह रतन तो पिण तृष्णा नहीं थोडी थी ॥ मरके गया नरक में सीधा शास्तर में दर्शाता है ॥ तेरे ॥ १ ॥ कंस नृप कैसा था मानी, जोर जुल्म जिन कीना था । उग्रसेन निज पिता जिन्हों को पकड पींजड़े दिना था ॥ लोक लाज तजके मथुरा का राज जिन्होंने लीना था । तीन खंड के नाथ हरि जी कहो जी क्या दंड दीना था ॥ जैनी और वैष्णव सब जानें क्यों नहीं समझ में लाता है ॥ तेरे ॥ २ ॥ बड़े बड़े हो गये भूपति छत्र चंवर शिर होते थे । वो कंचन के महल आप फूलों की सेज पर सोते थे ॥ रत्न जडित जल की झारी से दिन ऊगाँ मुंह धोते थे । आठ बीस दो दो विध के तन मन

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

से नाटक जोड़ते थे ॥ वे नर मर मिट्टी में मिल गये तेरा कौन सहाता है ॥ तेरे ॥ ३ ॥ मान गान अभिमानी प्राणी क्यों इ ानी कहलाता है घड़ी घड़ी अनमोल वक्त तूं नाहक मुफ्त गंवाता है ॥ नेम धर्म सुकृत करनी का क्यों नहीं लाभ कमाता है। देख हवा इस कलुकाल की तुझे फिक्र नहीं आता है ॥ महामुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य जोड़ आगरे गाता है ॥ तेरे । ४ ॥

-काल महा बलवान- नं० १८७ [तर्ज:-पूर्ववत] काल महा बलवान जगतमें इनसे किन का नाताहै । ना मालूम होशियार रहो किस रोज अचानक आता है ॥ टेर ॥ जो वकील बैरिष्टर थे वो ऐसी अक्ल घुमाते थे। वान में वान निकाल दफा कानून किताब लाते थे ॥ सच्चे की झूंठा नित करके झूठे को बरी कराते थे। करते सवाल जवाब जहां पर हाकिम को नाच नचाते थे ॥ उनकी एक चली नहीं नर क्यों औरों पर अकड़ता है ॥ ना मालूम ॥ १ ॥ अरब पति कई खरब पति कई क्रोड पति लक्षपतियन को। देख देख सम्पत निज घर की खुश करते अपने मन को ॥ सुवर्ण की सेजा पर सोते खाते हवा जाकर बन को। अच्छी तरह फिकाजत करते कभी न दुःख देते तन को ॥ वे भी गये ना रहे यहां पर तूं किस पर घुमराता है ॥ नामालूम ॥ २ ॥ अर्जुन भीम रावण से राजा बड़े मर्द कहलाते थे। बैठ तख्तपर करते न्याय एक छत्तर राज धमातेथे ॥ नहीं मरेंगे रहेंगे यहीं हम गीशेकी नाम लगाते थे। नहीं था पार जिनके बल का पैरों से जमीन धुजाते थे ॥ वो भी हो गये निर्बल इससे तू किस पर जोर जमाता है ॥ न मालूम ॥ ३॥ वैद्य हकीम वैद्यक के वेता जो धन्वन्तर खुद कहलाते थे। नब्ज देख फिर सोच समझ कर बैसी दवा खिलाते थे ॥ उनको भी काल सम्भाल लिया जो औरों का रोग मिटाते थे। शुभ काम बना फिर याद करेगा ऋषि मुनि फरमाते थे ॥ महा मुनि नन्दलाल तणां शिष्य ज्ञान की युगल सुनाता है ॥ नामालूम ॥ ४ ॥

-पैसे से अनर्थ- नं० १८८ (तर्ज -पूर्ववत पैसे का परचा सब रखते ये जग वोहन गारा है। इनको त्याग वैराग्य लहे सोधन जग में अणगार है । टेर ॥ क्या बालक क्या बुड्ढा देखो सब का मन ललचाता है। है अनर्थ का मूल साफ वीत राग देव फरमाता है ॥ पुत्र पिता और पति नार के वैर विरोध कराता है। कहो भी किनके साथ गया हम सुनते कौन सुनाता है ॥ तू कहता धन मेरा मेरा इसका क्या इतबाराहै ॥ इनको ॥ १ ॥ क्या कहूं इस धन के कारण काज अकारज करते हैं निर्भय होकर आप फिरे पर भव से जरा नहीं डरते हैं ॥ गिन गिन के बहु माया जोड़ जोड़ जमीं में धरते हैं ॥ भूख प्यास सी उष्ण सही मूरख पच पच के मरते हैं। तृष्णा रूपी जाल जगत में इनका खूब पसारा है ॥ इनको ॥ २ ॥ महारातक

७३

जी श्रावक जिन की नाम रेवन्ती नारी है। होके लोभ में अंध एक दिन बारे शोकाँ मारी है ॥ निज पति को फिर छलने आई सूत्र में बात उहारी है। ऐसा किया अन्याय कहो यह भव किनको सुखकारी है । मर कर गई नर्क में सीधी जिनका नहीं निस्तारा है ॥ इनको ॥ ३ ॥ गज सुखमाल एवंता मुनिवर क्यों वैराग्य रमायाहै बचपन में संजम लेकर उस भव में मोक्ष सिधायाहै ॥ जबू कुंअर जी महावैरागी निज आतम समझायाहै।त्याग दिया धनमाल आप उत्तमसंजमपद पाया है।।मेरे गुरु नन्दलाल मुनिता कहते अब आनन्द है ।इनको।४।फोकट श्रावक-नं० १४६(तर्ज : पूर्ववत) लगन पाप में लगी रहे नित सुकृत को बिसराते हैं । कैसे निरना होय कहो एक धरमी नाम धराते हैं ॥ टेर ॥ पूरब पुण्य से सम्पती पाके गर्व बीच गलताते हैं । इस पृथ्वी पर एक मैं ही हूँ ऐसी दिल में लाते हैं ॥ कहाँ से आया किधर जायगा तुझको कौन पिछाने हैं । ले लो लाभ नर भव का अब क्या अपनी अपनी ताने हैं ॥ बुरी लगे चाहे भली लगे अजी हम तो साफ सुनाते हैं ॥ कैसे० १ ॥ तुरत देख धनवंत उसे तो पूरण प्रीति लगाते हैं । नित नये पकवान बना-कर न्योत न्योत जिमाते हैं । जो निर्धन गरीब उसे तो कोई नहीं बतलाते हैं । पूछ-ताछ तो दूर रही पण उल्टा उसे सताते हैं ॥ गुणवानों के औगुण बोले निन्दा में दिन जाते हैं ॥ कैसे० २॥ कसती बढता तोले माप अपना पेट जमाते हैं । होके लाभ में अंध कई धड़ियों की धड़ी उड़ाते हैं ॥ लेके घूस गवाह बन जाते झूठी सौगन्द खाते हैं । कहां रही परतीत कहो अब लुच्चे धूम मचाते हैं॥ इधर उधर करके लपराई वैर विरोध कराते हैं ॥ कैसे० ३ ॥ हिन्दू हो या मुसलमान हो जो यह कर्म कमाते हैं । दिल चाहे सो करे यहां वो आगे क्या फल पाते हैं ॥ इन कर्मों से बचे वही नर मालिक से मिल जाते हैं मेरे गुरु नन्दलाल मुनि जो साफ साफ फरमाते हैं ॥ माधोपुर में आये विचरते जोड़ करी यों गाते हैं ॥ कैसे० ४ ॥ रहनेमी व राजमती का सम्वाद—नं० १५० (तर्ज—छोबी कड़ी) श्री समुद्रविजयजी के लाल बड़े यशधारी, बड़े यशधारी । किम तजकर राजुल नार गये गिरनारी ॥टेर॥ तुम सजकर यादव जान ब्याह को आये, ब्याह को आये । होरहे राग रंग बहुत लोक हुलसाये । पशुओं की सुनी पुकार आप जिनराये, आप जिन राये । होगये वैरागी बींद संजम चित लाये ! तोरणसे रथ फेर चले असवारी।। चले असवारी॥किम० १॥राजुलजी सुणया अह-वाल तुरत मुरछानी तुरंत मुरछानी । सखी वेग होय हुशियार बोले इम बानी । या गुप्त रहो ना बात जगत सब जानी,जगत सब जानी । मुझ छांडी बिन अपराध सुमत सहलानी । मेरा आठ भवोंकी प्रीति पलक ना धारी पलक ना धारी।किम० २॥सती करके एम

विचार मन्न वश कीनो, मन्न वश कीनि । सती महल मन्दिर सिणगार सभी तज दीनो । सती लेकर संजम भार काम सिध कीनो, काम सिध कीनो । सती विहार कियो वर्षा मे चीर सब भीना । गिरनार गुफा में गई धार हुशियारी, धार हुशियारी ॥ किम ३ ॥ तिण गुफा मांय रहनेमजी कियो है ध्यानो कियो है ध्याना । राजुलजी नजराँ देख अंग कंपानो । यों कहे नेम राजुलजी शंक मत आनो । श्री समुद्रविजयजी का लघुनन्द मोय जानो । संसार तणा सुख भोग लेस्यां व्रतधारो, लेस्याँ व्रतधारो ॥ किम ४ ॥ सुन राजमती रहनेम को एम समझावे, एम समझावे । तुम भोग छाड़कर योग लियो किस दाव । थें मोटा कुल का महाराज लाज नहीं आवे लाज नहीं आवे । मन कर नहीं वंछु इन्द्र यहां खुद आवे । थांने बार बार धिक्कार बोलोनी विचारी, बोलोनी विचारी ॥ किम ५॥ सुन राजमती का वैन नैन शरमाया, नैन शरमाया । सुवचन महासतीजी आप फरमाया । इम धर्म ठिकाने लाय कर्म खपवाया । श्री रहेनेम राजुलजी मोक्षपद पाया । मुझे लगी आश दिल माँय दर्श करवारी, दर्श करवारी ॥ किम० ६ ॥ मैं अरज करूं कर जोड़ नाथ मोय तारो, नाथ मोय तारो । तेरे शरणागत आधार कार्य मेरा सारो । श्री नन्दलालजी महाराज ज्ञान भंडारो, ज्ञान भंडारो । तस्य शिष्य खूबचन्द कहे दास चरणारो । ये चोपन साल छोटी सादड़ी स्तवन कियो त्यारी, स्तवन कियो त्यारी ॥ किम० ७ ॥

अरणक श्रावक की दृढ़ता—नं० १५१ (तर्ज—मत जान गिरनार नेम फिर क्या करना घन को) समकीत दृढ़ देखन सुर आया रे । धन धन अरणक श्रावकजी शुद्ध धर्म ध्यान ध्याया ॥टेर॥ चंपा नगरी को बहु वाणया मिल मनसूबो धारी । लूण समुद्र में जहाज कमावा, हुआ वेग त्यारी ॥ किराणो लीनो महाराज किराणो लीनो । बहु जहाज विषे भर दाना, अपनो भी जापतो कीनो ॥ महूरत शुभ देख्यो चित चाया रे, महूरत शुभ देख्यो चित चाया रे, धन धन ॥ १ ॥ जहाज चली समुदर के अन्दर, मिल्यो जोग ऐसो; हुई उलकापात गगन में अब कीजे केसो ॥ घन बहु गाजे, महाराज घन बहु गाजे । चहु दिशि वायरा वाजे, आभा में बीजली छाजे ॥ लोग बहु जहाज में घबरायो रे लोग बहु जहाज में घबराया ॥ धन धन० ॥२॥ कर पिशाच को रूप एक सुर ऊभो गगन मांही । बार बार नाचे अति कूदे खडग हाथ माँही ॥ लार मुख पड़ती, महाराज लार मुख पड़ती । कोई आँख्या लाल फरकंतो, मुख अग्नि ज्वाल निकलती ॥ भुजा दोइ ऊंची कर आया ॥ धन धन० ॥३॥ सर्प लपेट्या तन ऊपर रुंड माल गला मांई । मनख्या शियाला घुघू कंध पर लाला बैठाई ॥ कायर जन कंपे, महाराज कायर जन

७५

कंपे । इम सुर अरणक ने जंपे, थने धर्म छोडवो नहीं कल्पे ॥ छुड़ावण मैं तुझ ने आया, छुडावण मैं तुझ ने आया ॥ धन धन० ॥४॥ मुख से कहे यह जिन धर्म खोटो तो कछू हुवे नांही । नहीं तर जहाज तोक ऊंचा से नाखूं जल मांही । अरणक नहीं बीनो, महाराज अरणक नहीं बीनो । सागारी अनशन कीनो, तब अवधी ज्ञान सुर दीनो डग्यो नहीं मन वचन काया रे, डग्यो नहीं मन्न वचन काया ॥ धन धन० ॥५॥ दृढ़ धर्मी श्रावक ने जानी, उपसर्ग सहु मेट्या । सागे रूप कर लियो देव खुद चरण आय भेट्या ॥ बहुत हुलसाया महाराज बहुत हुलसाया । पंच वर्ण फूल बरसाया सबही अपराध खमाया । शकेन्दर गुण थारा गाया रे, शकेन्दर गुण थारा गाया ॥ धन धन० ६॥ दो अमोल कुण्डल की जोड़ी श्रावक ने दीनी । देव गयो निज स्थान आप दृढ़ताई देख लीनी ॥ जावरा मांही, महाराज जावरा मांही खूबचन्द लावनी गाई, मन वांछित सम्पति पाई ॥ चार सन्त चौमासा ठाया, चार संत चौमासा ठाया ॥ धन न० ॥७॥ **कंपिल ऋषि का लोभ त्याग**—न० १५२ (तर्ज पूर्ववत) वंदू नित कपिल ऋषिराया रे, वंदू नित कंपिल ऋषिराया । धन्य पुरुष वह जगत बीच निज आतम समझाया ॥टेर॥ ब्राह्मण केरी जात उज्जैनी नगरी में रहतो । तिहां नृप दो माशा सुवर्ण नित विप्र दान देतो ॥ विप्र की नारी महाराज विप्र की नारी । कहे पीऊ से बारम्बारी, थे जावो होय झट त्यारी ॥ सुवर्ण दो माशा दे राया रे, सुवर्ण दो मासा दे राया ॥ धन्य ॥ १ ॥ सुवर्ण काज नारी की कहन से लेवण चित चावे । दिन ऊगां वह जाय सदा पण वह हाथ नहीं आवे । एक दिन भाई, महाराज एक दिन भाई । सूतो थो नींद के मांही, तब अर्द्ध रात्रि आई ॥ नींद से चमक उठ ध्याया रे, नींद से उठ ध्याया ॥ धन्य ॥ २ ॥ घर से निकल मारग में जाता गिस्त घेर लीनो । चोर जान फिर पकड़ भूप के हाजिर कर दीनो ॥ लग्यो तब धुजने, महाराज लग्यो तब धुज ने । तू सांच कहदे मुझने, सब गुनाह माफ है तुझने ॥ विप्र से पूछे इम राया रे, विप्र से पूछे इम राया ॥ धन्य ॥ ३ ॥ कंपिल कहे कर जोड़ भूप से अरजी सुन लीजे । सुवरण काज निकला घर से चाहे सो कीजे ॥ नृप खुश होई, महाराज नृप खुश होई । तू मांग मांग सुख सोई, मैं देदुंगा तुझ वोई ॥ विप्र तब मन में हुलसाया रे, विप्र तब मनमें हुलसाया ॥ धन्य ॥ ४ ॥ कंपिल ब्राह्मण मन में चिंतवे तोलो एक केऊं । अधिक अधिक इम लोभ बढाया मैं तो राज मांग लेऊं ॥ मन्न सुलझाया, महाराज मन्न सुलझाया । जिस कारण घर से आया, यह हाल जिन्हों से पाया ॥ चेतन को ज्ञान दे समझाया रे, चेतन को ज्ञान दे समझाया ॥ धन्य ॥ ॥ ५ ॥ परिणाम की लहर चढी तब शुकल ध्यान ध्याया । तत्क्षण राज सभा के मांही केवल पद पाया ॥ महोत्सव सुर कीनो, महाराज

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

महोत्सव सुर कीनो । ओघा पात्र हाजर कर दीनो, मुनिराज हाथ यश लीनो ॥ पांच से चोर को समझाया रे, पांचसे चोर को समझाया ॥ धन्य॥ ६ ॥ कर्म खपाई मोक्ष पहुँता कंपिल ऋषिराया । जिनके दर्शन काज मेरातो मन निशदिन हुलसाय जिन के दर्श कब पाऊं, महाराज दर्शं कब पाऊं । पद पांचों का गुण गाऊं, शिव पुर का सुख नित चाऊं ॥ खूबचन्द यही मन्न भाया रे, खूबचन्द यही मन्न भाया ॥ धन्य ॥ ७ ॥-धर्म की नाव- नं १५३ [तर्जः—द्रो[illegible] तुम सुनो मोक्ष का पंथ सत फरमावे, महाराज, जीव का जतना करना जी ॥ येहीज धर्म की नाव हुवे भव सागर तिरना जी ॥ टेर ॥ सब जीव जगत में अपना जीना चाहे, महाराज किसी को नहीं सताना जी ॥ हुवे जीवों का उपकार वहां कुछ राह बताना जी ॥ यह झूंठ पाप का मूल कभी मत बोलो, महाराज झूंठ जिसने नहीं छोड़ाजी । ताको होय बहुत संताप पड़े परभवमें फोड़ाजी ॥ इम जान सांच नित खूब तोल कर बोलो, महाराज बोल फिर नहीं बदलनाजी॥येहीज॥ १॥ यह चोरी करना तीजा पाप सुन प्यारे. महाराज किसी की वस्तु उठाना जो । अपने ही कर्मसे आप क्यों परतीत घटानाजी ॥ ये चोर चोर यों सबही दुनिया बोले, महाराज जिनसे भंडवाडा जी । गिनो परधन धूल समान रखो अपना दिल गाढ़ा जी । आज्ञा से जो कोई चीज देवे तो लेना, महाराज ऐसो बृत्ति दिल धरना जी ॥ येहीज ॥ २ ॥ जो काम अंध पर नार तके मतिहीना, महाराज कहो कैसे रहे आबी ? ॥ रावण पदमोत्तर देख जिन्हों की हुई खराबी जी ॥ यह रोग शोग का भवन झूंठ मत जानो, महाराज हुवे तन धन की हानि जी । इम जान तजो कुकर्म यह शास्तर की वानी जी ॥ तुम शील शिरोमणि जग उत्तम व्रत धारो, महाराज बिपति सब दुख दूर हरना जी ॥ ये हीज ॥ ३ ॥ यह पाप पांचमा अति लोभ का करना, महाराज लालसा लग रही धन की जी ॥ अब धार धार संतोष ममता तुम मेटो मन की जी । यह पांचों अवगुण तजो पांच गुण धारो, महाराज जीव जिनसे शुख पावे जो ॥ हुवे कर्मों से निर्लेप शिवा मुक्ति पद पावे जी । श्री नन्दलाल जी मुनि तणां शिष्य गावे, महाराज मुझे सतगुरु का शरणा जी ॥ येहोजी ॥ ४ ॥ -हितोपदेश- नं १५४ [तर्जः— पूर्व त] दुनिया के बीच जो मनुष्य जन्म में आया, महाराज किया कुछ पर उपकारा जो ॥ फिर प्रभु रस भज लिया तो उसका सफल जमारा जी ॥ टेर ॥ ये मात तात बंधव सुत दारा भगिनी, महाराज तू जाने यह है सब मेरा जी ॥ पण मान चाहे मन माल है आखिर ना कोई तेरा जी ॥ ज्यों सराय में ले आय मुसाफिर वासा, महाराज भोर भये सब उठ जावेगी । यों अपने दिल में समझ नाहक यों ही कर्म कमावे जी ॥ जो पर भव में निज आतम का सुख चाहे, महाराज लेवेगा पाप से टारा जी ॥ फिर ॥ १ ॥ धन कारण

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

दिन रात पचे नर भोला, महाराज खुद्यादिक कष्ट उठावे जी ॥ करे महा आरम्भ पचूर नहीं मन में पछतावे जी ॥ हीरा पन्ना मणि माणक लाल पिरोजा, महाराज बहुत नीलम की हरिया जी ॥ सोना चांदी कुण गिने भण्डार पूरण भरिया जी ॥ विद्वान पुरुष यह दिल में यों समझेगा, महाराज नहीं यह धन हमारा जी ॥ फिर ॥ २ ॥ इस तन को तू अपना अपना कर माने, महाराज कभी दुःख ना उपजावे जी ॥ जी से सेवा मिष्टान्न खूब पोशाक बनावे जी । कर लाख यतन पण यह तो नहीं रहने की. महाराज मनोहर काया तेरा जी ॥ मर गये बाद होजायगा आखिर खाक की ढेरी जी ॥ जिसने अखूट सुकृत का लाभ कमाया. महाराज वपु को जान असारा जी ॥ फिर ॥ ३ ॥ इस पृथ्वी पर हो गये राजन पति राजा, महाराज तेज था जिनका भारी जी ॥ पण धर्म बिना वो चले गये यों ही हाथ पसारी जी ॥ यों समझ एक दिन तू भी चला जावेगा, महाराज होके निर्भय नहीं सोना जी ॥ जो वक्त लाभ की बीत गई तो फिर क्या होना जी ॥ जो दया दान जप तप से खप कर लेवे, महाराज जिसमें सुख मिले अपाराजी ॥ फिर ॥ ४ ॥ मुनि राज गुणों की खान प्रकट फरमावे, महाराज पुण्य का फल है मीठा जी ॥ फिर गई वक्त नहीं आवेगा धोव कर्मों का कीटा जी । अब एक बात और कहूं सज्जन सुनलेना, महाराज कुटिल का संग न करना जी ॥ सौ बातों की एक बात लेवो सतगुरु का शरणा जी ॥ श्री नन्दलाल मुनि तणां शिष्य गावे,महाराज तुरत होगा निस्तारा जी ॥ फिर ॥ ५ ॥ -ब्रह्मदत्त चक्रवर्तीको धर्मोपदेश- नं० १५५ तर्ज:-पूर्ववत ये ब्रह्म दत्त द्वादशमा चक्री राया, महाराज जिन्हों को चित मुनिराया जी ॥ भवसागर तिरन के काज बहुत हितकर समझाया जी ॥ टेर ॥ एक कंपिल पुर नगरी का बाग के मांही, महाराज साधू जी विचरत आया जी ॥ ब्रह्मदत्त चक्री पण आय मुनि को शीष नमाया जी ॥ तब मुनिराज ब्रह्मदत्त को ज्ञान सुनाया, महाराज एक चित ध्यान लगाना जी ॥ मैं कहूं ज्ञान के जोर सभी तुम सुनो बयाना जी ॥ आपी रहे पांच भव लार हेत नहीं टूटा, महाराज पहले भवदास कहाये जी ॥ भवसागर ......१ ॥ दूजा भव में कालिंजर पर्वत मांही, महाराज मृग भव दोनों पायाजो ॥ वहां आयो पारधी दृढ़ सांध कर बाण लगायाजी ॥ तिहां थकी मरीने गंगा नदी के कांठे, महाराज हंस का भव में आयाजी ॥ चोथा भव में चण्डाल तणे घर पुत्र कहाया ॥ तिहां कंठ कला से राग अलापन करता, महाराज नगर में भूप कहायाजी ॥ भवसागर० २॥ आपां दोनों मरन के काज पहाड़ पे चढिया, महाराज हठे मुनिराज बिराजाजी ॥ तिहां सुन्यो आपा उपदश अपन का गुरु निवाजा जी ॥ आपां दोनों गुरु के पास संजम लीनो, महाराज वैक्रय लब्धी

पायाजी ॥ आपां दोनों विचरता लार शहर हस्तिनापुर आयाजी । तिहां जातां गोचरी पंडित देख पिछाने, महाराज शहर से बाहर कढाया जी ॥ भवसागर० ३॥ तुम रोष करो वश चूको वैक्रय कीना, महाराज भूपति सजकर आयाजी ॥ तेहनी रत्नाराणी पग पूज सभी अपराध खमाय जी ॥ तुम देख रानी को रूप मुँह से यों बोले, महाराज चित्त में ऐसी चाऊँ जी ॥ मेरी करणी का फल होय मैं भी ऐसी रिद्ध पाऊँ जी ॥ मैं बरजा निहाणो मत करो बात नहीं मानी, महाराज आपां दोइ सुरपद पायाजी ॥ भवसागर० ४॥ इन पांच भवों तक लार रहे थे दोनों, महाराज छठा भव पांडी जुदाजी ॥ अब मानो हमारी कहन रास्ता लो मुगत का सुधाजी ॥ छः खण्ड का राज तुम तप संजम से पाया, महाराज कारन रिध को जानोजी ॥ मत राचो भोग के मांय पड़ेगा फिर पछतानो जी ॥ तब चक्रवर्ती यों मुनिराज से बोले, महाराज आपने क्या फल पायाजी ॥ भवसागर ५ ॥ मुनिराज कहे पूरव भव करनी कीनी, महाराज जिन्हों से बहु रिद्ध पायाजी ॥ मैंने परभव का डर आन भोग छिन में छिटकायाजी ॥ मैं संजम लेकर शीवपुर मारग लागो, महाराज तुझे समझाता आयोजी ॥ रहो छठा भव में लार मनुष्य भव दुर्लभ पायोजी ॥ मुनिवर की बात नरपति एक नहिं मानी, महाराज भोग में भूप लुभाया जी ॥ भवसागर० ६॥ चित्त मुनिराज चारीतर चोखो पालो, महाराज मुनीश्वर मोक्ष सिधायाजी । तिहां नहीं सोग संताप अचल सुख शिवपुर पायाजी ॥ कोई ऐसे मुनि से निशदिन ध्यान लगावे, महाराज जिन्होंसे आनन्द बरतेजी ॥ बहु मिले यश और मान काज सब इच्छित फलतेजी ॥ यों मन्दसौर में खूबचन्द इम गावे, महाराज तीन सन्त चौमासा ठायाजी ॥ भवसागर० ।७।

श्रेणिक राजा को उपदेश—नं० १२६ (तर्ज—पूर्ववत)था मगध देश का श्रेणिका भूप मिथ्याती, महाराज जब से अच्छा दिन आया जी ॥ कुछ हटा मोहनीय कर्म सुगुरु की संगति पायाजी ॥टेर॥ कोई दिन नृपति चढ़ें विधि सोता सज के महाराज सैल करने को जाया जी ॥ एक मंडी कुक्ष है बाग वहां खुद चलकर आयाजी ॥ तिहां मुनि अनाथी यती धर्म के पालक, महाराज रहे वैराग में छायाजी ॥ तब देख दूर से सुन्दर रूप मुनि का, महाराज भूपति अचरज पायाजी । कुछ० १॥ नहीं दूर नहीं नजदीक मुनि पे आया, महाराज चरण में शीष नमाया जी ॥ यों पूछे भूप कर जोड़ अपको कोमल कायाजी ॥ इस तरुण वय में जोग लिया किण कारण, महाराज उत्तर देवे मुनिरायजी ॥ मैं था अनाथ नरनाथ बात सुन विस्मय पायाजी ॥ अब मैं हूं नाथ तुम करो सोच दुनिया की, महाराज मनुष्य भव दुर्लभ पायाजी ॥ कुछ० ॥२॥ तू खुद अनाथ अब नाथ बने यहां किसका, महाराज भूप सुन के घब रायाजी ॥ मैं मुगल देश का

७६

नाथ आप कैसे फरमायाजी ॥ असली अनाथ का मतलब तू नहीं जाने, महाराज कहूं अब सुन महारायाजी ॥ मैं नगरी कौशम्बी रहतो बहुत घर में थी मायाजी ॥ मेरे मात तात घर नार भ्रात भगिनी का, महाराज था मुझ पर प्रेम सवायाजी ॥ कुछ० ॥३॥ एक रोज हुई थी तन में बहुत असाता, महाराज विविध इलाज कराया जी ॥ जो कुटुम्ब नाथ होते तो क्यों नहीं दुःख मिटायाजी॥ मुझ लेना जोग जो आज रोग मिट जावे, महाराज नियम ऐसा दिल ठायाजी। तब उसी रात नर नाथ रोग सबही विरलायाजी ॥ दिन ऊगां तुरत जब संजम का पद लीना, महाराज जो अब मैं नाथ कहायाजी ॥ कुछ० ॥४॥ फिर साधु की पहिचान मुनि बतलाई, महाराज बाद उपदेश सुनायाजी ॥ तब हुआ नृप को ज्ञान सभी अपराध खमायाजी ॥ उस ही दिन से नृप कुगुरु का संग छोड़ा, महाराज रंग समकित का छायाजी ॥ शुद्ध देव गुरु की सेव तीर्थंकर गोत्र उपायाजी ॥ श्री नन्दलालजी मुनि तणाँ शिष्य गावे, महाराज विचरता सोजत आयाजी ॥ कुछ० ॥५॥ कृष्ण की महिमा—नं० १५७ (तर्ज—पूर्ववत) ये कृष्ण और बलभद्र हुवे दो भाई, महाराज आप यादव कुल मांईजी ॥ लियो सुजस जग में खूब फैल रही कीर्ति सवाईजी ॥ टेर ॥ यह द्वारावती एक नगरी बार बखाणी, महाराज सूत्र में वर्णन चालेजी ॥ तिहां कृष्ण भोगवे राज सुखे प्रजा ने पालेजी ॥ तिण अवसर विचरत नेमनाथ शिवगामी, महाराज द्वारिका नगरी आया जी ॥ एक सहस्रावन है बाग यहां उतरे जिनरायाजी ॥ तब खबर हुई नगरी का लोग हुलसाया, महाराज परीषदा वन्दन आई जी ॥ लियो० ॥ श्रीकृष्ण भूप पण यही बात सुन पाया; महाराज तुरत भेरी बजवाईजी ॥ तिहां सेवा करे कर जोड़ भूप मन घणा उमायाजी ॥ तब नेमनाथ भगवान देशना दीनी, महाराज सुने सब चित्त लगाईजी ॥ लियो० ॥२॥ तब वन्दना कर कर गई परिषदा सारी, महाराज कृष्ण तब अर्ज गुजारी जी ॥ कहो द्वारावती को हाल प्रभु तुम जानो सारा जी । तब नेमनाथ भगवान भेद संभलायो, महाराज सूत्र में शास्त्र बखानी जी ॥ नहीं कियो यहां विस्तार लाखणी बढती जाणी जी । तब कृष्ण भूप कर जोड़ वंदना कीनी, महाराज गया निज नगरी मांई जो ॥ लियो ॥ ३ ॥ तिहां राज सभा में आप सिंहासन बैठा, महाराज द्वारिका नगरी मांई जी ॥ झट राज पुरुष को भेज वहां सब बात जनाई जो। जो भावी जीव संसार कारमो जानी, महाराज प्रभुपे संजम लेवे जी ॥ ताकूं तीन खंड का नाथ हर्ष से आज्ञा देवजी ॥ हलुकर्मी होय सो मोह नींद से जागे, महाराज पड़हो तो दियो बजाई ॥ लियो ॥ ४ ॥ पद्मावती प्रमुख आठ कृष्ण की राणी, महाराज कई कवराण्यां चेती जी कई राजा राजकुमार सुधारी नर भव खेती जी । यों धर्म दलाली करी हरि तन मन से,

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

महाराज सफल नर भव कर लीनो जी ॥ होसी द्व दस मां जिन राज सूत्र में निर्णय कीनो जी ॥ श्री नन्दलाल जी मुनि तणां शिष्य गावे, महाराज जोड़ चित्तौडमनाई जी ॥लियो॥४-सुमति कुमति का निर्णय- नं १४८ [तर्ज :—पूर्ववत , ये कुमति सुमति का जिकर सुनो सब भाई, महाराज दोनों अपनी हठ ताने जी ॥ है कौन अच्छी और कौन बुरी नर शठ क्या जाने जी ॥ टेर ॥ मिथ्यात्व महल में चेतन की मति मोई, महाराज कुमति कष्टन जग मांई जी ॥ सुमति से मिलन दे नांय आप लीनो चिलमाई जी ॥ कहे सुमति पिया से थें कुमति का संग मांई, महाराज रहो छो क्यों मुरझाई जी ॥ खट खंड पति संग लाग जिन्हों ने दुर्गति पाई जी ॥ सुर असुर नर इन्द्र कई ऋषियों को, महाराज कुमति छल लीना छानेजी, है ॥ कौन ॥ १ ॥ कर रोष कुमति यों सुमति सोक से बोली, महाराज रहम तुमको नहीं आया जी ॥ जो राजा राज कुम र थी जिनकी कोमल काया जी ॥ हीरा पन्ना माणक मोती सुवर्ण का, महाराज भरया भंडार सवाया जी ॥ जिनका निज भवन छुड़ाय जोग तेंने दिलवाया जी ॥ ले झोली पातरा घर घर भीख मंगाई, महाराज पड़ा जो तेरे पाने जी है ॥ कौन ॥ २ ॥ कहे सुमति कुमति तूं सुन काले मुख वाली, महाराज यहां तू किसे डरावे जी ॥ जितने दुनिया में पाप हैं वे सब आप करावे जी ॥ इस भव में तूं प्रत्यक्ष सुख बतावे, महाराज पीछे तू नर्क पठावे जी ॥ विष मिश्रित का दृष्टान्त साफ ज्ञानी फरमावे जी ॥ जो है नुगरा वे समझ तेरे संग लागे, महाराज पूछ जाकर पंडिताने जी ॥ है कौन ॥ ३ ॥ जो लंकपति राजा रावण बलवंत थी, महाराज नीयत तेंने पलटाई जी ॥ श्री रामचन्द्र महाराज की सीता नारि हराई जी ॥ तेंने सोने की लंका का नाश कराया, महाराज उसे दिया नर्क पठाई जी ॥ तू बुरी बुरी फिर बुरी अरी दुर्भागन, महाराज संत जन तुझे बखाने जी ॥ है कौन ॥ ४ ॥ कहे सुमति मैं ने पापियों का पाप गमाया, महाराज जिन्हों का काज सुधारा जी ॥ वई मेल दिया सुर लोक कई को मोक्ष मझारा जी ॥ श्री नन्दलाल जी मुनि तणाँ शिष्य गावे, महाराज गुरु मेरा है उपकारी जी ॥ उपदेश छटा जो सुने उसका है मस निवारी जी ॥ जो गुरु कहे वो सीख हिया में धारो, महाराज सुमति सुख देगां थाने जी ॥ है कौन ॥ ५ ॥ -संयति राजा का त्याग- नं० १४९ (तर्ज:—पूर्ववत) कपिल पुर का था नाम संयति राजा, महाराज मोह अज्ञान का छाया जी जब मिले गुरु गुणवान ज्ञान का रंग लगाया जी ॥ टेर ॥ कोई दिन साथ लेकर चतुरंगी सेना, महाराज अहेड़े करी चढाई जी ॥ लिये पशु जीव को घेर नृप जाकर बन माही जी तब देख दूर से एक मृग का टोला, महाराज कुछ भी नहीं सोचे अन्यायी जी ॥ वे रहम बाण दिया फेंक बींद दी जान पराई जी ॥ चलत ॥ उस केशरी बन में द्रुम की

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

शीतल छाया ॥ जहां खड़े ध्यान धर गृद्ध भाली मुनिराया ॥ सहे सीत ताप जिनकी कोमल काया ॥ रहे स्रमण धर्म में लीन सदा मन भाया ॥ मिलाप ॥ वो मृग भाग कर उसी स्थान पर आया, महाराज वहां गिर गई काया जी ॥ जब ॥ १ ॥ पिछे से अश्व चढ भूप भी वहीं चल आया, महाराज जो वही मृग दर्शाया जी फिर देखा मुनि को उसी वक्त भूपति भय पाया जी ॥ तब खडा खडा महीपाल विचारे मन में, महाराज कंप रही जिनकी काया जी यह हैं तो मुनि तेजवान करूं कौन उपायाजी ॥ चलत ॥ सुख इच्छुक निश्चल धार अश्व छटकाया ॥ कर जोड़ तुरत नजदीक मुनि के आया ॥ यों कहे जो कुछ मैंने अपराध कमाया ॥ सब माफ करो महाराज शरण में आया ॥ मिलाप ॥ मैं नहीं जानूँ यह होगा सिरग संतों का, महाराज पता यह तो अब पायाजी ॥ जब ॥२॥ मुनिराज ध्यान में मगन कुछ भी ना बोले, महाराज महीपति फिर भी डरियाजी ॥ मैं मूढ अज्ञानी जीव आप छो ज्ञान का दरियाजी ॥ कपिलपुर का जो मैं हूं संयति राजा, महाराज करो करुणा इस बिरियांजी ॥ ज्यों हुवे मुझे संतोष आज तब ही दुख टरियाजी ॥ चलत॥ तब ध्यान खोल मुनि मधुर वचन फरमावे ॥ दिया अभयदान मुझसे तूँ भय मत पावे ॥ उत्तम नर भव हर वक्त हाथ नहीं आवे ॥ प्रजा पालक हो क्यों परजान सतावे ॥ दे अभयदान तू भी इन जीवों को, महाराज जगत में ले ले भलायांजी ॥ जब ॥३॥ फिर मुनि कहे सुन नृप एक चित्त धरकै, महाराज सोच तू कहां से आयाजी ॥ जनमे सो मरे जरूर सूत्र में जिन फरमायाजी ॥ तेरा राज पाट घर ठाठ अंतेवरसेना, महाधरी रहेगा सब मायाजी ॥ जो अपनी-अपनी मान यों ही सब छोड़ सिधायाजी ॥चलत॥ ये पुण्य पाप दो चीज साथ आवेगा ॥ तू कंचन वर्ण शरीर छोड़ जावेगा ॥ दुनिया गुण अवगुण होगा सो गावेगा ॥ जो किया यहां का आगे फल पावेगा ॥ मिलाप ॥ सुन सन्तों का उपदेश नृप यों बोले, महाराज मैं तो यों ही जन्म गवांयाजी ॥ जब ॥४॥ अब कृपा कर मुझ भव सागर से तारो, महाराज हुआ महीपति वैरागी जो तब मिट गयो तिमिर अज्ञान सुरत सुगति से लागीजी ॥ यह किनकी रय्यत और मैं हूं किनका राजा, महाराज विचारे यों बड़भागीजी ॥ छुपला ज्यूं जान संसार राज रिद्ध छिन में त्याग.जी ॥ चलत॥गृद्ध भाली जैसा गुरुदेव पुण्य से पाया ॥ फिर आप मुनि होई राज ऋषि कहलाया ॥ दिन रात गुरु का जो कुछ हुकम बजाया ॥ कर करके महेनत गुन ज्ञान धन पाया ॥ मिलाप ॥ फिर आज्ञा लेकर होगये एकल विहारी, महाराज धर्म मारग दीपाया जी ॥ ५ ॥ मारग में क्षत्रीय राज ऋषीश्वर मिलिया, महाराज मुनि का देख दीदाराजी ॥ मुनि कहो आपको नाम कौन गुरुदेव तुम्हाराजी ॥ गृद्ध भाली मुनि मेरे हैं धर्म आचारज,

८२

महाराज संयति नाम हमाराजी। मैंने सुनके सत्य उपदेश किया त्यागन संसाराजी ॥ चलत ॥ इतनी सुन क्षत्रीय राज ऋषि फरमावे ॥ सुख से विचरो मुनि आप जिधर दिल चावें ॥ दुनिया में बहुत कुपथ जो चले चलावें ॥ उनको संगती हरगिज होनी नहीं चावे ॥ मिलाप॥ वैराग सहित दृढ़ रहो सदा संजम में, महाराज करो पराक्रम मनचायाजी जब० ॥ ६ ॥ फिर सुनो मुनि हुए पहले जिन शासन में, महाराज भरतसागर महारायाजी ॥ मघवजी सनतकुमार रूप अति सुन्दर पायाजी ॥ श्री संत कुन्थ अर नाथ पुण्य प्रतापी, महाराज छे छे प्रभु पदवी पायाजी ॥ महापदम और हरिसेन करी एक छत्तर छायाजी ॥ चलत ॥ दशमा चक्री जयसेन नाम कहवाया ॥ जाने छे छे खण्ड का राज तुरत छिटकाया ॥ लेकर संजम फिर आतम जोर लगाया ॥ यों कर्म काट केवल ले मोक्ष सिधाया ॥ मिलाप ॥ तज दिया राज भंडार दशारण भद्र, महाराज मान जांका रहा सवायाजी ॥ जब० ॥७॥ प्रत्येक बुद्धि कर कंडू परमुख राजा, महाराज राज-पुत्रों को दीनाजी ॥ हुवे ऐसे ऐसे भूप जिन्होंने संजम लीनाजी ॥ कर अष्ट कर्म का अन्तमोक्ष पद पाया,महाराज काज आतम का कीनाजी मुनि निश्चल रहना आप मिला जिन मारग झीनाजी ॥ चलत ॥ देकर शिक्षा कर गये विहार ऋषिरााया ॥ शुद्ध जोग पाल मुनि संयति मोक्ष सिधाया ॥ एक तिम्बाहेडा शहर सुनो सब भाया ॥ उगणी से सित्तर के साल चौमास ठाया ॥ मिलाप ॥ नन्दलाल मुनि हैं गुणी ज्ञान के सागर, महाराज सत्य उपदेश सुनाया जी। जब० ॥८॥ भृगू पुरोहित व इक्षुकार राजा का वैराग्य—नं० १६० तर्ज:—[पूर्ववत]जो जान लिया संसार का सगपण कच्चा;महाराज कहो फिर कैसे रहेगाजी ॥ तब छाया जिगर वैराग तो आखिर संजम लेगाजी जी ॥टेर॥ था राज पुरोहित इक्षुकार नगर का वासी, महाराज जिनके यशसा घरनारीजी फिर युगल पुत्र पुण्यवान प्राण वल्लभसुखकारी जी ॥ धन का पूरण भंडार बहुविध भरिया, महाराज कमी जिनके कुछ नांहीजी ॥ तब पुरोहित को यह बात याद पहले की आईजी॥चलत॥ एक दिन जैन के साधु कही मुझ ऐसी ॥ क्यों फिकर करे तूं पुत्र तणो फल लेसी ॥ चाहे जितना करो उपाय कभी नहीं रहसी ॥ वो बालपणे में आखिर संजम लहसी ॥ मिलाप ॥ ये मोटी वस्ती ज्ञान विचरता साधु, महाराज आया बिन कैसे रहेगाजी ॥ तब० ॥१॥ यों करके हृदय विचार पुत्र के कारण, महाराज वन्न में वास बसायाजी ॥ निज नन्दन को बुलवाय पुरोहित कैसा भरमाया जी ॥ कोई दिन की हां तुम देखो जैन के साधु, महाराज नजर उनके मत आनाजी ॥ दिल चाहे वहां चुप-चाप होके जल्दी छिपजानाजी ॥ चलत ॥ रहेसीस उघाड़ो मूंडे मुँह पति बांके ॥ वो बांचे सरस बखान दया मुख भाखे ॥ कर में भोली फिर कांख में ओघो राखे ॥ नित चाले हलवे चाल ८३

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

रोष नहीं जांके ॥ मिलाप॥ तुम भूल चूक उनकी संगति मत करना, महाराज तुम्हें भारी दुःख देग जी ॥ तब० ॥२॥ वे गुप्तपने शस्तर झोली में राखे, महाराज चाकू और छुरी कठारीजी ॥ बालक को पकड़ सिताब ले, ये गहना उतारीजी ॥ पुरोहितजी को बहकाया कमर नहीं राखी, महाराज टाल्यो ना टले कठेई जी ॥ पण पन्थ भूल कर सन्त तुरत आगया वठेईजी ॥ चलत ॥ तब देख मुनि को भग्गु पुरोहित घबराया ॥ मैं जिनके कारण शहर छोड़ यहां आया । इनको यहां का राठ मारग कौन बताया ॥ जो खैर हुआ सो हुआ मन्न समझाया ॥ मिलाप ॥ अब ऐसा करूं उपाय दाव नहीं लागे, महाराज बात सब बनी रहेगीजी ॥तब० ॥३॥ तब भग्गु पुरोहित झट उठ मुनि पै आया, महाराज अरज करके घर लायाजी ॥ सब बिधि सहित निर्दोष आहार पानी वहरायाजी ॥ कर जोड़ कहे तुम सुनो अरज गुरू ज्ञानी, महाराज मति दूजे घर जावोजी ॥ इस गली में होकर आप यहां से बेग सिधावोजी ॥ चलत ॥ मेरे युगल नन्द नादान समझते नाहीं । अवनीत कुपातर सन्तों को दुःखदाई ॥ मैंने पूर्व जन्म में कीनी पाप कमाई ॥ जो ऐसे घर जन्मे आई ॥ मिलाप ॥ सुन बात गली में तुरत साधु जी चाल्या, महाराज यहां कुछ लाभ मिलेगा जी ॥ तब ॥ ४ ॥तब दोनों पुरोहित का पुत्र खेलता रमता, महाराज गलीके सन्मुख मिलियाजीअहो अब नजर लगाय यह कुए, आये चलिया जी ॥ तब देख मुनि को तुरत बेहूं डर भागा महाराज पंथ जंगल को लीनो जी एक मोटो दरखत देख ऊपर विंश्रामो कीनो जी ॥ चलत ॥ तिण दरखत नीचे दोनों मुनि चल आया ॥ शुद्ध क्रिया करके बैठे शीतल छाया ॥ तिहां दोनों भाई री थर थर कपे काया पण सांच झूंठ का हाल भेद नहीं पाया ॥ मिलाप ॥ ऊपर से नीचे देखे एक दृष्टि से, महाराज तमश अब दूर हटेगा जो ॥ तब ॥ ५ ॥ मुनिराज करे अब आहार बहुत यत्ना से, महाराज प्राणी का प्राण उगारे जी ॥यह दयावान गुण खान मनुष्य को कैसे मारेजो ॥ ऐसे तो मुनि हमने पहले कहां देखे, महाराज ध्यान चोखो चित आएयो जी ॥ तब जाति सुमरण ज्ञान पाय पूरब भव आएयो जी ॥ चलत ॥ उतरे नीचे मुनिवर को शीष नवांया, अहो भाग्य आज जंगल में दर्शन पाया, क्या करें गुरु मां बाप हमें बहकाया जो तुम से डर के यहां भाग चल आया ॥ मिलाप ॥ गृह वास त्याग तुम पासे संजम लांगा, महाराज कौन अब रोक सकेगा जी ॥ जब ॥ ६ ॥ कर नमस्कार झट मात तात पै आया, महाराज गलत हमको भरमाया जी ॥ वी निर्दोषी मुनिराज जिन्हों में दोष बताया जी ॥ तर्ज:-एक कड़ी--साधु जी सकल बिचारी, ले तो पूरण पर उपकारी हो ॥ पिताजी गजब करी ॥ टेर ॥ १ ॥ वे बोले निरवद्य वाणी,

८४

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

लेवे निर्दूषण अनपणी हो ॥ पिताजी ॥ २ ॥ लाधे अनलाधे समता राखे, पण दीन वचन नहीं भाखे हो ॥ पिता जी ॥ ३ ॥ ना किणने दुःख उपजावे, ते तो पाप लग्यां पछतावे हो ॥ पिताजी ॥ ४ ॥ गुरु गुणवन्त विवेकी, मैं तो प्रत्यक्ष लीना देखी हो ॥ पिता जी । ५ ॥ ॥ द्रोण ॥ अब दो आज्ञा मैं संजम को पद लांगा, महाराज नहीं तुमसे ललचाता जी ॥ है कौन पुत्र कौन मात तात झूंठा सब नाता जी ॥ चलत ॥ सुन बात पुरोहित के आंसू आ गये नैना यों कहे पुत्र से तात मोह वश सैना । नित नये करो शृंगार पहनो गहना ॥ तुम गृह वास में पालो धर्म की ऐना ॥ मिलाप ॥ फिर तुम साथे मैं भी संजम लेऊंगा, महाराज ऐसी फिर कौन कहेगा जी । तव ॥ ॥ ७ ॥ कहे पुत्र धर्म ढील कभी नहीं करना, महाराज तात हो गये वैरागी जी ॥ तब जरसा नामा नार पति से बोलन लागी जी ॥ ये दोनों पुत्र तो निश्चय ही संजम लेगा, महाराज होन गत कौन मिटावे जी । जो जैन मुनि के वैन वहो खाली किम जावे जी चलत॥ नहीं माने पुरोहित पुरोहितानी मन में विचारे। मुझ पति पुत्र निज आतम कारज सारे । घरमांहि रह कर यांही जनम कोनहारे॥ मुझे लेना संजम भार इन्हों के लारे ॥ मिलाप ॥ धन माल त्याग कर चरों ही संजम लीना; महाराज कीर्ति क्यों नहीं पसरेगा जी ॥ तब ॥ ८ ॥ तब इक्षुकार नृप भग्गू पुरोहित को छंड्यो, महाराज सभी धन माल मगायो जी । भर भर गाडा के मांय लाय भंडार नखायो जी ॥ ये सुनी बात रानी जी कहे राजा से. महाराज काम आछो नहीं कीनों जी ॥ इन बातें शोभा नांय दान दे पाछो लीनो जी ॥ चलत ॥ यों बिना विचार बात हमें कहवो ॥ तो जान बूझ कर फिर घर में क्यों रहवो ॥ अब विषय भोग तज जल्दी संजम लेवो ॥ हुवे आत्म का कल्याण धर्म सुध सोवे ॥ मिलाप ॥ ऐसा तो वचन हलुकर्मी जीव को लागे, महाराज पाप से वही डरेगा जी ॥ तब ॥ ९ ॥ कमलावती रानी संजम की दिल धारी, महाराज भूप निज मन समझावे जी ॥ एक धर्म बिना कोई और जीव के संग न आवे जी ॥ यों कर विचार राजा रानी मिल दोई, महाराज भोग छिन में छिटकाया जी अनुक्रमे छेहूं जीव वास मुक्ति का पाया जी ॥ ॥ चलत ॥ हो गये सिद्ध भगवान भजो सब भाई ॥ जिनके सुमरण से कमी रहे कुछ नाई ॥ ये दिल्ली शहर उगणीसे मनषठ मांई ॥ मगसर बुध वारस के दिन जोड़ बनाई ॥ मिलाप ॥ श्री नन्द लाल जी मुनि तणां शिष्य गावे, महाराज गुणी को ज्ञान लगेगाजी ॥ तब॥ ॥ १० ॥ **थावरच्या पुत्र**-नं० १६१ [तर्ज:—लंगड़ी जो होवे पुन्यवान जीव, उपदेश उसी को तुरत लगे ॥ ससार त्याग के मुनि पद धार, मोक्षके पंथ लगे ॥टेर॥ सोरठ देश द्वारिका नगरी धनपती देव बसाई है, सुरलोक सरीखी सूत्रमें वरणन कर दर्शाई है, करे राज नंद जी के

लाल, आनन्द झड़ी बर्साई है, सब अर्द्ध भरत में अखंडित आण जिन्हों की छाई है. ॥ शेर ॥ उस वक्त श्री नेम जी, करते उपकार जो। सहस्र अठारा साथ ले, मुनिराज का परिवार जी ॥ नन्दन बन उद्यान में, जहां द्वारिका के बहार जी। प्रभु जी पधारे विचरते, सुर बोले जय जयकार जी ॥ खड़ी ॥ हुई खबर शहर में बहु जन आनन्द पाया, जिन राजा चरन सेवन को, मन्न उमाया, वस्त्राभूषण सज श्रृंगार सघाया, सब एक दिशी में, मिल २ बन्दन धाया, ॥ द्रोण ॥ सुन कर कोलाहल शब्द, कृष्ण जी सोचे, महाराज तुरत भेरी, बजाई जी, ले साथ बहुत परवार, आया नन्दन बन मांई जी, श्री नेमनाथ जिनवर का दर्शन पाया, महाराज चरन बन्दे चित लाई जी, करे सन्मुख सेवा आप बैठ, परिषदा के मांई जी, ॥ पणिहारी ॥ थावरच्चा कुंवर भी आवीया, सुनो गुणीजन हो २। इभ्य सेठां का नंद गुणी जन हो ॥ १ ॥ बेकर जोड़ जिनद ने, सुनी गुणीजन हो२ बैठा शीष नमाय गुणीजन हो ॥ २॥ दीनी धर्म उपदेशना सुनो गुणीजन हो ॥ २ ॥ श्री नेमनाथ भगवान गुणी जन हो ॥ ३ ॥ प्रशन्न हुई सारी सभा सुनो गुणी जन हो २ खुलिया अन्तर नैन गुणी जन हो ॥ ४ ॥ वाह २ वाणीं जिनद आपकी, नर नारी गुण करन लगे, ससार त्यागके ॥ १ ॥ वाणी सुन सब गई परिषदा, कुंवर थावरच्चा अर्ज करे, प्रभु संयम लेसूं माता से मांगु आज्ञा जाऊं घरे। जिम सुख हो तिम करो धर्म में ढील कियां नहीं गर्ज सरे, करि तुरत बन्दना, आया निज भवन माता के पांव परे ॥ वाणी श्री जिनराया की सुनी, आज मैंने माता जी, साफ झूंठा संसार ये, स्वप्ना सम दर्शात जी, संयम की मुझ आज्ञा दीजे, जननी खुशी के साथ जी। जो जो घड़ी अनमोल ये जावे सो फिर नहीं आत जी। ॥ खड़ी ये सुनी वात जब माता तुरत मुर्छाई, हुइ सावचेत अन्तर मुहूर्त के मांई गद् २ बोले यों नैना जल वर्षाई, मत काढो बात में जीऊं जहां लग तांई ॥ द्रोण ॥ थावरच्चा कुंवर कर जोड़ अभी मुख बोले, महाराज काल यह किस दिन आवे जी, मैं नहीं जानु यह बात, मात पहले कुण जावेजो बत्तीस नार इभ्य सेठों को परणाई, महाराज रूप रंभा दर्शाति जो। धन्न का भरेया भंडार रिद्ध छोड़ी किम जावेजो ॥ ॥ पणिहारी ॥ भोग अशुचि असाश्वता, सुनो गुणीजन हो २ जो राचे मुढ़ गंवार गुणी जन हो ॥ ॥ पाई स्वर्ग की साहवी, सुनो गुणीजन हो २ रत्न जड़ित का महल गुणीजन हो ॥२॥ साधपणो नहीं सोहिलो, सुनो गुणीजन हो २ चलनो खांडा को धार गुणीजन हो ॥३॥ करना मुश्किल लोच का सुनो गुणीजन हो, २ यह है सुखमाल शरीर गुणीजन हो ॥४॥ मिलाप —भुजा करि भवसागर ज्यों तिर, सूरबीर कोइ पार लगे, संसार त्याग के ॥२॥ सुनो मात जो सुख अभिलाषी, तिनको कठिन दे दर्शाई, संजम से शूरा उनको तो कुछ भी है

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

मुश्किल नांई। दे दे न्याय थावरच्या माता अच्छी तरह लिया समझाई। पर एक न मानी, पुत्र को आखिर आज्ञा फरमाई ॥ शेर—भेट ना हरिराय के नजराना कीना जायजी, कहो मात जी किम आवीया दीजे मुझे दर्शायजी ॥ प्राण प्यारा पुत्र आज गया वंदवा जिनराजजी, वाणी सुनतां प्रभु की वैराग्य दिल में छायजी ॥ खड़ी ॥ मैं दिया बहुत दृष्टांत कसर नहीं राखी, नहीं माना एक समझा समझा कर थाकी, फिर दीनी आज्ञा उसको संजम लेवा की, है मुझ इच्छा दीक्षा महोत्सव करबा की, मैं छत्र चांवर के काज राज पै आई, महाराज लवाजमा भी बख्शावोजी। सुन बात कहे हरिराय मात अपने घर जावोजी। तुझ पुत्र को दीक्षा महोत्सव मैं करसूं, महाराज और होय सो फरमाबोजी। करूं सफल मनोरथ आज कोई शंका मत लावोजी ॥ पणिहारी ॥ राजन पति महाराजवी सुनो गुणीजन हो २, बस ये ही अरज महाराज गुणीजन हो ॥१॥ इम कह निज घर आगई सुनो गुणी जन हो २, तब पीछे से हरिराय, गुणी जन हो ॥२॥ बहु परिवार से परवरया सुनो गुणीजन हो २, हो गज हौदे असवार गुणीजन हो ॥३॥ थावरचा माता के घर सुनो गुणी जन हो २ आया त्रीखंड का नाथ गुणीजन हो ॥४॥ मिलाप—दिया मात सन्मान जहां पर गोविन्द के गुण होने लगे, संसार ॥३॥ लाल बुलाकर लेई गोद में शिर पर हरिजो हाथ धरे। संजम मत लेवो, भोगवो रिद्धि मौज से रहो घरे। द्वारिका नगरी स्वर्ग सरीखी देखे जिन्हों का नैन ठरे। जहां खुशी तुम्हारी, करो दिल चाहे कोई नहीं दखल करे ॥ शेर ॥ सुख से बसो नगरी विषे तुम मुझ भुजां की छाय जी, कहो साफ दिल खोल के मुझ से तू मत शरमाय जी, जो कुछ भी तकलीफ तो तुम दीजिये दर्शाय जी जिसका करदे उपाय वह मैं करूं सब रोग ही मिटाय जी; ॥ खड़ी ॥ तब कहे कुंवर कर जोड़ अरज सुन लीजे, मेरे जन्म मरण के दुःख दूर कर दीजे, जो ऐसी दवा देने में ढील नहीं कीजे, मैं मानूंगा उपकार आप यश लीजे, ॥ द्रोण ॥ जो घर बैठा सहज ही रोग मिटजावे, महाराज तो फिर संजम क्यों लेनाजी क्षुधादिक जो बावीस परीषा नाहक में सहना जी सुर असुर मनुष्य की भीये समर्थ नाइ, महाराजकृष्ण यों बोले बैना जी, निज कर्मों के अनुसार मिटे सब दुख की रैना, ॥ पणिहारी ॥ इसीलिये महाराज वी सुनो गुणी जन हो २ मैं लेऊं संजम भार गुणी जन हो ॥१॥ कर्म रोग सब मेटने सुनो गुणी जन हो २ मैं जाऊं मोक्ष मझार गुणी जन हो ॥ २ ॥ मुझको मना मत कीजिये सुनो गुणी जन हो २ दो आज्ञा बकसाय गुणी जन हो ॥३। इतनी बात सुनी हरि सुनो गुणी जन हो २ तब जान्यो दृढ वैराग्य गुणी जन हो ॥ ४ ॥ ॥ मिलाप ॥ जिम हो तिम करो लाल हरि बार बार यों कहन लगे संसार ॥ ४ ॥ आज्ञाकारी पुरुष भेजकर कृष्ण पड़हो दियो बजवाई,

८७

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

यह कुंवर थावरच्चा लेवे वैराग्य छती रिध छिटकाई, इनके साथ नरपति आदि दे सेठ और सारथ बाई. कोई संजम लेवे हरि का माफ हुकम उसके तांई,॥शेर॥ जो जो स्वजन तज नीकले पिछले की सार सम्भाल जी यथा योग्य जिम सुख हुवे तिम करसी श्री गोपाल जी सहस्र पुरुष त्यारी हुवे मोह ममत दीनो टाल जी, कृष्ण जी महोत्सव कीयो बडी धूम से तत्काल जी, ॥ खडी ॥ श्री नेम नाथ जिनवर से संजम लीना, दुनिया का झगडा सभी दूर कर दीना, छति रिद्ध त्याग कर धर्म दलाली लाभ हरिजी लीना. ॥ द्रोण ॥ कर विनय गुरु से चौदह पूरव भणीया, महाराज आज्ञा जिनवर की पाया जी। एक सहस्र शिष्य लेलार विहार कीनो मुनिराय जी, जहाँ गये तहां जय विजय धर्म की कीनी महाराज जगत में सुयश पाया जी। फिर अनशन कर पुण्डरीक गिरि से मुक्ति सिधाया जी,॥ पणिहारी ॥ छटे अग अधिकार छे सुनो गुणी जन हो २ पंचम अध्ययन सुभार गुणी जन हो ॥ १ ॥ ते अनुसारे लावणी सुनो गुणी जन हो २ करी पंच रंगत में त्यार गुणी जन हो ॥ २ ॥ महा मुनि नन्दलाल जी सुनो गुणी जन हो २ गुरु दीनो हुकम फरमाय गुणी जन हो ॥ ३ ॥ संवत उनीसे इकोतरे सुनो गुणीजन हो २ कियो चार ठाणा चौमास गुणी जनहो ॥४॥ मिलाप ॥ श्रेष्ठ हाडोती कोटा शहर जहां धर्म ध्यान का ठाट लगे संसार ॥ ५ ॥ प्रद्युम्न कुंवर चरित्र- [तर्ज:—द्राण] यह प्रजन कुंवर की प्रगट सुनो पुन्याई। महाराज, मात रुकमणि काजायाजी। ज्याने भोग छोड़ लिया जोग रोग कर्मों का मिटायाजी ॥टेक॥ एक सौरठ नामा देश द्वारिका नगरी; । महा० राज पाले हरिरायाजी। था तीन खंड का नाथ जिन्हों का पुण्य सवायाजी०। रुकमणी आपकी प्रेमवती पटराणी; महा० जिन्हों का नन्दन नीकाजी। तसु प्रजन कुंवरजी नाम हुआ जादव कुल टीकाजी ॥ निज मात बात सगपण की दिल में धारी, महा० दूत को तुरत बुलायाजी॥ ज्याने भोग० ॥१॥ तूं ज। कुन्दनपुर राय रुकमियाँ पासे; महा० युगल कर जोड़ बधानाजी, अरु कुशल क्षेम हैं सब यहां का हाल सुनानाजी। फिर कहिजे वल्लभ वेदरवी तुझ कुंवरी; महा० तुम्हें इतनो यश लीजोजो। यों कहा आपको बहिन प्रद्युम्नकुंवर को दीजोजी ॥ ले समाचार कुन्दनपुर दूत सिधाया । महा० भूप को आय बधायाजी ॥ ज्याने० ॥ २ ॥ दिया पत्र नरप के हाथ प्रेम से खोला, महा० बाँचता रीश भराईजी। रे दुष्टन तुझको,पत्र भेजतां लाज न आईजी ॥ जब चन्देरी को शिशुपाल नृप मोटो, महा० जिन्हों से करी सगाईजा, वो आया परणवा काज युक्ति से बरात सज ई जी॥ मैं किया बहोत भगिनी का हर्ष बधाया; महा० जिन्होंने कपट कमाया जी ॥ ज्याने भोग छोड़ ।३॥ मिल भुवा भतिजो गुत

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

पगे गोविन्द को, महा० बाग में लिया बुलाई जी । वहां पूजा के मिस आय आप हरिसंग सिधाई जी ॥ कर गई फज़ीता दुर्जन लोग हंसाया, महा० वश में छाप लगाई जा । केई शूरवीर सरदार जिन्हों की बात गमाई जी ॥ वो मेरी तरफ से मरगई बहिन रुक्ममणी; महा० रोशकर शब्द सुनाया जी ॥ ज़्याने भोग छोड़ ॥ ४ ॥ मुझ इष्ट कान्त वल्लभ वेदरवी कुंवरी; महा० डूम को दूं परणाई जी । पिण भूल चूक में कभी न दूं यादव कुल मांही जी ॥ यूं कही दूत को तुरत विदा कर दीना; महा० द्वारिका नगरी आया जी । रुक्खमणी पूछे धर प्रेम दूत सब हाल सुनाया जी ॥ वों सुणी पिहर की बात हरि पटराणी, महा० कंई मन धड़ा उठाया जी ॥ ज्याने भोग छोड़ ॥ ५ ॥ या बात सुण्या बिन किम रहे भामा राणी, महा० और जादव की नारी जो । जो जाणेगा तो आज, हंसी करसी गिरधारी जी ॥ यों बैठी करत विचार महल के मांही, महा० कुंवर इतने चल आया जी । दो हाथ जोड़ धर प्रेम मात को शीश नवाया जी ॥ क्यों फिक्कर करो मुझ मात बात फरमावो, महा० करूं सब मनका चाया जी ॥ ज्याने भोग छोड़ ॥ ६ ॥ तब माता रुक्खमणी कही हकीकत सारी; महा० कुंवर यूं कहे मैं जाऊं जी ॥ जो है मामा को वचन वो ही मैं पार लगाऊं जी ॥ मुझ मामा की जो है वेदरवीकुंवरी, महा० परण कर निज घर आऊं जी सुण मात आपके लाय बिंदणी पाय लगाऊं जी ॥ कर विनय सर्व ही मन का सोच मिटाया महा० कुंवर अब तुरत चढ़ाया जी ॥ ज्याने भोग छोड़ ॥ ७ ॥ एक शाम्ब कुंवर श्री जाम्बवती का जाया, महा० जिन्हा से राह मिलाईजी । है खीर नीर सम वीर दोउन के प्रीत सवाईजी ॥ मिल सलाह करी यूं युगल वीर की जोड़ो महा० तुरत कुन्दनपुर आया जी विद्या के जोर से आप डूम का रूप बनाया जी ॥ केई घोडा ऊंट और साथे पाडा बकरा, महा० बाग मे डेरा लगाया जी ॥ ज़्याने भोग छोड ॥ ८ ॥ तहां दोनों भाई उठे आप मध्यराते, महा० वंशी और वीणा बजावेजी । छः राग और छत्तीस रागिनी मिल कर गावेजी ॥ सुन राग कई जङ्गल का जीव लुभाना, महा० राग पसरयो पुर मांई जी सब राजादिक नर नार सुने एक धुन्न लगाई जी ॥ परभात हुआ तो शुभ शब्द उचारे, महा० राग में खूब रिझाया जी ॥ ज़्याने भोग छोड़ ॥ ९ ॥ यों चारों दिशि में फिरता राग अलापे, महा० कौन यह कहाँ पर गाये जा । वनमाय ढूंढता फिरे लोक पण भेद न पावे जी ॥ इमकरता इक दिन कुंदनपुर में आया, महा० फिरे संग लोग लुगाई जी । या सुनी बात नर नाथ डूम को लिया बुलाई जी । तिहां बैठा आजन हाल भूप के आगे, महा० मनुष्य नहां जाय गिनायो जी ॥ ज्याने भोग छोड़ ॥ १० ॥ वां वेदरवी कुंवरी पिण

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

देखन आई महा० तात लै गोद बिठाईजी । हरि नन्द देखकर रूप मगन होय मन मांईजी ॥ तब प्रजनकुंवरजी तान मिलाकर गावे, महा० राग में राग सुनावे जी । एक समझे कुंवरी सुने लोक पिण भेदन पावे जी ॥ (तर्जः--पनिहारी) प्रजन कुंवर कहे तान में सुन कुंवरीए २ हूँ नहीं ढोली दमाम कुवरीए ॥ देवपुरी सम द्वारिकां सुन कुंवरिए २ जिहां राज करे घनश्याम कु० ॥ १ ॥ माता रुकमणि माहरी सुन कुं० २ उनको नन्दन जाँण, कुंवरिए ॥ जादव वंश वडो घणो सुन कुंवरिए २ तिहुँ खंड में आण कुं० ॥ २ ॥ जो मन होवे ताहरो सु० २ तो मुझे करो भरतार कुं० तुम हम जोडी सारखी सुन कुंवरीए २ तुष्ट हुआ करतार कु० ॥ ३ ॥ मेरे जिसा वर नहीं मिले सुन कुंवरीए २ सर्व विद्या परवीण कुंवरीए । जो चूकी इण अवसरे सुन कुंवरीए २ तो झूरेला दिन रैण कुंवरीए ॥ ४ ॥ डाला डोली मत क्यों करे सुन० २ तूं मन को भर्म मिटाय कुंवरीए ॥ डूम बना तुझ कारणे सुन कुंवरीए २ आया रूप छिपाय कुंवरीए ॥ ५ ॥ (तर्जः -- द्रोण) विद्या से आपने रूप लिया पलटाई, महा० देख कुंवरी मन भायाजी ज्याने भोग ॥ १० ॥ जितने आलिम वहां राजसभा में आये. महा० सभी को डूम दिखावे जी । पिण असली राज कुंवार नजर कुंवरी के आवे जी ॥ तन मन से गाय बजाय लिया विश्रामा, महा० डूम से पूछे हरिराय जी । तुम कौन देश में वसो कहो तुम कहां से आया जी ॥ है सोरठ नामा देश द्वारिका नगरी --महा । वहां से हम चल आया जी ॥ ज्याने भोग छोड ॥ ११ ॥ तब राय रुखमियो कहे डूम तुम मांगा, महा० सोही तुमको मिल जावे जी । तब कुंवर कहे धन माल हमारे कुछ नहीं चहावे जी ॥ में दोऊ जणा हाथों से करां रसोई, महा० हमें या कुंवरी दीजे जी ॥ तो खट पट सब मिट जाय आप इतनो यश लीजे जी ॥ सुन बात भूप के रोश जोश चढ आया, महा० धक्का दे बहार कढायाजी ॥ ज्याने भोग ॥ १३ ॥ महला में सूती कुंवरी आप अकेली महा० सजी शृंगार सवाया जी ॥ या है रजनी की नक्त हुवे अब मनका चहायाजी ॥ तब रांन सुना यों मन ही मनविचारे ॥महाराज॥ तुम्हें हरिनन्द कहाओजी । जो जाणो मन की बात यहां पर जल्दि आओ जी; हिम्मत करके बेधड़क आप मुझ ब्याहो ॥ महाराज ॥ होय सबही मन चायाजी ॥ ज्याने भोग छोड लिया जोग ॥ १४ ॥ सुण प्राणनाथ कहूँ बात ईश्वर की साखे ॥ महाराज ॥ यदि तुम नहीं आओगा जी ॥ तो अब हत्या को पाप साफ कहूं तुम सिर होगा जी ॥ विद्यासे जाण झट कुंवर तिहां चल आया. ॥ महाराज । बीन्द का वेश बनाई जी ॥ कुंवरी को पकड़ कर हाथ नींद से तुरत जगाई जी ॥ हथलेवो जोड़कर विधी ब्याह की सारी; ॥ महाराज ॥ कुंवर फेरा फिर आया जी ॥

६०

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

॥ ज्याने ॥ १५ ॥ कुंवरी के पास दिन ऊगत दासी आई, महा० अति मन अचरज पाई जी । परणे तुं वेश लख तुरत राय को बात जणाई जी ॥ सुनते ही दौड राजा राणी मिल आया, महा० मौन कुंवरी कीनी जी ॥ रे वंश लजावण हार ते भी सोची गति कीनीजी ॥ तुझ कारण दुष्टन वचन डूम से हारा, महा० बहिन से वैर बसायाजी । ज़्याने भोग छोड़ ॥ १५ ॥ कर कोप दूत को भेजा उपवन माही; महा० डूम को लिया बुलाईजी । निज पुत्री दीनी सौंप नहीं सोची दिलमांईजी॥ कुंवरी को लेकर डूम बाग में आया, महा० मोहनी पीछी जागीजी । मैं दी डूमड़ को सौंप बात आछी नहीं लागीजी ॥ पीछी लेवन को भूप बाग में आया; महा० डूम का पता न पायाजी ॥ ज़्याने भोग० ॥१६॥ बैठा गम खाई भूपति बात बिसारी, महा० कुंवर तब तब फौज बनाईजी । दिया बनके बीच पड़ाव राय को बात जणाईजी ॥ सुन मामाजी मैं प्रजन कुंवर चढ़ आया, महा० मुझे कुंवरी परनावोजी । या करो युद्ध तो आओ सामने जोर जनावोजी । नरपति घबरायो या कैसी बनि आई, महा० करूं, अब कोना उपायाजी ॥ ज्याने० १७॥ जो करूं युद्ध तो वेर बसेगा दुगुणो: महा० जोर जादव को पूरोजी । है कौन अधिक बलवान इन्हों से सूर सनूरोजी ॥ मैं प्रजन कुंवर से जाय करूं नरमाई; महा० बात जब रहे हमारीजी । यों करके खूब विचार आप झट हुआ तैयारो जी ॥ जब मामाजी को आता देख कुंवर के; महा० हिये अति हर्ष भराया जी ॥ ज्याने भोग० ॥१८॥ मारग में कियो मिलाप हेत कर लीन्हो; महा० तुरत तम्बू में पेठाजी । मामाजी और भाणेज दोउ आसन पर बैठाजी ॥ इतने लो उठ वेदर बी कुंवरी आई, महाराज, । तात को शीश निवायाजी । मिट गयो सकल जजाल प्रेम से बटे बधायोजी ॥ पुनि करी ब्याह की रीति डायचो दीन्हों, महा० सीख ले कुंवर सिधायाजी । ज्याने भोग छोड़ ॥१९॥ श्री प्रजन कुंवर कर फतह द्वारिका आया; महा० कामण्यां कलश बधावेजी । घर घर में मंगलाचार लोक सुख २ यश गावेजी ॥ निजामात तात को नमे कुंवर कर जोड़ी; महा० कीर्ति पसरी पुरमाई जी । इन वोही वेदरबी परण मात के पाँव लगाई जो ॥ तब मात रुखमणि मगन हुई मन माही; महा० खुशी का पार न पायाजो ॥ ज़्याने भोग छोड़ ॥२०॥ निज भामणि संग में राज कुंवर सुख भोगे; महा० करी मोजां मनमानीजी, फिर लीन्हा संयम भार सुनी जिनवर की वानीजी ॥ कर विनय अंग द्वादश कंठे कर लीना, महा० तपस्या खूब कमाईजी । था राज कुंवर सुखमाल जिन्हों की यह अधिकाईजी ॥ जिन सोलह वर्ष का पूरण संयम पाला, महा० वास मुक्ति का पायाजी ॥ ज़्याने भोग छोड़ ॥ २१ ॥ संवत्

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

उगनीसो साल कहूं चौसटका, महा० धनतेरस रविवारेंजी । यहकरी जोड़ पर मान, ढाल सागर अनुसारेजी । एक निम्बाहेड़ा शहर दी पता सारी, महा० सभी श्रावक सुखदाईजी । हुआ धर्म ध्यान का ठाठ, खूब चौमासा मांईजी ॥ श्री नन्दलालजी महाराज तणा शिष्य गावे; महा० ज्ञान मुझे गुरु बतायाजी ॥ ज्याने भोग छोड़ लिया जोग रोग कर्मों का मिटायाजी ॥२२॥ इति

"शाम्भ कुंवर चरित्र" (तर्ज – द्रोण)—यह प्रजन कुंवर का शाम्भ कुंवर लघु भाई; महा० । दोहुन की माता न्यारी जी । है तीन खंड का नाथ, तात जिनका गिरधारीजी ॥ टेक ॥ या युगल वीर की जोड़ दीपती भारी; महा० प्रेम आपस में पूरा जी । चले निज कुल की मर्याद घड़ी इक रहे न दूराजी ॥ खुश होय एक दिन प्रजन कुंवरजी बोले, महा० भाई तुम शंका न राखो जी । जो मन की इच्छा होय वोही मुज आगे भाखोजी ॥ कर अरज तात से वो ही चीज दिलवाऊं, महा० माँग जो मरजी थारी जी ॥ है तीन खंड का ॥१॥ कहें शाम्भ कुंवर कर जोड़ बात सुन भाई, महा० और मुझ कुछ नहीं चहावेजी । दिया वचन लगावें पार आप फिर नहीं पलटावेंजी ॥ सुर लोक सारखी है यह द्वारिका नगरी महा० चित में खूब उमावोजी । करूं छे महीना तक राज तात से आप दिलावोजी ॥ लीजे इतनो यश आश सुफल कर दीजे, महा० यही बस अरज हमारीजी ॥ है तीन० ॥ २ ॥ तब प्रजन कुंवर ले साथ शाम्प कुंवर को, महा० सभा में दोउ मिल आयाजी ॥ अति हर्षसहित कर जोड़ तात को शीश नवायाजी । दीन्हो आदर हरिराय प्रेम से पूछे, महा० कहो जो भाव तुम्हारीजी । करूं सफल मनोरथ आज वचन नहीं फिरे हमारीजी ॥ सुन तात आपसे और कछू नहीं मांगूं, महा० कुंवर यों कहे विचारीजी ॥ है तीन खंड ॥३॥ मैं सोलह वर्ष से आय आपसे मिलियो, महा० आज तक कभी न जाचाजी । अब माँगूं सो वक्साय संभालें आपकी वाचाजी । इस द्वारा मति का राज मास षट् तांई ॥ महाराज; शाम्भ कुंवर को दीजेजी ॥ ज्यों बनी रहे सब बात जगत में यो यश लीजेजी ॥ सुन बात द्वारिकानाथ वचन का बन्धया, महा० तुरत दीन्हीं मुखत्यारीजी ॥ है तीन खंड ॥ ४ ॥ अब शाम्भ कुंवरजी राज मौज से पाले, महा० खूब धन धन कहलावेजी । दिए तजी लाज मर्याद आप कुव्यसन कमावेजी ॥ जो उत्तम कुल का नार नजर में आवे, महा० जिन्हों से करत अनीतिजी । ऐसे पुरुषों का क्यों न होय जग बीच फजीतीजी ॥ नगरी का लोक मिल सब यों सलाह विचारी, महा० मुकुन्द से अर्ज गुजारी जी ॥ है तीन ॥५॥ सुन बात कृष्ण लोकों को दिया दिलासा; महा० आप महलां में आयाजी । सब जासूस वन्ती को मारुड नन्द का

९२

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

हाल सुनाया जी ॥ तब तड़क फड़क कर महाराणी जी बोले, महा० विनय हमारी सुन लीजेजी । ये लोग उड़ावे बात आप तो चित्त न दीजेजी ॥ यदि झूंठ होय तो प्रत्यक्ष आज दिखाऊ, महा० ऊठ चल संग हमारी जी ॥ है तीन॥६॥ तब जाम्बवती उठ उठ पति संग चाली ॥ महा० हरिजी होगया आगे जी ॥ खुद बहुत वर्ष का बुड्ढा बाबा बन गया सागे जी उस जाम्बवति को गूजरी आप बनाई ॥ महा० बरस सोलह परमाणे जी इम किया वैक्रिय रूप लोग कोई भेद न जाणे जी ॥ तर्ज – राम सुन मोहनी मो नी ॥ हरिजी चालिया बालीया कांई कपित तास शरीर ॥ हरिजी ॥ टेर ॥ अति दीपती गूजरी ज्यों इन्द्राणी अवतार ॥ हरिजी ॥१॥ दीसे वेष सुहावणो, कांई नेवर को झणकार ॥ हरिजी ॥ २ । मोत्या की सिर चूमरी, कांई मटका लीनी मेल ॥ हरिजी ॥ ३ ॥ लोक देख हांसी करे, कांई जोड़ मिली परमाण ॥ हरिजी ॥ ४ ॥ गोविन्द के परवा नहीं, कांई चालया मध्य बाजार ॥ हरिजी ॥ ५ ॥ मिलाप ॥ दोउ फिरता २ राज द्वार पे आया ॥ महा० जावरया नीचे उतारी जी ॥ है तीन खंड ॥ ७ ॥ लो दूध दही लो दूध दही यों बोले, महा० कुंवर सुन बाहिर आयाजी ॥ लख गूजरली का रूप तुरत मन में मुरझायो जी ॥ कहे कुंवर सुन तू गूजरली बात हमारो, महाराज । नहीं हम लूट मचावाँजी ॥ तूं चाल महल में दूध दही का भाव जचावांजी ॥ बुढ़ा बालम यों कहे थकी पर लेलो, महा० नहीं तो मरजो तुम्हारी जी ॥ है तीन ॥ ८ ॥ मैं हूं बुढ़ो या बालक बधू हमारी, महा० अवस्था योवन धारी जी ॥ को जाने मन का बात नहीं पर तीत तुम्हारी जी ॥ दोउ हाथ पकड़ कर खेंचा खेंच मचावे महा० झपट ले चाल्यो मांही जी । अरे मान मूढ़ मतिहीन ऐसी क्यों करत अन्याई जी ॥ तब कृष्ण आप निज रूप प्रगट कर लीन्हा, महा० पुत्र से कहे ललकारी जी । है तीन ॥ ९॥ रे लाज हीन तू देख मात या तेरी , महा० कहाँ ले जाता भागी जी ॥ झट छोड़ मात को हाथ गयो महल में भागी जी ॥ तब कृष्ण और महाराणा जी मिले दोनों, महा० आये निज भवन सुखारी जी ॥ देखी तरू नन्दन एव शोक यूं कहे गिरधारी जी ॥ तब, जाम्बवती कर जोड़ कंत से बोली, महा० अभी बालक बुध ऊधारी जी ॥ है तीन खंड ॥ १० ॥ फिर दूजे दिन गोपाल सिंहासन बैठा, महा० सभा थी सभा रसीली जी । तिहां आया शाम्भकुवार, हाथ से घड़ता खीला जी ॥ क्या चीज बनायो तात बात यूं पूछे; महा० कुंवर कहे रोश भराई जी । ज्यों करे काल की बात, ठोकूं उनका मुख माही जी ॥ कोपित हो गोविन्द देश निकाला दीन्हा, महा० कर्म गति टारे न टारी जी ॥ हैं तीन खंड ॥ ११ ॥ सुन राजन कुंवर यह बात तात पै आया । महा० बहुत कान्ही करा ई जी । ह मुझ बान्धव

६३

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

नादान, हाल कुछ समझे नाहीं जी, मैं जानूं जबर अपराध आपका कीना; महा० राज तो बड़ा कहायो जी। यह गुन्हा मुझे बकसाय, बचन पीछा पलटावो जी ॥ तर्ज – नाथजी की ॥ तातजी, प्रजन कुंवर इम वीनवेरे कांई-कर जोड़ी पावां पड़ी, हो तात जी। राजन पति प्रभु आपकी रे कांई महिमा जग में है बड़ी, हो तात जी ॥ १ ॥ तात जी, पुत्र कुपूत हो होवे सही रे कांई-मावित्त अलग करे नहीं, हो तात जी। तातजी, छेदन भेदन जो करे रे कांई-चन्दन सुगंध छोड़े नहीं; हो तात जी ॥ २ ॥ तात जी, यंत्र में पीले शेल डोरे कांई; दुश्मन को तरपति करे; हो तात जी ॥ तातजी लक्कड़ जल ऊपर तिरेरे कांई पानी अवगुण नहीं धरे, हो तातजी ॥ ३ ॥ तात जी, खुशबु से खुश होकर फूल डोरे कांई मर्दक पै नहीं ध्यान दे हो तात जी ॥ तातजी, बन्धन तर्जन सभा सहेरे कांई, गऊ मधुर पय दान दे होता० ॥ ४ ॥ तातजी, बड़ पन विरद विचार मेरे कांई पुत्र पे कोपन कीजिये होतातजी ॥ तातजी; सुदृष्टि निहारने रे कांई प्रीति आलास्बन दीजिये ॥ हो तातजी ॥ ५ ॥ तर्ज—द्रोण ॥ निज नन्दन की हरि एक बात नहीं मानी, महा० तर्क इतनीक निकारी जी ॥ है तीन खंड ॥ १२ ॥ है सत्य भामा जी जो तुझ मोटी माता, महा० हस्ति ऊपर बैठावेजी, और चमर उड़ाती आप द्वारिका मांही लावेजी ॥ तो है मुझ आज्ञा रहो राज के माँही, महा० कुंवर सुन वहां से चलियो जी। अति हर्ष सहित झट आय शाम्ब कुंवर से मिलियो जी ॥ मैं सुख दायक उपाय करी आयाहूं; महा० फिरलो तकदीर तुम्हारी जी ॥ है तीन खंड ॥ १३ ॥ कहे शाम्ब कुंवर तुम बन्धव बात विचारो, महा० मात देखा नहीं चहावेजी। तो ऐसी अदब के साथ कहां कैसे लइ जावे जी ॥ वैताढ्य गिरि विद्याधर उत्तर श्रेणी, महा० 'मेघकुट' नगर तुम्हारोजी। तिहां दीजे जल्दी मेल खुशी चित्त होय हमारोजी ॥ लीजे वश यह भी वक्त निकल जावेगी, महा० आपहो पर उपगारी जी ॥ है तीन० ॥ १४ ॥ जरा धीरज धर तू क्यों इतनो घबरावे, महा० जोर विद्या को भारीजी ॥ झटपलट दिया तसुरूप करी जिम देव कुमारी जी ॥ भामा जी का रमणीक बाग के माँही। महा० वृक्ष की शीतल छाया जी। शिल्ला पट पर बैठाय कपट का बचन सिखाया जी। यों खेल रचा कर गया द्वारिका मांही, महा० बातता खूब सुधारी जी। है तीन खंड ॥ १५ ॥ ले सखियाँ लार तिण अवसर भामा राणी, महा० बाग मे खेलन आईजी। अति दिव्य रूप कुंवरी को देख मन अचरज पाई जी ॥ भामा जी भोली भेद कछु नही पाई; महा० पास कुंवरी के आई जी। बहु दे आदर सन्मान बात पूछे हुससाई जी ॥ तुम कुन हो बाई राज बात फरमावो, महा० सूर्नि तुझ मोहन गारी जा ॥ है तीन खंड ॥ १६ ॥ तब शाम्ब कुं-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

कहे नयना जल बरसाई, महा० मात सुन बात हमारी जी ॥ इस मृत्युलोक के मांय, मैं हूं इक दुखली नारी जी ॥ मैं विद्याधर राजा की वल्लभ कुंवरी; महा० यहां सामी लेई आयो जी ॥ सूती तरु तल भर नीन्द दुष्ट मुझ छोड सिधायाजी ॥ तर्ज:—
हे सुण मायडली, पिता है बे परवाह जो; माता ने मैं छू वल्लभ डीकरीरे लो ॥ १ ॥ हे सुण मायडली, चक्रवर्ती पाले राजजो; तिण थी अर्धराज छे म्हारा तात नेरे लो ॥ २ ॥ हे सुण मायडली; बात सुणोगा मात जो, झुर झुर ने पिंजर ते होसी सहीरेलो ॥ ३ ॥ हे सुण मायडली, यह मुझ बालक वयजो, भोलो ढालो कुछ समझूं नहीं रेलो ॥ ४ ॥ हे सुण मायडली, कौन करे मुझसार जो, सुख दुख की बात कौन मुझे पूछसीरेलो ॥ ५ ॥ हे सुण मायडली, अब मुझ रहा बनाव ज़ो, गुण नहीं भुलू पैं ज़ीवूं ज़हाँ लगे रेलो ॥ ६ । मिलाप ॥ कहे सत्य भामाज़ी बाई रुदन मत कर तू, महा० खुली तकदीर तुम्हारीज़ी ॥ हे तीन खण्ड ॥ १७ ॥ सुभानू कुंवर मुझ पुत्र दीपतो भारी; महा० कहावे नन्द हरिकोजी; नन्याणु कुवरयाँ साथ व्याव अब होसी नीकोजी,जो मन्न होय तो तूं यो अवसर मत चूके, महा० मौज करजो मनमानी जी । सब कुंवरान्यां केमाय तुझे करसूं पटरानी जी ॥ सुन मात बात पर मान करूं मैं थारी, महा० अरज इतनीक हमारीजी ॥ हे तीन० ॥ १८ ॥ मैं भू चरतो सपना में कभी नहीं वंछू महा० आज की वक्त विचारूं जी ॥ मुझे हर्ष सहित ले चलो तो दिल में निश्चय धारुंजी॥ फिर गज होदे तुं हाथे चमर डुराऊं, महा० हुई खुश भामा रानीजी ॥ मोटे मंडान वधाय तुरत नगरी में आनी जी ॥ अब बटे बधायाँ खूब शहर के मांही, महा० करे महिमा नर नारीजी हे तीन० ॥ १९ । अथ सत् भामा जी विवाह कुंवर को रचियो, महा० द्रव्य खरचे दिल चायोजी । घुर रहे वाजिन्तर नाद लगन दिन नेडो आयो जी । तब गुप्तपणे कुंवरी ब्राह्मण से बोले, महा० रीति कुल की नहीं छोडूं जी ॥ मैं ऊपर रखूं हाथ तभी हथलेवो ज़ोडूं जी ॥ सुण भामा ज़ी यूं कहे तुरत कुंवरी से, महा० रीति होय सो कर थारी जी ॥ हे तीन ॥ २० ॥ तब कुंवरी अपना हाथ रखा ऊपर ही, महा० फिरे फेरा अब सोगेजो । निन्याणवे कुंवरियां माय आप हुई सब के आगे जी॥ अति हर्ष सहित किया व्याह मात नन्दन का, महा० भवन दीना धकसाई जी ॥ सुभानू कुवर की नार सबो मिल सिरार आईजी ॥ तब प्रद्युम्न कुंवर बल्लभ विद्या को सुमरी, महा० किया निज रूप तैयारीजी ॥ हे तीन ॥ २१॥ अब भामाजी देव कुंवर जिन रूपे, महाराज सेज पर बैठा पाईजी ॥ सब राणया देखी रूप तुर्त मन में मुरझाई जी । चोतर्फ सेज के सर्व मेलदा बैठी; महा० खूलो जिम केशर क्यारी । कर

९५

अलंकार सुभानू कुंवर आया उस वारीजी ॥ तिहाँ शाम्ब कुंवर को बैठा देख पलंग पै, महा० कोप चढ़ियो अति भारीजी ॥ है तीन० ॥ २२ ॥ रे लाज हीन मुझ सेजा में किम आयो, महा० तुझे कुमति भरमायोजी । तब शाम्ब कुंवर कर नैत्र लाल उलको घुरकायाजी । सुभानू कुंवर झट दोड़ मात पां आयो; महा० हकीकत माण्ड सुनाईजी । सुन सत् भामाजी शीघ्र गति तिहाँ चल कर आइजी ॥ अति क्रोध करीने करड़ा वचन सुनाया, महा० दुष्ट तूं निकल बहारीजी ॥ है तीन० ॥२३॥ जब देश निकाला तात तुझे दीना था महा० यहीं कैसे बिलमायोजी ॥ माधव की आज्ञा भंग करी पीछो किम आयोजी ॥ छिप के कब तक रहसी इस आंगन में ॥ महा० नाम जिनका गिरधारीजी ॥ यदि लगी खबर फिर बोल कौन गति करसी थारीजी ॥ (तर्ज - फाग) मुरली वारो रे २ शीश पर मुकुट धारोरे ॥ मुरली ॥टेर॥ साम्ब कुंवर ने सतभामा कहे सुनले बात हमारी रे ॥ तीन खण्ड को नाथ थारो गिरधारी रे ॥ मुरली १ ॥ कंशराय का मुकट पाडियो परभव में पहुंचायो रे ॥ स्वयम्बर मडप मांय से मुझ व्याही लायो रे ॥मुरली॥ ॥२॥ काली देह मे कूद पड्या अरु करा वज्र की छाती रे ॥ गेंद लेइ ने पाछो निकल्यो नाग नाथी रे ॥ मुरली ३ । जरासिंध का मान बिडारयो हस्ती दन्त उखाड्या रे । जेठीमल से युद्ध करीने पकड़ पछाड्यारे ॥मुरली ४ ॥ देशवट पंडवा ने दीनो जरा कारण नहीं राखी रे ॥ पंडु मथुरा जाय वसाई सुतर साखी रे ॥ मुरली ५ ॥ प्रजन कुंवर थारी भड़ ऊपर मदद करे छे भारी रे ॥ जाम्बवती पण लाजसी वा माता थारी रे ॥ मुरली ॥ ६ ॥ बड़ां बड़ां की शान बिगाड़ी ऊ थारी कब राखे रे ॥ इण लक्षण से आणजे कई स्वाद चाखेरे ॥ मुरली ७ ॥ विलाप ॥ तब शाम्ब कुंवर कर जोड़ मात से बोले; महा० अर्ज एक सुनो हमारी जी ॥ है तीन २४ ॥ मैं किया वचन परमाण आण नहीं लोपी, महा० जोर हो जहां पुकारोजी । मैं हूँ निरदोषी आज तात क्या करे हमारोजी॥ मैं पुढवी शिला पट ऊपर बैठा थो, महा० बाग की शीतल छायाजी, मुझे गज होदे बैठाय, आप यहाँ लेकर आयाजी ॥ सुन माता तुझ उपकार कभी नहीं भूलूं, महा० रोर की हद विस्तारीजो । है तीन० ॥ २५ ॥ फिर शाम्बकुंवर निज स्थान गया निकल के; महा० महा० मोज में रहे सदाइजी । तब भामारानी तुरत कंथ के सन्मुख आईजी, दो हाथ जोड़ जोड़ सब बीतक हाल सुनाया, महा० हरीजी यूं हँस बोलाजी॥ उसे गज होदे बैठाय चमर कहो किसने ढोलाजी॥ मैं सांच कहूं राणीजी रोष नहीं कीजे, महा० कुबुद्ध या हैसब थारीजी॥ है तीन० ॥ २६ ॥ तब सत्भामाजी रोष अत्यन्त चढाया, महा० कही तुम झूठी मुझनेजो । तेरो पलट्यो नहीं स्वभाव गवाल्या जाण् ९६

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

तुभ्कनेजी ॥ यों वह बड़ करती गई महल के मांही, महा० बड़ी समता दिल धारीजी, यह कपट भरा संसार खूब रहना होशियारी जी ॥ फिर शाम्भकुंवर पच्चास अंतेउर परनी, महा० सेजसुख बिलस भारीजी ॥ है तीन० ॥२७॥ फिर नेमि जिनन्द की सुनी आपने वाणी, महा० धर्म का मर्म पिछानाजी ॥ है झूठा सब संसार; सार एक संयम जानाजी ॥ हरि की आज्ञा ले तुत भोग छिटकाया, महा० सूत्र में वर्णव चालयोजी । श्री परजन कुंवर की तरह आप शुद्ध संयम पालयोजी ॥ कर अष्ट कर्म का अन्त सिद्ध पद पाया, महा० काज सब लिया सुधारीजी ॥ है तीन ॥ २८ ॥ संवत् उन्नीसो पैंसठ चेत सुदि माही, महा० तिथी एकमगुरुवारेजी ॥ यह जुगत बनाई जोड़ 'ढालसागर' अनुसारेजी ॥ मेवाड़ देश गढ चित्रकोट सुखकारी, महा० तीन मुनि विचरत आयाजी । वहां है श्रावक गुणवान मेरा दिल लगा सवायाजी ॥ श्री नन्दलालजी मुनि तणा शिष्य गावे; महा० गुरु मेरा है उपगारीजी है तीन खंड का नाथ तात जिनका गिरधारीजी ॥२६॥ सम्पूर्णम् ॥

दान की महिमा—(तर्ज—लंगड़ी) अभयदान प्रभाव, भविकजन भव २ में सुख पावेगा । मुनिराज सुनावे वही नर ज्योति में ज्योति समावेगा ॥टेर॥ पूर्व भव हस्ती के भव में, एक जीव की करी दया । हुये मेघ कुंवरजी श्रेणिक राजा के घर आ जनम लिया। योवनवय में आए कुंवरजी, बहत्तर कला में प्रवीन भया । तब श्रेणिक राजा आठ कन्या के संग में ब्याह किया । शेर—राज कुंवर सुकमाल हैं और चलते कुल की चालजी । सुख भोगते संसार का बीता है कितना कालजी ॥ पुण्य योग से उस नगर में, छै काय के प्रतिपालजी । समोसरे चौबीस में, जिन राज दीनदयालजी ॥छोटी कड़ी—हुई खबर शहर में, बहुत लोग हुलसाया । भला हुई खबर-राजादिक बन्दन, मेघ कुंवर भी आया । तब तीन लोक के नाथ जिनेश्वर राया; भला तब-प्रभु समोसरण के बीच उपदेश सुनाया । दोड़॥ सुनो मेघ कुंवार, जान्यो अथिर संसार । जिसने लिया संयम भार, काम सफल किया १ । किया उग्र विहार, बहु तारे नरनार, खूब किया उपकार, जग यश लिया २ । संयम पाल के सुजान, गए विजय विमान, बत्तीस सागर के प्रमान भोगे सुख निदां २ छट्ठे अङ्ग के मंझार, हैगा बहु विस्तार, सुन लेना नर नार, यहां संकोच दिया २ ॥ मिलाप—महा विदेह क्षेत्र में जन्म लेके, कर्मों का रोग मिटावेगा ॥ मुनिराज सुनावे जिन्हों से ज्योति में ज्योति समावेगा ॥१॥ प्रथम देवलोक के अन्दर; इन्द्र ने किया बखान, मनुष्य लोक में दयालू, मेघरथ जैसा नहीं इनसान । एक देवता ने यूं सुनकर, दिल में शंका लीनी ठान। मैं जाय डिगाऊं उसी दम रूप वैक्रिय

९७

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

किया महान । धर्म ध्यान में लीन नृपति, पौषधशाला मांयजी । देवता कबूतर हो गिरा, जल्दी से गोदी मांयजी ।। तब पारधी कहने लगा, सुनिए श्री महारायजी । मेरा भक्ष मुझ दीजिये, रहा भूख से घबरायजी ॥ छोटी कड़ी—तब राय कहे सरणे आया नहीं पावें । भला तब--तेरी इच्छा हो सो मांग, और मिल जावे. तब कहे पारधी. इस पै दया जो आवे । भला तब--तो इसके बराबर अपना मांस दिलावे ॥ दौड़--सुन के राजा ने यह हाल, तराजू मगवाई तत्काल, करके कुछ भी नहीं खयाल, काया खण्डन करी २ । देव अवधि से जान, सच्चा दयालु राजान, झुका कदमों में आन, नहीं देरी करि २ । पीछे मेघरथ राय, व्रत पाल चित्त लाय । गए सर्वार्थ सिद्ध मांय, पूर्ण स्थिति करी २ ।। यहां से चव करके आन, हस्तनापुर के दरम्यान, पिता विश्वसेन लो जान, अचला मातेश्वरी २ । शान्तिनाथ हुवे स्मरण कीजे शान्ति २ वरतावेगा । मुनिराज सुनावे ॥२॥ यदुकुल भूषण समुद्रविजय की, शिवादेवी हैं महारानी । अङ्ग जात जिन्हों के, हुवे हैं रिष्ट नेमि जिनवर ज्ञानी । जूनागढ़ चले व्याह करन श्रीकृष्णचन्द्र हैं अगवानी । चली बरात धूम से, देख छवि जनता मन में हुलसानी ॥ शेर--नगर जूनागढ पति श्री उग्रसेन के द्वार जी । तोरण बन्दन आवतां पशुगण की सुणी पुकारजी । पशु इकट्ठे क्यों किए, कहे नेमिजी उस बार जी, सुन सारथी ने यूं कहा, तुम व्याह हित सरकार जी ॥ छोटी कड़ी--यूं सुन के नेमि प्रभु दिल में करे विचारा। भला यूं, मुझ व्याह निमित्त पशुओं का होय संहारा । दिए भूषण खोल कर सार्थी को उस वारा । भला, दिए फिर सहस्र पुरुष संग, प्रभुजी ने संयम धारा । दौड़--सुन के राजुलजी यह हाल, मुरछानी तत्काल, फेर सूरत संभाल ऐसे प्रकट कही २ । बिन गुनाह भरतार मुझ छोड़ी निराधार, अब कौन का आधार, लेना संयम सही २ संग सातसौ कुंवारी, निश्चय दिल में विचारी, लीना मुनिव्रत धारी, गिरनार पे गई २ । उत्तराध्यन के मझार, हैगा बहुत विस्तार, दोनों किया खेवा पार, केवल ज्ञान लही २ ॥ मिलाप—रिष्ट नेमि राजुलजी का गुण, कोई तन मन से गावेगा । ॥३॥ जगह २ सूत्रों के अन्दर, बहुत किया जिनवर विस्तार, दया धर्म को धार कर, भवसागर से होगए पार, धर्म रुचि मुनि दया निमित्त, कड़ुवे तूम्बे का किया आहार, पर नाग सिरि पै जिन्होंने, द्वेष भाव नहिं किया लगार । शेर--दया धर्म दिल धार के, कई पाए अविचल स्थानजी । अल्प बुद्धि है मेरी किन २ का दूं प्रमान जी । जीव रक्षा धर्म पर, जिसका हमेशा ध्यानजी । देव स्वर्गों के झुकें उसके चरण में आन जी ॥ छोटी कड़ी--यों जान सभी जीवों की जतना करना भला यूं तो भव सागर से जलदी होगा तरना ।। मुनिराजों की नित शिक्षा दिल में धरना भला मुनिराजों । जो शिव रमणी को चाहते हो तुम वरना

६८

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

दौड़--ऐसी अरिहंत वानी, जिस में दया ही बखानी, जिनके चित में समानी, हुए भव पारी २ । ऐसी लावनी बनाई, साल-चौपन के मांही, जीवागंज मांही गाई, सुनो नर नारी २ । नन्दलाल जी महाराज, तरण तारण की जहाज, सारे आतमा के काज, बड़े उपकारी२ हीरालाल जी महाराज, वाणी घन जिम गाज, ठाणा सात से विराज, रहे यश धारी २ ॥ मिलाप ॥ खूबचन्द और चौथमल कहे, दया पाल तिर जावेगा । मुनिराज सुनावे इसी से ज्योति में ज्योति समावेगा ॥ -शील की महिमा- तर्ज- पूर्ववत) शील रत्न का करो जतन, श्री जिनवर ऐसे फरमावे । श्री शील व्रत से, मन वंछित सम्पति पावे ।। टेर ॥ चम्पा नगरी सुभद्रा सेठ, धनदत्ता बसे उस नगरी मांय सुभद्रा नामा, कही जे एक पुत्रि बल्लभ सुखदाय । बालपने से जैन धर्म श्रावक के व्रत पाले चित लाय ॥ मां बाप उसी को एक दिन मिथ्यात्वी घर दी परणाय ॥ शेर ॥ सती सुभद्रा ऊपरे सासू करे तकरार जी । जैन धर्म को छोड़ दे, शुचि धर्म ले तूं धार जी । सुभद्रा कहे सासू सुनो, जिन धर्म है एक सार जी । सुख से सती रहती सदा, आगे सुनों अधिकारी जी ॥ छोटी कड़ी तिण अवसर विचरत, जिन कल्पी मुनिराया, कृपा करके चम्पा नगरी में आया । चक्षू में वायू योगे फूस भराया । नैनों से झरता नीर शहर में आया । ॥दौड़॥ सती देख मुनिराय, हर्ष आया दिल मांय मुनि वन्दे चित लाय, गुण ग्राम करे २ । सती आंख खासी देख, मन आया है विवेक, फूस काढ दिया देख, सासू शङ्क धरे २ । बहु कुलक्षणी नार, शर्म आई ना लगार । छू लिये अणगार, मिथ्या कलङ्क धरे २ । सुभद्रा नित्यमेव, करे प्रभु जी की सेव, जिन शासन के देव, कैसे शान्ति करे २ ॥ मिलाप ॥ सुभद्रा सती का कलङ्क उतारन, देव अति मन हुलसावे । श्री शील व्रत से मन वांछित सम्पति पावे ॥ १ ॥ चारों पोल चम्पा नगरी के, जड़ दीने सुर मन आनी । कई लोक नगर के, आये खोलन को मिल राजा रानी । यह द्वार जब खुले देवता, यु बोले नभ से वानी सती काचा सूत से, चालनो बांध काड छिटके पानी ॥ शेर ॥ नृप उपाय कीने बहुत, पर खुले नहीं वह द्वार जी । लोक आश्चर्य हो रहे, यह हुवा कौन विचार जी । नृप कराई घोषणा, धन २ पुरुष घर नार जी । द्वार खोले नगर के, वह सतियों में है सार जी । छोटी कडी ॥ सुभद्रा सती सुन सासू से जतलावे । मैं करू बड़ी प्रयत्न, द्वार खुलजावे । बहु कुलक्षणी तूं नार, मुझे समझावे । फिर सती होन को जाय शर्म नहीं आवे ॥ दौड़ ॥ सती आई दिल धार, कच्चे सूत से उस बार । बांधी चालनी ततकार, जल काड लिया २ । सती गिना नमोकार जल छींटा है तिवार, चम्पा नगरी के द्वार, तिन खोल दिया २ । बहु देख नर नार, खुशी हुवे है अपार, यह सतियों में सरदार, जग यश लिया २ । सासू आई तिणवार, नमी सती के चरणार

६६

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

कलंक दिया है उतार, हृदय हुलस रह्या २ ॥ मिलाप ॥ जय२ शब्द सुर बोले गगन में, पुष्प वृष्टि तिहां वर्षावे ॥ श्री शील ॥ २ ॥ रामचन्द्रजी बहु पुन्यवन्ता, शीलवती तसु सीता नार । बनवास सिधारे भाई लछमण जी भी रहते थे लार ॥ उसी समय त्रिखन्ड पति, राजा रावण आया ततकार । रघुवर की नारी, सती सीता को लेगया लङ्क मझार । शेर ॥ सती सीता दिल बीच में, लीना नियम यह धार जी । रघुवर दिन इकीसवें, मिल जांय, तो लूं अहार जी । सती प्रति रावन कहे, मुझ ले पति सिर धार जी ॥ सब रानियों के बीच में करदूं तुझे पटनार जी ॥ छोटी कड़ी ॥ बहु लाल पाल कर, रावन चित ललचावे । सति रघुवर बिन सुपने में और नहीं ध्यावे ॥ बड़े २ भूप मिल रावण को समझावे । सीता दो पीछी सोंप बात रह जावे ॥ दौड़ ॥ त्रिखन्ड राय, बात मानी कुछ नांय, रहा मोह में उलझाय, समझे कुछ नांई २ । रावन कहे दिल धार, भाई लछमण दोनों लार, बसे बन के मझार कैसे सके आई २ । पवन सुत हनुमान कहिए कहा पुन्यवान, आए लंका के दरम्यान, तिहां बाग मांही २ । कहे सीता से आवाज, रामचन्द्र जी महाराज, सुख चैन में हैं आज चिंता मिटवाई २ ॥ मिलाप ॥ रामचन्द्र जी के समाचार सुन ॥ सती अती मन हर्षाय, श्री शील व्रत से ॥ ३ ॥ सीता जी के समाचार लेकर हनुमान सिधाया है । श्री रामचन्द्र जी जिन्हों के पास तुरत ही आया है ॥ रामचन्द्र जी और लछमण जी सुन कर अति सुख पाया है । दल बादल लेकर, शीघ्र लङ्का गढ़ पर चढ़ आया है ॥ शेर ॥ रामचन्द्र जी जीतिया, जिसका बहुत अधिकार जी । नगरी अयोध्या आगए, सीता को लेकर लार जी, लोक शहर के यूं कहे, शील त्यागा सीता नार जी । शंका मिटाने को सती, अग्नबीज करे दिल धार जी ॥ छोटी कड़ी ॥ तब स्नान करी, अग्नि का कुण्ड भराया । नगरी का बहु नर नार, देखने आया ॥ सती कहे राम तज, अवर पुरुष जो चाया । तो अग्नि कुण्ड के बीच, भस्म हो काया ॥ दौड़ ॥ऐसा कहके हवाल, सती पड़ी तत्काल, कुछ आया नहीं आल, देखे नर नारी २ । सीता सती के गुण गान, कर रहे जग दरम्यान, देव स्वर्गों से आन, जय २ कारी २ । शील सीतल करदे आग, विघ्न जाते हैं सब भाग, यश मिलता है अथाग, सम्पति भारी २ । जवाहरलाल जी महाराज, तरण तारण जहाज, सारे आतम के काज, बड़े उपकारी २ ॥ मिलाप ॥ खूबचन्द्र और चोथमल कहें, शील सदा सुख प्रगटावे, श्री शील व्रत से मन वंछित सम्पति पावे ॥ ४ ॥ -तपकी महिमा- (तर्ज—पूर्ववत) शाशन पति २ सखों के बीच, तपस्या का महातम फरमाया, शुद्ध करके करनी, गए कई स्वर्ग कई शिव पद पाया ॥ टेक ॥ सावत्थी नगरी के बाहर रहता एक खंधक सन्यासी । गुद्धभाली जी का है वो शिष्य वेद पुराण

१००

का अभ्यासी । पिङ्गल निग्रन्थ श्रावक आकर, पांच प्रश्न कीने खासी । तब पड़ा भर्म में जवाब नहीं आया होगया उदासी ॥ शेर ॥ कयगला के बाग में, जब समोसरे जिनराजजी, खन्दक जी सुन के चले, निज संशय मेटन काज जी । वीर कहे सुन गोयमा, तुझ मित्र मिलेगा आज जी, यों पूछे, गोतम वह लेगा संयम, यह कहीं गरीब निवाज जी ॥ छोटी कड़ी ॥ हां संयम लेगा प्रभु मुख से फ़रमाया । इतने में खन्दकजी आके शीश नमाया ॥ कहें मन की बात सब खोल जिनेश्वर राया । प्रश्नों का किया खुलासा भर्म मिटाया ॥ मेला ॥ तब हितकर जी उपदेश जिनेश्वर दीना खन्दक जी संयम लीना । एकादश जी अंग भणी हुवा प्रवीना । रहे नित्य वैराग्य में भीना ॥ तब सो । जी गुण रत्न छमच्छर कीना, आदेश लेह प्रभु जीना । बारा पड़िमा जी करि शरीर सुखाई दीना, ले आज्ञा अनशन कीना ॥ मिलाप—द्वादश में सुर लोक गये, भगवती में जिनवर फरमाया, शुद्ध करनी करके कई सुरलोक कई शिव पद पाया ॥ १ ॥ श्रेणिक नृप की दशमी भार्या, महासेण कृष्णा राणी । कोणिक राजा की छोटी माता है शास्त्रों से जानी ॥ उसी समय में विचरत आये, महावीर केवल ज्ञानी । सती गई बन्दने, सुनी वैराग्य मई अमृत बानी ॥ १ ॥ शेर ॥ समवशरण के बीच में, यों कहे कर जोड़ जी । जनम मरण की आग से, बचने की एही ठौड़ जी ॥ वैराग्य दिल लायके दिया मोह तांता तोड जी । कोणिक नृप महोत्सव किया, संयम लिया घर छोड जी ॥ छोटी कडी ॥ चन्दन बाला जी की हुई चेली गुणवन्ती । पढ गई इग्यारह अंग विनय नित्य करती । शुद्ध संयम पाय रहे पाप से डरती । गुरनी से पूछ वृद्ध मान आंबिल तप करती ॥ मेला ॥ एक आंबिल जी, एक बास दो आंबिल कर गई, अनुक्रममें सौ तक चढ़ गई ! बिच २ में जो, एक २ बास करती गई; एकर आंबिल बढ़ती गई । वर्ष चौदह जी, तीन मास बीस दिन भर गई, तप करर काया गर गई । किया अनशन जी, सब गरज़ जीव की सर गई, संसार समुद्र तर गई ॥ मिलाप ॥ सत्तरह वर्ष का संयम पाला, अन्त-गढ़ शास्त्र में दर्शाया शुद्ध करके करनी ॥ २ ॥ आनन्द नामा गाथा पति रहे बाणिया गाम नगर मांही । श्री वीर जिनन्द की वाणी सुन, श्रावक व्रत लिया हुलसाई ॥ एक दिवस करके विचार, घर सोंप दिया सुत मांही । पौषध शाला में आय, शुद्ध इग्यारह पड़िमा ली ठाई ॥ शेर ॥ तप कर जोर लगा रहे, नहीं मन में ग्लानी जी । रक्त मांस बहु सूख गया, शास्त्र में बहुत बयान जी ॥ अवसर जान अनशन किया और ध्यावे निर्मल ध्यान जी । शुभ भावना वर्तावतां, उपज्या है अवधि ज्ञान जी ॥ छोटी कड़ी ॥ तिन अवसर विचरत, वीर [illegible] गौतम अणगार सदा सुनिराया ॥ ले आज्ञा गोचरी करण शहर में आया ॥ लोगों के मुख आनन्द की बात

१०१

सुन पाया ॥ झेला ॥ दर्श देने जी गौतम स्वामी जी आया, आनन्द जी शीश नमाया। किया प्रश्न जो, मैंने अवधि ज्ञान यह पाया; तब गौतम फरक बताया ॥ कहै आनन्द जी, मैंने सत्य स्वरूप बताया, शंका युत गौतम आया। सच्चा आनन्द जी कहैं वीर जिनेश्वर राया, गौतम जी आन खमाया ॥ मिलाप ॥ बीस वर्ष श्रावक धर्म पाली, प्रथम स्वर्ग में सिधाया, शुद्ध करके करनी ॥ ३ ॥ कई साधू कई महा सती; कई श्रावक के हो गए निस्तार। जिन आगम में देखलो, बहुत किया जिनवर विस्तार ॥ पंचम आरे के कई जीव जिन मार्ग को जाने निज सार। करे तपस्या, जिससे होता अपना आतम उद्धार ॥ शेर ॥ शक्ति जान शरीर की; कई करतें हैं उपवासजी। शूर-वीर प्रणाम से कई करते दो दो मास जी ॥ जिन मार्ग में भू झते, कर्मो का करते नाश जी। वैराग्य में नित लीन रहें करें ज्ञान का अभ्यास जी ॥ छोटी कड़ी ॥ इस विधि करणी कर कई मोक्ष जाते हैं। वहां गएं बाद फिर यहां नहीं आते हैं ॥ करनी से कई सुरगति के सुख पाते हैं। तपस्या का महातम मुनिराज गाते हैं ॥ झेला ॥ उगनी से जी, उगनीसे तिरसठ सुन भाई मगसिर सुदि चौदस आई। छे ठाणा जी, मिल शहर निंबाहेड़ा मांइ, छे रात रहा सुखदाई। गुरु वन्दू जी श्री जवाहरलाल जी चित लाई, जिन की कीर्ति जग में सवाई कर कृपा जी, मुझ दिया ज्ञान बकसाई, मैंने सबही सम्पत्ति पाई ॥ मिलाप ॥ खुबचन्द और चौथमल कहैं, सदा रहें सुयश छाया। शुद्ध करके करनी कई सुरलोक कई शिव पद पाया ॥ ४ ॥ -भाव की महिमा- (तर्जः—पूर्ववत लावणी) शुद्ध लेश्या परिणाम जोग, शुभ भली भावना भावैगा। चेतन सुन प्यारे, इसी से ज्योति निरंजन पावेगा ॥ टेक ॥ आदि नाथ महाराज जिन्हों के नन्दन भरतेश्वर भूपाल। छै खण्ड मांहि जिन्हों की वरते आण अखण्ड रसाल ॥ चौदह रत्न नव निधि के नायक, सोलह सहस्त्र सुर अंग रखवाल ॥ राज सभा में बिराज्या, सोहे ज्यों मोत्यों बिच लाल ॥ शेर ॥ राणियां इतनी हैं जिनके; एक लाख बाणवें हजार जी। महल बयालीस भूमियां, नाटक के झणकार जी। बत्तीस सहस्त्र नृप मुकुट धारी हाजिर रहै दरबार जी। और घणी है साहबी क्या २ करूं विस्तार जी ॥ छोटी कड़ी—एक दिन भरतजी सब सिणगार सजाया। तन निरखन काजे शीश महलमें आया ॥ तिहां रत्न सिंहासन बैठ निरखते काया ॥ मुंदड़ी बिन उंगली देख अचम्भा आया ॥ झेला-दूजी मुंदड़ी जी, जब खोली हाथसे पूनी, तब लागत सूनीसूनी। पुद्गलका जी, पुद्गलका स्वरूप विचारा, तब सब सिणगार उतारा, शुद्ध मन से जी फिर भली भावना भाई, जब केवल प्रगट्या आई लियो संयम जी, दश सहस्त्र भूप समझाया, भरत मुनिवर मोक्ष सिधाया ॥ मिलाप ॥ मन वाञ्छित कारज सिध होवे, जो ऐसी भावना भावेगा। चेतन सुन प्यारे इसी से

१०२

ज्योति निरंजन पावेगा ॥ १ ॥ चन्द्रगुप्त राजा जी के नन्दन, नाम जिन्हों का प्रश्नचन्द्र । वीर जिनन्द की वाणी सुन, जोग लिया तजिया सब फन्द ॥ राजग्रही नगरी तिण अवसर, विचरत आये वीर जिनन्द । लेकर आज्ञा बन में, ध्यान धरा मुनि प्रश्नचन्द ॥ शेर ॥ सूर्य सन्मुख नेत्र धरुं, ऊंचे किये दोय हाथ जी । ध्यान से चित चल गया, लोगों की सुन कर बात जी ॥ जिनवर वन्दन कारने, तब निकला है नर साथ जी । बन में आते हुवे मुनी देखिया साक्षात जो ॥ छोटी कड़ी ॥ श्रेणिक नृप प्रभु जी को, बन्दे शीश नमाई । प्रश्न पूछा कर जोड, एक चित लाई ॥ बन मांहि खड़ा एक मुनी ध्यान के मांही ॥ इस वक्त चवे तो कौन गति में जाई ॥ झेला ॥ त्रसला नन्दन जी त्रसला नन्दन इम फरमावे, अब चवें तो सातवीं जावे । तिहां मुनिवर जो तत्क्षण मन को सुलटावे, भर्म मिटा ध्यान शुद्ध आवे ॥ क्षण अन्तर जो फिर पूछया जिनन्द फरमावे, अबे चवे तो सर्वार्थसिद्धि जावे । श्रेणी चढतांजी, तब केवल प्रगटा आई, सुर महोत्सव किया हुलसाई ॥ मिलाप प्रश्नचन्द मुनिराज मोक्ष गये, जिनका ध्यान लगावेगा ।चेतन सुन प्यारे, इसीसें ज्योति निरंजन पावेगा ॥ २ ॥ धनदत्त सेठ का पुत्र कहिये, एलायची नामां कुमार, योवनवन्ती देख नटवी का रूप मोया ततकार । आय महल में सोता एकन्त, बात कही नहिं जावे बाहर, जब मात पिता ने पूछिया कहो बेटा कौन विचार ॥ शेर ॥ नटवा व्याहो मुझ भणी, यों पुत्र कहे सुणो तात जी । एक बात मानी नहीं, समझाया बहु भांत जी ॥ नट के पास आयकर यों सेठ जी कहे बात जी, कन्या दे मुझ पुत्र को, बहु द्रव्य दूं साक्षात जी ॥ ॥ छोटी कड़ी ॥ कहे नटवा सेठजी सुनिये बात हमारी, कन्या व्याहूं तुम पुत्र रहे मुझ लारी । घर आय सेठ जी सुत से कहता हितकारी, नहिं छोड़ी हठ जो ली मन मांहि विचारी ॥ ॥ झेला ॥ एक नगरी जो, नगरी में नाचने आया, बासों पर खेल रचाया । एक मुनिवर जी एक तपस्वी महा मुनिराया, नगरी में गौचरी आया ॥ रुपवन्तीजी कइ तिरिया आहार बहरावे. मुनि नीची नजर लगावे । नट चिंतेजी अहो धिगर काम बिकारा, धन जग में यह अणगारा ॥ ॥ मिलाप ॥ शुद्ध भावों से केवल पा ा, यों कोई मोह छिटकावेगा सुन चेतन प्यारे, इसीसें ज्योति निरंजन पावेगा ॥ ३ ॥ नगरी अयोध्या आदिनाथ महाराज पधारे दीन दयाल । माता मोरा देवी पुत्र से मिलन काज आई ततकाल ॥ आदेश्वर तूं ध्यान खोल मुख बोल मुझे बतलाओ लाल । जिनवर नहिं बोले मात जब चले पीछे फिर के ततकाल ॥ शेर ॥ हाथी के ऊपर बैठ कर आते थे शहर मंझार जी । माजी तो यों मन चिंतवे झूंठा सभी संसार जी । शुभ ध्यान से मोह कर्म का तत्क्षण किया संहार जी । भाव चारित शुद्ध कर, पाया है केवलसार जी ॥ छोटी कड़ी ॥ माजी मोरा देवी, उसही वक्त

शिव पामी, सुत्रों के बीच फर्माया सुधर्मा स्वामी । यों शुद्ध भावों से कई जीव मोक्ष में जावे, किनर का वताऊं नाम पार नहिं आवे ॥ भेला ॥ उगनी से जी उगनी से छपन सुन भाई । फागन बदि चौदस आई । तिन दिवसे जी तिण दिवसे जोड़ बनाई, सैंन बैठ सभा में गाई ॥ मोटा मुनिवर जी कहूं नाम देव जी जाहरो । चौदह ठाणा परिवारो, गुरु बन्दू जी श्री जवाहर लाल जी अणगारो । मुक्त शरणों तसु चरणा रो । खूबचन्द और चौथमल कहे सुख मिले भाव शुद्ध भावेगा सुन चेतन प्यारे, इसी से ज्योति निरंजन पावेगा ॥ ४ ॥

परदेशी राजा का चरित्र तर्ज: लंगड़ी—केशी कुंवर महाराज ससण भवसागर से तिरने वाले, सुनि भान ज्ञान के, आप अज्ञान तिमिर हरने वाले ॥ टेर ॥ पार्श्वनाथ महाराज गये शिव धाम नाम जयकारी है ॥ जिनके शासन में हुवे सुनि आप बड़े गुणधारी हैं । चार ज्ञान चवदे पूर्वी अप्रति बंध विहारी है । तरु जिम सस भावी दया निधि पूरण पर उपकारी है ॥शेर॥ सावत्थी का बाग में आये विचरते महाराण जी । सुनि आगमन सुन वंदवा कई जारहे इन्सान जी ॥ परदेशी राजा का हे चित्तनामा परधान जी भेजा हुआ आया यहां, राजा के घर महमान जी ॥ खडी ॥ इसने भी सुनी यह बात मन हुलसाया । बैठ रथ में मुनिराज समीपे आया । फिर मौका देख गुरु ऐसा ज्ञान सुनाया । खुल गये जिगर के नैन प्रेम रंग छाया ॥ द्रोण ॥ व्रत धार चित्त जी हुआ श्रावक सेंठा । महाराज विनय कर शीष नमाय जी । रथ मांही बैठ कर आन पीछा नगरी में आया जी । राजा की तरफ से मिली सीख चित्तजी को । महाराज हिये अति हर्ष भराया जी । मुनिराज दर्शन के काज बाग में चल कर आया जी ॥ दौड़ ॥ करके वंदना सित.प, चित्तजी बोले यूं साफ, नगरी सीतंब का आप करो करज्यो मया । अज कबुल कराय, यहां से तुरत सिधाय, नगरी सितंब का आय हाल भूप को कया ॥ मिलाम ॥ कब आवे मेरे गुरु यहां अब सब कारज सरने वाले ॥ मुनि १ ॥ सावत्थी नगरी से दया निधि सीतंब का नगरी आया । उपकार ज्ञान के, पांच से संतो को सग में लाया । चित्त प्रधान सुनि मुनि आगमन अति चैन चित्त में पाया । परदेशी भूप को करी तजवीज वहां लेकर आया ॥ शैर—राजा और प्रधान दोनों, अश्व लिया कर धार जी । इधर उधर टेलावता, आया नजर अणगार जी ॥ सुण चित यह जड़ मूढ, कौन है बेकार जी । बैन तो मीठा लगे,है दीपता दीदार जी ॥ खडी ॥ तब चतुर चित्त यूं कहे सुनो महाराया । यह केशी कुंवर महाराज मैं भी सुन पाया । यह अलग अलग दो माने जाव और काया । है पूरण ज्ञान भण्डार तजी मोह माया ॥ द्रोण ॥ इतनी सुनके नृप चित्त जी से रहा पूछी । महाराज मुनि पा दोऊ मिल आया जी । है अवधि ज्ञान तुम पास पूछे परदेशी राया जी । ज्यों दाण चोर

बनियां उपट राह पूछे । महाराज, मुनि दृष्टान्त सुनाया जी । तैने संतों का अपराध किया नहीं शीर्ष नवाया जी ॥ दौड़ ॥ सुन कर संतो के बेन, नृप किया नीचे नैन, मेरे असल में सेन, जब कठीन कही २ । राजा बोले यों सिताब, क्षमा वंत साधु आप; गुन्हा कीजे सब माफ, मेरी भूल रही २ । थोडी वखत के काज, यहां बैठू मैं आज, मरजी होय तो महाराज; दीजे हुकम सही २ । जरा समझ राजान यह तो तेरा ही आराम, हमनो साधु है महान, करें मनः नहीं २ ॥ मिलाप ॥ राजा मन में जान गया ये मुझे निहाल करने वाले ॥ मुनि २ ॥ बैठा भूप पूछे कर जोड़ी क्या मानो तुम करो मया । तब भरी सभा में मुनीश्वर जीव अरु काया अलग कहा । मेरा दादा था अति पापी नहीं थी उनके जरा दया । वह आयुष्य करके तुम्हारो कहेन मुजब तो नर्क गया ॥ शेर ॥ मैं पोता अति प्राण प्यारा, कहे मुझे वह आय जी । तो जीव काया है अलेदी, मान तो तुम वाय जी ॥ मधुर बैन मुनिवर कहै; सुन ध्यान धरके रायजी तेरा दादा नर्क से; कैसे सके वह आय जी ॥कड़ी॥ तेरी सूरी कंता नार करके सिणगारा । अन्य पुरुषके साथे बिलसे सुख संसारा । तैने खुद आंखोंसे देख लिया कर्म सारा । सच बोल उसे क्या देवे दण्ड भूपारा॥द्रोण॥तत्काल खड़ग निकाल उसेमैं मारूं । महा राज करे तुमसे नरमाईजी । मत मारों महाराज करूं ऐसा कभी नाईजी । क्यो कहो हरगिज कभी न छोडूं । महाराज फिर कहे तर्क उठाईजी । मैं मीलूं कुटम्ब से जाय आऊं पीछे क्षण मांही जी ॥ दौड़ ॥ राजा कहै यूं विचार,मेराहै वह गुन्हे गार,मैं तो छोडूं नहीं लगार; कैसे घर जाव २ । इसो भव में साक्षात, उसके कुटुम्ब के साथ, दुःख आराम की बात, किम दरसावे २ । तेरा दादा कहूँ साफ, करके अष्टादश पाप, गया नरक में आप, यहां किम आवे २ । जीव काया न्यारी मान, राजा तू है विद्वान, झूठी टेक मतीतान मुनि फरमावे २ ॥ मिलाप ॥ नहीं मानु महाराज तुमनो बुद्धि से कथन करने वाले ॥ मुनि ३ ॥ मेरी दादी थी गुणवन्ती दया धर्म से हटी नही । करी बहुत तपस्या तुम्हारी कहन मुजब सुरलोक गई । उनको कौन रोकने वाला वह अपने आधीन रही । मैं था अति प्यारा आज दिन तक नहीं मुझसे आन कही ॥ शेर ॥ दादी आ वर्णन करती सुर लोक का बयान जी ॥ तो जीव काया है अलेदा लेतो क्यों नहीं मान जी ॥ भूप कहे इस न्याय से, मेरा है मत परमान जी । कीजे खुलासा बात का, बैठे हैं सब इन्सान जी ॥ खडो॥ इतनी सुन कर मुनिराज नजीर सुनावे, कर स्नान राजा तूं देव पूजवा जावे । एक पुरुष देख तारछ में तुजे बुलावे । सच बोल वहां तूं जावे के नहीं जावे ॥ द्रोण ॥ नर नाथ कहै जानातो दूर रहने दो । महाराज, उधर देखुं भी नाई जी । वह महा असूची स्थान

१०५

श्रोर दुर्गन्ध उस मांई जी। इस मनुष्यलोक की दुर्गन्ध ऊंची जावे। महाराज, पांचसौ जोजन ताई जी। इस कारण करके राय देव यहाँ सके न आई जी ॥ दौड़ ॥ अब तो समझ तू राय, पच्छ छोड़ दे अन्याय, अलग मान जीव काय अपनी क्यों ताने २। सच्ची कहूं मुनिराय, यह तो बुद्धि से बनाय, दीनी युक्ति जमाय, हम नहीं माने २। एक चोर हाथ आया, लोह कोठी में धराया, पूरा जापता कराया, ठाया पुरुषाने २। केही दिनों में कढ़ाया, तोमरा दर्शाया, छेक नजर नहीं आया करी पहिचाने २ ॥ मिलाप ॥ कैसे मानु जीव अलग करो संशय दूर हरने वाले ॥ मुनि ॥ ४। लेकर ढोल कोई पुरुष जाकर बैठे भूहरां मांई; ऊपर से शील्ला ढांक कर लेप कर अति चतुराई। भितर ढोल का शब्द करे वह बाहर निकसे के नाई। सच बोल छिद्र क्या देवे किसी को दर्शाई ॥ शेर ॥ छिद्र मही के नही पड़े, पर शब्द निकले आय जी। प्रतीत कर इस न्याय से, परदेशी नामा राय जो ॥ जीव भेद पाव ण को, ऊंचा इसी तरह जाय जी। दोनों चीजें हैं अलग, मान ले सुख पाय जी। खड़ी ॥ तुम बुद्धिवान मुनि दीनी युक्ति ज़माई। मेरे तो दिल में हरगिज बैठे नांई। एक दिन चोर को मारा साँस रुकाई। लोह की कोठी में दीना उसे धराई ॥ द्रोण ॥ फिर ढकण ढाँक छिद्र को बंध कराया। महाराज, रक्खा कीतना दिन ताँई जी। देखा तो खोल के कीड़े बहुत उसके तन मांई जी। बाहिर से भीतर जीव ज़िधर से आए। महाराज, छिद्र देता दर्शाई जी। तो लेता मान महाराजा तक करता भी नाई जी ॥ दौड़ ॥ गोला लोहे का ढाल झाल, दिया अग्नि में डाल, धमता देखा थे भूपाल, हाँ हाँ भूप कही २। धमे धमण दबाए, तामे अग्नि भराए, उस गोले के राय छिद्र होया नहीं २। नृप कहे यों विचार; उस गोले के मझार, छेक होय न लगार, यह तो बात सही २। बस यही मिसाल, मान मान महिपाल, मिथ्या भरम को टाल, मुनि बहुत कही २ ॥ मिलाप ॥ नहीं मानु महाराजा तुमतो बुद्धि से कथन करने वाले ॥ मुनि ५ ॥ सब जीवों की शक्ति सरीखी है या नहीं मुझे दीजे कही। तब मुनिवर बोले सरीखी शक्ति है इसमें फर्क नहीं। तरुण पुरुष दिल चाहे वहां खुद डाले तीर तो पड़े जहां। उतनी ही दूर पे लघु बालक से कहो किम जाए नही ॥ शेर ॥ धनुष्य नवा ज़ीवा नवी, हढ़ बंध उरके रायजी तरुण पुरुष जब तीर बावे, जायके नहीं जाय जी। भूप कहे हाँ क्यों न जावे, मुनि फिर दिया न्याय जी। मनुष्यादिक कच्चा हुवे। तो फिर जाय के नहीं जाय जी। खड़ी ॥ इतना तो दूर वह तीर जय कभी नाई। बस यही न्याय समझ नृप मन माँही। यह तरुण पुरुष सम ज़ीव धनुष तन माँई। जैसा हो वैसा पाक्रम दे दर्शाई ॥ द्रोण। क्यों करे तान

१०६

ले मान जीव और काय। । महाराज, भूप कहै शीष हीलाई जी । तुम बुद्धिवान महाराज, मानु मैं हरगीज नाई जी जितना लोहे का भार तरुण लेजावे महाराज. धरी काबड़ के माइ जी । उतनी ही, दूर अति वृद्ध क्यों न लेजाए उठाई जी ॥ दौड़ ॥ जो अह बात मिलती महान, जीव काया लेता मान, इतनी करने से तान, सेरे गरज कहीं २ काबड़ नवी हो तो राय, लोहा धरके उस माय, तरुण पुरुष उठाय, लेकर जाय या नहीं २ । नृप कहै हाँ ले जाय, फिर बोले मुनिराय, काबड़ जीरण हो तो राय, अब बोल सही २ नहीं नहीं कृपाल काबड़ जीरण दयाल, मुनि जीव पे मिसाल, उतार दई २ ॥ मिलाप ॥ नहीं मानु महाराज तुमतो बुद्धि से कथन करने वाले ॥ मुनि ६ ॥ पहले तोल त्राजू में चोर कू मारा खून निकला भी नहीं । किया प्रश्न सातवां फिर तोला तो वजन में आया वही । कमती होता जरा वजन में तो मैं लेता मान सही । फिर तर्क उठा के संतोसे खूंटीतान करता भी नहीं ॥ शेर ॥ हवा भरी चर्म दीवड़ी, देखी कभी थे राय जी । हां हां देखी स्वामी जी, कृपा करी फरमाय जी पहल तोल दब खोल दे, नहीं रहै हवा उस माय जी ॥ फिर तोले तो वजन में कमती हुवे या नायजी ॥ खड़ी ॥ वह वजन माय कमती तो हुवे कछु नाहीं । बस यही न्याय तू समझ नृप मन मांही, जो रूपी हवा नहीं देवे भार दर्शाई । तो जीव अरूपी ये क्या वजन गीनाई ॥ द्रोण ॥ क्यों करे तान ले मान जीव और काया । महाराज, भूप कहै शीष हिलाई जी । तुम बुद्धिवान महाराज, मानु मैं हरगीज नाई जी । एक मारा चोर तत्काल बहुत खंड करके । महाराज, जीव फिर देखा मांई जी । जो आता नजर तो लेता मान हट करता नाई जी ॥ दौड़ ॥ मुनि कहै यों विचार, राजा तूं तो है गवार, जैसा था वो कठियार, काई फर्क नहीं २ । कठियारा, किस न्याय, मुजे कहो सुनाय, आप दीजे फरमाय, मिटे भरम सही २ । मिलकर बहु कठियार, गया वन के मझार, उसमें था एक गंवार, उसको एसे कही २ । इस अरणी से तत्कार, लीजे अग्नि निकार, करजे रसोई तैयार, आवां इन्धन लही २ ॥ मिलाप ॥ वो मूर्ख अरणी को कापी खंड खंड में अग्नि भाले ॥ मुनि ७ ॥ नहीं मीली अरणी में अग्नि सोच करे आशूं डारे । इन्धन ले ले कर आए जंगल से वे सब कठियारे । पूछी बात मूर्ख से तबतो वितक हाल कह्या सारे । अरणी को घीस के बताई अग्नि काड कर तत्कारे ॥ शैर ॥ अहार कर फिर इन्धन लेकर, गये वे नगरी माय जी । जैसा काम उसने किया, वैसा करा थे राय जी ॥ छत्ती अग्नि अरणी मांहीं, नहीं आवे नजर राय जी । जीव काया है अलेदी, मानले इस न्याय जी ॥ खड़ी ॥ अतिष्टि पुरुष तुम होकर संत सयाणा । इन बहुत मनुष्य का हुवा यहां १८ आना । जड़ मूढ कहा सो मुझे तो है गम

१०७

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

खाना । पर है क्या योग आप को ऐसा वचन फरमाना ॥ द्रोण ॥ तूं जाणे नृप सच बोल परिषदा कितनी । महाराज, परिषदा चार बताई जी । अब अलग अलग दंड नीति चारों को दे दरशाई जी । जो कोई मनुष्य अपराध करे राजों का । महाराज, देवे उसे सूली चढाई जी । करे वैश्य जाति के बाहर महाजन दे छाप लगाई जी ॥ दौड ॥ ऋषियों की सभा माय कोई वाद करे आय, चाल विधि चले नाय, तेना दुष्ट हिया २ । जोश साधु को आय, जड मूढ फरमाय, वह तो यही दन्ड पाय, कहँ साफ इहां २ । बस नीति को संभाल तू भी चाल टेढी चाल, तब मैंने भी महिपाल, यही दन्ड दिया २ । तुम सुणो हो कृपाल जो था पहलाही सवाल, उस पै देने से मिसाल, मैं तो समझ गया २ ॥ मिलाप ॥ क्यों इतनी हट करी पूछे मुनि शिव सुख के वरने वाले ॥ मुनि ८ ॥ ग्याना दिक के काजे आज महाराज प्रश्न कीया विस्तारी ॥ मुनि पूछे नृप से होते कहो कितनी किसम के व्यापारी । चार तरह के होते वणिक जाने बाल दुनियां सारी । ले माल उधारा दाम देना फिर उनके इक त्यारी ॥ शेर ॥ देवे गुण बोले नहीं गुण बोले, देवे नाय जी । देवे और गुण भी करे, नहीं देवे नाय मिल जायजी ॥ तीन योग्य व्यवहारिये । अयोग्य एक कहे वाय जी । मैं भी जाणु हूं नृप तूं चौथें सरीखा नाय जी ॥ खड़ी ॥ विद्वान पुरुष तुम मांही बहुत चतुराई । ज्यों त्यों कर के देते हो युक्ति जमाई । नवमां प्रश्न नृप करे सभा के मांई । है कैसा जीव तुम देवो अपना दरसाई ॥ द्रोण ॥ मुनिराज कहे सुण नृपति इस दरखत का । महाराज, पत्र कहो कोन हिलावे जी । नही देवादिक महाराज पवन इनको कंपावेजी । क्या पवन चीज सच बोल नृप तू देखे । महाराज, नजर यह तो नहीं आवे जी । तो जीव अरूपी चीज कहो हम कैसे बतावेजी ॥ दौड ॥ अरे अब तो छोड़ तान, राजा तू हैं बुद्धिवान, जीव काया न्यारी मान, बहुत देर भई २ । प्रश्न करे फिर राय, हाथी कुंथुवा के सांय, जीव समहै या नाय, मुझे कहो जे यई २ । निश्चय समझ तू राय, हाथी कु थवा के साय, जीव सरीखा दिखाय, कोई फर्क नई २ । मोटी चीज मुनिराय कैसे छोटी में समाय, कहो नजीर लगाय, मिटे भर्म सई ॥ मिलाप ॥ दी नजीर दीपक भाजन की न्याय पंथ चलने वाले ॥ मुनि ९ ॥ अबतो मान जीव और काया क्यू इतनी तू कहलावें । तब बोला नरपति पूराणी श्रद्धा नहीं छोड़ी जावे । लोह बनियां की तरह याद रख अरे नृप तूं पछतावें । मुनिसाफ सुनाई छोड मिथ्या श्रद्धा क्यों शरमावे ॥ शेर ॥ लोह बनिया कैसा हुवा, तुम कहो मुझे समझाया जी । तब मुनि कहे यह भी सुन ले, एक ध्यान धर कर राय जी । धनार्थी बहुवाणिया जाता था जंगल माय जी । एक खान देखी लोहे की, लीना है सबने उठाय जी ॥ खड़ी ॥ आगे जाता तांबा की खांन जब आई । ले लिया तुर्ते सब लोह दिया छिटकाई ।

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

थी एक अनाड़ी उसने मानी नाई। करदिया दृष्टि सब लोक रयां समझाई ॥ द्रोण ॥ रूपे की खान, सोने की फिर रत्नों की। महाराज वज्र हीरों की आई जी। ले लिया अधिक से अधिक तजा सस्ते कुं वहांही जी। सब लोक कहै ले ले तू भी क्या देखे। महाराज, मूढ हट छोड़े नाई जी। मैं बहुत दूर का लिया भार किम दूं छिटकाई जो ॥ दौड़ ॥ ले ले के धन माल, अति होके खुशाल, घर आये सब चाल, अति सुख पावे उस मूर्ख की बात, अब सुनो नर नाथ, लिया लोहे कुं साथ, चैन जावे २। सीधा बाजार में आया, बेचा लोहा जो लाया, मूल्य थोड़ासा आया, मन पछतावे २। दीनी मैंने जो मिसाल, ऐसा तू है महिपाल लीजो अब ही संभाल, मुनि फरमावे २। ॥ मिलाप ॥ साफ साफ मुनिराज कही राजा से नहीं डरने वाले ॥ मुनि १० ॥ नहीं बनू लोह वनिया जैसा कहै नृप यों कर जोडी मन वच काया से मैंने तो मिथ्या श्रद्धा छोडी छोडीं। मान लिया नीवादिक मैंने बहुत करी लंम्बी चौडी। दिल में बहुत मतलाना क्यों कि महाराज मेरे में बुद्ध थोडी ॥ शेर ॥ अब मुझ को धर्म देशना, फरमावो कृपानाथ जी। वैराग रंग ऐसा चढे उतरे नहीं दिन रात जी ॥ मधुर कथा मुनिवर कही, तब जोड़ी दोनों हाथ जी। श्रद्धा वचन मैंने आपका, यूं विनवे नरनाथ जी ॥ खड़ी ॥ वे धन्य पुरुष जो सयम का भार धारे। एसे तो भाग नहो है महाराज हमारे। मुझे श्रावक का व्रत दीजे कीजे भव पारे। विन ऐसे गुरु के कौन करे निस्तारे ॥ द्रोण ॥ तब मुनिराज महिपति को व्रत धराया। महाराज, बहुत उपकार कमाया जी। गया निज स्थान क महिपाल, खुशी का पार न पायाजी। फिर दूजे दिन बहु विधि सजकर असवारी। महाराज, महिपति वंदन आयाजी। कर जोड़ नमाकर शोप सभी अपराध खमाया जी ॥ दौड़ ॥ राजा सुन ले एक सीख, मत होजे अरमणीक, अरे पाल जे तू ठीक, व्रत नेम लिया २। मेरा जितना है राज, उस राज, के महाराज, कुल चार हिस्से आज, मैंने किया किया २। तर्ज:—गुरु निर्ग्रन्थ नहीं जोया तेने गुरु निर्ग्रन्थ नहीं जोया रे) गुरु जी मिले मुझ ज्ञानी पुण्य से ॥ टेर ॥ कर जोड़ी राजा परदेशी इण विध बोले वाणी रे। मोह नींद से आप जगायो छिटक ज्ञान को पाणी रे ॥ गुरु जी १ ॥ मेट दियो अज्ञान अन्धेरो, दे शिक्षा हित आनी रे। मैं उपकार कभी नहीं भूलू निश्चय लीजो जानी रे ॥ गुरु जी २ ॥ दया करी फिर दर्शन दीजो, शिष्ट सुनाजो वानी रे। भव दुःख से मुझ आप छुड़ाजो, भक्त आप को जानी रे ॥ गुरु जी ३ ॥ दो ठाणा मिल आया रोहतक से अर्ज भाया की मानी रे। मुनि नन्दलाल तणा शिष्य गावे जोड़ बनाई कानी रे ॥ गुरु जी ४ ॥ चोथे हिस्से का आदान, दुःखी दुर्बल गिलशन, ताकूं दूंगा मैं दान, करूं प्रगट इयां २। पाये सुख अपार, करके बहु उपकार लेकर संतो को लार

१०६

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

मुनि विहार किया २ ॥ मिलाप ॥ नरनारी गुण बोल रहे नगरी में सुख करने वाले ॥ मुनि ११ ॥ महिपति भी नीज भवन गया श्रावक का व्रत शुद्ध पाले है । वैराग्य रंग से सदा अतिचार दोष को टाले हैं । करके तपस्या पूरब सचीत पाप कर्म को गाले है । खुद उसी दिन से राज्य का काज भी नहीं संभाले है ॥शेर॥ प्राण वल्लभराय नी तब सुरी कंता नार जी । कोई दिन मन चिंतवे भर्म्यो है मुज भरतार जी । निज पुत्र को लिया बुलवाय के यों, बोले शंक निवार जी । तुम पिता को अगनीया विष शस्त्र से दे मार जी ॥ खड़ी ॥ सब राज्य पाट में देऊंगा तफनांई । इतनी सुनके हां, ना भी कहा कछु नांही । फिर वही बात दो तीन दफें फरमाई । बिन उत्तर दिया गया तत्क्षण कुंवर चलाई ॥ द्रोण ॥ तब पाछल बुद्धि नार विचारे मन में । महाराज, कीजे अब कौन उपायाजी । विष मिश्रित आहार बनाय पति को नोत जिमाया जी । एक लेना ग्रास नृप जाण गया बुद्धि से । महाराज राणी पर रोश न लाया जी । उठ चल्या आप सिताब धर्म स्थानक में आया जी ॥ दौड़ ॥ विधि सहित चट पट, किया अण सण झट पट, नहीं काहूं से लट पट, नृप अडोल रया २ । पूर्व पाप को पखाल शुद्ध भावों से भूपाल, करके काल समय काल, पहले स्वर्ग गया २ । महा विदेह क्षेत्र मांय, अष्ट कर्म को खपाय, जावे मुक्ति के मांय, जिनराज कया २ । संवत् गुन्नीसो छत्तास, ऊपर अधिक बत्तास, पूरे दिन एक बिश, श्याल कोट रया २ ॥ मिलाप ॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनि जिनवर से ध्यान धरनवाले ॥ मुनि १२ ॥ -टके टके की चार बातें- [तर्ज:—जंबू कह्यो मान ले रे जाया मति लेवो संजम भार] चतुर नार सांभलो कहूं बात कथा अनुसार ॥ टेर ॥ जंबू द्वीप सु द्वीप कानी, भरत क्षेत्र के मांय । नगरी भली शोभावती जी, बलवंत नामाराय ॥ चतुर ॥ १ ॥ चतुरंग सेना सामठी जी, धन का भरया है भण्डार । महाराणी सुख मालिका जी, भोग वे भोग उदार चतुर ॥ १ ॥ एक दिन नृप इच्छा हुई जी, हयवर आरूढ होय । सहल करने निकल्यो जी, साथे नोकर नही कोय ॥ चतुर ॥ ३ ॥ चमक्यौ हय कोई कारणे जी, ध्यावे जंगल मांय । जिम जिम खेंचे लगाम ने जी, तिम तिम आघो जाय ॥ चतुर ॥ ४ ॥ भूपति पिण सेंठो रह्यो जी, साहस दिल मांही धार । सहजे ही हय उभो रह्यो जी, नृप लीनो पुचकार ॥ चतुर ५ ॥ पानी को प्यासो थको जी, घबरायो महाराय । व्याकुल चित हय फेरियों जी, आण्यो मारग मांय ॥ चतुर ६ ॥ चलता दूरथी देखियो जी, सुग्रीव नामा ग्राम । तरुवर शीतल छांह में जी, आय लियो विश्राम ॥ चतुर ७ ॥ जाट सुतोथ को जाणियो जी, पंथी को देख दीदार । खाट बिछायो अपणो जी, बैठायो कर मनुहार ॥ चतुर ८ ॥ निज नारी ने इम कहे जी, आव आव इहां आव । शीतल जल लोटो भरी जी, पुण्य वंत नर ने पाव

११०

॥ चतुर ९ ॥ ते कहे तुम हीज ऊठने जी, क्यों नहीं देवो पिलाय । किण किण ने पाया करूं जी, कई आवे कई जाय ॥ चतुर १० ॥
बावली मान मेरो कह्यो जी, हठ मत कर इण वार । तुम्हे टका एक एक नी जी बात सुणाय सु'चार ॥चतुर॥११॥ तब तो उठ नतावली जी
दीनो उदक पिलाय । अब कहो चारों बातड़ी जी, नृप ही सुणे चित लाय ॥ चतुर ॥ १२ ॥ १ नारी रक्खें अति पीहर में जी, २ पर को
सोपे निज काम । ३ निर्दय की करै नौकरी जी, ४ धूर्त के धरियो दाम ॥ च० १३ ॥ चारों ही काम अयोग्य छे जी, इण में संशय नाम्र ।
ऋपियों के मुंह सांभल्यो जी; आखिर ते पछताय ॥ च० १४ ॥ झट पट उठ्यो भूपति जी, अश्व हुवो असवार । निज नगरी में आवि-
यो जी, हर्ष्यों सहु परिवार ॥ च० १५ ॥ चट पट लागी चित्त में जी, खुद ससुराल में जाय । राणी की परीक्षा करूं जी भर्म सहु मिट
जाय ॥ च० १६ ॥ तुरत बुलाय दीवान ने जी, राज को काज भोलाय । प्रजा की करजो पालना जी, निरपक्ष लेकर न्याय ॥ च० १७ ॥
बात किहां करजो मती जी, जाऊं छूं मैं ससुराल । मास दो मास के अंतरे जी, शीघ्र ही आऊं चाल ॥ च० १८ ॥ मोहरां लीनी डोढसों
जो, फिर लोनी पंच लाल । ब्राह्मण रूप बनायने जी, पहुँच्यो ते सुसराल ॥ च० १९ ॥ ब्राह्मणी के घर ठेरियो जी, आठों ही पहर निवांस
मोहरां भी थापण रखी जी लाण अति विश्वास ॥ च० २० ॥ नौकरी काजे फिर रह्यो जी, करनो बहुत तलास । फिरतां फिरतां आवियो
जी, राय का रक्षक पास ॥ च० २१ ॥ इहां करो तुम नोकरी जी, करली खुलासा बात । पांच रुपये माहवार के जी, जीमो रसोड़े भात
च० २२ ॥ हुक्को पाणी पिलावणो जी, मौज करो दिन रात । कर मंजुरी रहगयो जो, श्रोता सुणो आगे वात ॥ च० २३ ॥ राणी इण हिज
रायनी जी, रक्षक घर हर वार । आवे जावे रामत करे जी, अनुचित भी व्यहार ॥च० २४॥ रे निर्लज्ज कुलक्षणी जी भूल गई कुल जात ।
अब मुझ को निश्चय हुवो जी, जाट कही सच बात ॥ च० २५ ॥ जिण दिश साम्हे देखती जी, राणी जी नजर पसार । अनुमाने करी
ओलख्यो जी, या तो मुझ भरतार ॥ च० २६ ॥ रोष भरी कुलटा कहे जी, नौकर की वद नीत । छिद्र रहे नित देखतो जी, तुम को करसी
फजीत ॥ च० २७ ॥ मूल थीं एह हणा बियेजी, तब मुझ मन संतोष । नहीं तो मुझ हत्या तणो जी, तुम सिर होगा दोष ॥ च० २८ ॥
शीघ्र सो भाग बुलावने जी, भृत्य दियो पकड़ाय । प्राण घात इण की करो जी, जंगल माय लेजाय ॥ च०२९॥ किहां ले जावो मुझ भणी
जी, पूछे तब महिपाल । ले जावां तुझ मारवा जी, हुकम दियो कोटवाल ॥ च० ३० ॥ मत मारो करुणा करो जी, तुम आवो मुझ
लार । मोहरा देऊं डेढसो जी, मुझ छोड़ो इणवार ॥ च० ३१ ॥ सब मिल आवे पंथ में जी, मन सोचे नर नाथ । निर्दय की बुरी नौकरी

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

जी, जांट कही सेंच बात ॥ च० ३२ ॥ ब्राह्मणी के घर आविया जी, बात कहे चुप चाप । मोहरां रक्खी थी डेडसौ जी, ते सब दो इण को आप ॥ च० ३३ ॥ ब्राह्मणी सुन साहे पड़ी जी, जाय तेरो सत्या नाश । रे रे नपूता खोजग्या जी, मोहरां रक्खी किण पास ॥ च० ३४ कुछ भी बोल नहीं सक्यो जो, मोन रह्यो महिपाल । दीधी तुरत सोभागमे जी; पांचो ही लाल निकाल ॥ च० ३५ ॥ आपत्ति सब दूरी टली जी, मन चिंते नर नाथ । धूर्त के थाती स स्थापवो जी, जोइ कही सब बात ॥ च० ३६ ॥ धन गया की चिन्ता नही जी, बचिया अपणा प्राण । को: किसी को सगो नहीं जी, सब जग लीनो जाण ॥ च० ३७ ॥ जावो भाई घर आपणे जी, मैं भी जाऊं निज ठाम । एम कह सब चालया जी, पहुँचे निज निज गाम ॥ च० ३८ ॥ आपणो राज संभालियो जी, आनन्द में दिन जाय । अब मैं जाऊं निज ससरे जी, इम चिंते महाराय ॥ च० ३९ ॥ मंत्री ने राज भोलावियो जी, आडम्बर लेई लार । आयो निज सुसराल में जी, दियो आवास उतार ॥ च० ४० ॥ राणी देख विचारियो जी, तेतो होतो नर और । पति जाणी ने मरावियो जी, पाप कियो महा घोर ॥ च० ४१ ॥ कई दिन राख्या पाहुणा जी कर कर के मनुहार । अन्त विदा में दीधो घणो जी, धन धान्यादिक सार ॥ च० ४२ ॥ और चहावे सो मांगे तुम्हे जी, इम बोले महिपाल । एक तो दीजे वो ब्राह्मणी जी, दूजो दीजे कोटवाल ॥ च० ४३ ॥ मुंह मांगा दोही दे दिया जी, निज राणी लेई लार । चाल्यो नृप सुसराल से जी, करके आप जुहार ॥ च० ४४ ॥ शोभावती नगरी विषे जी, आसो बलवंत राय । आपणो राज संभालियो जी, आनन्द में दिन जाय ॥ च० ४५ ॥ एक दिन कोप्यो भूपती जी, कहे चक्षु कर लाल । एक राणी दूजी ब्राह्मणी जी; तीजो अ णो कोटवाल च० ४६ ॥ तीनों खड़ा किया सामने जी, रक्षक से पूछे एम । उस नौकर को बे गुनाह जी, तुम मरवायो केम ॥ च० ४७ ॥ हुको पाणी भर पावतो जी, करतो वक्त व्यतीत । इण दुष्टा की केण से जी, क्या समझो बदनीत ॥ च० ४८ ॥ ते कहे हां सब सत्य छैजी, इण में झूंठ न कोय । भूप कहे करणो जैसा जी, अब फल लीजो जोय ॥ च० ४९ ॥ अब राणी ने इम कहे जी, रोष करी महाराय । रे निर्लज व्यभिचारिणी जो, मर जाती विष खाय ॥ च० ५० ॥ अपणो शब्द संभालले जी, किण की है बदनीत । आपणा पति छोड़ के जी, पर नर सेती प्रीत ॥ च० ५१ ॥ इम सुण राणी चिंतवे जी, मैं थी खुद अपराध । मनुष्य मराव्यो ते सहजी, प्रगट हुओ ते पाप च० ५२ ॥ भोगव तूं कृत्य आपणो जी, कब ऊन छोड़ु तोय । भृत्य की जो हुई गति जी, वही गति तुझे होय ॥ च० ५३ ॥ भूप कहे सुन ब्राह्मणी जा, तुझ घर कीधो निवास । मोहरा रखी थी डेडसौ जी, जाणी अटल विश्वास ॥ च० ५४ ॥ अब आपति के वक्त में जी,

११२

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

मोहरा मांगी थी आथ। मातंग को देई आपणा जी, ले सू प्राण बचाय ॥ च० ५५ ॥ आनणी जिम साम्ये पडो जी, बोली सो घोल सँभाल। निर्दय होय दगो दियो जी, कर्म किये थे चंडाल ॥ च० ५६ ॥ तीनों को जेल धराविया जी, फेर होगा सब न्याय! मंत्री आय मुजरो कियो जी, तब बोले महाराय ॥ च० ५७ ॥ लाभ खर्चा भंडार को जी, दीजे हिसाब बताय। इम सुण मंत्री कंपियो जी, कीजे कौन उपाय ॥ च० ५८ ॥ जांच पड़ताल पंचां करी जी, एक लियो सत्य पक्ष। सब हिसाब मिलावता जो, घाटो जच्यो तीन लक्ष ॥ च० ५९ ॥ ये सुन बात दिवान की जी, रोप भरयो महाराय। चारों को शूली की सजा नी, आज्ञा दीनी फरमाय ॥ च० ६० ॥ प्रजा मिल अरजी करे जो, आप छो दीन दयाल। ये दंड माफ करो तुम्हे जी, दूसरी राह निकाल ॥ च० ६१ ॥ हठ खेंचो मानी नही जी, आखिर भूप दयाल। चारों का नाक कटायने, जी, दे दियो देश निकाल ॥ च० ६२ । इम राजा मन चिंतवे जी, पूर्ण करी पहिचान। जिन को अप-णा जाणिये जी, वो ही करे नुकसान ॥ च० ६३ ॥ अहिंसा धर्म है आपणो जी, सब सुख को दातार। चोथो शरणो जिन कह्यो जी, जगत में एक आधार ॥ च० ६४ ॥ सुग्राव ग्राम का जाट ने जी, बुलवायो तिणवार। बात टका टका एकनी जी, तुम कही थी सार ॥ च० ६५ ॥ मैं भी सूतो सुणी खाट पै जी, बात कही जब चार। चारों परीक्षा में करी जो, सांच कहूं इण वार ॥ च० ६६ ॥ प्राण बचा जीवतो रह्यो जो, पाय्रो नवो अवतार। राज रिद्ध सब मांगबूं जी, सब तेरो उपकार ॥ च० ६७ ॥ भूप खुशी हुवो जाट पै जी, प्रगट्यो प्रेम अथाग। दी थो बहुत इनाम मैं जी, सहस्त्र दीनार पोशाक ॥ च० ६८ ॥ जिन धर्म छै सांचो सगो जी, और सगो नहीं कोय। आराधन जो कोई करे जी, ते नर सुखिया होय ॥ च० ६९ ॥ उस ही दिन से भूपति जी, पांचों इन्द्रिय वश कीध। दानादिक शुभ कार्य में जी, बहु बिध लाहो लीध ॥ च० ७० ॥ ममत्व नही कोई वस्तु पे जी, समभावे महिपाल। स्वर्ग सिधाई आतमा जी, काल समय कर काल ॥ च० ७१ ॥ अष्टमी शुक्ल अषाढ की जी, दोय हजार के साल। खूब कहे ब्यावर विषें जी. सरस बहोतरी ढाल ॥ चतुर ॥ ७२ ॥

-श्री भरतचक्री सूर्योदय- (तर्जः—ख्याल) पाया पूरण रिद्ध पूरव पुण्य से, भरतेश्वर राजा ॥ टेर ॥ जम्बू द्वीप का भरत क्षेत्र में, तीजा आरा मांय। देवलोक सम कही वनीता; नगरी श्री जिनराय हो ॥ भरते १ ॥ तिहां भोग वे राज भरत जी, पुरुषोत्तम नरनाथ। ऋषभ देव जी तात आपका, सुमंगल का अंग जात हो ॥ भरत २ ॥ चक्र रत्न आय ऊपनो सरे, शस्त्रशाला मांय। आयुध धरियो पुरुष देख कर, दीनी वधाई आय हो ॥ भरते ३ ॥ भूपति सुण तिण पुरुष को सरे, कीनो बहु सत्कार। चक्र रत्न जाय पूजियो सरे;

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

कर मतसहोव विस्तार हो ॥ भरते ४ ॥ विधि सहित पूज्यां थकां सरे; उच्चो आप स्यमेद । चंद्र मंडल जिम शोभतो सरे; सहस्र देव
करे सेव हो ॥ भरते ॥ ५ ॥ चउ वि र सेना सज करी सरे, भरतेश्वर महाराज । गज अरूढ होकर निकलिया सरे, पट खंड साधन
काज हो ॥ भरते ६ ॥ चक्र रत्न आगे चलियो सरे, गगन पन्थ के माँय । योजन योजन अंतरे सरे, सुख से वसता जाय हो ॥ भरते
७ ॥ मारग में नृप आण मानता, लेता भेटणो आप । आगे आगे बढ़ तो जावे, प्रगटे तेज परताप हो ॥ भरते ८ ॥ पूर्व दिशा में
चालता सरे, लवण समुद्र पास । चक्ररत्न तिहाँ उतरियो सरे, कीनो आप निवास हो ॥ भरते ९ ॥ गज होदे तरखान रत्न पर, दियो
हुक्म प्रकाश । पौषध शाला तुरत बनाओ, और एक आवास हो ॥ भरते १० ॥ देव प्रभावे दोनों चीजाँ, मुहुर्त एक मझार । हुक्म
होन की देर काम में, लगे नहीं कछु बार हो ॥ भरते ११ ॥ गज से उतर पधारिया सरे, पौषधशाला माँय । मागध नामा देव को
सरे, तेलो दीनों ठाय हो ॥ भरते १२ ॥ चौथे दिवस पारकर पौषध, लेकर सेना लार । रथ में बैठ भरत जी चालया, लवण समुद्र
मझार हो ॥ भरते १३ ॥ द्वादश योजन दूर रहीने, खैंच चलायो बाण । मागंध नामा देव की सरे; पड्यो सभा में आण हो ॥ भरते
१४ ॥ बाण देखकर कोपियो; सरे, बोल्यो होकर लाल । नाम बांच तत्क्षण देवता प्रसन्न हुयो तत्काल हो ॥ भरते १५ ॥ कुंडल मुकुट
बलि वस्तर, और गला का हार । बाण सहित ले भेटणो सरे, आय नम्यो चरणार हो ॥ भरते १६ ॥ लेय भेटणो भरतजी सरे, कर सुरको
सन्मान । आण मनाय बिदा कर दीनों, देव गयो निज स्थान हो ॥ भरते १७ ॥ हुई फतह रथ फिरियो सरे, आया कटक के माय ।
करतेलाको पारणो सरे, बैठा सभा में आय हो ॥ भरते १८ ॥ अट्ठाई महोत्सव कियो सरे, मागध सुर को राय । कटक उठाई
चालिया सरे, दक्षिण दिशा में जाय हो ॥ भरते १९ ॥ समुद्र के तट कटक स्थाप के, तेलो दीनो ठाय । पूर्ववत् वरदाम देव को, दीनो
आण मनाय हो ॥ भरते २० ॥ इम हिज फिर तीजो तेलो कर; साध्यो सुर परभास । उत्तर दिशा में चालताँ स कियो, सिंधु तीर
निवास हो ॥ भरते २१ ॥ सिंधु देवी साधवा सरे चतुर्थ तेलो ठायो । तत्क्षण आसण कंपियो सरे, अवधिज्ञान लगायो हो ॥ भरते
२२ ॥ कनक कुंभ मणि रत्न जड़ित, एक सहस्र अष्ट प्रमाण । दो भद्रासन मुंघा मोल का, और पूर्ववत जाण हो ॥ २३ ॥ नजराणो
कियो भेटणो सरे, भरत भूप पे आय । देवी आण मंजूर करीने, आई तिण दिश जाय हो ॥ भरते २४ ॥ अट्ठाई महोत्सव कियो सरे,
चालया कोण ईशाण । पास गिरि वेताड़ के सरे, कटक स्थापियो आण ॥ भरते २५ ॥ गिरि वेताड़ कुमार देव को, तेलो पंचमो

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

ठायो । सिंधु देवी की तरह सरे, लेय भेटणो आयो हो ॥ भरते २६ ॥ भरत भेटणो लेय ने सरे, दीनी आण मनाय । महोत्सव कर
निज कटक उठाई, पश्चिम दिशा में जाय हो ॥ भरते ॥ २७ ॥ तमस गुफा के बारणे सरे, डेरा दीना राय । करतेलो कृतमाल देव को
समरयो ध्यान लगाय हो ॥ भरते २८ ॥ चौदस भूषण को भर डावों, श्री देवीके काज । कियो भेटणों आसने सरे, भेट्या श्रीमहाराज
हो ॥ भरते २९ ॥ कर सत्कार विदा कर दीनो;सेनापति बुलाय । पश्चिम खंड जाय वश करो सरे,हुक्म दियो महाराय हो ॥भरते३०॥
सेनापति सुसेण नाम मरा, शूर वीर ने धीर । बहुविध सेना सज्ज कर; आयो, सिंधु नदी के तीर हो ॥ भरते ३१ ॥ चर्म रत्न जल
ऊपर स्थापिओ, हुओ नाव आकार । सेना सहित बैठ किश्ती में, उतरयो पैली पार हो ॥ भरते ३२ ॥ सम विषम ऊंची और नीची,
सवे ठिकाणे जाय । भरत भूप का नाम की सरे, दीनी आण मनाग हो ॥ भरते ३३ ॥ सेनापति के आयो भेंट में,क्रोड़ां को धन माल ।
पीछो फिर सिंधु नदी के, आयो किनारे चाल हो ॥ भरते० ॥ ३४ ॥ चरम रत्न-से वही विधि कर, पार उतर कर आया । जय
विजय कर भरत भूप को सेनापति वधाया हो ॥ भरते० ॥ ३५ ॥ जो जो अर्थ भेंट में आयो, ठव्यो नृपति पास । कर सत्कार विदा
कर दीनो, आयो निज आवास हो ॥ भरते० ॥ ३६ । कर स्नान भोजन करी सरे; निज तम्बू के मांय शब्दादिक सुख भोगवे सरे,
आनंद में दिन जाय हो ॥ भरते० ॥ ३७ । कई दिना के अंतरे सरे, सेनापति बुलवाय । तमस गुफा का खोलो द्वार यों, हुकम दियो
महाराय हो । भरते ॥ ३८ ॥ सेनापति हिये हर्ष धरीने, कियो वचन परमाण । तीन दिवस को तेलो करके रथ में बैठो आण हो ॥
भरते० ॥ ३९ ॥ लेकर सेना साथ में सरे, और घणो परिवार । आयो गिरि वेतांड जहां पर तमस गुफा का द्वार हो ॥ भरते० ॥४०॥
प्रथम पुंजियो द्वारको सरे, फिर कूंडी जलधार । चंदन चर्चा धूप देय कर, पुष्प चढाया सार हो ॥ भरते० ॥ ४१ ॥ रूपाका चांवल
से मांड्यॉं आठ आठ मंगलीक । पंचवर्ण फूलांतणां सरे, कियो पुंज रमणीक हो ॥ भरते० ॥ ४२ ॥ सात आठ पग पाछो हठकर,
दंड रत्न ले हाथ । कर प्रमाण द्वारको कूट्यो, जोर जोर के साथ हो ॥ भरते० ॥ ४३ ॥ तीन दफे कूट्यॉं थकां सरे, सररर
खुलिया द्वार । भरत भूप को दीनी बधाई, आकर कटक मझार हो ॥ भरते ॥ ४४ ॥ करतेला को पारणों सरे, सेनापति सरदार ।
शब्दादिक सुख भोगवे सरे, नाटक का झणकार हो ॥ भरते० ॥ ४५ ॥ कटक उठाय कर चालिया सरे, गज पर बैठ नरेश । तमस
गुफा के दक्षिण द्वारे, हुवा आप प्रवेश हो ॥ भरते० ॥ ४६ ॥ मणि रत्नको गज मस्तक पर मेल्यो होय हुलास । अन्धकार को नाश

११५

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

हुवो जिम, पूनम को प्रकाश हो ॥ भरते० ॥ ४७ ॥ लेय कांगणी रत्न नरपति पूर्व दिशा के मांय । प्रथम मांडलो खैंचियो सरे, सूरज सम दरसाय हो । भरते० ॥ ४८ ॥ लिखता जावे मांडलासरे, योजन योजन दूर । उजला मोटी नदी से, तिहाँ आया श्री हजुर हो । भरते० ॥ ४६ ॥ डेरा दे तरखान रत्नपर, हुक्म दियो महाराय । स्तम्भ अनेक अचल पुलबाँधी, दीनी आज्ञा भलाय हो ॥भरते० ॥ ५० ॥ पुल पर भूप कटक ले निकल्या, होता शब्द का नाद । निमग जला नदी फिर आई, दो योजन के बाद हो ॥ भरते० ॥ ५१ ॥ तिमङ्गिज ते पिण उतरिया सरे. भरतेश्वर पुण्यवंत । पहुँच गया दरवाजे जहां पर, तमस गुफा को अंत हो ॥ भरते० ॥ ५२ ॥ बारह योजन चौड़ाई में, ऊंची योजन आठ । आरपार लम्बी कही सरे, साठ मांय दस घाट हो ॥ भरते० ॥ ५३ ॥ आप ही आप खुलगई गुफा जय, सेना निकलो बहार । देख अमाडचिलायती सरे, सज आव्या तिणवार हो ॥ भरते० ॥ ५४ ॥ भिड्या भरतकी फौजसूं सरे, दशोंदिश दीनी भगाय । सेनापति चढ़ अश्व रत्न पर, कर में खड्ग समाय हो ॥ भरते० ॥ ५५ ॥ लोकों के पीछे पड्यासरे, पीछा दिया भगाय । वस्त्र तज सिंधु की रेत में, तेला दीना ठाय हो ॥ भरते० ॥ ५६ ॥ मेघ मुख नाग कुमार देवता, समरिया ध्यान लगाय । कष्ट तणाँ प्रभाव सूं सरे, हाजिर होगया आय हो ॥ भरते० ॥ ५७ ॥ कह्यो किण कारण याद किया तब, सब जन बोल्या वाय । कौन अभागी आवियोसरे, इनको देवो हटाय हो ॥ भरते० ॥ ५८ ॥ देव कहे सुणलो सब लोकां ये भरतेश्वर राय । सामर्थ्य नहीं सुरेंद्र की सरे, इनको देवो हटाय हो । भरते० ॥ ५९ ॥ जंतरचले न मंतर इन पर, साफ साफ हम केहवां । तो पिण तुम्हारी प्रीत निभावा, कुछ उपसर्ग कर देवां ॥ भरते० ॥ ६० ॥ एम कही भरतेश्वर ऊपर, आविया गगन के मांय । गाज बीज बादल पाणी की, दीनी झड़ी लगाय हो ॥ भरते० ॥ ६१ ॥ चर्म रत्न होगयो चौतरो, छत्र रत्न की छायां । प्रसर गया बारह योजन में, कटक सभी सुख पाया हो ॥ भरते० ॥ ६२ ॥ सात दिवस होगया बरसताँ, कीनो भरत विचार । कौन अकाल मरण को वंछक, छोड़ रह्यो जलधार हो ॥ भरते० ॥ ६३ ॥ भरतेश्वर महाराज का सरे, सोलह सहस्र सुरजाय । नागकुमार मेघमुख सुर से बोल्या इण पर वाय हो ॥ भरते० ॥ ६४ ॥ अहो देव तुम नहीं जाणो यह, भरतेश्वर महाराज । रिद्ध समेटो आपका सरे, नहीं तो परभव आज हो ॥ भरते० ॥ ६५ ॥ बात सुणी सुर धूजियो सरे, लीनी रिद्ध समेट । आय कहे तिण लोक को सरे, निर्भय रहो नहीं बैठ हो ॥ भरते० ॥ ६६ । जो सुख चाहो आपको सरे, भरत भूप पा जाय । मुंगा मोल को करो भेटणो, लेवो अपराध खमाय

११६

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

हो ॥ भरते० ॥ ६७ ॥ या विधि कह कर देव गया तव, उठ्यो सगलो सोथ । कर स्नान नजराणो लेयकर, भेट्या आय नरनाथ
हो ॥ भरते० ॥ ६८ ॥ लेय भेटणो भरतजी सरे, कर पीछो सत्कार । आण मनाई आपकी सरे, हो रहया जयजयकार हो । भरते०
॥ ६६ ॥ सेनापति सुषेण बुलाई, हुक्म दियो महाराय । उत्तर भरत पश्चिम खंड साधो, आवो आण मनाय हो । भरते० । ७० ॥
सेना सजकर निकलियो सरे, कर आज्ञा परमाण । दक्षिण भरत पश्चिम खंड साधो, तिण विध लीजो जाण हो ॥ भरते० ॥ ७१ ॥
आगे कोण ईशाण में सरे, चलिया भरत नरेश । चूल हिमवंत पर्वत पासे, कीनो आप प्रवेश हो ॥ वरते० ॥ ७२ ॥ वहां पर फिर
पौषध शाला में, तेलो सातमो ठायो । चूल हिमवंत गिरी देव को, साधन काज सिधायो हो ॥ भरते० ॥ ७३ ॥ पर्वत के नजदीक
आय कर, रथ को आप ठहरायो । धनुषबाण कर धारने सरे, नभ में खैंच चला यो हो ॥ भरते० ॥ ७४ ॥ वहत्तर योजन गयो गगन
में, पड्यो समा में जाय । मागंधसुर की तरह भेटकर, आयो तिण दिश आय हो ॥ भरते० ॥ ७५ ॥ रथ को फेर पधारिया सरे,
ऋषभ कूट के पास । नामो लिख निज नामको सरे, आयो होय हुल्लास हो ॥ भरते० ॥ ७६ ॥ कर तेला को पारणो सरे, सेना लेय
सिधाया । दक्षिण दिश वेताड गिरि जहाँ; डेरा आय लगाया हो ॥ भरते० ॥ ७७ । विद्याधर श्रेणी को नरपति, तेलो आठमो
करियो । नमि और विनमि नृप को, देव योग मन फिरियो हो ॥ भरते० ॥ ७८ ॥ लेय भेटणो आवियो सरे, भरत भूपके पास । नमि
नृप कन्या व्याही जो, श्रीदेवी हुई खास हो ॥ भरते० ॥ ७६ ॥ विनमि कर रत्न भेटणों, दोनों गया निज टाम । गंगाकुंड के पास
आयने, दीना भरत मुकाम हो ॥ भरते० ॥ ८० ॥ नवमो तेलो कियो आप, तब गंगादेवी आय । सिंधुवत् जाण जो सरे, कियो
भेटणो लाव हो ॥ भरते० ॥ ८१ ॥ दक्षिण दिश के सांयने सरे, चलिया कटक उठाय । खंड परपात गुफा है जहां पर, डेरा दिया
लगाय हो ॥ भरते० ॥ ८२ ॥ सेनापति पूर्व खंड साधण, भेजियो श्री महाराय । छुंघा मोल को लेय भेटणो, आयो आण मनाय हो ॥
भरते० ॥ ८३ ॥ आराधियो नटमाल देवता, दसमो तेलो ठाय । सिंधुवत् कर भेटणो सरे, आयो तिण दिश जाय हो ॥ भरते ॥ ८४ ॥
खंड परपात गुफा झट खोलो, दीनो हुक्म चढाय । सेनापति जिम तमसगुफा का, द्वार खोलिया आय हो ॥ भरते ॥ ८५ ॥ योजन
दो पच्चीस की सरे, लंबी गुफा मझार । लिखता गुणपच्चास मांडला, हुआ भरत जी पार हो ॥ भरते० ॥ ८६ ॥ दक्षिण भरत के
मांय ने सरे, डेरा दीना लगाय । नव निधान को तेलो ठायो, पौषधशाला मांय हो ॥ भरते० ॥ ८७ ॥ तुरत सरक पग हेटे आया,

११७

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

रत्न भरिया भरपूर। पूर्व जन्म की करी कमाई, सन्मुख हुई हुजूर हो ॥ भरते० ॥ ८८ ॥ दक्षिण भरत का पूर्व खंड में, दियो सेनापति भेज। आयो आण मनाय के सरे, करी न वहां पर जेज हो ॥ भरते० ॥ ८९ ॥ साठ सहस्र वर्ष लागिया सरे, पूर्ण करके काज। कटक उठाई चालिया सरे, राजनपति महाराज हो ॥ भरते० ॥ ९० ॥ लाख चौरासी गज रथ घोड़ा, पैदल छिनवें क्रोड़। राजा सहस्र बत्तीस साथ में, सेवा करे कर जोड़ हो ॥ भरते० ॥ ९१ ॥ पंथ लियो वनिता नगरी को, श्री भरतेश्वर राय। योजन योजन अन्तर सूं, वे सुख से चलता जाय हो ॥ भरते० ॥ ९२ ॥ नहीं नजदीक नहीं अति दूरा, सेना दीनी स्थाप। द्वादसमो वनिता तणो सरे, तेलो कीनो आप हो ॥ भरते० ॥ ९३ ॥ तेलो पार लार ले सेना, गज पर होय सवार। निज नगरी में चालता सरे, हो रह्या जय जय कार हो ॥ भरते० ॥ ९४ ॥ नवनिधान और चारों ही सेना, बाहिर राखी भूप। नगरी मांह पधारिया सरे, जिन की छवि अनूप हो ॥ भरते० ॥ ९५ ॥ सबका मुजरा झेलता सरे, राज भवन में आया। हर्ष बधावा हो रह्या सरे, धन जननी सुत जाया हो ॥ भरते० ॥ ९६ ॥ सोलह सहस्र देवता और, नृप बत्तीस हजार। दीनी सीख बली चार रत्न को, कर सब को सत्कार हो ॥ भरते० ॥ ९७ ॥ श्री देवी प्रमुख पटरानियां, परणी चोसठ हजार। राज पधारया महल में सरे; मिलियो सब परिवार हो ॥ भरते० ॥ ९८ ॥ मणिमंडप में मज्जन करके, पहरी सब पोशाग। कर तेला को पारणो सरे, विलसे सुख महाभाग हो ॥ भरते ॥ ९९ ॥ राज तख्त को तेरमो सरे, तेलो कियो तिवार। सोलह सहस्र देवता सब ही, नृप बत्तीस हजार हो ॥ भरते० ॥ १०० ॥ सेठ सेनापति सारथ वाही, बडे र साहुकार। कियो राज अभिषेक सभी मिल जय जय शब्द उचार हो ॥ भरते० ॥ १०१ ॥ कर शृंगार बैठ गज होदे, सिर पर छत्र धराय। चार चवर होता थका सरे, आया नगरी मांय हो ॥ भरते ॥ १०२ ॥ भूपति आय सिंहासन बैठा, राज सभा के मांय। सबको आदर मान करीने; दीनी सीख महाराय हो ॥ भरते० १०३ द्वादश वर्ष दाण और हांसल, माफ खुशी के मांय। आज्ञाकारी पुरुष भेजकर, दीनो पडहो बजाय हो ॥ भरते० १०४ ॥ कर तेला को पारणो सरे, राज भवन के मांय। करणी का फल भोगवे सरे, आनन्द में दिन जाय हो ॥ भरते० ॥ १०५ ॥ नव निधान और सोलह सहस्र सुर, रत्न चतुर्दश सार। सहस्र बत्तीस नृप आज्ञा में, राण्या चौसठ हजार हो ॥ भरते० ॥ १०६ ॥ बहत्तर सहस्र नगर बलि पाटण, अडतालीस हजार। छिनवें क्रोड ग्रामों की संख्या, भाषी सूत्र मझार हो ॥ भरते० ॥ १०७ ॥ बीस सहस्र सुवर्ण की खानें, धन का भरया भंडार।

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

पायदल छिनवें क्रोड, चौरासी लक्ष, रथ, दंती, तुखार हो ॥ भरते० ॥ १०८ ॥ नृत्यक सहस्र बत्तीस, तीन सौ साठ रसोईदार। कुंवर सहस्र चौवीस वलि, मंडप चौवीस हजार हो ॥ भरते० ॥ १०९ ॥ मरुदेवी दादी जो कहिये, बहुविध शाता पाई। क्रोड पूरब को आयुष्य पाल गज, होदे मुक्ति सिधाई हो ॥ भरते० ॥ ११० ॥ शूरवीर बाहुबल आदिक, सौ भाइयों की जोड। ब्राह्मी सुन्दरी दोनों बहिनें, मुक्ति गई कर्म तोड हो ॥ भरते० ॥ १११ ॥ और घणी है साहबी सरे, लीजो सूत्र सम्भाल। मौज करे रंग महल में सरे नाटकना झणकार हो ॥ ११२ ॥ एक दिवस मंजन पति राजा, मंजन घर में आय। विधि सहित मंजन कियो सरे, फिर पोशाक बनाय हो ॥ भरते० ॥ ११३ ॥ शिर पर मुकुट कान में कुण्डल, कर भूषण सब सार। मणि रत्न को पहिन गला में, चौसठ लडियो हार हो ॥ भरते० ॥ ११४ ॥ अलंकार चउविध करके, सोले सजे शृंगार। काच महल में आय सिंहासन, बैठा निरखे दीदार हो ॥ भरते० ॥११५॥ तनको जान असार भरतजी, ध्यायो निर्मल ध्यान। अनित्य भावना भावतासरे, पाया केवलज्ञान हो ॥ भरते० ॥ ११६ ॥ ओघा पात्रा दीना देवता, कर मुनिवर का वेश। राज सभा में आवियासरे, दीनो सत् उपदेश हो। भरते० ॥११७॥ दश हजार राजा प्रति बोधि, लीनो संयम भार। महि मंडल में विचरता सरे, करता पर उपकार हो ॥ भरते० ॥ ११८ ॥ लाख सत्तंतर पूरबताई, कुंवर पद के मांय। चक्रवर्त्त पद छः लक्ष पूरब को, पालियो थो महाराय हो ॥ भरते० ॥ ११९। चारित्र एक लक्ष पूरब को, पाल्यो निर्मल आप। भवजीवांने तारता सरे, मेटी भव दुःख ताप हो ॥ भरते० ॥ १२० ॥ सर्व आयुष्य पाइया सरे, पूरब चोरासी लाख। ऊग ऊगने ऊगीया सरे, ठाणायंगनी साख हो ॥ भरते० ॥ १२१ ॥ अष्टापद पर्वत के ऊपर, दियो सथारो ठाय। एक मास को अणसण छेदी, गया मोक्ष के मॉय हो ॥ भरते ॥ १२२ ॥ तिण हिज काच महल के मांही, जिम भरतेश्वर राया। आठ पाट आदित्य जसादिक, तिमहिज केवल पाया हो ॥ भरते० ॥ १२३ ॥ मनुष्य जन्म दुर्लभ मिल्यो है, जो अपना सुख चाहो। दया दान तप नेम धर्म को, लीजो तन से लाहो हो ॥ भरते० ॥ १२४ ॥ उगणीसौ बहत्तर चौमासो, कियो शहर अजमेर। महामुनि नंदलाल गुरु को, है मुझ ऊपर महर हो ॥ भरते० ॥ १२५ ॥ ढाल ॥ २ ॥ द्रौपदी ॥ तर्ज ख्याल ॥ निर्मल मन पाल्यो श्रावक शीलने धन सती द्रौपदी ॥ नि० ॥ टेक ॥ अमर कंखा नगरी भली सरे, धात्री खंड भरत के माय। राजलीला सुख भोगवे सरे, पद्मनाभ तिहां रायजी ॥ ध० ॥ १ ॥ सब अन्तेवर सामसे सरे। एक दिन भवन मझार। सिंहासन पर बैठ बिच में, निरखयो

११६

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

भूपारजी ॥ ध० ॥ २ ॥ हस्तनापुर नगर थकी सरे, नारदजी ततकाल । तिणवेला में आविया सरे, सिघ्र कुरथी चालजी । ध० ॥ ३॥ पदमनाभ नृप ऊठने सरे, दीनो आदरमान । कुशलक्षेम परस्पर पूछी, तब बोले राजानजी ॥ ध० ॥ ४ कहो नारदजी ऐसी रचना कहींपर देखी तुमने । सुणवाको अति प्रेम उप नो । थे सब भाखो मुफनेजी ॥ ध० ॥ ५ ॥ कहै नारदजी है तू नरपति : कूप दडूर समान । अन्तेवर निज देख अनूपम । फूलरयो धरमानजी ॥ ध० ॥ ६ ॥ जंबुदीप का भरतमें सरे, हस्थनापुर एक स्थान । पंडुराजा राज करे तस, सुत पंचपांडव जानजी ॥ ध० ॥ ७ ॥ जिनके घर नारी द्रौपदी, रूप कला गुण सार । कहांतक करूं बयान जिन्होका मैं नहीं पाऊं पारजी ॥ ध० ॥८॥ नृपति प्रेम धरीने पूछे, तदपि कैसा स्वरूप । कर विस्तार कहो मुझ आगल, है सुणवा की चूंप जी ॥ ध० ॥ ९ ॥ तुझ अन्तेवर रूप सभी, द्रोपदी नख तुल्य मिलावे । दोनूं रूप निज प्रगट देखता, सोमे भाग नहीं आवेगी । ध० ॥ १० ॥ भूपति मन अचरज हुवो सरे, नारद मुख सुणी बखाण । इस नारी से मैं सुख भोगूं, जब हो मनुष्य जन्म परमाणजी ॥ ध० ॥ ११ ॥ पदमनाभ नृप ऊठ के सरे, आयो पौषध शाला मांय । अष्टभक्तकर देवकों सरे, सुमरयो ध्यान लगायजी ॥ ध० ॥ १२ ॥ कष्ट तणे पर भाव प्रगट हो, सुर बोल्यो कर साद । इस वेला के मायने स थे, कैसे कियो मुझ याद जी । ध०१३। जंबुद्वीप का भरतमें सरे, हस्थनापुर के माय । पंचपांडवकी भारजा सरे, मुझ को देवो लायजी ॥ ध० ॥ १४ ॥ देव कहे सुण वात क्षमारी सती द्रोपदी वाजे । मन वचन काया करीसवा, शील कभी नही भांजे जी ॥ ध० ॥ १५ ॥ तिणने सुधर्म इन्द्रादिक मिल चोसट इन्द्र डिगावे । मन करने वंछे नहीं सतूं मनने क्यों ललचावे जी ॥ ध० ॥ १६ ॥ परदारा का लंपट नरपति, टेक आपणी ताले । भांत भांत समझाविये तदपि, एक बात नहीं माने जी ॥ ध० ॥ १७ ॥ देव चाल गगन से आया; हस्थनापुर के माय । निद्रा में छक होय रही थी, लीनी तुरत उठायजी ॥ ध० ॥ १८ ॥ शिघ्र चाल लेआवियो सरे, लुंण समुन्दर टेल । पदमनाभ राजा का बाग में दीनो द्रोपदी भेलजी ॥ ध० ॥ १९ ॥ नरपति ने सुर समाचार कहै, मैं निज स्थानक जासूं । कोई दिन मुज ने याद करे तो, फेर कभी नहीं आसुं ॥ ध० ॥ २० ॥ एसा कह कर गया देव तब, हुलसा अति भूपाल । कर शृंगार अन्तेवर लेईने, आया बाग में चाल जी ॥ ध० ॥ २१ तिण अवसर निद्रा उडी सरे सती विचारे एम । हुआ देव प्रयोग शील का, यतन करुंगा केमजी ॥ ध० ॥ २२ ॥ इतने भूपति सज सवारी, आयो तिण हीज बाग । कहे सती को मत कर चिंता, खुलियो थारो भागजी ॥ ध० ॥ २३ ॥ हूँ छू पति

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

शिर ताज तुम्हारा, बोले मधुरी वाणी । सब राण्यां के मायने सरे, तुजे करूं पटरानी जी ॥ ध० ॥ २४ ॥ सती कहे सुण राजन् पति, अभी लगे मत केडे । कोई आवे तो बाट देख लूं, छे महीना मत छेडे जी ॥ ध० ॥ २५ ॥ हे भोली यहां कुण आसी; लूण समुन्दर आडो । सब ही आशा छोड़ दे स तूं, कोल करे मत गाडो जी ॥ ध० ॥ २६ ॥ कृष्ण नरेशर त्रिखंड भुक्ता, इसको आश धरुंगा । छे महिना में नहीं आवें तो; तुम कहोगा सो ही करुंगाजी ॥ ध० ॥ २७ ॥ भूपति मन समन्ना भरी सरे, नहीं लाग में सार । कुंवारा अन्तेवर मांही, मेल दीवी ततकाल जी ॥ ध० ॥ २८ ॥ सुख में सती विचारे निशदिन, शील का यतन करंत । बेले बेले पारणा सरे, आमिल करे निरंत जी ॥ ध० ॥ २९ ॥ हस्थनापुर नगर विषे सरे, हेरो पड्यो तिवार । न जाणे कोई देवता सरे, लेगयो पांडव नार जी ॥ ध० ३० ॥ लोभ बताई द्रव्य को सरे, भूपति पड़हो बजायो । कीनी बहुत गवेषणा पर, पतो कठे नहीं पायो जी ॥ ध० ३१ ॥ गज होदे बैठ भूवा जी, पंच पांडव की माता । नगर द्वारिका आविया सरे, कहेण हरिने बाता जी ॥ ध० ३२ ॥ हरि पूछे कृपा कर मोंपर, कैसे हुवो हे आवो ! सभी कारज सिद्ध करू स थे, भूवाजी फरमावो जी ॥ ध० ३३ ॥ समाचार सब भाखिया सरे, गोविन्द ध्यान लगावे । समरथाई थायरी सरे । और नजर नहीं आवे जी ॥ ध० ३४ ॥ गोपाल कहे सुण भूवाजी, चिन्ता नहीं कोई बात । जहां तहां से लाके द्रोपदी, सूंपसुं हाथो हाथ जी ॥ ध० ३५ ॥ भूवाजी सुण वचन हरि को, फिर हथनापुर आई । जाणे द्रोपदी आय मीली जुं, सोच फिकर कछु नांई जी ॥ ध० ३६ ॥ गोविन्द करी गवेषणा पर, पतो कठे नहीं पायो । इतने राज भवन के मांई; नारद ऋषीश्वर आयो जी ॥ ध० ३७ ॥ पुछे कृष्णजी कहो नारदजी, कोई राजस्थाने । देखी होवे, द्रोपदी तो, थे पतो बतावो म्हाने जी ॥ ध० ३८ ॥ तब नारद कहे धात्री खण्ड का, भरत क्षेत्र के मांय । एकदा कोई समय पाय के, मैं वहां गया चलाय जी ॥ ध० ॥ ३९ ॥ अमर कंका नगरी भली सरे पदम नाभ तिहांराय । देखी द्रोपदी सारखी वहां, राज भवन के मांय जी ॥ ध० ॥ ४० ॥ कृष्ण विचारी कहे नारद ने, कर्म तुम्हारा दीसे । सुण नारद जी उड़े गगन में, हुलसो द्वारका धीसे जी ॥ ध० ॥ ४१ ॥ समाचार हस्थनापुर भेज्या, दूत गयो जिमतीर । पांचो पांडव सजकर आईज्यों, समुन्दर उली तीर जी ॥ ध० ॥ ४२ ॥ पंडु राजा समाचार पढ़, पांडव भेज्या तत्काल । जोवे बाट समन्दर के तीरे, कब आवे गोपाल जी ॥ ध० ॥ ४३ ॥ द्वारापति उमेद धरीने, निकले सज असवारी समुद्र तट पांचो पांडव सामिल आय मिले तिणवारी जी ॥ ध० ॥ ४४ ॥ [तर्ज भाई तुम तो कह सांचे] ॥ पांडव भव

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

सरम.ध्यो हो ॥ वाता करल्यो प्रेम की सांसु राय मिलाओ हो ॥ पांडव ॥ टेर ॥ लूण समुन्दर ठेलने, धात्री खंड सिधाव हो ॥ हिम्मत राखो पांडवा, सब पार लगावां हीं ॥ पा० १ ॥ पदमनाभ कृण नरपति, दो दो हाथ बतावां हो। युद्ध करां सन्मुख हुई तेनी शान गमावां हो ॥ पा० २ ॥ चलती बात सुणी हमें, देखा खबर मंगावा हो। अशजी आय कही कहो तब, क्षेम छीपवांहो ॥ पा० ३ ॥ अपणो वस्तु लाणने, चाहे कौन गमावा हो। होवब टाल्यो ना टले नाइक पछतावां हो ॥ पा० ४ ॥ सब ही मिल उद्यम करां, पीछी द्रौपदी लावां हो। महा मुनि नन्दलाल जी, सुख सम्पत्ति पांवां हो ॥ पा० ५ ॥ ख्याल ॥ तेलो कियो हरि लीण पर सावे, लुण सठी सुर आयो। कहो कीण कारण याद कियो मुझ, तब हरि सब फरमायो जी ॥ ध० ४५ ॥ पांचो ही पांडव जाणजो सरे, छूटा दूत मुझ काज। धात्री खंड में जावसां सरे, रास्ता देयो आज जी ॥ ध० ४६ ॥ देव कहे सुण अहो द्वारपति, हुकम मुझे फरमाय। आप कहो तो द्रौपदी यहां, हाजर करदूं लाय जी ॥ ध० ४७ ॥ आप कहो तों पदम नाभ की, नगरी फौज समेत। लुण समुंदर में लाय डूबोऊं, नहीं हमारे हेतजी ॥ ध० ४८ ॥ कृष्ण कहै या बात न करणी, वचन दियो किस लोपुं। जहां होगा वहाँ से लाके द्रौपदी, मैं हाथो हाथ लाई सोंपु जी ॥ ध० ४९ ॥ समुद्र रास्तो दियो सरे, सुर कहे वेग दवारो। धात्री खंड में हरि आवियो; पंच पांडव लेई लारो जी ॥ ध० ५० ॥ दारुक नामा सारथी सरे, भेजो पत्र देई हाथ। पदमनाभका सिंहासन के, एक मारजे लात जी ॥ ध. ५१॥ जय विजय कर राज सभा में, भूपति आप बधायो। यह भक्ति सुज जाणजो स अब, करूं स्वामी फरमायोजी॥ध. ५२॥ अथिया पथिया इम बोल्यो, रोस करी असराले। सिंहासण के मारी लात झट, पत्र दियो अणी भल्ले जो ॥ ध. ५३ ॥ करूं सामनो द्रौपदी नहीं दूं, काढ्यो बिन सत्कार। सारथी पाछो आय कृष्ण पे, कहा सभी समाचार जी ॥ ध. ५४ ॥ करो सामना समरथ होय तो, पदम नाभ चढ आयो। पांचो ही पांडव इम कहे सरे, समरथ छे हरि रायो जी ध० ५५ ॥ वह है हम नहीं इम कहीं चढ़िया, पांचो ही पांडव लार। हार गया तब आये कृष्णपे, कहा सभी समाचारजी ॥ ध. ५६ ॥ जीतूं एम कही चल्या कृष्ण जी, करी संख धुधुकार। पदम नाभ की सैना भागी, तीजे भाग ततकार जी ॥ ध. ५७ ॥ इतने तीनो हाथ में सरे, करी धनुष्य टंकार। एक भाग फिर भागियो सरे, एक भागरयो लारजी॥ध. ५८॥ततखण भागो नृपति शरे, जड़िया नगर दुवार। कियो हरि जा वैक्र सरे, सिंह रूप ललकार जी ॥ ध. ५९ ॥ रोस करी पंजो मारयो तब, थर थर पृथ्वी धूजी। कोट कांगरा भवनपड्या जिम, नगरी होगई दूजीजी ॥ ध. ६० ॥ पदम नाभ मन चिंतवे सरे अनरथ हुवा अपार। प्राण की रक्षा कारणे सरे, कीजे कोन विचार जी ॥ ध. ६१ ॥

१२२

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

सती द्रोपदी के शरखे, भूपति पडियो जाय । बुद्धि उपाई सुभ्क अशी स तू , जीतब दान दिराय जी ॥ ध. ६२ ॥ सती कहै रे निर्लज तुम्हने जरा लाज नहीं आई । काम अंध होई रयो सतूं, अब करे नरमाई जी ॥ ध. ६३ ॥ आला कपड़ा पहेरले सतूं, छोड़ मर्द का सेक । रत्नादिक ले भेटणो सरे, और उपाव नहीं एक जी ॥ ध. ६४ ॥ कर आगे मुझ को सोंप दे सरे, मन में मत सरमाजे । गोविन्द के चरणार नमो ने, सब अपराध खमाजे जी ॥ ध. ६५ ॥ यज्ञो होय सती थायरो सरे, ठीक उपाय बतायो । तिमहिज कर त्रिखंड नायक से, सब अपराध खमायो जी ॥ ध. ६६ ॥ कृष्ण धिवारी समता धारी, भूप त्रिया के रूप । अभय दान देई मूकि यो सरे, गयो द्रोपदी सूंप जी ॥ ध. ६७ ॥ हाथो हाथ लई द्रोपदी. पंच पाडव ने सोंपी । वचन सफल हुवो तेहनो, भुवा जी की बात नहीं लोपी जी ॥ ध. ६८ ॥ कृष्ण और पांडव रथ सजकर, लेई द्रोपदी लार । सफल काज कर निकल्या सरे उतरे समुदर पार जी ॥ ध. ६९ ॥ तिण अवसर तिहां चांपा नगरी, मुनि सुब्रत भगवान । पूरण भद्रबाग के मांई, समोसरया पुण्यवान जी ॥ ध. ७० ॥ कंपील नामें वासुदेव या, बात सुणी हुलसायो । बाविशमा जिनराज ने सरे. तुरत वंदवा आयो जी ॥ ध. ७१ ॥ तीनवार वंदना करी सरे, सन्मुख सारे सेव । हित उपदेश सुणावियो सरे, श्री तीर्थंकर देव जी ॥ ध. ७२ ॥ वाणी सुणता समो सरणमें,सुणयो शंखकोलाद । कंपिल नामा वासुदेव के, चित्त में हुओ विवाद जी ॥ ध. ७३ ॥ कहै श्री जिनराज कृपा कर, सुणो त्रिखंडी नाथ । मेटो मन की भर्मना स या, कभी न होवे वाद जी ॥ ध० ७४ ॥ नव पदवी में आदकी सरे, प्रभु चार फरमाई । दो दो एक समय नहां लाधे, एक क्षेत्र के मांई जी ॥ ध० ७५ ॥ अहो जिनवर मुज संशय मेटो, अरज करे कर जोर । सांगे शब्द सुभ्क शंख सरीखो, यहाँ करे कुण और जी ॥ ध० ७६ ॥ जंबुद्वीप का भरत को सरे, वासुदेव यहां आयो । ज्योंका त्यों सब मानने सरे, प्रभु भेद संभालायो जी ॥ ध० ७७ ॥ सुणतांही तत्क्षण नरपति, मिलवा मन उमायो । नजरा देखूं जायने स जद, प्रभु एम फरमायो जी ॥ ध० ७८ ॥ सुण हो नरपति चार जणातो, तीनकाल के मांय । एक समान पदवी धर वे, मिले न आपस मांय जी ॥ ध० ७९ ॥ तदपि वंदना करी भूप, गज होदे बैठ सिधाया । पवन वेग जिम चलता सरे, समुद्र के तट आया जी ॥ ध. ८० ॥ हस्थिपर बैठा थकासरे, लंबी नजर लगाई । उड़ती ध्वजा दख रथ ऊपर, खुशी हुवा मन मांही जी ॥ ध० ८१ ॥ उत्तम पुरुष मुज सारखा सरे, वासुदेव वे जावे । सुख से आप पधारजो सरे, एसे कही शंख पूरावे जी ॥ ध० ८२ ॥ सुणियो शब्द कृष्ण जी पाछो, शख बजायो आप । समज गया दोई सेन में सरे, मनसुं कियो मिलाप जी ॥ ध० ८३ ॥ कंपिल नामां वासुदेव फिर, पीछा तुरत सिधाया ।

१२३

पद्मनाभ राजसु मिलवा, आप शीघ्र चल आया जी ॥ ध० ८४ ॥ पदम नाभ नृप वासुदेव को, आदर कियो अपार। राज रिद्ध सभी आपकी सरे, कछु कांही मन वारजी ॥ ध. ८५ ॥ पूछे बातयों त्रिखंड नायक, सुण पदमो तर राय। बिगड़ गई नगरी किण कारण, इसका भेद बताया जी ॥ ध. ८६ ॥ जम्बुद्वीप का भरत को सरे, वासुदेव यहां आयो। राज जमावा कारणे सरे, तिण ने धूम मचायो जी ॥ ध. ८७ ॥ मैं उमराव राज को बाजूं, एसो कियो उपाय। सनमुख होकर करी लड़ाई, पाछो दियो भगायजी ॥ ध० ८८ ॥ इस कारण सु नगरी सागी, बिगड गई सुणनाथ। धुरा पुण्य आपका जिणसे, रही चौगुणी बातजी ॥ ध० ८९ ॥ सुणताही श्री वासदेव यों, रोस करी फरमावे। लाज हीण लापर सुज आगल, झूठी बात बणावेजी ॥ ध० ९० ॥ म्हारे सरीखा उतम पुरुष वे, निरदोषी शिरदार। ज्यामें दोष बताविगो छ थारो, मनुष्य जन्म धिकारजी ॥ ध० ९१ ॥ काढ दियो नगरी सु तिणने, करणी का फल पाया। राज दियो तस पुत्र को सरे, आनन्द ही आनन्द वरताआजी ॥ ध० ९२ ॥ सुणो सयाणा परनारी का सङ्ग करो मत कोय। इण भव में शोभा घणी सरे, परभव में सुख होयजी ॥ ध० ९३ ॥ सागर उतर श्रीकृष्णजी आया, जम्बुद्वीप भरतखण्ड मांई। आगे चालो पाण्डवां स में, आऊं आज्ञा भलाईजी ॥ ध० ९४ ॥ तुरत बैठ रथ मांही पांडव, लेइ द्रौपदी लार। गंगा नदी तिरगया सरे, मन में करे विचारजी ॥ ध० ९५ ॥ नाव लेई ने कोई मत जावो, इण अवसर के मांय। ताकत देखां तेहिनि सरे, किम आवे हरिरायजी ॥ ध० ९६ गोविन्द आगो मलायने सरे, आयो गंगा के तीर। पांचों पांडव नाव छिपावे, कैसे गए भुजवीरजी ॥ ध० ९७ ॥ हरि हिम्मत कर एक हाज में, रथ घोड़ा संगलीन एक हाथ से जलतीरे सरे, शक्ति हुई न हीनजी ॥ध० ९८॥ गंगा के मध्य भाग में सरे, घबराणो घोड़ा हरिराय पुण्यप्रभावे तुरत करी आ, गंगादेवी सहायजी ॥ ध० क्षणमात्र विसराम लेईने, फिर कीनी हुंशियारी। भुजा करी नदी तीरी सरे, उतरगयो गिरधारीजी ॥ध॥ १०० ॥ पांडव देख विचारियो सरे. ये आया हरिराय। हाथ जोड़ जय विजय करीने, सन्मुख लिया वधायजी ॥ ध० १०१ ॥ कृष्ण कहे सुनो पांडवां स थे, पूरा हो बलवान। विना नाव निज भुजा करीने, गंगा तिरिया महानजी ॥ ध० १०२ ॥ पौरुष चढियां पीछे थें तो कबहूं न रहेवो वारया। जो एसा समर्थ थाता तो, क्यो पद्मनाभ से हारयाजी ॥ ध० १०३ ॥ सांच बात कह. सुणो नाथजी मैं, किस्ति पर चढ आया। फक्त आपको बल देखणने, बैठरया तरु छायांजी ॥ ध० १०४ ॥ सुन के बात पाण्डवां ऊपर, रोस हरिने आयो। बल दिखलाऊं आपनो सरे, इम कही वज्र उठायोजी ॥ ध० ॥ १०५ ॥ देख द्रोपदी

अर्ज करे प्रभु, तुम हो दीन दयाल। मुझ अबला पर कृपा कीजे, अपनो विरद संभालजी ॥ ध० ॥ १०६ ॥ सुनकर दया ऊपनी दिल में, हरिजी आप विचारयो राख्यो सुहाग द्रौपदी को जब, रथ पर कोप उतारयोजी ॥ ध० १०७ ॥ या काँई कुमति उपनी थाने, कृतघ्न पणो बतायो। देश छोड़ो है पाण्डवां स थूं, हरि हुकम फरमायो जी ॥ ध० १०८ ॥ गया द्वारका कृष्णजी सरे, पाण्डव हस्तनापुर आया। मात पिता ने सांडने स सब वीतक हाल सुणायाजी ॥ ध० १०९ पण्डुराय कहे पाँडवाँस थाने, भूंडो कीनो काम गुण ऊपर अवगुण कियो स थे; जगमें हुवा बदनामजी ॥ ध० ११० ॥ सब ही मिल सल्ला करी सरे, गुन्हो करानो माफ। पत्थर भेठ तुरत मुवाजी, गया द्वारका आपजी ॥ ध० १११ ॥ विनय कर वंशीधर पूछे, कैसे हुवो है आवो। जो मुझ लायक काम होवे सो, भवाजी फरमावोजी ॥ ध० ११२ ॥ सुन गोविन्द थारी तीन खण्ड सें, आण अखंड वरताय। कहां जाय पाण्डव वसे स थूं, मुजकों रहो बतावजी ॥ ध० ११३ । मैं तो बोल बदलूं नहीं सरे, भूमी आपने आपी। समुद्र पाणी हटाय बसे पांडव, मिले न आय कदापिजी ॥ ध० ११४ ॥ काम करी कुन्ता महाराणी, फिर हस्तनापुर आई। पांचों पाण्डव हरि हुकम से, मथुरा जाय बसाईजी ॥ ध० ११५ ॥ साधु तपस्वी भूपती सरे, ज्ञानी और धनवान। चतुर होवो तो पाँच जणा को, मत करजो अपमानजी ॥ ध ११६ ॥ नेम धर्म तन मन से पालो, भव भव में सुखदाई। सती शीलमें दृढ रहितो, निज वर अपने आईजी ॥ ध० ११७ पाण्डव साथे सती भोगवे; पंचेन्द्रिय सुख भोग। कितनोक काल निकल्यां पीछे, स्थेवरां को लागो जोगजी । ध० ११८ ॥ वाण सुण वैराग धरीने पाँचोंही पाण्डव लार। सती द्रोपदी साथ हुई, छैऊं लीनो संयम भारजी ॥ ध० ११९ पांचों ही पाण्डव करणी करके, आठों ही कर्म खपाय। जन्म मरण दुख मेटने सरे, मोक्ष विराजा जायजी ॥ ध० १२० ॥ इम जाणी ने सुणो सयाना, शील अखंडित पालो। नरभव लाहो लेयने सरे, मोक्षपुरी झट चालोजी ॥ ध० १२१ । चंदनबाला राजमतीजी, सीता, सुभद्रा ज्ञान। शील व्रत में दृढ रही स ज्याँरा, जिनवर किया बखाणजी ॥ ध० १२२ ॥ सती द्रौपदी संयम पाली, गई पंचमें देवलोक। तिहां से चव महाविदेह जन्म ले सती जायगा मोक्षजी ॥ ध० १२३ ॥ उगणीसें सत्तावन वर्षे, चौमासो श्रेयकार। शहर जावरे जोड़ बनाई, सूत्र के अनुसारजी ॥ ध० ॥ १२४ ॥ महामुनि नंदलाल तणा शिष्य, खूबचन्द इम गावे। शीलवती सतियांका नाम से, मन वंछित सुख पावेजी। ध० १२५।

॥ ढाल ढाल ॥ २ ॥ सुबाहु कुंवर की (तर्ज ख्याल ॥ सफल कर लीनो नर भव आपणो, धन कुंवर सुबाहु ॥ टेर ॥ इणहिज जंबु

१२५

द्वीप का सरे, भरत क्षेत्र के माय। हस्तिशिखर नगर भलो सरे, अदीनशत्रु तिहां पर्जी ॥ ध० १ सहस्र अंतेवर माय धारणी
राणी है परधान। तउराणी अंगजात सुबाहु, कुंवरपद पुरुषवानजी ॥ ध० २ विनयवंत है मात पिता का, पूरण आज्ञाकारी।
योवन वय में जानकुंवर को, परणाई पांनसोनारी जी ॥ ध० ३ ॥ सुख भोगे संसार का सरे, तिण अवसर के माँय। विचरत वीर
१२६ जिनेश्वर आया,परिषदा वंदन जायजी ॥ ध० ४ ॥ खबर हुई तब कुंवर सुबाहु, कीनी तुरत तयारी। वीर जिनंद को वंदन कारण,
निकल्यो सज असशरीजी ॥ ध० ५ ॥ वंदना कर जिनवर के सन्मुख, बैठापरिषदा माय। वाणी सुण आनन्द भयो सरे, कह्यो
कहाँ लग जायजी ॥ ध० ६ ॥ हाथ जोड यूं अरज करे प्रभु, धन्य वो नर भव पाय। संयम पद धारण करे सरे ये मुझ शक्ति
नायजी ॥ ध ७ । मुझ ने तो कृपा कर प्रभु जी, श्रावक का व्रत दीजे। वीर कहे जिम सुख हो तिम कर, धर्म में ढील न कीजेजी ॥
ध० ८ ॥ श्रावकव्रत आदर्या सरे, हर्षं मगन मन माय। तीन बार वंदन करी सरे, आयो जिण दिशी जायजी ॥ ध ९ ॥ रूप देख
गौतम स्वामी के, मन में उपनो खंत। वीर जिनेन्द्र ने पूछियो सरे, पूर्व भव विरतंतजी ॥ ध० १० ॥ वीर कहे सुन गोयमा सरे,
पूरव भव के माँय। सुमुखनामो गाथापति तो,रिद्धवंत कहवायजी ॥ ध० ११ ॥ विचरत विचरत धर्म घोष, स्थेवर आया तिणवार।
तस शिष्य हैं घोरतपस्वी, सुदत्तजी अणगारजी ॥ ध० १२ ॥ आज्ञा ले गुरु देवकी सरे. असणा-दिक के काज। मासखमण के
पारणे सरे, गया महामुनिराजजी ॥ ध० १३ ॥ फिरता फिरता आया मुनिवर सुमुख घर तिणवार। दान दियो शुद्ध भाव से सरे,
परत कियो संसारजी ॥ ध० १४ ॥ ये हिज कुंवर सुबाहु प्रत्यक्ष, वहां से चवकर आयो। दान तणा परभाव से सरे, रूप संपदा
पायोजी ॥ ध० १५ ॥ हे भगवंत ये कुंवर सुबाहु, लेसी संयम भार। वीर कहे हाँ संजम लेजो संशय नहीं लगारजी ॥ ध० १६ ॥
हस्थिशिखर नगर थकी सरे, जिनजी कियो विहार। भव जिवाँ ने तारवा सरे, करवा पर उपकारजी ॥ ध० १७ ॥ कुंवर सुबाहु १२८
श्रावक सेठा, जीवादिक ना जान। अथिर जान संसार को सरे, पाले जिनवर आनजी ॥ ध० १८ ॥ एक दिवस पौषध शाला में;
तेलो कियो कुंवार। धर्म जागरण जागताँ सरे, मन में किधो विचारजी ॥ ध० १९ ॥ धन्य है गाम नगरपुर पाटण, जहां प्रभु रहे
विराज। धन्य पुरुष जो संयम लेकर सारे आतम काजजी ॥ ध० २० ॥ ये संसार समुद्र भारी, जिसका छेह न पार। जन्म मरण
इस जीवने सरे, किया अनन्तीवारजी ॥ ध० २१ ॥ जो खुद कृपाकर, इहां सरे, समोसरे जिनराय। तो सँयम लेसो सहीसरे,

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

जन्ममरण मिटजायजी ॥ ध० २३ ॥ हस्तिशिखर नगर में सरे, खबर हुई तिणवार । सुबाहु कुंवर वंदन चल्यो सरे, और घणो परिवारजी ॥ ध० २४ ॥ वंदना कर जिनवर के सन्मुख, बैठा धर अनुराग । वाणी सुण वीतरागनी सरे; अधिक चढ्यो वैरागजी ॥ ध० २५ ॥ हाथ जोड ने अर्ज करे, प्रभु यह संसार असार । मात पिता को पूछने स मैं, ले सु संयम भारजी ॥ ध० २६ ॥ वीर कहे जिम सुख हो तिमकर, वन्दना कर घर आयो । माता के चरणार नमनकर, सर्व विरतान्त सुनायोजी ॥ ध० २७ ॥ संयम लेसू मातजी सरे, आज्ञा दो मुझे आप । एमसुणी माता मूरछाणी, लग्यो वचन को तापजी ॥ ध० २८ ॥ सावचेत हो मात बिलखती, बोले वचन विचार । संजम मारग दोयलो सरे, चलणो खाँडाधारजी ॥ धा० २९ ॥ विविध भांत समझावियो सरे, एकन मानी बात महोत्सव की त्यारी करी सरे; आज्ञा आपी मातजो ॥ ध० ३० ॥ सहस्र पुरुष उठावे पेली, सेवका तुरत बनाय । गोद लेई बैठा मात जी, तहएयाँ बीजे वायजी ॥ ध० ३१ ॥ लप संयममें माकम फोडता, तूं कायर मत थीजे । अष्ट कर्म को अन्त करीने, शिवपुर डेरा दीजेजी ॥ ध० ३२ ॥ जा लोग्या जिनवर के सन्मुख, बोले यूं कर जोड । ये मुझ वल्लभ नानड्यो सरे; संयम ले घर छोडजी ॥ ध० ३३ ॥ ३३ ॥ क्षमावन्त समता को सागर, घणा गुणा का दरियो । संजम कीजे नाथजी स यो, जन्म मरणसे डरियोजी ।ध०३४। माला मोती खोलिया सरे; खोलया सब श्रृङ्गार । सनमुख ऊभी मातजी सरे पड रही आँसुधारजी ॥ ध० ३५ ॥ वेस कियो मुनिराज को सरे; कर पंचमुष्टी लोच । पाप अठार त्यागिया सरे, मिट गयो मन को सोचजी ॥ ध० ३६ ॥ जिनवर को निजनंद सोपके, मात ठिकाने आई । सदा विषय सुख भोगवे सरे, मगन रहे मन मांईजी ॥ ध० ३७ ॥ हस्तिशिखर नगरसें सरे, प्रभुजी कियो विहार । साथ रहे सेवा करे सरे; सुबाहु अणगारजो ॥ ध० ३८ ॥ शुद्ध संयम पाले शिवपुरकी; मन में बडी उमंग । विनय करी स्थेवरों के पासे, भएया ग्यारे अंगजी ॥ ध० ३९ ॥ बहु वर्षों का संयम पालो; टाली आतम दोष । साठ भक्त अणसण अराधी, गया प्रथम सुरलोकजो ॥ ध० ४० ॥ अंग इग्यार में वीर जिनेश्वर, कर दीनो निस्तार । पन्द्रह भव करी महाविदेह में, जासी मोक्ष मझारजी ॥ ध० ४१ ॥ उगणीसे इकलट्ठे के वर्ष, चेत महिनो जान । शुक्ल पक्षकी छट्ठ बुधवारे, करी जोड परमाण जो ॥ ध० ४२ ॥ महामुनि नन्दलालजी सरे; ज्ञान तणा दातार । जिहाँ तिहाँ शिष्य के सरे वरते मङ्गलाचारजी ॥ ध० ४३ ॥ ढाल ४ ॥

नमिराज ऋषि ॥ तर्ज ॥ पणिहारी की ॥ (मिथला नगरी ना राजवो ॥ नमिराजाजी २ ॥ विदेह देश को नाथ ॥ राजाजी ॥ १ ॥ १२७

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

सहजेदी मन वैराग्य में, नमि २। हित परजा के साथ ॥ राजा २ ॥ देवलोक सम पाळिया, नमि २। अन्तेवर सुख भोग ॥ ३ ॥ एक दिन तस तन उपनो, नमि २। सबल दाह ज्वर रोग ॥ राजा ४ ॥ बनिता मिल चन्दन घिसे, नमि २। पतिहित काज उच्छाव ॥ राजा ॥ ५ ॥ खल खन बाजे चूड़ियां, नमि। शब्द सुहावे नांय ॥ राजा ॥ ६ ॥ एक एक रखि दूजी सहु, नमि २। दीनी तुरत उतार ॥ राजा ॥ ७ ॥ पति परमेश्वर सारखा, नमि २। जो जाने सो पतिव्रता नार ॥ राजा ८ ॥ पूछे भूपति कहो प्रिया; नमि २। अब नहीं होत अवाज ॥ राजा ९ ॥ खट खट हुवे बहु मिल्या, नमि २। सोचो गरीब निवाज ॥ राजा १० ॥ परसंजोगे दुःख हुवे, नमि २। इणमें संशय नहीं कोय ॥ राजा ११ ॥ रमन करें यों ज्ञानमें, नमि २। फिर दुख काहे को होय ॥ राजा १२ ॥ एकान्त भावना भावता नांस २। जाति स्मरण पायो ज्ञान ॥ राजा १३ ॥ शीतल चन्दन लेपतां, नमि २। मिटगई तनकी ताप ॥ राजा १४ ॥ भोग रोग सम जाणने, नमि २। दियो पुत्र को राज ॥ राजा १५ ॥ मुनी हुआ ममता तजी, नमि २। केवल मोक्ष के काज ॥ राजा १६ ॥ शब्द कोलाहल हो रह्या, नमि २। उस वक्त नगरी के मांय ॥ राजा ॥ १७ ॥ सकेन्द्र भी आईयो, नमि २। ब्राह्मण रूप बनाय ॥ राजा १८ ॥ करण वैराग्य की पारखा, नमि २। यूं बोले बचन विचार ॥ राजा १९ ॥ तुम दिक्षा से महामुनि, नमि। यह रुदन करे नरनार ॥ राजा २० ॥ स्वार्थ का सब रूरणा, विप्र व्हालाजी २। दियो तरु पक्षिको न्याय ॥ व्हालाजी ॥ २१ ॥ जोवो नजर लगायने, नमि २। थारा भवन जले महाराय ॥ राजा २२ ॥ राज तजा रमणी तजी, विप्र, तज्या पुत्र पोता परिवार ॥ व्हला ॥ २३ ॥ निर्मोही थई निकल्यो। विप्र २। मैं लीनों सयमभार ॥ व्हाला २४ ॥ मुझ वस्तु कोई नहीं जले। विप्र। तुम बोलो वचन विचार ॥ व्हाला २५ ॥ रक्षा निमित्त करायने नमि २। गोपुर सहित पागार ॥ राजा २३ ॥ भीतर फिरणी, खाई बारणे, नमि २। बुरजोंपे शस्त्र धराय ॥ राजा २७ ॥ इतनो करने जापतो, नमि २ तुम फिर हो जो मुनिराय ॥ राजा २८ ॥ सम्यक श्रद्धा मुझ नगर के, विप्र। क्षमा को हढ पागार ० व्हला २९ ॥ त्रण गुप्ति नामे किया, विप्र २। फिरणी खाई और द्वार ॥ व्हाला ३० ॥ शरीर धनुष्य तप बाण से, विप्र। करूं कर्म रिपु को नास ॥ व्हाला ३१ ॥ रक्षा करी मैं नगर की, विप्र। तुम समझो बुद्ध विकास ॥ व्हाला ३२ ॥ भवन करावे बहु सोभिया, नमि २। एक पाणी दीन प्रसाद ॥ राजा ३३ ॥ पिछे तुम्हारे वंश में, नमि २। कुटुम्ब करेगा याद ॥ राजा ३४ ॥ चालता मारग बीच में, विप्र २। लेणो दुक बिश्रास ॥ व्हला ३५ ॥ वह नर यह कहो क्यों करे, विप्र २। जिनके करनो मोक्ष मुकाम। व्हाला ३६ ॥ चोरादिकने वश करो, नमि २

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

देकर दण्ड करूर ॥ राजा ३७ ॥ खेम करी निजग्राम में । नमि २ । फिर लीजो योग जरूर ॥ राजा ३८ ॥ छोड़ असली चोरकूं । विप्र२ नकली कुंण पकड़े जाय ॥ व्हाला ३६ ॥ असली चोर को वश किये । विप्र २ जो थे विषय कषाय ॥ व्हाला ४० ॥ श्राय नम्या नहीं आपन । नमि२ जो जो सबल सिरदार ॥ राजा ४१ ॥ उनकों जाती वश करो । नमि२ तुम फिर होओ अणगार ॥राजा४२॥ शूर कहावे वो जगत में । विप्र२ जो जिते सुभट दशलाख ॥ व्हाला ४३ ॥ जिससे शूरो कोन है । विप्र २ थारी सुणता उगडे आंख

 ॥ व्हाला ४४ ॥ दुर्जय पच इन्द्रिय पुनः । विप्र२ सबल कषायादिक चार ॥ व्हाला ४५ ॥ जो नर याने जीतियो । विप्र २ सो नर जीत्यो सब संसार ॥ व्हाला ४६ ॥ मोटो यज्ञ करो तुम्हें । नमि२ विप्र जिमावो स्वाम ॥ राजा ४७ ॥ दीजो करसे दक्षिणा । नमि २ किजो जक्त में नाम ॥ राजा ४८ ॥ दान कोई नर दे सके । विप्र १ कोई से दियो नहीं जाय ॥ व्हाला ४६ ॥ दोनों को संयम श्रेय है । विप्र२ मुक्ति तणो फल थाय ॥ व्हाल ५० ॥ घोराश्रम को छोड़ के । नमि २ कियो सोहिलाश्रम से प्रेम ॥ राजा ५१ ॥ इनसे तो यांहि रहेणो सिरे । नमि २ करणो कुछ व्रत नेम ॥ राजा ५२ ॥ मास मास तप जो करे । विप्र२ कुशाग्र सम अन्न खाय ॥ व्हाला ५३ ॥ सम्यक् श्रद्धाविन जीवकों । विप्र २, तिरणो हुवे कभी नाय ॥ व्हाला ५४ ॥ हिरण सुवर्ण रत्नाकरी । नमि २, धनके भरद्यो भण्डार ॥राजा ५५॥ चतुरंग सैना बढायने । नमि २, फिर होवों अणगार ॥ राजा ५६ ॥ धन थोडो तृष्णा घनी । विप्र २, जैसे नहीं आकाश को अन्त ॥ व्हाला ५७ ॥ लोभी नर धापे नहीं । विप्र २, अग्नि सिंधु को दृष्टान्त ॥ व्हाला ५८ ॥ इण कारण तृष्णा घनी । विप्र २, मैं धारलियो सन्तोष ॥ व्हाला ५६ ॥ तप संयम धन साधु के । विप्र २, पूरण भरिया कोष । व्हाला ६० ॥ या योवन वय आप की । नमि २, ले रया बैराग्य से योग ॥ राजा ६१ ॥ घर घर जावोगा गोचरी । नमि २, देखोगा गृहस्थ का भोग ॥ राजा ६२ ॥ यह सुख राज संभालने नमि २, छेदासो मन मांय ॥ राजा ६३ ॥ करजो काम विचारने । नमि २, फिर पश्चाताप न थाय ॥ राजा ६४ ॥ काम भोग दोऊँ लोक में । विप्र २, मैं जाणुं जहर समान ॥ व्हाला ६५ ॥ अभिलाषा भी जो करे । विप्र २, पावे दुरगति खान ॥ व्हाला ६६ ॥ प्रश्न दश पूरा हुवा । नमि २, दृढता देख हर्षाय ॥ राजा ६७ ॥ प्रगट भयो सुर इन्द्रजी । नमि २ ब्राह्मण रूप मिटाय ॥ राजा ६८ ॥ कर जोडी स्तुति करे । नमि २, उत्तम बुद्धि निधान ॥ राजा ७१ ॥ शिव सुख पाजो साधुजी । नमि २, लोक में उत्तम स्थान ॥ राजा ७२ ॥ चरण नमि गुण गावजो । नमि २, इन्द्र गयो निज धाम ॥ राजा ७३ ॥ निर्मल संयम पालने । नमि २, मुनिवर मोक्ष गुक्काम ॥ राजा ७४ ॥

चौमासो करी ... । ... छाडा तिहीं शहेर ।। राजा ७५ ।. मेरे गुरु नन्दलाल की । नमि २, है तुम्ह उपर महेर ।। राजा ७६ ।।

-ऋषभ भवान्तरी-(तर्ज:—कबधारी जिन वन्दिये) ऋषभ जिनन्द भगवान को,तेरा भवाँ को चरित्र सुणीने ।। ऋषभ ।।टेर।।
जंबूद्वीप के मध्य में, पश्चिम महा विदेह जान, सुणीजे । देवपुरी सम शोभतो, नगर सुपईठ बखान, सुणीजे ।। ऋ० १।। सुखदाई परजा तणो, प्रियंकर नामा राय. सुणीजे । अति धनवंतो तिहाँ वसे धन्नो सारथ वाह, सुणीजे । ऋषभ २ ।। लाभ कमावण कारणे, थयो छे आप तइयार; सुणीजे । निज नगरी सूं नीकल्यो, घणां व्योपारी छे लार, सुणीजे ।। ऋ० ३ ।। मारग आता मोलवी, करता जाय मुकाम. सुणीजे । शीतल छाया देखने, वन में कियो विश्राम, सुणीजे ।। ऋ० ४ ।। तिण वेलाते पडावमें तपस्वी मोटा मुनिराय । सुणीजे । चौमासी ने पारणे, फिरतां आया तिण मांय, सुणीजे ।। ऋ० ५ ।। दूर थी आता देखने, सेठ को हर्ष्यो मन,सुणीजे । सन्मुख जा बन्दन करी आज दिहाड़ो धन्न, सुणीजे ।। ऋ० ६ ।। और न वस्तू सूझती, सूं करिये सन्मान, सुणीजे । ना न कहे मुनि जब लगे देऊ घृत नो दान, सुणीजे ।। ऋ०७ ।। मुनिवर पातर माँडियो:सुर परीक्षा करी आन, सुणीजे । ना न कह्यो मुनि जब लगे,दीजे घृतनो दान, सुणीजे ।। ऋ० ८ ।। पात्र से बाहिर निकली जातो हुओ दर्शाय । सुणीजे । निश्चल मन चिंते सेठ जी, घृत मुनिवर नो जाय । सुणीजे ।। ऋ० ९ ।। या. विधि पुण्य संचय करी, नगरी वसंतपुर आय, सुणीजे । क्रय विक्रय कीनो अति घणो, गहरी टूटी अन्तराय, सुणीजे ।। ऋ० १० ।। सेठ तिहां से पीछो फिर्यो, घर आयो लाभ कमाय । सुणीजे । पहलो भव थयो ऋषभ को. आनन्द में दीन जाय, सुणीजे ।।ऋ० ११।। दूजे भव जुगल्या हुआ,उत्तर कुरू अवतार, सुणीजे । तीजे भव हुआ देवता, पहिला स्वर्ग मुझार, सुणीजे ।।ऋ० १२।। विजय भली पुखलावती पूर्व महाविदेह मांय, सुणीजे । न्याय निपुण दया निधि, सत बल नामाराय, सुणीजे ।। ऋ० १३ ।। देवतणी स्थिति भोगने अनुभव्या सुख अपार; सुणीजे । ते सुर चवी तेहनो, सुत हुओ महाबल नाम कुमार, सुणीजे ।। ऋ० १४ ।। बाल अवस्था नीकली, कलबल बुद्धि अनूप, सुणीजे । तातने पाट कालान्तरे हुओ महाबल भूप, सुणीजे ।। ऋ० १५ ।। रात दिवस रहे महल में राज काज तज दीन, सुणीजे । नाटिक जोवे नव नवा भोग मांही लयलीन, सुणीजे ।। ऋ० १६ ।। इतने आय उतावलो मंत्री करे अरदास, सुणीजे । भोग तजी जोग आदरो आयुष रह्यो एक मांस, सुणीजे ।। ऋ० १७ ।। भूप पूछे व्यकुल थको, ते किम जाणी बात, सुणीजे । विद्याचारण एक मुनि, मुझने कह्यो साक्षात, सुणीजे ।। ऋ० १८ ।। आयुष तो एक मास को; इनमें कहो क्या होय, सुणीजे । भोग मांही

१३०

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

नित्य राचने बक्त दियो सब खोय, सुणीजे ॥ ऋ० १ ॥ मंत्री कहे एक दिवस को पाले संजमभार, सुणीजे । ते पण जावे मोक्ष में संशय नाहीं लगार, सुणीजे ॥ ऋ० २० ॥ आठ दिवस बीत्या पीछे, लीनो संजमभार, सुणीजे । तिण हीज दिन वैराग्य से पच्छक दियो संथार, सुणीजे ॥ ऋ० २१ ॥ बावीस दिन दिक्षा पालने काल करी मुनिराय, सुणीजे । हुआ ललितांग देवता दूजा स्वर्ग के मांय, सुणीजे ॥ ऋ० २२ ॥ स्वयंप्रभा देवी तेहने तिण सेती राग अपार, सुणीजे । क्षणभर जुदा नहीं रहे व्यापत विषय विकार, सुणीजे ॥ ऋ० २३ ॥ आपो तिहांहिज आपदा इम बोले संसार, सुणीजे । देवी चवी तब देवता अरति करे है अपार, सुणीजे ॥ ऋ० २४ ॥ मंत्री महा बल भूप को तेभी हुओ तिहां देव, सुणीजे । आयो ललितांग देव पै विनवे यों स्वमेव सुणीजे ॥ ऋ० २५ ॥ इतनो सोच न कीजिये देवी ते देसूं मिलाय, सुणीजे । काम सरे उद्यम कियां तेहनो है एक उपाय सुणीजे ॥ ऋ० २६ ॥ देवी चवी धात्री खण्ड का पूर्व महा विदेह मांय, सुणीजे । पुत्री हुई छे सातमो विप्र तणे घर जाय ॥ सुणीजे ॥ ऋ० २७ ॥ तात तेहनो नागलह तो दुखियो है पाप प्रभाव सुणीजे । अनतन से निज कुटुम्ब को कर सके नहीं निरभाव, सुणीजे ॥ ऋ० २८ ॥ घबरायो इम चिंतवे जो अब पुत्री होय, सुणीजे । चल्यो जासूं परदेश में घर में रहूँ नहीं कोय, सुणीजे ॥ ऋ० २९ ॥ तस नारी हुई गर्भणी विप्र धरे अति द्वेष, सुणीजे । पुत्री हुई फिर गांभली भाग गयो परदेश, सुणीजे ॥ ऋ० ३० ॥ प्रेम बिना पाली पुत्री का नागश्री निज मांय, सुणीजे । रोष बसे निज पुत्री को नाम दियो कुछ नांय, सुणीजे ॥ ऋ० ३१ ॥ नाम निनामी लोगां दियो, दुःख मांइ दिन जाय, सुणीजे । करती वन्न आजीवका, टंक लावे टंक खाय ॥ सुणीजे ॥ ऋ० ३२ ॥ तिण बन में एक महा मुनि पाया है केवल ज्ञान, सुणीजे। महिमा करन मुनि वंदवा मिलिया सुरासुर आन सुणीजे ॥ ऋ० ३३ ॥ देख उद्योत तिहां गई सुणियो तब उपदेश, सुणीजे । व्रतधारी हुई श्राविका हृदय हर्ष विशेष । सुणीजे ॥ ऋ० ३४ ॥ मुनि वंदि गई निज घरे रह सतियों के पास, सुणीजे । सेवा करे बहुतपतपे करती ज्ञान अभ्यास, सुणजे ॥ ऋ० ३५ ॥ शीलवती बाड धर्मणी संग माही जस लीध, सुणीजे । आलोचना कर शुद्ध मने आखिर अनशन कीध, सुणीजे ॥ ऋ० ३६ ॥ इहां से जाय उतावला दो निहाणो कराय । सुणीजे, ललितांग सुर सुन सजथयो पहुँचो तुरत तिहां जाय । सुणीजे । ऋ० ३७ ॥ बात कही सहु मांडने जिम तिम मन ललचाय । सुर्णीजे, ललितांग सुर निज स्थान के गयो निहाणो कराय । सुणीजे ॥ ऋ० ३८ ॥ ते मर फिर देवी हुई सुर मन हर्ष अपार । सुणीजे, नाटिक जोवे नव नवा भोगवे भोग उदार । सुणीजे ॥ ऋ० ३८ ॥ विजय भर्ता १३१

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

पुखलावती पूर्व महा विदेह मांय। सुणीजे, लोहागर नगर भलो सुवर्णजंग। महाराय सुणीजे ॥ ऋ० ४०॥ तिण घर तीको नंद हुओ ललितांग सुर को जीव। सुणीजे, लदमी राणी की कुख को वज्र जंग नाम सजीव। सुणीजे ॥ ऋ० ४१॥ चलि तिहां षट खण्ड को धणी वज्रसेन नाम भूपाल। सुणीजे, ते देवी मरतिणने घरे पुत्री हुई सुख माल। सुणीजे ॥ ऋ० ४२॥ नाम दियो तस श्रीमती घर में बहु सुख थोग सुणीजे। रूप कला गुण सोहती, तिण हुई छे वर ने योग सुणीजे ॥ ऋ० ४३॥ चक्रवर्ती को जन्म गांठ पै, मिलीया है कई भूपाल, सुणीजे। निज नन्दन लेई आवीयो, सुवर्ण जग भी चाल, सुणीजे ॥ ऋ० ४४॥ तिण वेलाँ ते श्रीमती, जातो देखी सुर विमाण। सुणीजे, मन मांहीं चिन्तित उपन्यो, जाति स्मरण ज्ञान। सुणीजे ॥ ऋ० ४५॥ ललितांग सुर तिहां उपनो; पायो मनुष्य अवतार, सुणीजे। तेहाज पति निरधारस्यूं, लानो अभिग्रह धार। सुणीजे ॥ ऋ० ४६। निज चित्र लीखीयो फलक पे, धरियो भवन के द्वार, सुणीजे। देवी स्वयं प्रभा स्वयं प्रभा, कहसी ते मुझ भरतार, सुणीजे ॥ ऋ० ४७॥ ते वेला मंडप सुर रचयो, मानो सुर विमान, सुणीजे। ते मांहीं निज निज आसणे बैठा है भूपति आण, सुणीजे ॥ ऋ० ४८॥ चक्रवर्ती नजराणो ले रह्यो, हो रह्या अतर पान, सुणीजे। बाजिन्तर बाजी रह्या, जाचक ने देता दान, सुणीजे ॥ ऋ० ४९॥ वर्षी उत्सव मनाय ने, जलुस जोडी नरनार, सुणीजे। राज भवन मांही आवतां, वज्र जंग कुंवर भी साथ. सुणीजे ॥ ऋ० ५०॥ चित्र देखयो ते कुंवरजी, हुओ जाति स्मरणवत, सुणीजे। स्वयं प्रभा स्वयं प्रभा इम कयो, कुंवरी जाणयो निज कंथ, सुणीजे ॥ ऋ० ५१॥ तिण हिज अवसर भूपती, पुत्रीने पुछयो विचार, सुणीजे। तूं कहे तो सगपण करां. नहीं तो स्वयंवर धार, सुणीजे। ऋ० ५२॥ तब कुंवरी का कहन से, स्वयवर मंडप कीध ॥ सुणीजे ॥ कंवरी वरयो तिण कुंवरने. हुवो मनोरथ सिद्ध ॥ सुणी जे ॥ ऋ० ५३॥ तिण अवसरते निधीपति, श्री मती पुत्रा प्रधान ॥ सुणीजे ॥ तुरत व्याहा तिण कुंवरने, महोत्सव कर मंडाण ॥ सुणीजे ऋ० ५४॥ डायचो दीनो अतिघणो, अन्त [illegible] कर दाध ॥ सुणीजे ॥ पुत्री पहुँचाई सासरे, बहुबिधि शिक्षा दीध ॥ सुणीजे ऋषभ ५५॥ निकल्यो लेई निज सायबी, सुवर्ण जंग नरेश ॥ सुणीजे ॥ रंग बिनोद होतांथकाँ, आवीया आपणे देश ॥ सुणीजे ऋषभ ५६॥ कंवर ने राज दई करी, सुवर्ण जग महाराय ॥ सुणीजे ॥ संयम ले कर्म काटने, मोक्ष विराज्या जाय ॥ सुणीजे ऋषभ ५७॥ राज पाल वज्र जग हिवे, श्रीमती छे पटनार ॥ सुणीजे ॥ निशदिन रहे वैराग्य में, जाणयो अनित संसार ॥ सुणीजे ऋषभ ५८॥ मध्य रात्रि राणी प्रत्ये, इम बोले महाराय ॥ सुणीजे

१३२

सुपना सरीखी साहबी, अवसर बीतयो जाय ॥ सुणीजे ऋषभ ५९ ॥ जो मन होवे थांयरो, प्रगट हुआ प्रभात ॥ सुणीजे ॥ राज कुंवर ने स्थापने, संयम लेवां साथ ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ६० ॥ राणी कहे सुण रायजी, मुझ मन येही विचार ॥ सुणीजे ॥ धर्म में ढोला न कीजिए, निकलो तज संसार ॥ सुणीजे ऋषभ ६१ ॥ इम विचारी ने सो गया. निन्द्रा में भरपूर ॥ सुणीजे ॥ पलटी नियत निज पुत्र की, ध्यायो ध्यान करूर ॥ सुणीजे ऋषभ ६२ ॥ जन्म लियो गर नृप के, मिलियो सब सुख साज ॥ सुणीजे ॥ तात प्रलोक हुवे कभी, कब मिलसी मुझराज ॥ सुणीजे ऋषब ६३ ॥ ततक्षिण उठ आयो तिहां, सुता छे बापने साय ॥ सुणीजे ॥ लोभ वशे निर्दय थको, दीनी छे आग लगाय ॥ सुणीजे ऋषभ ६४ ॥ दुष्ट हणिया मा बापने, अनर्थ कीदो अपार ॥ सुणीजे ॥ दोहुं मरी जुगल्या यथा, उत्तर कुरू अवतार ॥ सुणीजे ॥ ऋषभ ६५ ॥ देव थया भव आठ में, पहिला स्वर्ग मझार ॥ सुणीजे ॥ पूर्व विदेह नव में भवे, उपनो वैद्य कुंवर ॥ सुणीजे ऋषभ ६६ ॥ नाम जीवा नंद थापीयो, करतो पर उपकार ॥ सुणीजे॥ राजादिक ना सुत भला, मित्री है तेहने चार ॥ सुणीजे ऋषभ ६७॥ पांचमो मित्र सेठ को, केशव नाम कुंवार ॥ सुणीजे ॥ श्रीमती को जीव जाणजो, होसी श्रीयाँस कुंवार ॥सुणीजे ऋषभ६८ ॥ इतने तो विरचत आईया, कीट सहित अणगार ॥ शुणीजे ॥ मुनि तन मित्र देखने: उपनी करूणा अपार ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ६९ ॥ पांचों मित्र कहे वैद्य ने, येह मुनि को दुःख टार ॥ सुणीजे ॥ इससे मोटो फिर जगत में, और कैसो उपकार ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ७० ॥ ओषधी है सब मुझ कने, तीन वस्तु की चाय ॥ सुणीजे ॥ तेल चन्दन ने कामली, देसूं रोग मिटाय ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ७१ सेठ ने जाचयो जायने, बात कही सब खोल ॥ सुणीजे ॥ दीनी ते तुरत निकाल के, तीनों ही वस्तु अमोल ॥ सुणीजे ऋषभ ७२ ॥ लक्ष ओषधी तेल चोपड्यो, रतन कंबल दीनी वींट ॥ सुणीजे ऋषभ ७३ ॥ मुआं कलेवर आंयने, कीट सभी धर दीध ॥ सुणीजे ॥ बावन चंदन चर्चीयो, तीन दफे इम कीध ॥सुणीजे ऋषभ ७४ ॥ वेद जीवा नद मुनि तणों, कीदो निरोगो तन्न ॥ सुणीजे ॥ मोटो लाभ कमावियो, लोग कहे धन्न धन्न ॥ सुणीजे ऋषभ ७५ ॥ फिर छहुं मित्री साथ में, लीनो सयम भार ॥ सुणीजे ॥ दस में भव हुवा देवता, बारमां स्वर्ग मुझार ॥ सुणीजे ऋषभ ७६ ॥ विजय भली पुख्खलावती, पूर्व महा विदेह मांय ॥ सुणीजे ॥ पुंडरी गणी नगरी भली, वज्रसेण तिहां राय ॥ सुणीजे ऋषभ ७७ ॥ तीर्थंकर पद सहित छे, धारणी तस पटनार ॥ सुणीजे ॥ ते सुर चविते हनी कुंख में पुत्र पणे अवतार ॥ सुणीजे ऋषभ ७८ ॥ वज्र नाभ बाहु सु बाहु पीठ महापीठ ॥सुणीजे॥ ज्येष्ट पुतर चक्रवृत छे, होसी ऋषभ भगवंत ॥ सुणीजे ऋषभ ७९ ॥ श्रीमती को जीव

१३३

उगणी से साठ चौवीस में, ऋषि पंचमी गुरुवार॥ सु णीजे॥ जोड़ी ऋषभ भवन्तरि, ऋषभ चरित्र अनुसार॥ स० ऋषभ १२१॥

॥ सागर सेठ ॥ (तर्ज वीरा म्हारा गजथकी उतरो) जबुद्वीपका भरतमें, नगरी पद्म पुरी साइजी। जितशत्रु तिहां राजवी परजाने सुखदाई रे ॥ १ ॥ मानव लोभ निवारिये, लोभ बुरो जग मांहीरे॥ मा० ॥ टेक ॥ सागर सेठ तिहां वसे, धन्न घणो धरमाईरे । पुत्र सुचार सुहावणा कुलदीपक गुणग्राहीरे॥ मा० २ बेटानी बहुवा बिनीत छे, बाजे धर्मण बाईरे। अल्प आहारी अल्प भाषणी, सप घणो माहोमाईरे॥ मा० ३ ॥ सागर सेठ लोभी घणो, फाटो पहेरे लूखो खावेरे, सुकृतमें समझे नहीं, दान दिया पछतावेरे ॥ म० ४ ॥ आभूषण वस्त्र नवा, पहेरण देवे नाईरे। पहरे तुरत खोलायले, मेले संजूष के माईरे॥ मा० ५ ॥ एक दिन फिरतो शहरमें; द्वारे योगीश्वर आयारे। भूखा था तीन दिवस का। भोजन तास जिमारे॥ मा० ६॥ प्रसन्न हुवो योगी तदा; दीनो मंत्र सिखाईये। तीन दफे गुणियां थकी, चाहे तिहां आवो जाईरे॥ मा० ७॥ इतने सुसराजी आविया, जीमत देख्यो तेनेरे। कालो पीलो मन में थयो, देखो धर्म सुजशो एनेरे॥ मा० ८॥ योगी तब चलतो भयो, बहुवाने ओलम्भो दीधोरे । तिण दिन सागर शेठजी, एक दफे अन्न लीधोरे॥ मा० ९ ॥ बहुवा मिलने मतो कियो, कहो आपण सुं करवोरे। खावण खरचे रुकवो नहीं, डोसाथी हिवे नहीं डरवोरे॥ मा० १० ॥ मोटो काष्ट मंगायने, साफ कराय सजावेरे। मंत्र भणी उदर चढें, जावे तिहां मन भावे रे॥ ११ ११ ॥ वनवाडी पहाडां विषे, नदियां सिंधू नियाणेरे। मनमानी मोजांकरे, सुसरोजी भेद न जांणेरे॥ मा० १२॥ एक दिन सुसरेजी देखियो; मर्म पड्यो मनमाईरे। बहुवा मिल किहां जायछे, आवे तुरत चलाइरे॥ मा० १३॥ काष्ट पड्यो हूतो कोंणमें, लीनो तीणने कोराईरे। माँही सूतो लम्बो थको, डीगरी तास लगाईरे॥ मा० १४॥ पहर दिशा बाकी रही, चारों ही मिलकर आईरे। सुसरोजी किहां सूतो हसे, गुपचुप देखो चलाईरे॥ मा० १५॥ विधि सांचव आरूढ हुई, पहुंची गगन मझारीरे। रत्नद्वीपमाँही आयने, दीनो काष्ट उतारीरे ॥ मा० १६ ॥ चारोंही मिल रामत करे, स्वाद लेवे फल मीठारे। डोसो निकल्यो बारणे, विविध रत्न तिण दीठारे ॥ मा० १७॥ रत्न लिया मन मानिया, भरिया काष्ट मझारेरे। आप सूतो तन सुकडने, हिवड़े हर्ष अपारेरे॥ मा० १८॥ चारों ही आय उतावली, काष्ट थई आरूढोरे। देर इहाँ करवी नहीं, बुढो छे अति सुढोरे॥ मा० १९॥ तिमहीज निजघर चालतां, देराण्याँ इम बोलेरे । भारी थयो दोसे लाखडा, किम चाले होले होलेरे॥ मा० २०॥ एक कहे इम चालतां, रखे अवेलो थासेरे।

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

सुपना सरीखी साहबी, अवसर बीत्यो जाय ॥ सुणीजे ऋषभ ५९ ॥ जो मन होवे थांयरो, प्रगट हुवा प्रभात ॥ सुणीजे ॥ राज कुंवर ने स्थापने, संयम लेवां साथ ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ६० ॥ राणी कहे सुण रायजी, मुझ मन येही बिचार ॥ सुणीजे ॥ धर्म में ढोला न कीजिए, निकलो तज संसार ॥ सुणीजे ऋषभ ६१ ॥ इम विचारी ने सो गया. निन्द्रा में भरपूर ॥ सुणीजे ॥ पलटी नियत निज पुत्र की, ध्यायो ध्यान करूर ॥ सुणीजे ऋषभ ६२ ॥ जन्म लियो गर नृप के, मिलियो सब सुख साज ॥ सुणीजे ॥ तात प्रलोक हुवे कभी, कब मिलसी मुझराज ॥ सुणीजे ऋषब ६३ ॥ ततक्षिण उठ आयो तिहां, सुता छे बापने साय ॥ सुणीजे ॥ लोभ वशे निर्दय थको, दीनी छे आग लगाय ॥ सुणीजे ऋषभ ६४ ॥ दुष्ट हणिया मा बापने, अनर्थ कीदो अपार ॥ सुणीजे ॥ दोहुं मरी जुगल्या यथा, उत्तर कुरु अवतार ॥ सुणीजे ॥ ऋषभ ६५ ॥ देव थया भव आठ में, पहिला स्वर्ग मझार ॥ सुणीजे ॥ पूर्व विदेह नव में भवे, उपनो वैद्य कुंवर ॥ सुणीजे ऋषभ ६६ ॥ नाम जीवा नंद थापीयो, करतो पर उपकार ॥ सुणीजे॥ राजादिक ना सुत भला, मित्री है तेहने चार ॥ सुणीजे ऋषभ ६७ ॥ पांचमो मित्र सेठ को, केशव नाम कुंवार ॥ सुणीजे ॥ श्रीमती को जीव जाणजो, होसी श्रीयाँस कुंवार ॥सुणीजे ऋषभ६८ ॥ इतने तो विरचत आईया, कीट सहित अणगार ॥ सुणीजे ॥ मुनि तन मित्र देखने; उपनी करुणा अपार ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ६९ ॥ पांचों मित्र कहे वैद्य ने, येह मुनि को दुःख टार ॥ सुणीजे ॥ इससे मोटो फिर जगत में, और कैसो उपकार ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ७० ॥ औषधी है सब मुझ कने, तीन वस्तु की चाय ॥ सुणीजे ॥ तेल चन्दन ने कामली, देसूं रोग मिटाय ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ७१ सेठ ने जाचयो जायने, बात कही सब खोल ॥ सुणीजे॥ दीनी ते तुरत निकाल के, तीनों ही वस्तु अमोल ॥ सुणीजे ऋषभ ७२ ॥ लक्ष औषधी तेल चोपड्यो, रतन कंबल दीनी वींट ॥ सुणीजे ऋषभ ७३ ॥ सुआं कलेवर मांयने, कीट सभी धर दीध ॥ सुणीजे ॥ बावन चंदन चर्चीयो, तीन दफे इम कीध ॥सुणीजे ऋषभ ७४ ॥ वेद जीवा नंद मुनि तणों, कीदो निरोगो तन्न ॥ सुणीजे ॥ मोटो लाभ कमाबियो, लोग कहे धन्न धन्न ॥ सुणीजे ऋषभ ७५ ॥ फिर छहुं मित्री साथ में, लीनो सयम भार ॥ सुणीजे ॥ दस में भव हुवा देवता, बारसां स्वर्ग मुझार ॥ सुणीजे ऋषभ ७६ ॥ विजय भली पुष्कलावती, पूर्व महा विदेह मांय ॥ सुणीजे ॥ पुंडरी गणी नगरी भली, वज्रसेण तिहां राय ॥ सुणीजे ऋषभ ७७ ॥ तीर्थं कर पद सहित छे, धारणी तस पटनार ॥ सुणीजे ॥ ते सुर चवित हनी कुंख में पुत्र पणे अवतार ॥ सुणीजे ऋषभ ७८ ॥ वज्र नाभ बाहु सु बाहु पीठ महापीठ ॥सुणीजे॥ ज्येष्ट पुतर चक्रव्रत छे, होसी ऋषभ भगवंत ॥ सुणीजे ऋषभ ७९ ॥ श्रीमती को जीव

१३३

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

सुपना सरीखी साहबी, अवसर बीतयो जाय ॥ सुणीजे ऋषभ ५६ ॥ जो मन होवे थांयरो, प्रगट हुवा प्रभात ॥ सुणीजे ॥ राज कुंवर ने
स्थापने, संयम लेवां साथ ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ६० ॥ राणी कहे सुण रायजी, मुझ मन येही विचार ॥ सुणीजे ॥ धर्म में ढोला न कीजिए,
निकलो तज संसार ॥ सुणीजे ऋषभ ६१ ॥ इम विचारी ने सो गया. निन्द्रा में भरपूर ॥ सुणीजे ॥ पलटी नियत निज पुत्र को, ध्यायो
ध्यान करूर ॥ सुणीजे ऋषभ ६२ ॥ जन्म लियो गर नृप के, मिलियो सब सुख साज ॥ सुणीजे ॥ तान प्रलोक हुवे कभी, कब मिलसी
सुझरम्ज ॥ सुणीजे ऋषब ६३ ॥ ततक्षिण उठ आयो तिहां, सुता छे बापने माय ॥ सुणोजे ॥ लोभ वशे निर्दय थको, दीनी छे आग लगाय
॥ सुणीजे ऋषभ ६४ ॥ दुष्ट हणिया मा बापने, अनर्थ कीदो अपार ॥ सुणीजे ॥ दोहुं मरी जुगल्या यथा, उत्तर कुरु अवतार ॥ सुणीजे ॥
ऋषभ ६५ ॥ देव थया भव आठ में, पहिला स्वर्ग मझार ॥ सुणीजे ॥ पूर्व विदेह नव में भवे, उपनो वैद्य कुवर ॥ सुणीजे ऋषभ ६६ ॥
नाम जीवा नंद थापीयो, करतो पर उपकार ॥ सुणीजे॥ राजादिक ना सुत भला, मित्री है तेहने चार ॥ सुणीजे ऋषभ ६७॥ पांचमो मित्र
सेठ को, कैशव नाम कुंवार ॥ सुणीजे ॥ श्रीमती को जीव जाणजो, होसी श्रीयाँस कुंवार ॥सुणीजे ऋषभ६८ ॥ इतने तो विरचत आईया,
कीट सहित अणगार ॥ शुणीजे ॥ मुनि तन मित्र देखने: उपनी करूणा अपार ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ६९ ॥ पांचों मित्र कहे वैद्य ने, येह
मुनि को दुःख टार ॥ सुणीजे ॥ इससे मोटो फिर जगत में, और कैसो उपकार ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ७० ॥ ओषधी है सब मुझ कने,
तीन वस्तु की चाय ॥ सुणीजे ॥ तेल चन्दन ने कामली, देसूं रोग मिटाय ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ७१ सेठ ने जाचयो जायने, बात कही
सब खोल ॥ सुणीजे ॥ दीनी ते तुरत निकाल के, तीनों ही वस्तु अमोल ॥ सुणीजे ऋषभ ७२ ॥ लक्ष औषधी तेल चोपड्यो, रतन कंवल
दीनी वींट ॥ सुणीजे ऋषभ ७३ ॥ मुआं कलेवर भांयने, कीट सभी धर दीध ॥ सुणीजे ॥ बावन चंदन चर्चीयो, तीन दफे इम कीध
॥सुणीजे ऋषभ ७४ ॥ वेद जीवा नद मुनि तणों, कीदो निरोगो तन्न ॥ सुणीजे ॥ मोटो लाभ कमावियो, लोग कहे धन्न धन्न ॥ सुणीजे
ऋषभ ७५ ॥ फिर छहुं मित्री साथ में, लीनो सयम भार ॥ सुणीजे ॥ दस में भव हुवा देवता, बारमां स्वर्ग मुझार ॥ सुणीजे ऋषभ
७६ ॥ विजय भली पुखलावती, पूर्व महा विदेह मांय ॥ गुणीजे ॥ पुंडरी गणी नगरी भली, वज्रसेण तिहां राय ॥ सुणीजे ऋषभ
७७ ॥ तीर्थंकर पद सहित छे, धारणी तस पटनार ॥ सुणीजे ॥ ते सुर चविते हनी कुंख में पुत्र पणे अवतार ॥ सुणीजे ऋषभ ७८ ॥
वज्र नाभ बाहु सु बाहु पीठ महापोठ ॥सुणोजे॥ ज्येष्ट पुतर चक्रव्रत छे, होसी ऋषभ भगवंत ॥ सुणीजे ऋषभ ७९ ॥ श्रीमती को जीव

१३३

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

सुसरा को डर राखजो, थकसे लोक सुणासेरे । मा० २१ ॥ बीजो कहै कुल देखने, मात पिता परणाईरे । सुसुरोजी करपण घणो, सुख देखणदे नाईरे ॥ मा० २२ ॥ तीजी कहै तरू पानडा, पाका थइ थइ खरियारे । रवि ऊगी ऊग आथम्याँ, सुसराजी अजु नहीं मरियारे ॥ मा० २३ ॥ दोष कोहीने देवो नहीं, चोथी इम समझावेरे । कर्म शुभाशुभ जे करे, वे वैसा ही फल पावेरे ॥ मा० २४ पाट्यो व्यौपारी की जहाजनो, टूट पड्यो जलमाईरे । उदक हिलोल व्यन्तो थको, आतो दियो दरशाईरे ॥ मा० २५ ॥ जैठाणी कहे इण काष्टने, मूको समुन्दर माईरे । इण पाट्याका आधारथी, घर पहूंचा तण माईरे ॥ मा० २६ ॥ डोसो कहै मुको मती, हूं छूं छूं इण मांहीरे । भय पामी चारू जणी, तुरत दियो छटकाईरे ॥ मा० २७ ॥ सागर सेठ समुद्र में मरकर नरक सिधायोरे । घरमें धन हुतो घणो, कहो तेने काम सु आयोरे ॥ मा० २८ ॥ तिण पाट्यापर बैठने, मंत्रीथी तुरत चलायोरे । बहुवा पहुंची नीज घरे मनमान्यों सुख पायोरे ॥ मा० २६ ॥ चारों ही पुत्र पिता भणी, जोयो न लाधो किहांईरे । नीज नीज नारीने पुछियो, ते कहै डोसी इहांईरे ॥ मा० ३० ॥ खाती आवी कहै खांतथी, मुजथी काष्ट कोरायोरे । सायततीण माँही डोकसी, जोयो तो तेभी नहीं पायोरे ॥ मा० ३१ ॥ गयाहू से कोई देश में, इम धीरज मन धरियोरे । वाट जोई दिन केतला, जाणयों आखिर मरियोरे ॥ मा० ३२ ॥ शोक मिट्यांसे चोरों जणी, एकमतो करलीनोरे । वैराग्य भावे सतियां कने, संयम धारण कीनोंरे ॥ मा० ३३ ॥ पद्मपुरी का वाग में विचरता मुनिवर आयोरे । सागर शेठ का डीकरा, वंदन काज सिधायारे ॥ मा० ३४ ॥ धर्म कथा सुण पुछियो; किहां वसै मुझ तातोरे । अतिशय ज्ञानी जिमहुती, सिम मांड कही सब बातारे ॥ मा० ३५ ॥ क्रोधमान माया लोभये, चारों संसार बढावेरे । इनका संग छोड्यां थका, भव भवमें सुख पावेरे ॥ मा० ३६ ॥ सागर सेठकी वारता, गुरु मुख से सुण पाईरे । तिण अनुसारे उमंग से, जुगति जोग बनाईरे ॥ मा० ३७ ॥ उगणीसे साठ तेवीस में, पोश विधि दिन पांचेरे । खूबमुनि रतलाममें, ढाल जोडी एक सांचेरे ॥ मा० ४८ ॥ अचम्भा का वच्चा ॥ ॥ दोहा ॥ प्रथम नमो गुरु देवने, गुरु ज्ञान दातार । गुरु चिंतामणी सारखा, आपे सुख सिरिकार ॥ १ शीलव्रत मोटो व्रत, भाष्यो गुरु दयाल । सब गुण की रक्षा करे, ज्युं सरवर जलपाल ॥ २ ॥ ढाल पहली तर्ज:—लालरे चन्देरी पतिसूँ कहै ॥ जंबुद्वीप का भरतमें, श्रीपुरनगर सुस्थान, लालरे । राजलीला सुख भोगवे जित शत्रु राजान, लालरे ॥ १ ॥ पर रमणी संग पर हरो, जो सख चाहो सेण, लालरे ॥ पर ॥ टेक ॥ मंत्री राज्य धुरंधरु, सुबुद्धि नाम परधान ॥ ला ॥ निर्लोभी

१३७

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

न्याई घणो, चारों बुद्धि निधान ॥ ला ॥ पर० २ ॥ तिण नगरी मांही बसे, सागर सेठ विख्यात ॥ ला ॥ रिद्धिवंत अगंजणो, सभी जन मानें बात । ला । पर० ३ ॥ श्रमती छे तस भारजा, पति भक्ता मतिवान ॥ ला ॥ सुशीला चारु नेत्रिणी, लज्जावती गुणखान ॥ ला ॥ पर० ४ ॥ एक दिवस वह श्रमती, कर सघला सिणगार ॥ ला ऊंची चढ आवासपे, जोवे नगर बाजार ॥ ला ॥ पर० ५ ॥ भूपति भी निज भवन में, बैठो गोख मझार ॥ ला ॥ नगर छवी अविलोकताँ, देखी सा सुन्दर नार ॥ ला ॥ पर० ॥ मन बिगड्यो महिपति तणों, पुछे मंत्री सु बात ॥ ला ॥ सो मुझ राह बतलाइए, रति पाऊ इण सात ॥ ला ॥ पर० ७ ॥ मंत्री कहे महिपति सुणों, बुरो बिचोरयो काम । ला । क्षण एक सुख के कारणे, होसे तुम बदनाम ॥ ला ॥ पर० ८ ॥ रावण राज गमा दियो शास्त्र को परमाण ॥ ला ॥ परनारी चित्त चावता, कीचक खोया प्राण ॥ ला० ॥ पर० ९ ॥ समझाता समझो नहीं, दीना बहु विधि न्याय ॥ ला ॥ राजा हट छोडी नहीं, दी मंत्री तब राय ॥ ला ॥ पर० १० । सागर सेठ बुलायने दीजे हुक्म फरमाय ॥ ला ॥ जिहाँ मिले तिहां जायले, बच्चो अचम्भा को लाय ॥ ला ॥ पर० ११ ॥ शेठ यहां से गया पछे, तुम मन चिंतित थाय ॥ ला ॥ ऐसी राह बतलावता, खुशी हुवा महाराय ॥ ला पर० १२ ॥ खुबमुनि कहे साँभलो, यह हुई पहली ढाल ॥ ला ॥ तोत रचे अब नरपति, आलस अलगो टाल । ला । पर० १३ ॥ दोहा ॥ श्रोतागण गावत तुम्हें सांभलजो चितलाय । काम अन्धहुवो थको, कपट रचे किम राय ॥ १ । ढाल दूसरी ॥ तर्ज: – जिनशासन नायक मुगती जाने की डिगरी दीजिए ॥ तुम सम नहीं दूजो सेठ सिरोमणी, सिरि पुर के मांही ॥ तुम ॥ टेक ॥ नीज अनुचर को भेजके, सरे, तुरत शेठ बुलवाय । आदर कर आसण के उपर, सनमुख लियो बैठाय जी ॥ सिरि० १ ॥ शेठ कहे कर जोडने सरे, केम बुलायो आज । जो मुझ लायक काम हुवे सो, कहो गरीबनवाजजी ॥ सि० २ ॥ अन्तेवर हट मांडियो सरे. बार बार कहेवावे अचम्भा को बच्चो एक, महेला में देखणो चहावेजी ॥ सि० ३ ॥ हुकम कियो सब उमरावांपर, उत्तर दियो नहीं कोय । मैं जाणयों यो काम चतुर को; होय उसीसे होयजी ॥ सि० ४ ॥ सुणो सेठजी मोले वहाँ से; आप जाय खुद लावो । खरच पडे जितना रुपैया, तुम चाहो जब ले जावोजी ॥ सि० ५ ॥ छ महिना की अवधि आपी, करजो खूब तलास । काज सिद्ध हुवासे थाने, दूंगा फेर साबासजी ॥ सि० ६ ॥ कहे शेठजी सुण महाराजा, घर में पूछी लेसू । जैसी राह होयगा वैसी, आय आपने केसु जी ॥ सि० ७ ॥ सीख लेई घर आविया सरे, निज नारी के पास । ज्यों कि त्यों सब मांढने सरे,

१३८

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

कही बात प्रकाशजी ।। सि० ८ ।। पशु और पक्षी पृथ्वी पर, कही तरह का होय । अचम्भा को बचों आजतक सुण्यों न देख्यो कोयजी ।। सि० ९ नारी कहे सुण नाथजी खरे, हग दृष्टि दो आप । शीलभंग सतियां को करवा, नृप विचार्यो पापजी ।। सि० १० ।। व्यभिचारी की होय खराबी, निडर रहो पतिराज । परनारी फिर कदीयन वछे, एसो करां इलाजजी ।। सि० ११ । कारीगर बुलवायने खरे, युगल होद बनवाया । एक होद में रुइ पेत, दूजा में सेंत भरायाजी ।। सि० १२ ।। एक बणायो पींजरो खरे, रुइ होद के पास खुब मुनि कहे दूजी ढाल में, आगे रसिक समासजी ।। सि० १३ ।। दुहा ।। अज्ञानी अन्धा जिसा, नीज हित समझे नाय । सिंह सरीखा शूरमा, पडया पींजरा मांय ।। १ ।' ढाल तीसरी ।। तर्ज:--चिंतामणि पार्श्वनाथ, हो लाल । नाथ कहे सुणनाथ, विनयो रायने ।। हो लाल, विनवो० ।। बच्चों अचम्भा को एक लावसूं जायने ।। होलाल, लाव० १ ।। कहिजो सहस्र पचास, खरच पडसी सही ।। हो० ख० ।। लागेला खट मास, यामे संदेह नहीं ।। हो० या० २ ।। इण विध बात बणाय, नृप ने खुश करो । हो० नृ० । नगद रुपैया गीणाय, लाय घर में धरो ।। हो० ला० ३ ।। जासूं कल परदेश, सभी से यह कहो ।। हो० स० पोछे हवेली के वहार, छाने सुं छीप रहो ।। हो० छा० ४ ।। शेठ सागर सुण बात, जाय नृप ने कयो ।। हो० जा० ।। तिम द्विज कर सब काम, छानेसुं छीप रयों ।। हो० छा० ५ ।। वित्या दिन दो चार, विचारयो रायने ।। हो० ला० ।। मध्यराते महिमाल, पोशाख बणायने ।। हो० पो० ६ ।। सहल करण के काज, आज जालू सही ।। हो० आ० ।। आऊं छूं पीछो सिताब, राणीसूं इम कहो । हो० रा० ६ ।। निकल्यो अकेलो राय, पाप मनमें धर्यो ।। हो० पा० ।। सागर सेठके ठेट भवनमें आघुस्यो ।। हो० भ ७ ।। आतो देख नरेन्द्र, विनय कर श्रीमती ।। हो० वि० ।। बिलमायो दे विश्वास; शील राखण सती ।। हो० शी० ९ ।। वस्त्र आभूषण खोल, करो मंजन सही ।। हो० क० ।। मान्यो बचन नरेन्द्र, कपट जाण्यों नहीं ।। हो० क० १० ।। लज्जा ढांकण काज, पेर्यो पट रायने ।। हो० १० ।। करत स्नान तीवार, बोल्यो सेठ आयने ।। हो० बो० ११ ।। खोलो शीघ्र कबाट, कहै हेलो देयने ।। हो० क० बच्चो अचम्भा को एक, आयो छूं लेयने ।। हो० आ १२ । यह हुई तीजी ढाल, द्वार खोल्यो नहीं ।। हो द्वा० ।। खुब मुनि कहै नृप, सभी से सूं कही ।। हो० स० १३ ।। दोहा ।। गरज बडो संसार में, गरजे बणे गुलाम । गरज थकी जन नीच को ऊंच करे प्रणाम ।। १ ।। ढाल चौथी ।। तर्ज:--ये गुरु म्हाराने करलोनी थायरा ।। कर जोडी कहै नरपति, मुज पर कर उपकार ।। सूणिजे ।। जबलग मैं जीवतो रहुँ थंू [illegible] । सूणिजे ।

१३६

॥ १ ॥ परमणी, पररमणी को संग कोई मत करो ॥ टेक ॥ कोपकरी श्रीमती कहै, यह नहीं उत्तम रीत ॥ सु० ॥ शील लत्वा को खण्डवा, एसी विचारो नीत । सु पर २ । पर रमणी संग लागने, जे नर मान्यो सुख । सु । पाले पड्या यम देव के, तरक में पावे छे दुख । सु पर ३ । भाग भलो नृप थायरो, पहुँचो इण हिज स्थान । सु । आर जगां ज़्यो तू चुकतो, तो खोय बैठ तो जान । सु । पर ४ । थोड़ा ही में छोड़ तुम्हें, छीप जावो इण घरमांय ॥ सुँ ॥ नृप माँही जाता पड्यो, सेतका होदके मांय सु पर ६ ॥ तन खरड्यो लतपथ थयो, श्रीमती कहै महाराय । सु । इण में नहीं इण में नहीं, इण घर मांही जाय । सु पर ६ । निकल्यो नृप व्याकुल थको, बीजाघर मांही जय ॥ सु ॥ तिमहिज होदमें जई पड्यो, रुई तन लपटाय ॥ सु ॥ पर ७ ॥ सिरिमती कहे सुण नरपति, निडर रहो मनमाय ॥ सु ॥ पर ८ ॥ बारीमांही तन सकडने, नीकल्यो नृप घबराय ॥ सु ॥ तिण पींजर मांही जाई घुस्यो, कपट जाण्यों कछु नाय ॥ सु ॥ पर ९ ॥ श्रीमती आय उतावली, तुरत फलक दियो डाल ॥ स ॥ जोर कछू चाल्यो नहीं, कबजे हुवो महिपाल ॥ सु ॥ पर १० ॥ द्वार खोल्यो पति आवियो, हंस हंस पूछे बात ॥ सु ॥ वच्यो अचंभा को फुटरो, मुशकील आयो हात ॥ सु ॥ पर ११ ॥ निशभर राख्यो मकान में, प्रगट हुवाँ परभात ॥ सु ॥ राज भवन में ले जावसां, अति उत्सव के सात ॥ सु ॥ पर १२ ॥ पिंजरे में विध वितवी, बैठ रयो महिपाल ॥ सू ॥ दम्पति सुख में सोगया, खुब कहे चौथी ढल ॥ सु ॥ पर १३ ॥ ॥ दोहा । गुरु ज्ञान वैराग्य को, असल चढावे रंग । भूल चूक करजो मति, परनारीनो संग ॥ १ ॥ -ढाल पांचवी-[तज— वीरा म्हारागजथकी ऊतरो] दिन उगो तब शेठ जी, पहुंच्यो राजभवन में रे । मंत्री से मांग लवाजमो, लायो खुश होई मन में रे ॥ १ ॥ यह गति होय कुशील थी, भविक्ण तुम सुण लीजों रे ॥ यह ॥ टेक ॥ पिंजर काढ्यो बारणे, वाजितर रया बाजी रे । वच्यो अचंभा को देखने: लोक हुवा सब राजी रे ॥ यह २ ॥ विविध मेवा मांही फेकता, कोई रया चमकाई रे' कूदे फदके उछले, नृप बोले कछु नाइरे ॥ यह ३ ॥ होता खास बाजार में, पहुँचा महले मझारो रे । राजी हुवा सब देखते, अंतेबर परिवारो रे ॥ यह ४ ॥ तुरत दिसाई महल में, शेठ पीछो छर लाओ जा । पींजरथी काढ्यो बारणे. विधि से स्नान करायो रे ॥ यह ५ ॥ फिर पोशाक वणायने, नृप पायो चित चेनोरे । निज मंदिर चातो थको, इणपर बोल्यो वैनोरे ॥ यह ६ । धन धन तूं मोटी सती, चाखी करी चतुराई रे । पत राखी थे म्हायरी, गुण भुलूं कभी नाई रे ॥ यह ७ ॥ वात किहां करजो मती, मैं सभ माफी आपी रे । एसी अनीति आजसे,

१४०

सुहाय कदापि रे ॥ यह ८ ॥ इम कही नीज मंदिर गयो, सब को मन हुलसायो रे । दिनभर सुन्दर बाग की, सहल करी इहाँ आयो रे ॥ यह ९ ॥ ते दिनथी नृप छोडियो, पर नारी नो संगोरे । श्री मली पण मोटी सती, राख्यो शील सुचंगो रे ॥ यह १० इमसुण मानव जाणजो, पररमणी निज माता रे इज्जत धन वधियो रहे । पावोला सब साता रे ॥यह ११॥ श्री श्री गुरुजं रत्नाजजी ज्ञाननिधि जगमां हीरे । तस शिष्य खुब मुनी कहे शील सदा सुखदाणीरे ॥ यह१२ ॥ गाँव लशाणी मेवाडमें, उगणीसे असमीके सालं । फाल्गुण शुदि अष्टमी पूरणकरो पंच ढालरे ॥ अमर सेन वीर सेन चरित्र ॥ दोहा ॥ पार्श्वनाथ प्रणमु सदा, वामा देवी नंद । नित्य स्मरण करता थका, पावे चित आनंद ॥ १ ॥शरण ग्रही जिन राज को, कहुँ कथा विस्तार । अमर सेन वीर सेनजी, किस पाया भवपार ॥ २ ॥ दो थे लडके ग्वाल के, दुखिया दीन अनाथ । हस्तिन पुर में आविया, दोनो भाई साथ ॥ ३ ॥ उन नगरी के मांयने, श्रावक रहै जिन दास । दया भावकरी तेने, राख्या दे विश्वास ॥ ४ ॥ ढाल १ लीं ॥ चाल—चन्द्रगुप्त राजा सुणो ॥ एक भाई वनके विषे, वाछरू लेइने जावे रे । साथे बांधे सूकडी, सांझ पड्या घर आवे रे ॥ १ ॥ चतुर सनेही सांभलो ॥ टेक ॥ दूजो भाइ घर रहे, करे ओलायो काम रे । रात दिवस मननी रलो सुखे रहै आठों यामो रे ॥ च २ ॥ श्रावक मात पिता जैसो, निज गुण मांहे वखियो रे । साधु तणी सेवा करे, जिन वाणी को रसियो रे ॥ च ३ ॥ कोइक दिन के आंतरे हस्थिनापुर के मांही रे । साधु सुपात्र पधारिया भद्रिक भाव सदाई रे ॥ च ४ ॥ श्रावक सुन मन हुलस्यो, वंदन काज सिधावे रे । दोनों लडके ग्वाल के, साथ आया चित चावे रे ॥ च ५ मुनिवर दानी देशना, भाख्यो तप अधिकार रे । तपस्या से कर्म क्षय हुवे, विपत नसावन हार रे ॥ ६ ॥ श्रावक सुण उपदेशना, हिवडे हर्ष भरायो रे । वंदना कर मुनिराज ने सेठ निज घर आयो रे ॥च ७॥ दोनों भाई बैठारया, मन में ऐसा विमासो रे । इन्द्र धनुष तरु पान ज्यों, है इस तन का तमासो रे ॥ च ८ ॥ कर जोडी उभा हुवा, आया मुनिवर पास रे । गुरु मुख से भाव करी पचक्ख लियो उपवास रे ॥ ९ ॥ श्रावक कहै अरे बालूडा, बहुत लगाइ देर रे । भोजन यह जिमो तुम्हें, हुई अब या अवेल रे ॥१०॥ आज हम है उपवासिया, तब शेठ कहै शुद्ध भाव रे । दान दीजो निज हाथ सूं, जो मुनिवर यहाँ आवे रे ॥ ११ बाट जोवे दोनो जणा, तिण अवसर मुनिराया रे । मास खमण के पारणे, फिरता वहां ही आया रे ॥ १२ ॥ एक स्थाने आई मिल्या, वित्त, चित्त, पात्र तीनों रे । मुनिवर के चाहे जैसा, दान भावे करी दीनों रे ॥ १३ ॥ पड़त संसारी दोनों हुवे, दीनी दुरगत टाल रे ॥ १४ ॥

१४१

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ ढाल २ री ॥ चाल—रे जाया तुझ विन घड़ी रे छमास ॥ तिण काले ने तिण समे जी, कंपिलपुर के जो माय । परजा पालक गुण-निलो जी, जयसेण नामे राय ॥ १ ॥ चतुर नर कर जो साधु की सेव ॥ टेक ॥ पटराणी तस प्रेमला जी, निस दिन करे विलाप । पुत्र नहीं एक म्हारे जी, कांइ बांध्यो पाप ॥ च २ ॥ दुमणा महाराणी हुई जी, भूपति पूछे जी एम ! कौन वचन तुम लोपियो जी, आरति आइ केम, ॥ च०३ ॥ बात कही सब मांडने जी, तव नृप करे जी उपाय । निमितक बुलाय ने जी, पूछे तब महाराय ॥च ०४। निमितियो कहै साभलो जी, पुत्र होसे जी दोय । बिछवो पड़ से मातनो जी, परदेशा सुख होय । ज० ५ । साधु की सुण उपदेशनां जी, होसे महा मुनिराय । तप संजम शुद्ध पालने जी, जासे मुक्ति मांय ॥ च० ६ ॥ वे दोनों बालक मरी जी, प्रेमलाके कूंखे आय । पूरे महिने जनमिया जी, महोत्सव कीनो राय ॥ च० ७ ॥ पांच वर्ष का बाल हुआ जी, माता कीनो काल । सौतेली माता करेजी, दोनों की प्रतिपाल ॥ च० ८ ॥ अनुक्रमे मोटा हुवे जी, दोनों भाई की जोड़ । करे किलोला शहर में जी इच्छा हो तिण ठोड़ ।च०६। योवन वय में आविया जी, राजकुंवर सुखमाल । यश महिमा अति विस्तरी जी, चाले कुल की चाल ॥ च० १० ॥ पटराणी महिपाल की जी, मन में करे रे बिचार । राज मिले जो एहने रे, कुण पूछे मम सार ॥ च० ११ ॥ विष, शस्त्र, मंत्र, करो जो, मैं मारु देई त्रास । पाप लगे पहिलो सही जी, होय नरक में वास ॥ च० १२ ॥ चरित्र रचूं कोई एहवो जी, दूं इनके सिर दोष । परबारो पापों कटे जी, पूरे मुज मन होंस ॥ च० १३ ॥ खूब मुनि कहे सांभलो जी, या हुई दूजी ढाल । बात जचावे राय ने जी, कुंवर का पुण्य विशाल ॥ च० १४ ॥ ढाल ३ री ॥ चाल—यो भव रत्न चिन्तामणी सरिखो ॥ चरिताली निजपति भरमावण, साड़ी फाड़ी खण्ड कोधा रे । निज हाताँ थी अंग विलुरयो, गहेणा बिखेरी दीध रे ॥ १ ॥ देखो करम गति दोनों कुंवर की ॥ टेक ॥ मस्तक का फिर खोल्या लटुरया, चूड़या चक चूरो रे । एकान्त जाय पलंग पर पोढी, चरित्र रच्यो इण पूरो रे ॥ दे० २ ॥ तिण दिन नृपति हर्ष धरि ने, महेला मांही आयो रे । पटराणी सामी नहीं जोवे, चिंते तब महारायो रे ॥ दे० ३ । राय कहे किण कारण राणी आरति तुम्हें दिल छाई रे । बिना कहै मालुम किम होवे दीजे चोड़े दरसाई रे ॥ दे० ४ ॥ टपक टपक तेना आंख थी, आंसु वर्षे जम जल धारा रे । गद गद बोले छाती भरावे, रोवे अति बिकरारा रे ॥ दे० ५ ॥ परमेश्वर म्हारी पत राखी, होत कोन विचार रे । कुल ने कलंक न लाग्यो सो सो चोखो, देवी मुज सार रे ।। दे० ६ ॥ दोनों कर माथे धर लीना, कपड़ा से पूछे आंसूरे ।थर थर

१४२

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

गात्र धूजे अति कंपे, नृपति देख विमासु रे ॥ दे० ७ । भिन्न भिन्न कारण नरपति पूछे होवे सो कहो मुझ साँची रे । शंका मन में मूल न राखो, होवेगा सब आछी रे ॥ दे० ८ ॥ ऐसा वचन सुणी महाराणी, कहवे भूपति आगे रे । साँच कह्यां लज्जा मुझ आवे, बात आछी नहीं लागे रे ॥ दे० ६ ॥ शपथ दिलाई आपणी राजा, तब राणी इम भाखे रे । मेलवणी लागे कर दीधी, सब सांची कर दाखे रे ॥ दे० १० ॥ प्रेमला राणी की कुक्षि का जाया, अमर सेन वीरसेनो रे । योवन में कछु नहीं सूजे, विषय अंध सु केणोरे ॥ दे० ११ ॥ दोनों श्वान ज्यों दोड़ी ने आया, तत्क्षण विलग्या आईरे । तब मैं कूक करी अति गाढ़ी, कौन सुणे महेल मांही रे । दे० १२ ॥ शरम न आई माता केरी. दूजा से किम चूके रे । इण ने राख्या शोभा नहीं होवे, कुल मर्यादा मूके रे ॥ दे० १३ ॥ रहवी बाता हुई अण जुगती,मूढों कैसे दखाऊं रे । पृथ्वी फटे तो सुणो हो साहब, माँही उतर जाऊ रे ॥ दे० १४ ॥ तिणवेलां सावधान न होती, तो होती मुझ ख्वारी रे । मरण भलो पर शील न खण्डु, एहवी दृढ़ता धारी रे ॥ दे० १५ ॥ इणरो तो महेलां मांही रेणो, यह बाता फिर होसी रे । तो मुजने जीणो नहीं जुगतो; भलो मरण हित होसी रे ॥ दे० १६ । भूपति बांना सुणी अति कोप्या, कीजे कौन उपायो रे । इण कुवरा को अब काँई कर वो, सो मुझ राह बताओ रे । दे० १७ ॥ जो इच्छा हो वही करो साहब, टालो चाहे एहने पालो रे । खूब मुनि कहै पुण्य कुंवर का. या हुई तीजी ढाली रे ॥ दे० ८ ॥ ढाल । ४ थी ॥ चाल चेतन मोरा रे ॥ कोप करी ने आवियो रे,राज सभा में भूपाल ॥ चेतन मोरा रे ॥ चाकर पुरुष पठाय ने रे, तुरत बुलायो चण्डाल । चेतन मोरा रे । १ ॥ पुण्य सहाय करे तेहनी रे ।। टेक ॥ निरणो न कीधो नरपति रे, ना कुछ सोची बात चेत ॥ हुक्म दियो चण्डाल ने रे, छाई अन्धेरी रात ॥ चेत ॥ पु २ ॥ अमरसेन वीरसेन ने रे ले जाओ विपन मझार ॥ चेत ॥ भर्म पड़े नहीं तेहने रे, दया न आणो लगार ॥ चेत ३ ॥ दोनों का शीष उतारने रे, लाओ हमारे पास ॥ चेत ॥ देखूं नजर पसार नेरे, तब मुज हो विश्वास ॥ चेत पु० ४ ॥ बात सुणी चण्डालनी रे, थर थर कम्पी काय ॥ चेत ॥ निर्णय किया विना नरपति रे, के सो करे अन्याय ॥ चेत ॥ पु० ५ ॥ भूपति आज्ञा जाणनेरे, कियो वचन प्रमाण ॥ चेत ॥ अमरसेन वीरसेन जी गे, तुरत लिया बांको ताण ॥ चेत ॥ पु० ६ । कुंवर कहै कारण कहोरे, कहो भाई तुम बात ॥चेत॥ कहां लेजाओ हम भणी रे, कैसे ग्रह्यो मुज हाथ ॥ चेत पु० ७ ॥ श्वपच कहै कुवार ने रे, नहीं छे मारो दोष रे ॥ चेत ॥ कुण जाणे कारण किसो रे, राजा कियो है रोष ॥ चेत पु० ८ ॥ खेंचाताण करता थका रे, ले गया

१४३

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

वन के माँय ॥ चेत ॥ कुंवर कहै मारा तातजी रे, हाये यह कैसा अन्याय ॥ चेत ॥ पु ९ ॥ कुंवर कहै चण्डाल ने रे, तुम बनो जीतव्य दातार ॥ चेत । हुकम बजावांगा थाँय रो रे, भूला नहीं उपकार ॥ चेत पु० १० । आंसु पडे तेहनी आंख थी रे, उपजी दया की रेंस ॥ चेत ॥जीवता राखूं तुम भणी रे, आना पडे तुम्हें परदेश ॥ चेत । पु० ११ ॥ धीरज दीनी तेहने रे, मत करो सोच लगार ॥ चेत ॥ बालूडां कहै कर जोड़ ने रे, नया जन्म का तुम दातार । चेत ॥ पु १२ ॥ दिनकर ने रजनी पतिना रे, शपथ दिलाई स्वयमेव ॥ चेत ॥ कोल वचन गाडो कियो रे, घर लायो ततखेव ॥ चेत ॥ पु १३ ॥ तिण वेलां माटी तणा रे, शीष बणाया दोय ॥ चेत ॥ खूब कहै चोथी ढ़ाल मेरे नृप ने बताया सोय ॥ चेत ॥ पु १४ ॥ ढाल ५ वीं ॥ चाल–राजवियाने राज पियारो ॥ एक सरीखा मस्तक नीका, ऊपर रंग लगायो रे, रासडी पोई ने कर मांही लीना, श्वपच निशा में लायो रे ॥ १ ॥ देखो करम गति दोनों कुंवर की ॥ टेक ॥ रात समय नृप बैठी झरोखे दोनों मस्तक लाई रे । चन्द्र प्रकाश में ऊभो रहकर, नजरे दीना दिखाई रे ॥ दे० २ ॥ मस्तक देखी नृप विशेखी, पूछो बात जबानी रे । जाय कही सब पद्मण आगे, खुशी हुई महाराणी रे । दे० ३ ॥ महेतर पाछो निज घर आयो दोनों कुंवर के पास रे । पहर निशा रही दोनों ने काढ्या, दीनों अति विश्वास रे ॥ दे० ४ ॥ कम्पिलपुर थी दो चलो त्या, बना खण्ड जोता जावे रे । साथे और कोई नहीं दूजो, हिवडो भर भर आवे रे ॥ दे० ५ ॥ दोनों भाई आपणा मन में, करता जाय विचारो रे । कहाँ जावां ने कोण पिछाणे, कोण करेगा सारोरे ॥ दे० ६ ॥ वीरसेन कहै अमरसेन ने, भाई तूं मत रोवे रे । कर्म कमाया भोगीयाँ छूटे, होनहार सोही होवे रे ॥ दे० ७ ॥ हेतु जुगत कर गाढ बधायो, चिंता न करणी भाई रे । सुख न रहा तो दुख किम रहसी, सोचो तुम मन मांई रे ॥ ८ ॥ इम करता बन मांही जाता, आंबो देख्यो भारी रे । विश्रामो लेवण ने काजे, दोनों भ्रात बिचारी रे ॥ दे० ९ ॥ अम्बतले दोनो भाई बैठा, मनसुबो एम विचारी रे । वारी वारी को पहेरो देताँ रात वितावां सारी रे ॥ दे० १० ॥ वीरसेनजी पहेला सूता, अमरसेन जी जागे रे । आप सुतो ने भाई जगायो, दूजो पहर जब लागे रे ॥ दे० ११ ॥ वीरसेन जी पहेरो देता, मन में एम विचारयो रे । तातजी हुकम दियो मारण को, कीनो नहीं निरतारो रे ॥ दे० १२ ॥ कोन गति होसे अब आगे, परदेशां के माँई रे । अमरसेन की करे रखवाली, अरति तस मन माई रे ॥ दे० १३ ॥ तिण दरख्त पर पची बैठो, तम छायो अर्ध रेनी रे । खूब मुनि कहे पंचमी ढाले, इच्छा पूरण होय तेहनी रे ॥दे० १४॥ ढाल ६वीं । चाल–धन २ तपसीजीहो ।

१४४

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

अम्ब कोचर में सुवो सुवटी, हो के ॥ भवियन ॥ बोले एकवी बात परदेशी ये बापड़ा, होके ॥ भवियन ॥ रया विपिन में रात के ॥१॥ सुख की सम्पति, हो के ॥ भवियन ॥ सुवटे दीनी लाय ॥ टेक ॥ इनके मन चिंता घणी, होके ॥ भवि ॥ तेहनो कोन बिचार । सुवो कहै सुण रहना, हो के ॥ भ ॥ दुख नो छेह न पार के सुख २ ॥ तोती कहै अब पहना. हो के ॥ भ ॥ दुख को दूर निवार । पंखी को भव पाय के, हो के ॥ भ ॥ सफल करो अवतार के । सुख ३ ॥ सुवो सुण ऊट कर गयो, हो के ॥ भ ॥ तिण हिज वन के मांय गुठली दो तरुवर तणी, हो के । भ ॥ लायो तत्क्षण जाय के । सुख ४ ॥ सुवटे गुठली प्रेम सं, हो के ॥ भ ॥ दी वीरसेन ने आय एक एक गुठली दोनों जणा, हो के । भ । लीजो उर गट काय के ॥ सुख ५ ॥ गुण है यह पहली तणो, हो के ॥ भ ॥ लहे दिन सात में राज । प्रत्यक्ष गुण दूजी तणां, हो के । भ ॥ सुधरे मनक काज के ॥ सुख ६ ॥ सूर्योदय मुंह धोवता, हो के ॥ भ ॥ कुल्लो करे तिणवार । जब देखें तब पान मे, हो के ॥ भ ॥ प्रगटे सुवर्ण दिनार के ॥ सुख ७ ॥ गुठली ले सुवटा थकी, हो के ॥ भ । राखी अपने पास । तुरत जगायो भ्रात ने, होके ॥ भ ॥ हुवो अति प्रकाश के ॥ सुख ८ ॥ भाई ये गुठली भली, हो के ॥ भ ॥ सुवटे दी भुज लाय । प्रत्यक्ष गुण है यह थकी. होके ॥ भ ॥ इणमें संशय नाय के ॥ सुख ९ ॥ एक एक गुठली निगल ने, हो के ॥ भ ॥ मारग की शुद्ध नाय । अटवी गहन उजाड़ थी, होके ॥ भ ॥ निकल्या बाहिर जाय के ॥ सुख १० ॥ भ्रात कहै हुँ थाकियो, होके ॥ भ ॥ कीजे कोन उपाय । विश्रामा लेवा भणी, हो के ॥ भ । बैठा मारग माय के ॥ सुख ११ ॥ रवि आयो मध्य भाग में, हो के ॥ भ ॥ तृषा भूख अपार ! कोमलमुख कुमलावियो, हो के ॥ भ ॥ जावे दृष्टी पसार के ॥ सुख १२ ॥ क्षेत्रपाल सुर तेहने होके ॥ भ ॥ लीना तुरत उठाय । मिंगलपुर की सीम में, हो के ॥ भ० ॥मेल्या गम कछु नाय के ॥ सुख १३ । नगरी का तट देखिया, हो के ॥ भ ॥ देखा तलाव विशाल । खूब मुनि कहै पूर्ण हुई. होके ॥ भ ॥ छट्ठी ढाल रसाल के ॥ सुख १४ ॥

ढाल ७ वीं ॥ चाल ॥ धन धन मेतारज मुनि ॥ अमरसेन वीरसेनजी, बैठा सरवर पाल । भाई भूख लागी घणी, कारिये भोजन थाल ॥ १ ॥ भाई थे भक्ति करो ॥टेक॥ वीरसेन मुख धोवता, कीधो कुल्लो तिवार । ढेर पड्यो मुख आगले. गीणी पाँचसो दिनार ॥ भ २ ॥ प्रत्यक्ष परिचय देखियो, सुण सुण बांधव आज । आज थकी दिन सात में, निश्चय मिलसी जी राज ॥ भ ३ ॥ जल्दी जावो शहर में, लावो भोजन पाक । पेठा पकोड़ी पुड़िया, चोखी लाजो जो शाक ॥ ४ ॥ चोकस कर कर शहेर में, लाजो

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ताजा जी माल । विन मोके विलमो मती, आजो फिर तत्काल ॥ भ ५ ॥ वीर सेन इम सांभली, लीनो हाथ में दाम । चाल्यो आप
सिताय सुं, भाई रयो तिणठाम ॥ भा ६ ॥ नगरी मांहे पेसता, मिला एक वेश्या नार । परदेशी नर देखने, कीनो मन में विचार॥
भ ७ ॥ इणने लेजाऊ निज घरे, विलसुं सुख अपार । विनती कर वीर सेण ने, मोह लियो तत्कार ॥ भ ८ ॥ यह मन्दिर यह
 मालिया, तुम छो मुझ भरतार । शरम न राखो साहिबा, मैं हूँ तुम घर नार ॥ ९ ॥ महेर करो मुझ उपरे, मालो दासी की अरदास
घर मंडन शोभा घरणी, रक्खो दृढ विश्वास ॥ भा १० ॥ पागलयां मन वीर सेणनो, लेइचाली आवास मठड़ी देखी पास में, बोली
ऐसे विमास ॥ ११ ॥ कपट करी मसोरा सहु, लीना अपने पास । अपनो धन्न बतावियो, उपजावयो विश्वास ॥ भ १२ ॥ कुरलो
करता पान ले, प्रगटे पुंज दिनार । वेश्या ने सूपे सहू मांगे तब हरबार ॥ भ १३ ॥ वेश्या विचारे नर भलो, कल्प वृक्ष समान
खूब कहैडाल सातमी पावे बहु सन्मान ॥ भा १ ॥ ढाल ८ वीं ॥ चालरे जीवा जिन धर्म कीजिये ॥ अमरसेन वीर उपरे,
बैठो करत विचार । भाई किम आयो नहीं, कईं लागी अवार ॥ १ ॥ मोटो वडो रे संसार में ॥ टेक ॥ के तो मारग भूलियो, के कोई
उपनो काम । के कोई सेधो मिल गयो, के कोई खोयो दाम ॥ मो २ ॥ सिंगलपुर इण शहर में, कांई
देखतो होय कहाँ मिले मैं ढूढु कहां, चऊ दिशी रयो छे जोय ॥ मो ३ ॥ मात पिता वैरी हुआ, रहा
की थी चंडाल । आज भाई वैरी हुओ अब होसी काँई हाल ॥ मो ४ ॥ छाती भर भर रोवतो, आसुं बहे परनाल ।
आरति मनमें अति घणी. फिरे सरवर पाल ॥ मो. ५ ॥ इम करतां संझा पड़ी, जोई वाट अथाग । रात गई तब एकली, आयो नृप के
बाग ॥ मो ६ ॥ सयन कियो तिण बाग में, सूर्य उग्यो ते भाल । ऊठ कर शीघ्र सिधावियो, आयो सरवर पाल ॥ मो ७ ॥ फल खाई दिन
काटियो, बीत्या इम दिन सात । राज मीले इण अवसरे, सुण जो अचरज बात ॥ मो ८ ॥ सिंगलपुर को नरपति, राज भोगे वे सार ।
कर्म योगे गाढी वेदना, व्यापी अंग मझार ॥ मो ९ ॥ वेदना दूर निवार वा, आव्या वेद अनूप । कोई दवा लागी नहीं, मृत्यु पायो भूप १४६
॥ मो १० ॥ भूप केई भेला हुवा, किणने दीजिये राज । सबही चहावे संपति, सीजे कहो किम काज ॥ मो ११ ॥ सबही मिल मतो
कियो, मयंगल सज तत्काल । कुंभ कलश मस्तक ठवो, सूंड ग्रही पुष्प माल ॥ मो १२ ॥ वाजितर बहु वाजता लोक हुआ बहुलार
सिंगलपुर में होताथका, आया बाग मझार ॥ मो १३ ॥ गज आयो अति मलपतो, सूतों कुंवर ते ठाम । सूंड करीने जगावियो, देखे

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

खलक तमास ॥ मो १४ ॥ कुंवर जागी लागो भागवा. लोका ग्रह्यो तत्काल । राजदेवां में तुज भणी, गला में नाखी पुष्पमाल । मो १५ ॥
महोत्सव कर संडाणर्थी दीनो कुंवर ने राज । खुब कहै ढाल आठमीं, सींज्या वंछित काज ॥मो १६ ॥ ढाल ९ मी च ल—हरषी २ प्रभुजी
का दर्शन निरखीजो॥ अमरसेन तो राज भोगवे, वीरसेन मोटो रागी । दोनों भाई एक शहर में, चिंता गई सहूँ भागी ॥ १ ॥ गणिका अर्ज
करे छे एम, मोंसु प्रपञ्च राखो केम ॥ टेक ॥ वेश्या एक दिन वीरसेन ने, बोले अमृत वाणी, परमेश्वर मुझ महेर करी सो, मीलिया
उत्तम प्राणी, ॥ ग २ ॥ साहिब मुजने सांच कहो तो, बात पुछूं एक थाने । जब मांगु तब महोर पांचमे, किहां थकी तुम आने ॥ ग ३ ॥
बात न दूजो थांके मां के, गुपत पणो किम राखो । सुणवाकी अभिलाषा मुजने. जिम होवे तिम भाखो ॥ ग ४ ॥ वीरसेन तो भोलो ढालो,
भेद कछु नहीं पायो । इणने तो जिम है तिम कहैणो, सुख पायी चित्त चायो ॥ ग ५ ॥ वीरसेन वेश्या से बोले, कहुं बात सब थाने ।
वन में एक पक्षी कृपा कर, गुठलो दीनी म्हाने ॥ ग ६ ॥ तीण गुठली परभाव करीने मुख से महोरा पड़ती । जब लग गुठली रहै पेट में;
तब लग बाजी चढती ॥ ग ७ ॥ गणीका बोली सुण हो प्रीतम, बात कही मुज सारी । इ बातां मत कही जो कीणने, कपट भरी छे नारी
ग ८ ॥ वेश्या मन में एम विचारे, यह गुठली मुजे लेणी । आस सहू मन वंछीत पूरी. सीख अणी ने देणी ॥ ग ९ ॥ दुष्ट भाव वेश्या
मन आणयो, वीरसेण सुं बोली । स्वान पीठ को प्यालो भरने, पायो शक्कर घोली ॥ ग १० ॥ वीरसेन ने वमन हुवो तब, गुठली निकली
बारे । तत्क्षण गुठली लीनी वेश्या, ते कहो केम निहारे ॥ ग ११ ॥ वेश्या बोली सुण हो साहिब, फिकर लग्यो अब मुजने । कोन दुष्ट की
नजर लगी सो, वमन हुवो छै तुमने ॥ ग १२ ॥ चूरण गोली अजमो लाकर, दियो खूब संतोषी । मन को भर्म मिट्यो नहीं सायत, करामात
और होसी ॥ ग १३ ॥ अहो निश राख्या मालुम पड़ से, हिवड़ा साख न दीजे । खूब मुनि कहै नवमीं ढाले, यत्न एहना कीजे ॥ ग १४ ॥
ढाल १० वीं ॥ चाल—जिनन्दमांय दीठाओ स्वप्ना सार ॥ दिन उगा मुख धोवता जी, प्रगटी नहीं दिनार । आज जरूरत है घणी जी,
बोला वेश्या नार ॥ १ ॥ चतुर नर वेश्या को संग निवार ॥ टेक ॥ कुंवर कहै अब कांई करूं जी, गुठली नहीं उरमाय । छेय न दीजे मुज १४७
भणी जी, सरण पड्यो तुज आय ॥ च २ ॥ वेश्या टटकीने, इम कहै जी, नहीं हमारे काम । मांगू तब आपो सदा तो, बैठा रहो इणठाम
॥ च ३ ॥ दया न आणी दुष्टणी जी, दीनों बाहर निकाल । आंसु झरे जिम बादली जी, आयो सरवर पाल ॥ च ४ ॥ रे बंधव तूं किहां
गयो रे, कांई होसी मुज सूल । वेश्या मोह्यो मुज भणाजी, तुजने गयो मैं भूल ॥ च ५ ॥ इम चिंता करता थका जी, गई है आधीरात

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

मन धारया फिर किम हुवे जी, सुण जो भवियण बात ॥ च ६ ॥ चार चोर तिण समय जी, लाया चोरी माल। बेचन काजे आविया जी तीण सरवरनी पाल ॥ च ७ ॥ कंथा, लुकटने पावड्यां जी, मिल कर खोली गाँठ। चार वस्तु जो होवती जी, एक एक लेता बांट ॥ च ८ ॥ कलह करे चारु जणां जी, शब्द पड्या तस कान। बीरसेन झट ऊठने जी, शामिल होगया आन ॥ च ९ ॥ कलह निवारण थायरोजी, आव्यो छूं तत्खेव। कैसी वस्तु है तुम कनेजी, समझाऊं स्वयमेव ॥ च १० ॥ कंथा लुकटने पावड्यां जी, तीन्हों ही जिष अमोल। दीनी सुर ऋषिराज ने जी, लाया झोरी खोल ॥ च ११ ॥ तस्कर पूछे तूं कोन छे जी, सांच कहो मुझ बात। परदेशी हुँ मानवी जी, निधन दीन अनाथ ॥ च १२ ॥ क्या गुण है वस्तु माँही जी, तस्कर कहै कर गरूर। कंथा थकी महोरा झरे जी, लुकट थी अरिजन दूर ॥ च १३ ॥ पावडियां पग पहेरने जी, जाय गगन तत्काल। खूब कहै लक्ष्मी मिले जी, यह हुई दशमीं ढाल ॥ च १४ ॥

॥ ढाल ११ वीं ॥ चाल—हुंरे अनाथी निरग्रंथ॥ बीरसेन इम विन वेरे, चतुराई से चूंप। भेप करूं तुम निरखवारे, कैसो खुले मुझ रूप ॥ १ ॥ चतुर नर पायो वस्तु अमोल ॥ टेक ॥ चोर कहे सुन मानवी रे, मनमें राखे केम। बस्तु दीनी तहने रे, नहीं जाणणों कछु बहेम ॥ च २ ॥ कंथा ओढी अंग पेरे, घोटो लीनो हाथ। पावड़िया पग पहेरने रे, उडियो गगन में जात ॥ च ३ ॥ चोर मन में चिंतवेरे, खोई वस्तु अमोल। भाग बिना ठहरे नहीं रे, ले गयो शिर पंपोल ॥च ४॥ बीरसेन नीचे उतरयो रे, चोर गया निज ठाम। आयो सिंगलपुर शहर में रे. जहां वेश्या को मुकाम ॥ च ५ ॥ वेश्या देखी चिंतवे रे, कांइक है इणतीर। पास आय विनवेरे, फलियो मुझ तकदीर ॥६॥ कहां गया तुम साहिबा रे, मैं देखी तुम वाट। मंदिर सुनो तुम विना रे, भोगवो पुण्यका ठाठ ॥ च ७ ॥ बीरसेन मन चितवेरे, या कपटण है नार। नीची नजर लगायने रे, बोल्यो नहीं लगार ॥ च ८ ॥ भर्म तुम्हारे मन में जो है, सो दाखुं सुण पीव। मदिरा पीधी तेहथीरे, छकियो नशा में जीव ॥ च ९ ॥ मुझने तो कछु गम नहीं रे, जो कोई जाणो दोष। माफ करो सब मुझ भणी रे, मत आणो मन रीस ॥ च १० ॥ बीरसेन मन चिंतवेरे, साची बात को सार। वेश्या कहै सो सत्य है, दोष न इणरो लगार ॥ च ११ ॥ तत्क्षण उठने चालियो रे, हुवो चित्त वेश्या में लीन। पंचेन्द्रिय सुख भोगवे रे, ज्यों वारि में मीन ॥ च ११ ॥ महोरां मांगे वेश्या जद, बह ला देवे तत्खेव। गणिका पूछे बालिमा रे, कहां से आणो स्वयमेव ॥ च १३ ॥ पावड़िया पग पहेरने रे, उड़ जाऊं असमान। खूब कहे ढाल ग्यारमी रे, सपूं तुझने आन ॥ च १४ ॥ ढाल १२ वीं ॥ चाल चन्देरी पति सुं कहै ॥ एक दिन गणिका इम कहै, सुणाहो प्रीतम

१४८

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

बात ॥ पिउड़ा । आप गया मुझ छोड़ने, तिणरो सुण अबदात ॥ पिउड़ा ॥ बेग चालो करो मानता ॥ टेक ॥ समुद्र में देवी पूरणा जिनको बड़ो प्रभाव ॥ पिउड़ा ॥ बहुजन आवे जातरी, केई रङ्क केई राव ॥ पिउड़ा ॥ वे २ ॥ मैं भी लीनी मानता, जो मुझ मिल जावे कन्त ॥ पि ॥ तो हम दोनों आयने, करोंगा पूजा हरषंत ॥ ॥ ॥ पि ॥ वे ३ ॥ प्रत्यक्ष परिचय तेहनो,
 इन कारण से आप ॥ पि ॥ शीघ्र यहां से चालिये पावडियो प्रताप ॥ पि ॥ वे ४ ॥ वीरसेन इम बोलियो, इण कामे नहीं देर ॥ पि ॥ दिन उगा चाला सही, बनी रहे सब खैर ॥ पि ॥ वे ५ ॥ वीरसेन वैश्या दोनों, चालिया समुद्र मांय ॥ पि ॥ पूरणा देवी के मन्दिर में, उतरे दोनों आय ॥ पि ॥ वे ६ ॥ वेश्या कहे सुनो बालमा, निर्मल मन वच काय ॥ पि ॥ इन देवी ने पूजलो, त्रिया भेटे नाय पी ॥ वे ७ ॥ वीरसेन खोल पांवड़ी, गयो मन्दिर के मांय ॥ पि ॥ पूरणा देवी के सामने, उभो शीष नवाय ॥ पि ॥ वे ८ ॥ सविधि पूजा करी तेहनी, धूप दयो है देव ॥ पी ॥ हाथ जोड़ने इम कहे, तू देवी स्वयमेव ॥ पि ॥ वे ९ ॥ शीष नमायो तिण समए, वेश्या देख्यो रंग ॥ पी ॥ पहेर पावड़ियाँ पांव में, घर आई समुद्र उलंग ॥ पि ॥ वे १० ॥ पूजा कर देवी तणी, चरणां शीश नमाय ॥ पी ॥ वीरसेन आयो बारणे, वेश्याने देखे नांय ॥ पि ॥ वे ११ ॥ पावड़िया भी दीसे नहीं, कदाच्चित कीनी गेल ॥ पि ॥ हेलो पुकारे तेहने, कहाँ गया तुम बोल ॥ पि ॥ वे १२ ॥ ढूंढी पण पाई नहीं कुंवर हुवो दिलगीर ॥ पी ॥ रे दुष्टण यह कांई कियो, नेणां छूटो नीर ॥ पि ॥ वे १३ ॥ इतने विद्याधर एक आइयो, बांध से पूरण प्रेम ॥ पि ॥ ढाल हुई यह द्वादसमीं, खूब दुर्जि कहे पम ॥पी ॥वे१४॥ढाल १३ वीं॥ चाल-भाव धरी जिनवंदिये ॥ विद्याधर विमाण में, बैठो है सुखदाई रे । ऊपर होकर नीकल्यो, जानो महा विदेह माँईरे ॥१॥ श्री मंदिर स्वामी वंदिए ॥टेक॥ कुंवर का कष्ट प्रभाव से, विमाण थभ्यो गगनमें रे, तत्क्षण नीचे उतर्यो, प्रभुजी बसे तेहना मन में रे ॥ श्री २ ॥ कुंवर से मीलियो आयने, पूछया सहु समीचारो रे । वीरसेन सब दाखियो, कर्म को दोष हमारो रे ॥ श्री ३ ॥ दुःख से काढो स्वामी जी, कर मुझ पर उपकारो रे । गुण नहीं भूलूं थांहरो, नया जन्म दातारो रे ॥ श्री ४ ॥ विद्यधर इम १४६
बोलियो, विदेह क्षेत्र में जासु रे । मनमें धीरज धारजे, पन्द्रह दिन में आशुं रे ॥ श्री ५ ॥ वीरसेन इम, विनवे बात कहो मुझ सागेरे । जावो हो दर्शन कारणे, इतना दिन किम लागे रे ॥ श्री ६ ॥ श्री मंदिर स्वामी पास में, यशोधर नृपनंदारे । सहस्त्र पुरुष संग आदरे, संयम भार उमंगो रे ॥ श्री ७ ॥ जो मन होवे थांहरो, चाल हमारे संग रे । जिन वाणी प्रभु दर्शन से, होवे पवित्र अंग रे ॥ श्री ८ ॥

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

कुंवर कहै आॅऊ रहीं, जोऊंगा वाट तुम्हारीरे । आयके वेग संभाल जो, मतना जाओ विसारी रे ॥ श्री ६॥ विद्याधर यों कह गयो, इन तरु नीचे मत जाजोरे इन तरू का फल खाजो, आत ध्यान निठा जा रे । शीघ्र विद्याधर आइयो, महा विदेह क्षेत्रके माईरे जिनवरको कर घदना जेठा परिषद्‌। मे माहरे । श्री ११ ।। पन्द्र दिन महोत्सव देखने, विद्याधर पाछो चलियो रे । तीण हीज द्वीप में आयके, वीरसेन कुवर से मिलियो रे ॥ श्री १२ ॥ दिन दस ता भेला रया, जावण का हुई त्यारी रे इतने वीरसेन पूछियो, देवो इस तरू की संका निवारी रे ॥ श्री १३ ॥ इणने सूंध्या खर हुवे, मैं वरजा इण काजरे । इण तरूना फल सूघता, पिछो नर होवे ताजा रे ॥ श्री १४ ॥ दोनों ही फूल ले साथ में, तुरत विमान चलाया र । खूब कहे ढाल तेरमी, कूंवर सिंगलपुर आयो रे ॥ श्री १५॥ ॥ ढाल १४ वीं ॥ चाल — हर्षी ३ रे प्रभुजी का दर्शन निरखा रे ॥ विद्याधर तो बाग में, मेली पाछो तुरंत सिधायो । वीरसेन तत्क्षण ऊठाने सिंगलपुर में आयो ॥ १ ॥ वश्या अज करेछे एम मांशु मौन कराछे केम ॥ टेक ॥ एक वणिक की हाटे बैठा, चऊदिश कानी नाहरे । इतने काम तणे प्रयोगे वेश्या निकली बाहरे ॥ वे २ । वेश्या देखा मन विचारे, यहां कैसे यह आया । मैं तो छोड आई समुद्र में, है यह आश्चर्य सवाया ॥ वे ३ । इसके पास कोइ जडि हुवेगा, जाय करू नर माई । वीरसेन के सन्मुख आकर ऊभी शीष नमाइ ॥ वे ४ ॥ पिऊजी मांशु मुखडे बोलो कैसे बने हो रोसा, मैं ता निशदिन याद करतो, तोभी समझो मुजको दोसी ॥ वे ५ ॥ अन्न पाणी अंगे नहीं लागो, चित म्हारो तुम माइ । फुल समान या कोमल काया, तुम बिन रहीकुम्हलाई ॥ वे ६॥ घूंघट काढ कुवर मुख आगल, नेणा आँशु नाखे सांची बात अब कहै दो साहिब, मन में भ्रम कांई थाके ॥ वे ७ ॥ सागत थे इम जाणता होला, पावडिया लेआई । मस्तक उपर राम विराजे, कम केम कपटाई ॥ वे ८ ॥ आप गया देवा पूजन का, मैं ऊभी थी एक किनारे । ईतने एक विद्याधर आयो, पावडियां पर दृष्टि डारे ॥ वे ९ ॥ मैं जाण्यो शायद ले जासी, कीना कर सु आगी । तद्‌पि झपटीने वह भागो, मैं तस केडे लागी ॥ वे १० ॥ शीघ्र चाल समुद्र में उडीयो मैं पण हिम्मत राखी । सिंगलपुर उपर होइ जाता, पापी मुजने नांखी ॥ वे ११ ॥ तुम बिन मंदिर सुना लागे, जिम बिन दीवे बाती । पंखो जिम पांखा होती तो तुरत उडीने आती ॥ वे १२ ॥ इण कारण ये सांची साहिब, झूठ रती मत जाणो, इण बाता में झूठ होवे तो सोगन मुझने खाणो ॥ वे १३ ॥ उठो चालो महेल आपणे । वीरसेण तब हरख्यो । खुब मुनि कहै ढाल चवदमीं, वेश्या घरने राख्यो ॥ वे १४ ॥ ढाल १५ वीं ॥ चाल — चांदेरी पति सु कहै ॥ दिन कीतना एक निकल्या, एक

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

दिन वेश्यानार ॥ भवियण ॥ देखी वस्त्र की गांठड़ी, कीनो मन विचार ॥ भवियण ॥ १ ॥ पिऊजी प्रीत निभाइये ॥ टेक ॥ वीरसेन को पूछियो, साहिब चतुर सुजान ॥ भ ॥ मैं प्रछन्न राखूं नहीं, आप कपट की खान ॥ भ ॥ पि२ ॥ गांठ बधी छे वस्त्र की, मुजको बताई नाय ॥ भ ॥ कांई वस्तु है इण मांई, सॉच कहो मुज ताय ॥ भ ॥ पि ३ ॥ वानता उतावल मत करो, लायो छूं तुम काज ॥ भ ॥ इतना दिन, भूली गयो, छोड़े बताऊं आज ॥ भ ॥ पि ४ ॥ फूल बतायो खरतणो, वेश्या प्रसन्न भई देख ॥ भ ॥ क्या गुण है इस पुष्प में, मुजने बताओ विशेष ॥ भ ॥ पि ५ ॥ वीरसेन इम बोलियो, इण में बहु गुण दर्शाय ॥ भ ॥ जरा कभी आवे नहीं, नित्य योवन वय रहाय ॥ भ ॥ ॥ पि ६ ॥ इणने सूंघूं साहबा, भला करी मुज महेर । सूंघो एकांत जायने, मती लगाजो देर ॥ भ ॥ पि७ ॥ वेश्या सूंघ्यो फूलने, खरी बनी तत्काल ॥ भ ॥ लेकर घोटो हाथ में कुंवर आयो तिहां चाल ॥ भ ॥ पि ८ ॥ दे दे मार काड़ी बाहरणे, लायो खास बजार ॥ भ ॥ कौतोहल देखन कारणे, भेला हुवा नर नार ॥ भ ॥ पि ९ ॥ निर्दय यह कुण मानवो, कुटेछे इण ठोड़ ॥ भ ॥ दूजी वेश्या मिल दरबार में, अर्ज करी कर जोड़ ॥ भ ॥ पि १० ॥ परदेशी कोई मानवी, कीनो जबर अन्याय ॥ भ ॥ मुज मालिका हुई रासभी, चोड़े कुट्या जाय ॥ भ ॥ पि ११ ॥ भूप कहै कोतवाल ने, कौन पुरुष ग्रहो आज ॥ भ ॥ राज सभा में लावजो, दुष्ट करेछे अकाज ॥ भ ॥ ॥ पि १२ ॥ कोतवाल चल आवियो, लोक करे बहु सोर ॥ भ ॥ घोटा थी दूर खडो रयो, कांई न चल्यो जोर ॥ भ ॥ पि १३ ॥ कोतवाल पाछो गयो, कह्यो भूपने जाय ॥ भ ॥ ढाल पन्नरमीं यह हुई, खूब कहै दर्शाय ॥ भ ॥ पि १४ ॥ ढाल १५ वीं ॥ चाल चंदेरी पति सू कहै ॥ अमरसेन नृप इम कहै तूं नाम को हुवो कोतवाल ॥ भवियन ॥ तिणने जाय पकड्यो नहीं, मैं लाऊं जंजीर डाल ॥ भवियन ॥ १ ॥ बिछुडिया वाला मिल्या ॥ टेक ॥ भूप ऊठा चलियो सही, आयो मध्य बाजार ॥ भ ॥ रोष धरीने आकरो, साथे बहु नर नार ॥ भ ॥ ॥ वि २ ॥ दूर से देख्यो नेन ते, मुझ बंधव वीरसेन ॥ भ ॥ वीरसेन भी ओलख्यो, चित्त में पायो चेन ॥ भ ॥ वि ३ ॥ तत्क्षण छोडी रास भी, मिल्यो बांह पसार ॥ भ ॥ हर्ष न मावे अंग में देख रया नर नार ॥ भ ॥ वि ४ ॥ यों कांई लागे भूप के, दुनिया करे बहुबात ॥ भ ॥ १५१
तुरत मंगाई पालखी, बैठा दोनों साथ ॥ भ ॥ वि ५ ॥ छत्र चवर होता हुवा, फरराता ऊँचा निशाण ॥ भ ॥ घर घर हर्ष वधावणा, जाचक पाता दान ॥ भ ॥ वि ६ ॥ नजराणे आये बहू, ठोर ठोर अतर पान ॥ भ ॥ आज भलो दिन ऊगियो भाई मिलियो आन ॥ भ ॥ ॥ वि ७ ॥ इतने वेश्यां सब मीली, अर्ज करी कर जोड़ ॥ भ ॥ कृपा कर मुझ नाथ जी, करो मनुष्यणी इण ठोड ॥ भ ॥ वि ८ ॥

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

अमर सेन की कहैन से सुधायो दूजो फत ॥ भ ॥ रासमी मिट वेश्या वनी, तब करी मंजूर सब भल ॥ भ ॥ वि ९ ॥ पावड़िया गुटली दोनों, तुरत मंगाई भूप ॥ भ ॥ जोबन प्यारा जक्त में, वेश्या दाना सूप ॥ भ ॥ वि १० ॥ पुर में पसरी वारता; पूरे मन के कोड ॥ भ ॥ सुख सम्पती अति विलसे, दोनों भाई की जोड ॥ भ ॥ वि ११ ॥ अमरसेन नृप एकदा, भाई सें कारियो विचार ॥ भ ॥ मात पिता ने बुलावणा, उनका है उपकार ॥ भ ॥ वि १२ ॥ पत्र लिख्यो कर ओपमा, जयसेन राजा का पूत ॥ भ ॥ पत्र देकर भेजियो, तुरत सिधायो दूत ॥ भ ॥ वि १३ ॥ कपिलपुर आयो चली, पत्र दियो नृप हाथ ॥ भ ॥ खुब कहै ढाल सोलवीं, हर्ष थयो नृप गात ॥ भ ॥ ॥ १४ ॥ **ढाल १७ वीं** ॥ चाल- जिनंद मांय दिठा हो सुपना सार ॥ दा बधाई दूतने जी, विदा किया महिपाल । पत्र मारे लिख दियो जी, आवां सिंगलपुर चाल ॥ १ ॥ चतुर नर सफल हुवा सब काज ॥ टेक ॥ दूत आयो सिंगापुरि जी, पत्र दियो नृप हाथ समीचार जा पिता लिख्या जी, वाच्या पृथ्वी नाथ ॥ च २ ॥ शुभ मुहूर्त देख्यो खरो जी, जयसेन नमे राय ॥ चतुरगी शेन्या सजी जी, मारग जोता जाय ॥ च ३ ॥ दिन लाग्या बहु चलतां जी, आया सिंगलपुर सीम । पुत्र दोनों सन्मुख आविया जी प्यासो सरवर जीम ॥ ४ ॥ मात पिता से आई मिल्या जी, चरण नमायो शीश । आज भलो दिन उगीयो जी, पूरी मन की जगीश ॥ च ५ ॥ दोनु पुत्र माता पिता जी, बारुण हो असवार । छत्र चंवर होता हुआ जी, होता मध्य बजार ॥ च ६ ॥ राजभवन आईया जी, मात पिता दोय । पचेन्द्रियसुख भोगवे जी, मिली पुण्य की सोय ॥ च ७ ॥ एक दिन भूपति इम कहे जी, दोनों पुत्र ने बात । लाल दोष नहीं म्हारो जी, कर्म कमाया तुम मात ॥ च ८ ॥ पुत्र कह्यो तात से जी, भलो दियो मुज साज । जो कारण मिलतो नहीं जी, कैसे पातो राज ॥ च ९ ॥ मात पिता चंडालका जी भलो हुवो पृथ्वी नाथ । भलो हुवो पक्षी तणो जी, गुटली दी मध्यरात ॥ च १० ॥ समो सरया तिण अवसर जी, सुमति सागर अणगार । वदना कारण नीकल्या जी, राजादिक नर नार ॥ च ११ ॥ मुनिवर दीनी देशनां जी, सब जीवां सुखदाय । वाणी सुण परिषदा गई ॥, अर्ज करे दोनों भाय ॥ च १२ ॥ कर जो डीहम विनवे जी, सुनो हो गरीबनवाज । संयम लेवां तुम कने जी, पूछ मात पिता से आज ॥ च १३ ॥ मुनिवर कहे जिम सुख होवे जी, करिये नहीं परमाद । आज्ञा ले पितु मात की जी हुवे दोनों भाई साथ ॥ च १४ ॥ मुनि धरम शुद्ध पालने जी, तपस्या करी भरपूर । केवल पाया निर्मलो जी, घन घातिक कर्म किया दूर ॥ च १५ ॥ महि मण्डल में विचरने जी, घणो कियो उपकार । मांस संथारो कर मुनीश्वरों जी, पहुँचा मोक्ष मुझार ॥ च १६ ॥

१५२

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

उगणीसे पचास के जीऊपर छके साल । मालव देश मंदसोर में जी, चौमासो सुखकार ॥ च १७॥ मुनि नंदलाल जी दीपता जी, गुरुजी महा गुणवन्त । हुक्म दिगो तब शहर मे जी, सुखे रया तीन संत ॥ च १८ ॥ खुब कहे तुम सांभलो जी, ये हुई सतरा ढाल । सुणे सुणावे प्रम से जी, वरते मंगल माल । च १९ ॥ (मनुष्य जन्म की दुर्लभता पर-दस दृष्टांत-(तर्ज: अरणक मुनिवर चाल्या गौचरी) दस दृष्टांतेरे नरभव दोहीलो । ऐसो जिन फरमायोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे नरभव दोहीलो ॥ टेक ॥ कम्पिल पुरमेंरे, ब्रह्म नरेशनों चूलणी को अङ्ग जातोरे ॥ बारमो चक्रीरे राज करे तिहां । ब्रह्मदत्त नाम विख्यातोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥१॥ पिता तेहनारे मुंओ उस समें, ब्रह्मदत्त छोटोसो बालोर । बारी थापीने चार महिपति । करता राज संभालोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥२॥ चूलणी राचीरे दग नरेश से । पुत्र लख रोष भरायोरे ॥ काक मरालोरे उनके पास में । वे नृप को समझायोरे ॥ दस दृष्टांतेरे० ॥३॥ जाणी जननी ने सुत चाह्यो मारवा । काष्ट को महल बनायोरे ॥ कपट करीने सुत बधु दोनों को । महल में सयन करायोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥४॥ निर्दय होई ने आधि रात में । अगन पलीता लगायोरे ॥ पहिले मन्त्रीश्वर सुरग बनावियो । तिणमेंहो कुंवर सिधायोरे ॥ दस० ॥५॥ मंत्री अपनोरे सुत साथेदियो । अश्वपे आरुढ़ होईरे ॥ कुंवर सिधायोरे दूर देशान्तरे । मिल जुल रेहवे दोईरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥६॥ फिरता बनमेंरे कष्ट उठावता । एक दिन प्यास सतायोरे ॥ व्याकुल देखीने कोइक विप्रने । शीतल नीर पिलायोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥७॥ जब में होउरे कम्पिलपुरपति । तू आजे मुज पासोरे ॥ जो मुखमॉगेगा सो तुज देवसुं । दीनो वचन हुलासोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० चक्री हुओरे कुंवर कालान्तरे । कम्पिल पुरनो वह नाथोरे ॥ स्वर्ग रुपी खीरे भोगे साहिबी । दसदिश हुओ विख्यातोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥८॥ वचन दियोथोरे बनमें विप्रने । मुसीबत वकत के मायोरे ॥ आश धरीनेरे नरपति पाससे । विप्र तुरन्त चल आयोरे दस दृष्टान्तेरे० ॥१०॥ महिपति तूठोरे तब तिण मांगियो । ओर न मुज दरकारोरे ॥ तुमघर खेतीरे जीमुं घरघर । एक एक भेट दीनारोरेर दस दृष्टान्तेरे ॥११॥ हुकम हुआसेर जीमें घरघरें । ब्राह्मण मनमें विमासेरे ॥ फिर कब जिमुरे चक्रवरत घरे एहवो दिन कब आसेरे
दृष्टान्तेर॥ १२॥ सायत तेतोरे भोजन मिल सके । संशय नहीं लिगारोरे ॥ मनुष्य जमारोरे हारयो नहीं मिल । काल अनन्त सफारोरे ॥ दस द० ॥१३॥ यह प्रथम दृष्टांत० ॥] चाणक मंत्रीरे थोएक भूपके । भर सौनैयाकी थालोर ॥ एक एक सोनैयो मेले डावपै । फिर यह अपासो डालरे ॥ दस द० । १४॥ तीनों वेलारे मानव सांभलो । वही जो आवेलो अङ्कोर ॥ यह सब मोहरें मैं दूंगा तुम भणी। राजा हो

चाहे रंकोर ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥१५॥ जो नर आवे यो जाये हारने । कठियारो एक आयोरे ॥ दावलगायोरे पिणते हारियो । मन में बहु पछतायोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥१६॥ सायत तेतोरे सौहरें वह मिल सके । संशय नहीं लिगारोरे ॥ मनुष्य जमारो हारयो नहीं मिले । काल अनंत मझारोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे ॥१७॥ [यह दूसरा दृष्टान्त०] देव ।। कोईरे जम्बु द्विपनो । जो आदिक सब धानोरे ॥ भेलो करनेरे सब हीलमिल करे । ढेर करो एक स्थानोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ।१८॥ बुद्धि ।। मेलीरे असती बर्णनी । कर-देसूप सुआनोरे । इणभव मांहीरे कहो किम कर सके । प्रथक प्रथक सब धानोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥१९॥ सयात तेतोरे भिन्नर कर सके ; संशय नहीं लिगारोरे ॥ मनुष्य जमारोरे हारयो नहीं मिले । काल अनन्त मझारोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥२०॥ (यह तीसरा दृष्टांत०) कोइ नृपकेरे सुत अरि होरहे । रायनी चावते घातोरे ॥ सहिपत जाणीरे सुत सहुतेड़िया । राय कहे इमबातोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥२१॥ राजसभा में हैं खंभे इतने । इकसत ने वली आठोरे ॥ खंभेरे रे धारा जाणजो । अड़तालीस और आठोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥२२॥ यह लो पासारे बेठा हाथ में । जिणनो आवेला डावोरे ॥ नृपपद देऊंगा मैं खुद तेहने । निज निज होशर बतावोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥२३॥ फिरर आवेरे तेहीज आंकडो । एक सय आठ वारोरे ॥ खभेखभेरे इमहीज जाणजो । यह है कौल करारोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे ॥२४॥ सायत तेतोरे डाव मीलिसके । संशय नहीं लिगारोरे । मनुष्य जमारोरे हारयो नहीं मिले । काल अनन्त मझारोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥२५॥ (यह चौथा दृष्टान्त०) एक वणीककेरे मेंहगा मोलना । रतन घणा घर माहीरे ॥ दाब जमीमेंरे तिणने ऊपरे । सोवे पिलंग बिछाईरे ॥ दस दृष्टांतेरे० ॥२६॥ भेदन देवेरे कोई पुत्रने । अविश्वास है पूरोरे ॥ सब जन बोलोरे बिन व्योपारके मनुष्य जनम तुम धूरोरे ॥ दस दृष्टांतेरे० ॥२७॥ कागज आयोरे बांच सगातणो । चलियो साज सजाईरे । जाण भरोसोरे छोटा पुत्रने । दीना रतन बताईरे ॥ दस दृष्टांतेरे० ॥२८। सुतघर आईने सबही भ्रात ने । भेद बताइ दीधोरे ॥ खोद जमीकोरे रतन निकाल लिया । काम हुओ सहुसिधोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे ॥२९॥ मारग चलतोरे तिणहीज शहर में । आयो लखि बणजारोरे ॥ रतनदेइ ने माल खरीदियो । किनो हाट पसारोरे । दस दृष्टान्तेरे० ॥३०॥ तात पिछो घर आयो गाव से । रतन तिहां नहीं पावेरे ॥ सुतने पूछयोरे भेद सहु कह्यो । सुण २ ते पछतावेरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥३१॥ सायत तेतोरे रतन मिली सके । संशय नहीं लिगारोरे ॥ मनुष्य जमारोरे हारयो नहीं मिले काल अनन्त मझारोरे ॥३२॥ (यह पांचवां दृष्टांत०) पांडली पुरनोरे राजा जित शत्रु । तिणनो एक कुमारोरे ॥ नित्य द्रव्य हारेरे जुआ खेल में । लोभी नीज कुल कारोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥३३॥ भूपति सुतनेरे

पास बुलायने समझावे बहुभांतोरे ॥ कोमल करड़ारे वचन कई कह्या । नहीं मानी एक बातोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥३४॥ कोपीत नृपहोय सुतने काढ़ियो । रोवत तुरन्त सिधायोरे ॥ भूखे मरतारे कष्ट उठावतो । नगर बेनातट आयोरे ॥ दस दृष्टांतेरे० ॥३५॥ बैठो सोचेरे देवल स्थान में । पूरब बात चितारो रे ॥ वणीमग सुतोरे उनके पास में । दोनो नीद्रा मझारो रे ॥ दस दृ० ॥ ३६ ॥ सुपनो देख्यो रे मिश्रित नीद में । निमल पूनम चदोरे ॥ तत्क्षण जागिया दोनों साथ में । पावे अति आनन्दो रे ॥ दस दृष्टान्ते० ॥ ॥ ३७ वणीमग बैठारे निज मन सेती । स्वप्न अरथ इम कीधो रे ॥ रोटी मिलसी रे घी में गलगची । वैसे ही फल लीधोरे ॥ ॥ दस दृष्टान्तरे ॥ ३८ ॥ कुमर सिधायो रे पंडित ने घरे । पूछियो शीश नमाई रे ॥ पुन्यवन्त जाणीने ज्योतिषी ज्ञान में । निज पुत्रि परणाई रे ॥ दस दृ० ॥ ३९ ॥ खास जवाई रे हुओ तद् पीछे । कह्यो अरथ हुलासो रे ॥ सात दिवस में रे तुम इण नगर नो । निश्चे ही भूपति थासो रे ॥ दस दृ० ॥ ४० ॥ भूप अपुत्रियो मरण ते पामियो । इम बोल उमरावोरे ॥ गज गल माला रे डाले तेहने । अपनो नाथ बनावोरे ॥ दस दृ० ॥ ४१ ॥ सब हाँ किधोरे तिणहीज कुमरने । माला गल बीच ठाईरे बाजा बाजेरे बहु आडम्बरे । दीनी राज बिठाइ रे ॥ दस दृ० ॥ ४२ ॥ वणीमग देखियो ते सुख भूपनो । मन में तब पिछतावे रे ॥ मैं पिण पाऊं रे एहवी साहबी । फिर सुपनो कब आवेरे ॥ ॥ दस दृ० ॥ ४३ ॥ सायत तेतोरे सुपनो ल सक । संशय नहीं लिगारो रे ॥ मनुष्य जमारो रे हारयो नहीं मिले काल अनन्त मझारोरे ॥ ॥ दस दृ० ॥ ४४ ॥ (यह छट्ठा दृष्टान्त) मथुरा नगरी रे राज करे तिहां जित शत्रु राजानो रे ॥ हे एक पुत्रि रे सुगुणो तहने । वल्लभ प्राण समानो रे ॥ दस दृ० ॥ ४५ ॥ प्रेम धरीने रे नरवर पूछीयो । बाई ! कहे इण बारो रे ॥ कहे तो मैं देखि सगपण करूं । स्वयं वर धारो रे ॥ दस दृ० ॥ ४६ ॥ ज्यो मुज ब्याहे रे क्षत्री वंशनो । साधे राधा वेदो रे । नहीं तो रहसुं रे मैं ब्रह्मचारिणी । मुज मन यही उम्मिदोरे ॥ दस दृ० ॥ ४७ ॥ लिख लिख भेजी रे कुमकुम पत्रिका सब राजन सरदारो रे ॥ स्वयवर मडप है मुज बाईनो । कृपा करके पधारो रे ॥ दस दृ० ॥ ४८ ॥ जो जो राजन आये तहने । बहुविध कर सन्मानो रे ॥ बनायो मडप एक मनोहरू । जैसे स्वर्ग विमानो रे ॥ ॥ दस दृ० ॥ ४९ ॥ शुभ दिन मुहर्त आदि देखिने । तेड़ाया सब राजानो रे ॥ मंडप मांही रे मीलिया भूपति । बैठा निज र स्थानो रे ॥ ॥ दस दृ० ॥ ५० ॥ सजन करने रे कुंवरी महल में । सजके सब श्रृङ्गारो रे ॥ निकली महल से रे सखियां साथ में । बाजीन्तर धुकारो रे ॥ दस दृ० ५१ ॥ मंडप मांही रे कुंवरी आयने । बीच में स्थम्भ रोपायो रे । काष्ट की पुतली बीच में चक्र चलायो रे ॥ दस

द० ॥ ५२ ॥ लोह कढ़ाई रे नीचे ऊकले । तेल भरी भर पुरो रे ॥ विनय करीने रे कुंवरी विनवे । है कोई राजन सूरो रे ॥ दस द० ॥ ५३ ॥ रजमो धारीने आवे ऊठने । तेल में नजर लगावे रे ॥ बाण चलावे रे भेदी चक्र ने । ते पुतला तक जावे रे ॥ दस द० ५४ ॥ फिर पुतली वाह्यानेत्रने नर कोई रे ॥ जननी जायो रे जग में सूरमो । व्याहेगा मुझे वोही रे ॥ दस द० ॥ ५५ ॥ जे जे आवे रे भूपति देखने । मान करी स्व मेवोरे ॥ ते विध करने सर साधि रह्या । डाव मिले नहीं एहावोरे ॥ दसद० ॥ ५६ ॥ सायत तेतो रे डाव मिली सके । संशय नहीं लिगारोरे ॥ मनुष्य जमारोरे हारयो नहीं मिले काल अनन्त मझारोरे ॥ दस द० ॥५७॥ (यह सातवां दृष्टांत) कोइयक द्रह मेंरे कच्छमच्छ है घणा निर्मल भरीयो है नोरोर ॥ पट्ट अष्ट छायोरे हरित सेवालना । चौकोना समतीरोर ॥ दस द० ॥५८॥ तरुफल तूटिरे द्रहभीतरें पड़यो छीद्र हुवो तण वारोरे ॥ कच्छुओ निकल्योरे देख्यो चन्द्रमा । विसमय पायो अपारोरे ॥ दस द० ॥५९॥ कच्छुओ पहुंच्योरे कहीनिज कुटुम्बने । चरित्र वातावरण लायोरे ॥ आयो जितने रे वह छीद्र ढक गयो रे । चन्द्र दरश कब पावोरे ॥ दस द० ॥६० । सायत तेतोरे दरशन मिल सके संशय नहीं लिगारोरे ॥ मनुष्य जिमारोरे हारयो नहीं मिले । काल अनन्त मझारो रे ॥ दस द० ॥ ॥ ६१ ॥ (यह आठवां दृष्टान्त) ज्यों सुर गाड़िरें पईये भूसरे । लवण समुद्र मझारोरे ॥ चारों दीशामें रे भिन्न भिन्न डालदे । भरीयो नीर अपारो रे ॥ दस द० ॥ ६२ ॥ वायु प्रयोगे रे समुद्र हीलोल से । आय मिले सब थोगो रे ॥ निज निज स्थानरे ज्यों का त्यों मिलं । दोहीलो यह संयोगो रे ॥ दस द० ॥ ६३ ॥ सायर तेतोंर सब ही जुड़ सके । संशय नहीं लिगारो रे ॥ मनुष्य जमारो रे हारयो नहीं मिले । काल अनन्त मझारोरे ॥ दस द० ॥ ६४ ॥ (यह नौवां दृष्टान्त) सुवर्ण स्थंभो रतन जड़ाव को । कोई सुर खंड खंड की धोरे ॥ चूरण करीने रे मेरु गिरी सेती । सर्व उड़ाई ते दीधोरे ॥ दस द० ॥ ६५ ॥ ते परमाणु रे सब भेला करे । फर्क रखे कछु नाहीं रे ॥ मुश्किल एहवो रे जग में मानवी । देव स्थंभ बनाई रे ॥ दस द० ॥ ६६ । सायत तेतो रे स्थंभ बनी सके । संशय नहीं लिगारो रे ॥ मनुष्य जमारो रे हारयो नहीं मिले । काल अनन्त मझारो रे ॥ दस द० ॥ ६७ ॥ (यह दसवा दृष्टान्त हुआ) उपसंहार०) प्रथ्वी पाणी रे तेउ वायु में बसियो काल असंखोरे ॥ काल अनन्तोरे तरु गण में रयो । शास्त्र बचन निसंखोरे ॥ दस द० ॥ ६८ ॥ एक एक लोक प्रदेश के ऊपरे । अनन्त अनन्त भव की धोरे ॥ परवस प्राणी रे जनम मरण किया । विश्व सहु भरदीधोरे ॥ दस द० ॥ ६९ ॥ अशुभ कर्म गये शुद्ध हुई आतमा । जोग भलो बरतायो रे ॥ भद्र आदि यह शुभ गुण रुविया । मनुष्य जनम जब पायोरे ॥ दस द० ॥ ७० ॥ नित्य

गुरु मुख से रे शास्त्र सांभलो । श्रद्धा शुद्ध आराधो रे । प्राकर्म करजो रे संयम धर्म में यह शुभ अवसर लाधो रे ॥ दस द० ॥ ७१ ॥ कोइक मोटो रे नगर सुहामणो, । तिण नो एक ही द्वारो रे ॥ कोपीत सुर होइ अग्नी लगाय दी । जनता निकसे है बहारोरे ॥ दस द० ॥ ॥ ७२ ॥ वणीमग अधोरे ।फरतो शहर में । तेबोल्यो तत्कारोरे ॥ प्रथम निकालो रे मुजने बाहिरे । जाणी पर उपकारो रे ॥ दस द० ॥ ॥ ७३ ॥ एक दयालुरे नगर दीवार के । दीनो अंध लगाइ रे ॥ इण रे सहारे रे तू जा निकल जे । तिण दरवाजा के मांईरे ॥ दस द० ॥ ॥ ७४ ॥ वणी मग चाल्यो रे द्वारते आवियो । तत्क्षण छोड़ी दावारो रे ॥ खाज को खणतोरे आगे निकल्यो । फिर कब आवे ? ते द्वारो रे ॥ दस द० ॥ ७५ ॥ नगर सरीखो रे यह संसार है । जन्म मरण की है आगो रे ॥ मनुष्य जमारो रे द्वार है मोक्ष नो । इम भाख्यो वीतरागोरे ॥दस द०॥७६॥ जग सहु जाणोरे स्वार्थ नो सगो । उपकारी शुद्ध साधो रे ॥ दुखसे डरने सेवो धर्मने । मत करज्यो परमादो ॥दस द०७७॥ ज्यो हलकर्मीरे चऊमांक्षना । सुणजो ध्यान लगाईरे ॥ सांचो शरणोरे लीज्यो धर्मनो । भवभव में सुखदाईरे ॥ दस द० ॥७८॥ श्री जैन आगम उत्राध्ययन में तीजा अध्ययन मझारोरे ॥ देख कथासेरे यह कविताकारी अल्पबुद्धि अनुसारोरे ॥ दस द० ॥७९॥ शास्त्रवेतारे गुरु नन्दलालजी । हैस्थवोर भगवन्तोरे ॥ परम दयालुरे दाता बोधना । रविज्ञिमि तेज दीपंतोरे ॥ दस द० ॥८०॥ संवत दससोर, नौसोउपरे । रचना कीनोरे खूब मुनिजावरे । मालव देश विख्यातोरे ।. दस द० ॥८१॥ इति दस दृष्टान्त की ढाल. शान्तस्वभावी, त्यागमूर्त्ति विद्वान जैनचार्य, पूज्य श्री खूबचन्द्रजी महाराज रचित—सम्पूर्णम् ॥

श्री विजय प्रिंटिंग प्रेस, मदनगंज (किशनगढ़) में मुद्रित ।

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

प्राप्ति स्थान—
श्री नन्दोदय पुस्तकालय,
मुकाम- जावरा
मा ल वा.

रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट के लिये ।≈) और सिर्फ बुक-पोस्ट के लिये ≡) के टिकट भेजें.

मुद्रकः—
श्री विजय प्रिंटिंग प्रेस, मदनगंज (किशनगढ़)

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

[illegible]	10 ..
[illegible] ·	829 ¼
[illegible] ·	10 ..
[illegible] ·	819 ¼
[illegible]	6 ¼
[illegible] -	6 ¼
[illegible] ·	819 ..
[illegible]	10 ⅛
[illegible] ·	10 ⅛
[illegible]	802 ⅞
[illegible]	8 ⅛
[illegible] ·	8 ⅛

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Sri Nagavattiname.

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ अथ गायत्री लिख्यते राम राम राम सीताराम
श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ उतिष्ठंति महाभूता ये भूता भूमिपालकाः ॥ भूतानाम
विरोधेन ब्रह्मकर्म समाचरेत् ॥ १ ॥ आगच्छ वरदे देवी अक्षरे ब्रह्मवादिनी ॥ गायत्री
छंदसां माता ब्रह्मयोनिर्नमोस्तुते ॥ २ ॥ इत्यावाहनम् ॥ ॐ अस्य श्रीवसिष्ठ शापमो
चनमंत्रस्य वशिष्ठ ऋषिरनुष्टुप् छंदः ॥ ॐ श्रीविष्णुर्देवता वशिष्ठ शापमोचने जपे
विनियोगः ॥ अहो महान बहुरूपे दिव्यसिद्धे सरस्वती ॥ अजरे अमरे चैव वशिष्ठ
शापमुक्तो भव ॥ ३ ॥ इति शापमोचनमंत्र ॥ ॐ वाक वाक ॥ ॐ प्राण प्राणः ॥ ॐ चक्षुः
॥ ॐ श्रोत्र ॥ ॐ दरे ॥ ॐ ललाट ॥ ॐ नाभौ ॥ ॐ हृदयं ॥ ॐ सिरः ॥ ॐ शिखा ॥ ॐ कवच
ॐ भूर्भुवस्वः ॥ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य ॥ धीमहि धीयो यो नः प्रचोदयात् ॥

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon
CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

चोदयात अस्त्राय फट्॥ इति अंगन्यास॥ ओं ह्रां ह्रीं रां रामाय नमः॥ श्री
जानकीवल्लभ तारक रां रामाय नमः॥ इति रामगायत्री मंत्र॥ ओं भास्कराय विद्म
हे महातेजाय धीमहि तन्नो सूर्य प्रचोदयात्॥ ओं भास्कराय अंगुष्ठाभ्यां नमः॥
ओं विद्महे तर्जनीभ्यां नमः॥ ओं महातेजाय मध्यमाभ्यां नमः॥ ओं धीमहि अ
नामिकाभ्यां नमः ओं तन्नो सूर्य कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ओं प्रचोदयात करत
लकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ इति करन्यास॥ ओं भास्कराय हृदयाय नमः॥ ओं विद्महे
शिरसे स्वाहा॥ ओं महातेजाय शिखायै वौषट्॥ ओं धीमहि कवचाय हुं॥ ओं तन्नो
सूर्य नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ओं प्रचोदयात अस्त्राय फट्॥ इति अंगन्यास॥ इति सूर्य गाय
॥ओं श्री विघ्नुलतजसमग्गी कुंडलाय ज्वालाय मुं कुंलाय फट् हूं

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

३

ॐ परंब्रह्मणाय वि द्महे गुरुदेवाय धीमहि तन्नो गरुप्रचोदयात् ॥ ॐ परंब्रह्मणा
य अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ गुरुदेवाय मध्यमाभ्यां न
मः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तं गुरु कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ परंब्र ह्मणो
ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ परंब्रह्मणाय हृदयाय
६ नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ गुरुदेवाय शिखायै वौषट् ॥ ॐ धीमहि कवचा
य हुं ॥ ॐ तन्नो गुरु नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ इति षडंगन्या
सः ॥ ॐ हं सं क्षौं सो ॥ ॐ गुरुपरमात्मने नमः ॥ इति गुरुमंत्र ॥ ॐ जलबिंबाय विद्म
हे अनीलपुरुषाय धीमहि तन्नो अंबु प्रचोदयात् ॥ ॐ जलबिंबाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ३

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon
CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at. Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ ॐ भूः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः ॥
॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ धीयो यो नः प्रचोदयात् क
रतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ भूः हृदयाय नमः ॥ ॐ भुवः
शिरसे स्वाहा ॥ ॐ स्वः शिखायै वौषट् ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं कवचाय हुं
ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ धीयो यो नः प्रचोदयात् अस्त्रा
य फट् ॥ इति अंगन्यासः ॥ तत्सा हृदये ॥ सवितुर्जंघयोः वरेण्यं कटिदेशे ॥ २
भर्गो नाभौ ॥ देवस्य हृदये ॥ धीमहि कंठे ॥ धीयो नासाग्रे ॥ यो नेत्रयोः ॥ नः ल
लाटे ॥ प्रचोदयात् शिरसि ॥ ॐ भूः ॥ ॐ भुवः ॥ ॐ स्वः ॥ ॐ महः ॥ ॐ जनः ॥ ॐ
॥ तपः ॥ ॐ सत्यं ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धीयो यो नः

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

२

प्रचोदयात्॥ ॐ आपो ज्योतिरसोमृतमब्रह्म भूर्भुवस्वरोम् इतिसर्वामं
त्र इतिब्रह्मगायत्री॥ ॐ वंस्यपरस्यैजनवेतुरेधीयो प्रचोतरयो देवैनिम
धुवरूपेगेह्यहि मध्यमवत॥ इतिब्रह्ममंत्र॥ ॐ दासरथायविद्महेसी
तावल्लभाय धीमहि तन्नो राम प्रचोदयात्॥ ॐ दासरथाय अंगुष्ठाभ्यां
नमः॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ सीतावल्लभाय मध्यमाभ्यां नमः
ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः॥ ॐ तन्नो राम क[illegible]काभ्यां नमः॥
ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ इति करन्यासः॥ ॐ दासरथा
य हृदयाय नमः॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा॥ ॐ सीतावल्लभाय शिखायै
वौषट्॥ ॐ धीमहि कवचाय हुं॥ ॐ तन्नो राम नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ प्र॥ २

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

शिखायै वौषट्॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॐ तन्नो लक्ष्मण कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः

ॐ धीमहि कवचाय हुं॥ ॐ तन्नो लक्ष्मण नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट्॥ ॐ हां ह्रीं रां रं लक्ष्मणाय नमः॥ इति लक्ष्मणमंत्र॥ ॐ अंजनीगर्भाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि तन्नो हनुमंतः प्रचोदयात् ॐ वायुपुत्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः

~~पुत्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः~~

ॐ अंजनीगर्भाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॐ वायुपुत्राय मध्यमाभ्यां नमः ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॐ तन्नो हनुमंतः कनिष्ठिका

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ॐ धीमहि कवचाय हुं ॥ ॐ तन्नो मधु नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ विप्नहे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ नीलपुरुषाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अ-
नामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो मधुः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करत-
लकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यास ॥ ॐ जलबिंबाय हृदयाय नमः ॥ ॐ विप्नहे
शिरसे स्वाहा ॥ ॐ नीलपुरुषाय शिखायै वषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ये
इति अंगन्यासः ॥ ॐ जं जं जं ॐ वं वं वं ॐ लं लं लं ॥ इति जलगायत्री मंत्र ॥ ॐ स-
रयाय विप्नहे अलवेलाय धीमहि तन्नो लक्ष्मण प्रचोदयात् ॥ ॐ सरयूथा-
वि य अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विप्नहे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ अलवेलाय मध्यमाभ्यां न-
मः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ सरयूथाय
हृदयाय नमः ॥ ॐ विप्नहे तर्जनीभ्यां नमः शिरसे स्वाहा ॥ ॐ अलवेलाय
ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो लक्ष्मण कनिष्ठिकाभ्यां नमः २

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri / Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

स्नेत्रत्रयायवौषट् ॐ प्रचोदयात् अस्त्रायफट् इति अंगन्यासः ॐ क्लीं कृष्णाय नमः
इति कृष्णगायत्री मंत्र ॐ गोपालाय विद्महे गोपीजनवल्लभाय धीमहि तन्नो गोपालः प्रचो
दयात् ॐ गोपालाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॐ गोपीजनवल्लभा
य मध्यमाभ्यां नमः ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नम ॐ तन्नो गोपाल कनिष्ठिकाभ्यां
नमः ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः ॐ गोपाला हृदयाय य
नमः ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॐ गोपीजनवल्लभाय शिखायवौषट् ॐ धीमहि
कवचाय हुं ॐ तन्नो गोपाल नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ प्रचोदयात् अस्त्रायफट् इति अं
गन्यासः ॐ क्लीं गोपालाय गोवरायवंसप्रदायनमोनमः इति गोपालगायत्री मं त्र

५

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

भ्यांनमः ॐप्रचोदयात्करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः इतिकरन्यास ॐअंजनी
गर्भायहृदयायनमः ॐविद्महेशिरसेस्वाहा ॐवायुपुत्रायशिखायैवौष
ट् ॐधीमहीकवचायहुं ॐतन्नोहनुमंतनेत्रत्रयायवौषट् ॐप्रचोदयात्अस्त्र
यफट् इतिअंगन्यासः ॐहांहींहूंहैंहौंहः इतिहनुमानगायत्रीमंत्र ॐदेव
कीनंदनायविद्महेवासुदेवायधीमहितन्नोकृष्णःप्रचोदयात् ॐदेवकीनंदनाय
अंगुष्ठाभ्यांनमः ॐविद्महेतर्जनीभ्यांनमः ॐवासुदेवायमध्यमाभ्यांनमः ॐ
धीमहीअनामिकाभ्यांनमः ॐतन्नोकृष्णःकनिष्ठिकाभ्यांनमः ॐप्रचोदयात्
करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः इतिकरन्यासः ॐदेवकीनंदनहृदयायनमः ॐविद्महे
त्रि
११ शिरसेस्वाहा ॐवासुदेवायशिखायैवौषट् ॐधीमहीकवचायहुं ॐतन्नोकृ

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ॐ तन्नोविस्नुकनिष्ठिकाभ्यांनमः

ॐ विष्नहेतर्जनीभ्यांनमः ॐ वासुदेवायमध्यमाभ्यांनमः ॐ धीमहे अनामिकाभ्यांनमः ॐ प्रचोदयात्करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः इतिकरन्यासः ॐ विस्नुदेवायहृदयायनमः ॐ विष्नहेसिरसेस्वाहा ॐ वासुदेवायशिखायै वौषट् ॐ धीमहीकवचायहुं। ॐ तन्नोविस्नुनेत्रत्रयायवौषट् ॐ प्रचोदयात्अस्त्रायफट् इतिअंगन्यासः ॐ उपेंद्राय ... श्रीधरोचिंतायनमः इतिविस्नुगायत्रीमंत्र ॐ परशुरामायविद्महे महावीरायधीमहीतन्नोपरसुरामःप्रचोदयात् ॐ परसुरामायअंगुष्ठाभ्यांनमः ॐ विद्महेतर्जनीभ्यांनमः ॐ महावीरायमध्यमाभ्यांनमः ॐ धीमहीअनामिकाभ्यांनमः ॐ तन्नोपरसुरामकनि

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुपर्णकाय धीमहि तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॐ तत्पुरुषा
य अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॐ सुपर्णकाय मध्यमाभ्यां न
मः ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॐ तन्नो गरुड कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ प्रचो
दयात करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यास ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः
ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॐ सुपर्णकाय शिखायै वौषट् ॐ धीमहि कवचा
य हुं ॐ तन्नो गरुड नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ प्रचोदयात अस्त्राय फट् इति
अंगन्यास ॐ ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रैं ग्रौं ग्रः इति गरुड गायत्री मंत्र ॐ विष्णुदेवाय वि
द्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात ॐ विष्णुदेवाय अंगुष्ठा
भ्यां नमः

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

वनगायत्रीमंत्र

इति करन्यासः ॐ पवनपुत्राय हृदयाय नमः ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॐ
महाबलाय शिखायै वौषट् ॐ धीमहि कवचाय हुं ॐ तन्नो वायुर्नेत्रत्रयाय
वौषट् ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् इति अंगन्यासः ॐ पंपं ॐ षंषं ॐ वंवं ॐ पुंपुं
ॐ पवनाय नमः इति पं ॐ तुलस्यै विद्महे विराये धीमहि तन्नो तुलसी प्रचोद
यात् ॐ तुलस्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ वि˚ महे तर्जनीभ्यां नमः ॐ विपुरायै मध्य
माभ्यां नमः ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॐ तन्नो तुलसी कनिष्ठिकाभ्यां न
मः ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः ॐ तुलस्यै हृदया
य नमः ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॐ विपुरायै शिखायै वौषट् ॐ धीमहि कवचे म

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ अग्नि मनाय मध्यमाभ्यां नमः
प्रचोदयात् ॐ महाज्वालाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां न
मः ॐ तन्नो अग्निः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ प्रचोदयात करतलकरपृष्ठाभ्यां न
मः इति करन्यास ॐ महाज्वालाय हृदयाय नमः ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा
ॐ अग्निमथनाय शिखायै वौषट् ॐ धीमहि कवचाय हुं ॐ तन्नो अग्निः नेत्रत्रया
य वौषट् ॐ प्रचोदयात अस्त्राय फट् इति अंगन्यासः ॐ अं अं अं गं ग्निं ग्निं ग्निं
ग्नये नमः इति अग्निगायत्रीमंत्र ॐ पवनपुरुषाय विद्महे सहस्रमूर्ति धीमहि
तन्नो वायुः प्रचोदयात् ॐ पवनपुरुषाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ विद्महे तर्ज
नीभ्यां नमः ॐ सहस्रमूर्ति मध्यमाभ्यां नमः ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः
ॐ तन्नो वायुः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ प्रचोदयात करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at. Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

८ घायहुं ॐतन्नोनृसिंहनेत्रत्रयायवौषट् ॐप्रचोदयात्करतलकरपृष्ठाअस्त्रा
यफट् इतिअंगन्यासः ॐनृंनृंनृंनृसिंहायनमः इतिनृसिंगायत्रीनृसिंमंत्र
ॐमहादेवायविद्महेरुद्रमूर्त्तीयधीमहितन्नोशिवप्रचोदयात् ॐमहादेवा
यअंगुष्ठाभ्यांनमः ॐविद्महेतर्जनीभ्यांनमः ॐरुद्रमूर्त्तीमध्यमाभ्यांनमः
ॐधीमहीअनामिकाभ्यांनमः ॐतन्नोशिवकनिष्ठाकाभ्यांनमः ॐप्रचोदया
त्करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः इतिकरन्यासः ॐमहादेवायहृदयायनमः ॐविद्म
हेशिरसेस्वाहा ॐरुद्रमूर्त्तीशिखायैवौषट् ॐधीमहीकवचायहुं ॐतन्नोशिव
नेत्रत्रयायवौषट् ॐप्रचोदयात्अस्त्रायफट् इतिअंगन्यासः ॐशिवः ॐशिवः
इतिशिवगायत्रीमंत्र ॐमहाज्वालायविद्महेअग्निमथनायधीमहितन्नोअग्निः ८

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ष्ठिकाभ्यां नमः ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः ॐ परशु
रामाय हृदयाय नमः ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॐ महावीराय शिखायै वौषट् ॐ
धीमहि कवचाय हुं ॐ तन्नो परशुराम नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ प्रचोदयात् अस्त्रा
य फट् इति अंगन्यासः ॐ रां रीं ॐ रौं रौं परशुहस्ताय नमः इति परशुरामगायत्रीमंत्र
ॐ नृसिंहाय विद्महे वज्रदंताय धीमहि तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् ॐ नृसिंहाय
अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॐ वज्रदंताय मध्यमाभ्यां नमः
ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॐ तन्नो नृसिंहाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः ॐ नृसिंहाय हृदयाय
नमः ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॐ वज्रदंताय शिखायै वौषट् ॐ धीमहि कव

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

मध्यमाभ्यां नमः ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॐ तन्नो हंसः कनिष्ठिका
भ्यां नमः ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः ॐ परमहं
साय हृदयाय नमः ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॐ महातत्त्वाय शिखायै वौषट्
ॐ धीमहि कवचाय हुं ॐ तन्नो हंस नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ प्रचोदयात् अस्त्रा
य फट् इति अंगन्यासः ॐ सोहं हंस परो राजं स्वाहा इति हंसगायत्रीमंत्र ॐ सु
भगायै विद्महे विमलायै धीमहि तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॐ सुभगायै अंगु
ष्ठाभ्यां नमः ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॐ विमलायै मध्यमाभ्यां नमः ॐ धी
महि अनामिकाभ्यां नमः ॐ तन्नो गौरी कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ प्रचोद
त करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः ॐ ह्रीं ओं श्रौं गौं ग्लैं नमः इति गौरी मं

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ॐ क्षीरपुरुषाय विद्महे अमृताय धीमहि तन्नो चंद्र प्रचोदयात् ॐ क्षीरपुरुषा
य अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॐ अमृताय मध्यमा ॐ
नमः ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॐ तन्नो चंद्र कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ प्र
चोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः ॐ क्षीरपुरुषाय हृदयाय नमः
ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॐ अमृताय शिखायै वषट् ॐ धीमहि कवचाय हुं
ॐ तन्नो चंद्र नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् इति अंगन्यासः ॐ
चंद्र चंद्राशि चंद्रे एणसीतकीरण नानिनिरनामे शीतगोस्मो मते चंद्राशि इति
चंद्रमागायत्रीमंत्र ॐ परमहंसाय विद्महे महातत्त्वाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोद
यात् ॐ परमहंसाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॐ महातत्त्वाय

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

यहुं ॐतुलोतुलसीनेत्रत्रयायवौषट् ॐप्रचोदयात अस्त्रायफट् इति अंगन्या
सः ॐ आदिनिरंजनशंकरशेषतहातुलसी उपदेस गुरु नारायण लागकान
रामनाम तुलसीप्रमाण इति तुलसी गायत्री मंत्र ॐ पृथ्वीविद्महे विघिन्न
सहस्रमूर्ति धीमहि तन्नो महेश प्रचोदयात ॐपृथ्वीदेवि अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ
विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॐ सहस्रमूर्ति मध्यमाभ्यां नमः ॐ धीमहि अनामिका
भ्यां नमः ॐ तन्नो महि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ प्रचोदयात करतलकरपृष्ठा
नमः इति करन्यासः ॐ पृथ्वीदेवि हृदयाय नमः ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॐ सह
स्रमूर्ति शिखायै वौषट् ॐ धीमहि कवचाय हुं ॐ तन्नो महि नेत्रत्रयाय वौषट्

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् इति अंगन्यासः ॐ मुमुरसि भूविभिविस्वास्यध्यास्
वनस्थिमां ह्रीं सीं नमः इति पध्यागायत्रीमंत्र ॐ आकाशाय विद्महे गगनदेवाय धी
महि तन्नो गगन प्रचोदयात् ॐ आकाशाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ विद्महे तर्जनी
भ्यां नमः ॐ गगनदेवाय मध्यमाभ्यां नमः ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॐ तन्नो
गगन कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः
ॐ आकाशाय हृदयाय नमः ॐ वि[द्म]हे शिरसे स्वाहा ॐ गगनदेवाय शिखायै वौषट्
ॐ धीमहि कवचाय हुं ॐ तन्नो गगन नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट्
इति गगनगायत्रीमंत्र ॐ गं गं ॐ गं गं ॐ अं आं ॐ गगनाय नमः इति गगनगायत्रीमं त्र

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

नमः इति देवीगायत्रीमंत्र ॐतत्त्वस्कंधायविद्महेयंत्रप्रमायधीमहितन्नोमंत्रप्रचो
दयात् ॐतत्त्वस्कंधायअंगुष्ठाभ्यांनमः ॐविद्महेतर्जनीभ्यांनमः ॐयंत्रप्रमा
यमध्यमाभ्यांनमः ॐधीमहिअनामिकाभ्यांनमः ॐतन्नोमंत्रकनिष्ठिकाभ्यां
नमः ॐप्रचोदयात्करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः इतिकरन्यासः ॐतत्त्वस्कंधायहृद
यायनमः ॐविद्महेशिरसेस्वाहा ॐयंत्रप्रमायशिखायैवौषट् ॐधीमहिकव
चायहुं ॐतन्नोमंत्रनेत्रत्रयायवौषट् ॐप्रचोदयात्अस्त्रायफट् इतिअंगन्या
सः ॐरंरं ॐरंरं ॐमंमं ॐतंतं ॐतत्त्वस्कंधायनमः इतिस्कंधगायत्रीमंत्र ॐमहा
लक्ष्मीविद्महेपद्मपत्रिधीमहितन्नोलक्ष्मीप्रचोदयात् ॐमहालक्ष्मीअंगुष्ठा

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ॐ शुभगायै हृदयाय नमः ॐ विघ्नहे शिरसे स्वाहा ॐ विमलायै शिखायै वौषट्
ॐ धीमही कवचाय हुं ॐ तन्नो गौरी नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट्
इति अंगन्यासः ॐ क्रौं ॐ गौं गौं गौं गौभ्यो नमः इति गौरी गायत्री मंत्रं ॐ देवी वृत्या
गायै विघ्नहे हा शक्तै धीमहि तन्नो देवि प्रचोदयात् ॐ देवी वृत्ता गायै अंगुष्ठा
भ्यां नमः ॐ विघ्नहे तर्जनीभ्यां नमः ॐ महाशक्तै मध्यमाभ्यां नमः ॐ धीमहि
अनामिकाभ्यां नमः ॐ तन्नो देवि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ प्रचोदयात् करतलक
रपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः ॐ देवि वृत्ता गायै हृदयाय नमः ॐ विघ्नहे शिर
से स्वाहा ॐ महाशक्ति शिखायै वौषट् ॐ धीमहि कवचाय हुं ॐ तन्नो देवि ने
त्रत्रयाय वौषट् ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् इति अंगन्यासः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

भ्यांनमः ॐविष्नहेतुॐनीभ्यांनमः ॐपद्मपत्रीमध्यमाभ्यांनमः ॐधीमहीअ
नामिकाभ्यांनमः ॐतन्नोलक्ष्मीकनिष्ठिकाभ्यांनमः ॐप्रचोदयात्करतल
करपृष्ठाभ्यांनमः इतिकरन्यासः ॐमहालक्ष्म्यैहृदयायनमः ॐविष्नहेशि
रसेस्वाहा ॐपद्मपत्रीशिखायैवौषट् ॐधीमहीकवचायहुं ॐतन्नोलक्ष्मीने
त्रत्रयायवौषट् ॐप्रचोदयात्अस्त्रायफट् । इतिअंगन्यासः ॐलंलंॐलंलंल
क्ष्म्यैनमः इतिलक्ष्मीगायत्रीमंत्र इतिश्रीचातुर्वर्णतिगायत्रीमंत्रसमाप्तं

ॐउत्तमेशिखरेजातेभूम्यांपर्वतमस्तके ब्राह्मणोस्त्वमनुज्ञातागच्छदेवियथा
सुखम्

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

ॐ अथ ब्रह्मं ब्रह्मं सो मुल प्रकृति के सिष बीज ॐकार के

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

छिर सिवृश्च मे पाप्मानम स[illegible]त्यप[illegible]हितासि
रस्वध्रवासी दे तिसमि[illegible]सम[illegible] हो हंस इति पू[illegible]माडु
प्यांसु वीरो वीरे सुपो[illegible] पो[illegible]ने यो भि[illegible] यं हि प
यंपवे तिजुडु[illegible]ह्व लि[illegible]मे कइतरं काल मंतेवासि[illegible]
ममन्नो धायत्वेत्सुत्तरं त[illegible]समिध[illegible]पतये
पतयेस्वाहे तिद क्षिणो[illegible]ये न्नादायान्नपतयेस्वाहे [illegible]
न[illegible] स्वाहेत्यथैनां कुशे प्र[illegible]चतस्र पूर्णा प्रा[illegible]
स्वाहे ति पंचमी कुश[illegible]ए पि[illegible]मम[illegible]जुहो[illegible]चा
प्राशज्जुहामि स्वाहे ति[illegible]पांतवे दि[illegible]
[illegible]व सि[illegible]मांस मंत्रामाह वनी[illegible] दि[illegible]हीति[illegible]
नुपर्यु[illegible]णा दवं प्रातरुपादयं व्युषितऽ[illegible]सत्य[illegible]

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

य[illegible]रोदनो दधिसर्पिर्ग्रामकामान्नाद्यकामेन्द्रियकामतेजस्कामानामधिश्रितमवज्वलयेदनधिश्रितं दध्यग्निष्ठ तेजोमाह ।
र्वा दि ति स्रुवेण प्रतिषिंचालवाशां तिरस्यम्मृतमसीति तयोरव्यतिचारः पुनर्ज्वलतापरिहरे त्रिरं तरितं रक्षोंतरिता अरात
य इति समुदंतं कर्षन्निवोदङ्ग्हूासयेद्दिवे त्वांतरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वेति निदधत्त हुत कस्तसु हुतमकां छेत्स्यंगारानति
सृस्पस्सुवस्सुवं प्रतितपेत्प्रत्युष्टं रक्षः प्रत्युष्टा अरातयो निष्टप्तं रक्षो निष्टप्ता अरातय इत्युत्तरतस्थाल्याः स्रुचमासाद्यामुन्न
या नीस्यतिसर्जयीताहिताग्निराचम्यापरेण वेदिमतिव्रज्य दक्षिणातउपविश्येत ब्रुत्वामुन्नयेत्यतिसृजेदतिसृष्टो भरि
[illegible]भुव इलास्वरिलाइध इत्येति स्रुवपरमुन्नयेदप्रियमग्नेपर्णतमंयो नुर्ययेष्ठम । [illegible]क्षिमच्छेत्पुत्राणां यस्य पुत्रः प्रियस्ता
त्तं प्रतिपर्णमुन्नयेत्स्थालीमभिम[illegible] समिधं स्रुचं चाध्यधि गार्हपत्यं हृत्वा प्राणसंमितामाहवनीयसमीपे कुर्वा सूपसा
द्यत्वान्वा[illegible] समिधमादध्यादिनं तां त्वाग्निज्योतिषं रात्रि[illegible]कामपदधे स्वाहेति समिधमाधाय विद्युदसि विद्य मे पाप्मान
म नो [illegible] उपस्त[illegible] प्रदीप्तां द्व्यंगुलमात्रे [illegible] जुहुयाद्भूर्भुवः स्वरोमग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहेति एवं माहुतिं हुत्वावु
[illegible]सा[illegible] पयमपे[illegible] पृष्ठे स्यथोत्तरां तु[illegible] भूयसीमसंस्पृष्टां प्रागुदगुत्तरतो वा प्रजापतिं मनसा ध्याय
[illegible]होम[illegible] कंपावमज्य[illegible] नमो[illegible] पशुभ्य[illegible]

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

कोरेत्रि प्राशीनादीनीत्[illegible]रिख[illegible]लिधा[illegible] व निलीम्बह पिरसिकृष्ण मे पाप्मानमप[illegible]स्य पड[illegible]हिताँसि
नुमंत्रयेत [illegible]घानमु[illegible]लेन [illegible]ग्राते नअ[illegible]तया देवलयाँ [illegible]वासी दे[illegible]तिसमि[illegible]स्य सद[illegible]होस इति एवोमदु
ति मुपो [illegible]त्रं दांरे. ते स्नाप[illegible] मुं वर्च सु प्रजा प्रजा भिः स्यां सुवीरो वीरैः सुपो[illegible]पोषैर[illegible]ने यी [illegible]
सइति तिस्रस्मि[illegible]शा संवत्सरे संव[illegible] वाग्याद यस[illegible]सर्वयं पवेणिजुहूयाद्दृत्विग्जामे[illegible]तरं कालमंते वासि[illegible]
कमुदु[illegible]स्य भक्षय[illegible]परयो वाडुत्वा[illegible]षेत्वा प्राश्नामीति प्रथमम[illegible]धाय त्वेत्युत्तरं त[illegible]सिमिधमाधायाग्नये[illegible]पतये
स्वाहे ति [illegible]एत्दे नित्योत्तरात [illegible]सिमिधमाधायाग्नये संवेश पतये स्वाहे ति दक्षिणोग्नये न्नादायान्न पतये स्वाहे [illegible]वा नि
[illegible]पितृभ्याल्कम[illegible]चा निनयते त्रिः सर्वदेव जनेभ्य स्वाहेत्यथैनां कुशोः प्रक्षा[illegible]चतस्र[illegible]पूर्णा [illegible]चो[illegible]
न[illegible]देवजनेभ्य स्वाहेतर जनेभ्य स्वाहे ति पंचमी कुशाद[illegible]प्यामम[illegible]जुहोम्य[illegible]चा
[illegible]लिव[illegible]पत[illegible]प्राणमम ते जुहोम्य[illegible]प्राणा जुहामि स्वाहे ति[illegible]पांतवे[illegible]
[illegible]हवनीयं परीत[illegible]समि[illegible] आ[illegible]दिशासि[illegible]स्व[illegible]मांस मंत्रामाहवनी[illegible]
[illegible]तिरि[illegible]येत्यु[illegible]पर्यु[illegible]नाभ्यां परिसमूहने[illegible]पर्युक्षणादवं प्रातरूपादयं[illegible]वितउ[illegible]

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Donated by

Kothandapani

1. 11. 68.

Blanchisserie - worker.

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

[illegible]. [illegible]

[illegible]. [illegible] 3/4

[illegible]. [illegible] 3/4

[illegible]. [illegible]

[illegible]. [illegible]

[illegible]. [illegible] 1/4

[illegible]. [illegible] 3/4

[illegible]. [illegible]

[illegible]. [illegible] 5/8

[illegible]. [illegible] 1/8

[illegible] [illegible]

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon
CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ इदं पुस्तकंश्रीनाविनपुर्याम् [illegible]ाराध[illegible]कृष्णाऽप्रिन्टींगमु-
द्रालयेमुद्रितम् ॥ श्रीविक्रम[illegible]ऽर्के [illegible]सम्वत् १९६८
भाद्रपद् शुक्ल [illegible]ादशी

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ इदं पुस्तकंश्रीनाविनपुर्याम् श्रीराधाकृष्णाऽमिन्टींगमु-
द्रालयेमुद्रितम् ॥ श्रीविक्रमार्क संव्वत् १९६८
भाद्रपद् शुक्ल त्रयोदसी

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ इतिश्री षोडशसंस्कार सुबोधिनी
प्रयोग समाप्तः ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ ग्रहदेवता मंडलम्॥

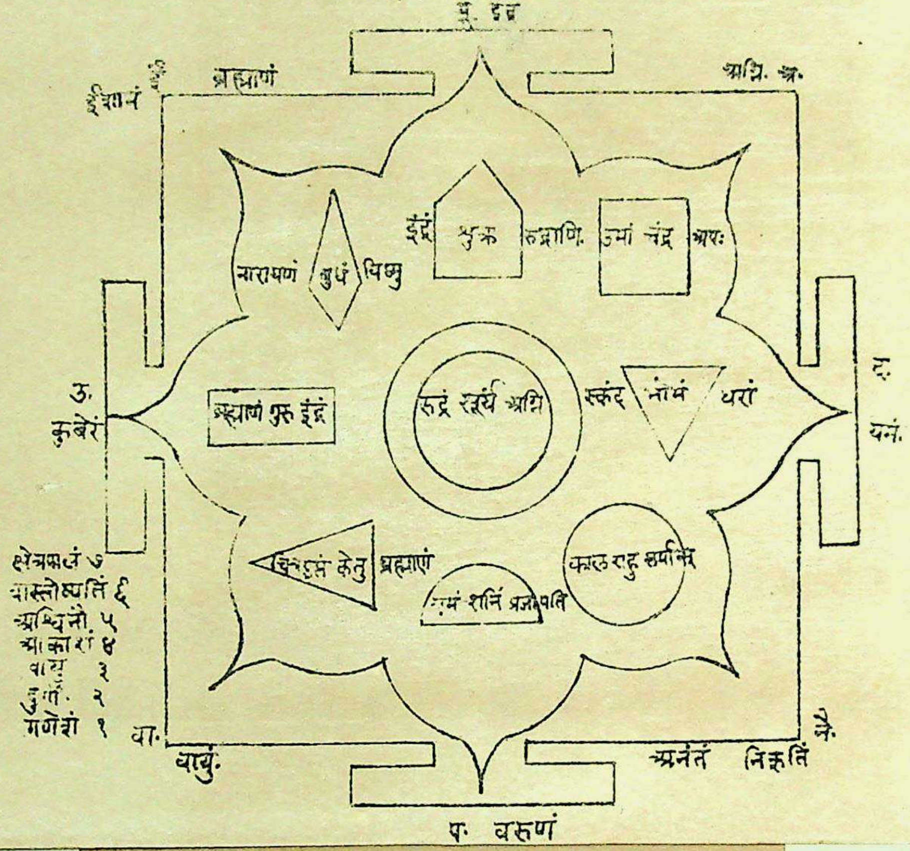

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

१२

From-
Punamchand Mohanlal Shah
PATAN (N.G.)

॥ अथ षोडशसंस्कारसुबोधिनी प्रयोगः प्रारभ्यते ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

आ पुस्तक छपावी प्रसिध्ध करनार
शुक्ल उमाशंकर लक्ष्मीशंकर
श्रीज.मनगर वेदशालाना यजुर्वेद अध्यापक
गाजरफलीयुं मु. जामनगर
कीमत रु. १–४–० सवा.
☞ उपरने शीरनामे पत्र लखवाथी आ पुस्तक मळशे.

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ श्री हरिः ॥

श्रीराधाकृष्ण प्रीन्टींगप्रेस जामनगर

आ प्रेसमां अंग्रजी शास्त्री गुजराती विगेरे भाषानुं तमाम
सस्तुं साफाइदार अने मुदत सर काम करी आपवामां
आवे छे पत्रथी भाव पुछावो

श्रीमदभगवत् गीता मुळश्लोक गुजराती टीकासहीत रु. ०-२-० मा मळ्छे

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

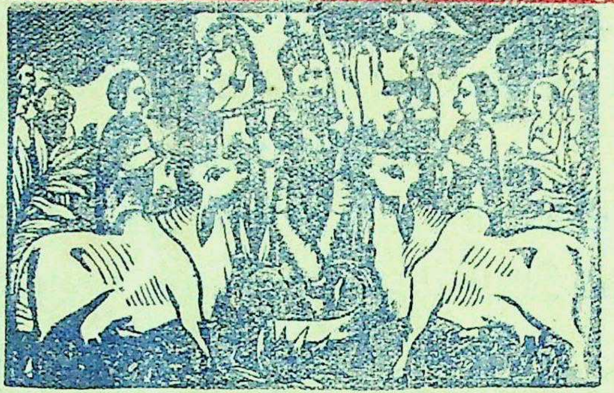

संवत् १९६८ भाद्रपद शुक्ल त्रयोदसीः

॥ श्री राधाकृष्ण प्रिन्टींग प्रेस जामनगरमां छाप्युं

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

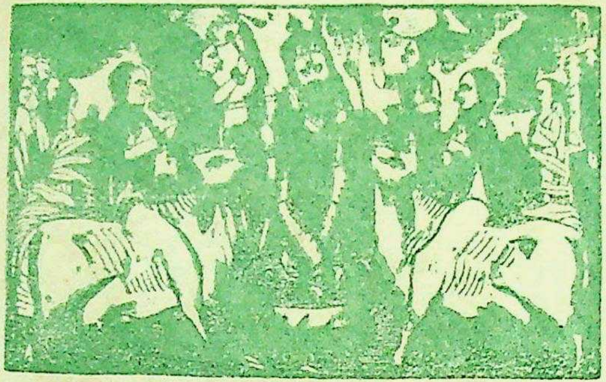

संवत् १९६८ भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी:

॥ श्री राधाकृष्ण प्रिन्टींग प्रेस जामनगरमां छाप्युं ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ अथ संस्कार मंजरी प्रारंभः ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

❁ ❁ श्रीगणेशायनमः ॥ अथ गर्भाधानादिषोडशसंस्कारमंजरी ॥ सिद्धिदंशिवयोःसूनुंविघ्नव्यूहविदारणम् ॥ ढुंढिराजमहंवंदेभक्तिकल्पमहीरुहम् ॥ १ ॥ वंदेश्रीदक्षिणामुर्तिंसच्चिदानंदविग्रहम् ॥ गौरीभूषितवामांगं विधिवाग्विष्णुसेवितम् ॥ २ ॥ श्रीगुरोश्चरणंनत्वा सर्वकर्मांगकर्मणाम् ॥ विविधाःपद्धतीर्बुध्वासंप्रदायंसतांतथा ॥ ३ ॥ माध्यंदिनीयविधिना शोधयंतुधियाबुधाः ॥ विश्वनाथस्य संतुष्ठ्यै कुर्वेपद्धतिमुत्तमाम् ॥ ४ ॥ अथसर्वेषांश्रौतानांस्मार्त्तानांच कर्मणां साधारणाङ्गानांगणेशपूजादि स्वस्तिवाचनान्तानांपद्धतिरुच्यते ॥ महत्सुकर्मसुपूर्वेद्युः अल्पेषुतस्मिन्नहनिपूर्वाह्णेनिर्णेजनांतपंचमहायज्ञांतकृत नित्यक्रियेण सपत्नीकेनससंस्कार्येणयजमानेन स्वासनेप्राङ्मुखेनोपवेशनम् ॥ पादौहस्तौचप्रक्षाल्यद्विराचमनम् ॥ त्रिःप्राणानायम्य ॥ देशकालौसंकीर्त्य॥करिष्यमाणा मुककर्मांगतयामंगलस्नानमहंकरिष्यऽइतिसंकल्पःकार्यः ॥ ततो यथाचारंमंगलवाद्यघोषपुरःसरं वृद्धसुवासनीभिर्नीराजनपूर्वकंसर्वौषधीसर्वगंधयुक्तेनतिलामलकादिनासुगंधितैलेनवाउद्वर्त्यस्नानम् ॥ इदमेवमंगलस्नानमित्यभिधीयते ॥ ततोद्विरा

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

चमनम् ॥ अहतेवाससीपरिधत्ते ॥ अमौत्रेवा ॥ ॐ परिधास्यइतिमंत्रेणपरिधानम् ॥ ॐ
यशसामेत्युत्तरीयंच ॥ पत्नीत्वमंत्रम् ॥ प्रतिमंत्रंस्मार्तविधिनाद्विराचमनम् ॥ वारणादियज्ञि
॥ २ ॥ यदारुनिर्मितसोत्तरच्छदे शुद्धपीठेबद्धत्रिकच्छेन यज्ञोपवीतिना दक्षिणपार्श्वेबद्धशिखेनाशिखा
भिन्नबद्धकेशेनयजमानेन प्राङ्मुखेनोदङ्मुखेनवाउपवेशनम् ॥ तद्दक्षिणतःपत्नीच ॥ तद्द-
क्षिणतः ॥ संस्कार्येणच ॥ सव्येकुशोपग्रहः ॥ दक्षिणेसपवित्रोपग्रहः करद्वयेकुशोपग्रहः पवि-
त्रोपग्रहोवा ॥ त्रीन्प्राणायामान्कृत्वा ॥ त्रिमात्रंप्रणवमुच्चार्य ॥ लक्ष्मीनारायणादीन् देवान्प्र-
णमेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यांनमः ॥ ॐ शचीपुरंदराभ्यांनमः ॥ ॐ मातृपि-
तृचरणेभ्योनमः ॥ ॐ कुलदेवताभ्योनमः ॥ ॐ इष्टदेवताभ्योनमः ॥ ॐ गुरुभ्योनमः ॥
ॐ सर्वेभ्योब्राह्मणेभ्योनमः ॐ सिद्धिबुद्धिसहितायश्रीगणेशायनम इति प्रणम्य ॥ ॐ सु-
मुखश्चैकदंतश्चेत्यादिविघ्नस्तस्य न जायते ॥ शुक्लांबर ध० ॥ अभीप्सि० ॥ वक्रतुंडमहाकाय
कोटिसूर्यसमप्रभ ॥ अविघ्नंकुरुमेदेवसर्वकार्येषुसर्वदा ॥ सर्वमंगलमांगल्येशिवेसर्वार्थसाधिके॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

शरण्येत्र्यंबकेगौरिनारायणिनमोस्तुते ॥ स्मृतेसकलकल्याणभाजनं यत्रजायते ॥ पुरुषंतमजं नित्यंव्रजामिशरणंहरिम् ॥ सर्वदासर्वकार्येषुनास्तितेषाममङ्गलम् ॥ येषांहृदिस्थोभगवान् मंगलायतनंहरिः ॥ सर्वेषुकालेषुसमस्तदेशेष्वे तेषुकार्येषु तथेश्वरेश्वरः ॥ सर्वैः स्वरूपैर्भगवाननादिर्ममास्तुमांगल्यविवृद्धयेहरिः ॥ तदेवलग्नंसुदिनंतदेवताराबलंचंद्रबलंतदेव ॥ विद्याबलंदैवबलं तदेवलक्ष्मीपतेतेंघ्रियुगंस्मरामि ॥ लाभस्तेषांज० ॥ यत्रयोगेश्वरःकृष्णोयत्रपार्थोधनुर्द्धरः ॥ तत्रश्रीर्विजयोभूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ॥ सर्वेष्वारब्धकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ॥ देवादिशंतुनसिद्धिंब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ ततोदक्षिणेनपाणिनाकुशकुसुमयवजलादानम् ॥ ॐ विष्णु र्विः ष्णु र्विष्णुः ॥ इहपृथिव्यांजंबूद्वीपे भारतवर्षे भारतखंडे आर्यावर्तांतिर्गतब्रह्मावर्त्तैकदेशकुमारिकाक्षेत्रे श्रीमद्गोदावर्याःउत्तरेतटे ॥ श्रीमद्गोमत्याःपूर्वेतीरे ॥ इत्यादिदेशंसमनुकीर्त्य ॥ ॐ ब्रह्मणोद्वितीयपरार्धेश्रीश्वेतवाराहकल्पे।वैवस्वतमन्वंतरेअष्टाविंशतितमस्यकलियुगस्यप्रथमचरणे बौद्धावतारे । विक्रमशाके । "अमुकावांतरयुगे । अमुकयुगावयवे । वर्त्तमाने" अमुकना-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ग्निसंवत्सरेअमुकायने।अयनेऋतौ।मासेपक्षेतिथौवारेनक्षत्रे।योगेकरणे।रौद्राद्यमुककाले।अमुक
राशिस्थितेदेवगुरौ । शेषेषुग्रहेषुयथास्थानास्थितेषुसत्सु । एवंगुणविशिष्टेदेशेकालेच अमुकसगो
त्रो अमुकशर्माहंममसुतस्यसुतायाःवाश्वोद्यवाअमुकसंस्कारंकरिष्ये ॥ तदंगत्वेनमंडपदेवताप्रति-
ष्ठामातृपूजावसोर्द्धाराऽयुष्यजपाभ्युदयिकश्राद्धस्वस्तिवाचनानिचकरिष्ये ॥ तत्रादावमुककर्मणो
निर्विघ्नफलसिद्ध्येगणपतिपूजांकरिष्य इत्यंतरंगत्वपक्षेसंकल्पः ॥ बहिरंगत्वपक्षेतुममसुतस्यसुता-
याः वा करिष्यमाणामुकसंस्कारांगतयामंडपदेवता प्रतिष्ठादिगणपतिपूजांतंकरिष्ये ॥ इत्येवंसर्वे-
षांपृथक्पृथक्संकल्पः ॥ यत्रतुमंडपाभावेनतदंगभूतामंडपदेवताप्रतिष्ठानास्ति । तत्रतुसंकल्पवा-
क्येनमंडपदेवताप्रतिष्ठापदोल्लेखः ॥ भ्रातृपितृव्यादयस्तुममास्यभ्रातुरितिभगिन्याइतिवा । भ्रातुः
सुतस्येतिभ्रातुःकन्यायाइति वा ॥ ममभगिन्याःसुतस्येतिभगिन्याःकन्यायाइतिवा । ऊहेनसंक-
ल्पंकुर्युः ॥ प्रधानसंकल्पस्तुसर्वंविधायतद्दिनेश्वोवाकार्यः ॥ ततःपट्टेमृन्मयपीठेवारक्तवस्त्राच्छन्नेऽ
रुणाक्षतैर्विरचिताष्टदलपद्मोपरिगणपतिस्थापनम् ॥ तत्रादौकलशेतत्त्वायामीतिवरुणंसंपूज्य ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

तेनोदकेनपूजासामग्रींस्वात्मानंचसंप्रोक्ष्यगणपतिपूजामारभेत ॥ ॐ गणानांत्वेत्यस्यप्रजापतिर्ऋ
षिः । यजुःगणपतिर्देवता ॥ अर्चनेविनियोगः ॥ गणानांत्वेतिमंत्रमुच्चार्यसिद्धिबुद्धिसहितं
सांगंसायुधंसवाहनंसपरिवारं गणपतिमावाहयामीत्यावाह्य ॥ स्थापयामीतिस्थापनम् ॥

अथवा ॥ ॐ भूर्भुवःस्वरितिप्रणवादिकाव्याहृतीरुच्चार्यसिद्धिबुद्धिसहितमित्याद्युच्चार्य गणप-
तिमावाहयामीत्यावाह्यस्थापयामीतिस्थापयेत् ॥ अथवा ॐ हेहेरंबत्वमेह्येहिअंबिकात्र्यंबकात्मज
। सिद्धिबुद्धिपतेत्र्यक्षलक्षलाभपितःपितः । नागास्यनागहारत्वंगण राजचतुर्भुज ॥ भूषितःस्वा
युधैर्दिव्यैःपाशांकुशपरश्वधैः ॥ आवाहयामिपूजार्थंरक्षार्थंचममक्रतोः ॥ इहागत्यगृहाणत्वंपूजां-
यागंचरक्षमेइतिपौराणमंत्रंउच्चार्यसिद्धिबुद्धिसहितमित्याद्युक्त्वागणप तिमावाहयामी त्यावाह्यस्थाप
यामीतिस्थापनं ॥ ततः ॐ भूर्भुवःस्वःसिद्धिबुद्धिसहितायसांगायसायुधायसवाहनायसपरिवा-
रायगणपतयेनमइत्यंतमुच्चार्यइदमासनंसमर्पयामीत्येवमर्थसरूपेणवचसाआसनपाद्यार्घ्याचमनीय
स्नानाचमनीयवस्त्राचमनीययज्ञोपवीताचमनीय गंधपुष्पधूपदीपनैवेद्याचमनीयतांबूलप्रणामप्र-

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

दक्षिणादक्षिणादानांतैरुपचारैरभ्यर्चनं ॥ तत्रगंधदानेससिंदूरंचंदनंरक्तचंदनंचदद्यादितिविशेषः
केचित्गणेशांबिकयोःपूजामाचरंतिसाचैवं ॥ गणपतिमंत्रांतेतत्पुरुषायविद्महेवक्रतुंडायधीमहि-
तन्नोदंतीप्रचोदयात् ॥ ॐ तत्सुभगायैविद्महेकाममालिन्यैधीमहितन्नोगौरीप्रचोदयात् ॥ ॐ
गणेशांबिकाभ्यांनमःआवाहनमासनादिषोडशोपचारान्कृत्वा ॥ अथार्घपात्रेगंधरक्तचंदनपुष्प-
दूर्वाक्षतप्रक्षेपःनालिकेराद्यन्यतमफलस्यच ॥ ॐ रक्षरक्षगणाध्यक्षत्र्यक्षत्रैलोक्यरक्षक ॥ भक्ता-
नामभयंकर्त्तात्राताभवभवार्णवात् ॥ द्वैमातुरकृपासिंधोषाण्मातुराग्रजप्रभो॥वरदस्त्वंवरंदेहिवांछि
तंवांछितार्थद ॥ अनेनफलदानेनफलदोस्तुसदाममेत्यंतेसिद्धिबुद्धिसहितायसांगायसायुधाय-
सवाहनायसपरिवारायगणपतयेनमः फलार्घ्यंसमर्पयामीतिफलार्घदानं ॥ ॐ विघ्नेश्वरायवरदाय
सुरप्रियायलंबोदरायसकलायजगद्धिताय ॥ नागाननायश्रुतियज्ञविभूषितायगौरीसुतायगणना-
थनमोनमस्ते ॥ १ ॥ भक्तार्तिनाशनपरायगणेश्वरायसर्वेश्वरायशुभदायसुरेश्वराय ॥ विद्याध-
रायविकटायच वामनायभक्तप्रसन्नवरदायनमोनमस्ते ॥२॥ नमस्तेब्रह्मरूपायविष्णुरूपायतेनमः॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

नमस्तेरुद्ररूपाकारिरूपायतेनमः।विश्वरूपस्वरूपायनमस्तेब्रह्मचारिणे॥भक्तप्रियायदेवायनमस्तुभ्यं
॥ ७ ॥ विनायक।लंबोदरनमस्तुभ्यंसततंमोदकप्रिय॥अविघ्नंकुरुमेदेवसर्वकार्येषुसर्वदा ॥ त्वांविघ्नशत्रुदल
नेंतिचसुंदरेतिभक्तप्रियेतिसुखदेतिफलप्रदेति ॥ विद्याप्रदेत्यघहरेतिचयेस्तुवंतितेभ्योगणेशवरदो-
भवनित्यमेवेतिप्रार्थना ॥ समाचारात्कृतांजलिर्देशकालयोःसंकीर्तनांतेमयाचरिते गणपतिपूजा-
विधौयन्न्यूनमातिरिक्तंतत्परिपूर्णमस्तु॥इतियजमानोब्रूयात्॥अस्तुपरिपूर्णम्॥इतिप्रतिवचनम्॥अ-
नेनगणपतिपूजनेनामुककर्मणोनिर्विघ्नफलासिद्धिरस्तु ॥ इतिगणपतिपूजा॥ अथमंडपदेवताप्रति-
ष्ठांकुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ पूर्वाह्णेसपत्नीकेन धृतमांगलिकवेषेणशुभासनेउपवेशनम् ॥ आचम्य
प्राणानायम्य॥ इष्टदेवतागुर्वादीन्नत्वा॥दक्षिणपाणिनाकुशकुसुमयवजलादानम्॥ देशकालयोः
संकीर्त्तनांतेअस्याः ममामुकनाम्न्याः कन्यायाःकरिष्यमाणविवाहांगत्वेनवाममास्यामुकनाम्नः
॥ २ कुमारस्यकरिष्यमाणोपनयनाद्यंगत्वेनमंडपदेवताप्रतिष्ठांकरिष्ये ॥ तत्रादौनिर्विघ्नतासिध्यर्थे
गणपतिपूजनंचकरिष्ये ॥ गणपतिपूजापूर्ववत् ॥ शिष्टास्तुमंडपार्थस्थंभानारोपयंति ॥ देवस्य-

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

त्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम् ॥ इत्यभ्रिमादत्ते ॥ ॐ इदमहंरक्षसांग्रीवाऽअ-
पिकृंतामि ॥ इत्यवटंपरिलिखति ॥ ॐ मावोरिषत्खनितेतिखनति ॥ ॐ मावोरिषत्खनिताय-
स्मैचाहंखनामिवः ॥ द्विपाच्चतुष्पादस्माकंसर्वमस्त्वनातुरम् ॥ ॐ सिंचंतिपरिषिंचंतीतितास्मि-
न्नवटेअपआसिंचति ॥ ॐ सिंचंतिपरिषिंचंत्युत्सिंचंतिपुनंतिच ॥ सुरायै बभ्रवैमदेकिंत्वोव्वद-
तिकित्वः ॥ ॐ यवोसीतियवानावपति ॥ ॐ यवोसियवयास्मद्द्वेषोयवयारातीः ॥ दर्भसिद्धा
र्थकांस्तुष्णीमावपति ॥ ॐ कांडात्कांडादितिदूर्वां ॥ ॐ कांडात्कांडात्प्ररोहंतिपरुषःपरुषास्प-
रि ॥ एवानोदूर्वेप्रतनुसहस्रेणशतेनच ॥ ॐ दधिक्राव्णइतिदाधि ॥ ॐ दधिक्राव्णोऽअकारि-
षंजिष्णोरश्वस्यव्वाजिनः । सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूंषितारिषत् ॥ ॐ याःफलिनीरितिफ-
लं ॥ ॐ याःफलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुंचंत्वंहसः ॥
हिरण्यगर्भइतिहिरण्यंचावपति ॥ ॐ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत् ॥ स-
दाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाव्विधेम ॥ ॐ उच्छ्रयस्वव्वनस्पतऽइतिमंत्रेणरक्तसूत्रबद्ध-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

मदनपलसमन्विस्थंभोत्थापनं ॥ ॐ उच्छ्रूस्वव्वनस्पतः ऊर्ध्वोमापाह्यंहस ऽआस्यजज्ञस्याहृचः॥ ॐ ऊर्ध्वऊषुणइत्यवटेरोपणम् ॥ ॐ ऊर्ध्वऊषुणऽऊतयेतिष्ठादेवोनसविता ॥ ऊर्ध्वोव्वाजस्यसनितायदंजिभिर्व्वाघाद्भिर्व्विह्वयामहे ॥ ॐ स्थिरोभवेतिसमंततोमृत्पांसुपूरणेनस्थिरीकरणम् ॥ ॐ स्थिरोभवव्वीड्वंगऽआशुर्भवव्वाज्यर्वन् ॥ पृथुर्भवसुषदस्त्वमग्नेःपुरीषवाहणः ॥ एवंस्थंभानारोप्य आग्नेयस्थंभे ॥ ॐ भूर्भुवस्वः नंदिन्यैनमः ॥ नंदिनीमावाहयामीस्थापयामि ॥ तथैवनैर्ऋत्यस्थंभे ॥ ॐ नलिन्यैनमः ॥ ॐ नलिनीमावाहयामिस्थापयामि ॥ तथैववायव्यस्थंभेमैत्रायैनमः मैत्रामावाहयामिस्थापयामि ॥ तथैवईशानस्थंभे ॥ ॐ उमायैनमःउमामावाहयामिस्थापयामि ॥ मंडपमध्योपरिभागकाष्टे ॥ ॐ पशुवर्धिन्यैनमः पशुवर्धिनीमावाहयामिस्थापयामि ॥ तेषुस्थंभेषुमनोजुतीतिमंत्राते असुकककर्ममंडपदेवताः सुप्रतिष्ठितावरदाभवत ॥ ॐ मंडपदेवताभ्योनमः इतिमंत्रेणषोडशोपचारैःपूजनं ॥ ततोसमाचारात् बटुःकन्यावामंडपपूजांकृत्वा ॥ पश्चात्चतुःसौभाग्यवतीभिर्वर्द्धापयेत् ॥ कृतस्यमंडपदेवतापूजनकर्मणःसम्पृच्यर्थंयथासंपन्नांनेनतृ-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

क्षिपर्यंतेनब्राह्मणभोजनेनाहंतर्पयिष्ये ॥ तेनश्रीमंडपदेवताःप्रीयंताम् ॥ मयाचरितेमंडपदेवता-प्रतिष्ठाविधौयंन्यूनंयदतिरिक्तंतत्सर्वंपरिपूर्णमस्त्वितिब्राह्मणान् प्रतिप्रश्नः ॥ अस्तुपरिपूर्णमिति-ब्राह्मणाः ॥ इतिमंडपदेवताप्रतिष्ठाविधिः ॥ आशीर्वादः ॥

अत्रशिष्टाचारएवशरणम् ॥ यत्तुआभ्युदयिकश्राद्धांतेमंडपदेवताप्रतिष्ठामाचरंतितच्छ्राद्धखंडहेमाद्रिरेणुदीक्षितकृत-पारस्करगृह्यकारिकादिसकलग्रंथविरुद्धं शिष्टाचारविरुद्धंचेत्युपेक्ष्यं ॥ मंडपदेवताप्रतिष्ठातुसीमंतोन्नयनान्नप्राशनचू-डाकरणोपनयनवेदारंभकेशांतसमावर्तनाविवाहेषुकार्या ॥ तत्रैवमंडपसत्वात् ॥ तदुक्तंपारस्करगृह्ये ॥ पंचसुबहिःशा-लायांविवाहेचूडाकरणउपनयनेकेशांतेसीमंतोन्नयनइति ॥ गृहाद्बहिर्बाह्यशालाबहिःशालातस्यांबहिःशालायांबाह्ये मंडपेइत्यर्थः ॥ अत्रविवाहादिपदैर्विवाहादीन्येवकर्माणिबहिःशालायांविवक्षितानि ॥ अतश्चविवाहाद्यंगभूतंमातृपूज-नपूर्वकमाभ्युदयिकंश्राद्धंमधुपर्कःकन्यादानंचगृहाभ्यंतरमेवकर्त्तव्यंनबहिःशालायां ॥ अतएवपित्राप्रत्तामादायगृही-त्वानिःष्क्रामतीति गृहान्निःक्रमणमुक्तं ॥ विवाहश्चपश्चादग्नेर्वधूवरयोरुपवेशनादिवरदानांतोबहिःशालायां ॥ अतए-वचतुर्थीकर्मणि अपररात्रेभ्यंतरतोग्निमुपसमाधायेत्यभ्यंतरशालाविहिता ॥ चूडाकरणइत्यन्नप्राशनोपलक्षणम् ॥ उ-पनयनइतिव्रतादेशोपलक्षणम् ॥ केशांतइतिकृतविसर्गोपलक्षणं ॥ वासुदेवहरिहरादिभिरन्नप्राशनादिषुयतोबहिःशा-लाउक्तास्ति ॥ मंडपस्तंभनिवेशनस्तु ॥ वृषाद्राशित्रयेस्थितेसूर्येसतिआग्नेय्यांकार्य्यं ॥ सिंहाद्राशित्रयेइशान्यां ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

वृश्चिकाद्राशित्रयेवायव्यां कुम्भाद्राशित्रयेनैर्ऋत्यां ॥ अन्यासुदिक्षुव्युत्क्रमेणराहोर्मुखंमध्यपुच्छंचतिष्ठति ॥ अतस्त-
त्रस्तंभनिवेशनमनुचितं ॥ इतिबहिःशालाकरणविधिः ॥

अथमातृपूजनं ॥ तत्रगंधपुष्पाक्षोदकनैवेद्यादिसकलपूजोपकरणानामुपकल्पनं ॥ कुशकु-
सुमयवजलपाणिना ॥ ॐ इहेत्यादिदेशकालयोःसंकीर्त्तनांतेकरिष्यमाणामुककर्मांगतयामातृ-
पूजांकरिष्य इतिसंकल्प्य ॥ रक्तवस्त्रास्तृतपीठेरजतस्फटिकादिमयीषुप्रतिमासुलिखितं प्रतिमासु-
वाक्षत पुंजेषुवासगणावि पानांगौर्यादिचतुर्दशमातॄणांदक्षिणोपक्रमाणामुदगपवर्गाणांप्रत्यगु-
पक्रमाणांप्रागपवर्गाणांवास्थापनं ॥ तद्यथा ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः सिद्धिबुद्धिसहितंसांगंसायुधंस-
वाहनंसपरिवारंगणपतिस्थापनम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः गौरीमावाहयामीत्यावाह्यस्थापयामीतिपीठे
गौरीस्थापनम् ॥ १ ॥ एवमेवपद्मादीस्थापनं ॥ प्रणवव्याहृतिपूर्वकंद्वितीयांतंनामसंकीर्त्य ॥ ॐ
पद्मामावाह्यामिस्थापयामि ॥ २ ॥ शचीमावा० ॥ ३ ॥ मेधामा० ॥ ४ ॥ सावित्रीमा० ॥ ५ ॥
विजयामा० ॥ ६ ॥ जयामावा० ॥ ७ ॥ देवसेनामा० ॥ ८ ॥ स्वधामा० ॥ ९ ॥ स्वाहा-
मा० ॥ १० ॥ धृतिमा० ॥ ११ ॥ पुष्टिमा० ॥ १२ ॥ तुष्टिमावा० ॥ १३ ॥ कुलगोत्रेश्वरामा०

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ १४ ॥ ॐ भूर्भुःस्वःमातृभांडमावाहयामिस्थापयामि ॥

सीमंतोन्नयनचूडाकरणोपनयनविवाहेषुसंस्कारेषुयथाकुलाचारंमातृभांडस्थापनमाचरंति ॥

अथमातृणांगणांगणदेवताःस्वपक्षमाश्रित्यसमुदितपूजनेतुमातरःक्रमशोहस्तेनसंस्पृश्य प्रणवव्याहृतीश्चोच्चार्य ॥ गौर्यादिचतुर्दशमातरःगणपतिमातृभांडसहिता इहागच्छत इहतिष्ठतेतिस्थापयेत् ॥ ॐ मनोजुतिरितिमंत्रांतेगौर्याद्यामातरागणपतिमातृभांडसहिताः सुप्रतिष्ठिताभवंत्वितिसमुदितानांप्रतिष्ठा ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः गौर्यादिमातृभ्योगणपतिमातृभांडदेवतासहिताभ्योनमः आवाहनंसमर्पयामि । एवमिदमासनंसमर्पयामि । इदंपाद्यंस० । एषोर्घः । इदमाचमनीयं । पयसागणपतिस्नपयामि दध्नास० । आज्येनस्नपयामि । मधुनास्नपयामि । शर्करायस्न० । इदंस्नानंस० । स्नानांतेआचनीयंस० । इदंरक्तंवासः । इदंवस्त्रांतेआचमनीयं० इदंयज्ञोपवीतंस० यज्ञोपवीतांतेआचमनीयंस० । इदंरक्तगंधानुलेपनं । इमानिपुष्पाणिस० । एषधूपःस० । एषदीपःस० । इदंनैवेद्य । नैवेद्याचमनीयं । इदंफलतांबुलं । इमाःप्रदक्षिणाः । इदंनीराजनंएषपुष्पांजलिः । इयंदक्षिणा । नमस्कारः एवंषोडशोपचारैरर्चनंकृत्वाततःसमाचारात्

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

कृतांजलिनादेशकालयोःसंकीर्तिनांते आचारितेस्गणाधिपमातृपूजा विधौयन्न्यूनमतिरिक्तंतत्प-
रिपूर्णमस्त्वित्युक्तेअस्त्वितिप्रतिवचनं ॥ इतिमातृपूजनं ॥ अथवसोर्द्धाराःकुर्यात् ॥ तत्रकुशकु-
सुमयवजलपाणिना । ॐ इहेत्यादिदेशकालयोःसंकीर्तनांतेकरिष्यमाणा...कर्मांगतयासप्तकृ-
त्वःपंचकृत्वोवावसोर्द्धारांकरिष्येइतिसंकल्पः ॥ ॐ वसोःपवित्रमसिशतधारंवसोःपवित्रमसिसह
स्रधारम् ॥ देवस्त्वासवितापुनातुवसोःपवित्रेणशतधारेणसुप्वेत्यंतेनमंत्रेणकुशैःश्रि पात्रस्थेनावि-
लीनेनसगुडेनघृतेनमातृणां सन्निहितकुड्यलग्नाःदक्षिणाद्युत्तरापवर्गाःपश्चिमादिप्रागपवर्गाःवाना
तिनीचोच्छ्रिताःपंचसप्तवावसोर्द्धाराः कर्तव्याः ॐ मनोजूतिरितिमंत्रांतेश्रीये यादिसप्तवसोर्द्धाराः
सुप्रतिष्ठितावरदाभवंत्विति ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःवसोर्द्धारादेवताभ्योनम इतिआवाहनादिषोडशोप-
चारैःपूजनं । विशेषस्तुदूर्वारुणानिचपुष्पाणि । गुडधूपःगुडसर्पिर्भ्यांनैवेद्यमिति ॥ अथप्रार्थना
यदंगत्वेनभोदेवाःपूजिताविधिमार्गतः । कुर्वंतुकार्यमखिलंनिर्विघ्नेनक्रतूद्भवमितिमंत्रेणप्रार्थना ॥
मयाआचरितेवसोर्द्धारादेवतापूजाविधौयन्न्यूनमतिरिक्तंतत्परिपूर्णमस्त्वितियजमानेनोक्ते अ-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

स्त्वितिप्रतिवचनं ॥ सांकल्पिकनांदीश्राद्धं ॥ दधिबदराक्षतमिश्राःपिंडाइतिकात्यायनेनसपिंडो
दानात्सपिंडं ॥ हेमाद्रौविष्णुपुराणेपि । दध्यक्षतैःसबदरैःप्राङ्मुखोदङ्मुखोपिवा ॥ देवतीर्थेनवै-
पिंडान्दद्यात्कामेनवा ॥ पिंडदानंचात्रवैकल्पिकमित्युक्तंमिताक्षरायां ॥ वृद्धिश्राद्धे विकल्पेनपिं-
डदानंबुधैःस्मृतमिति ॥ आभ्युदयिकंप्रकृत्याहिताग्नेःपित्रर्चनांपिंडैरेवेतिनिगमपरिशिष्टोक्तत्वा-
दाहिताग्नेःसपिंडकाभ्युदयिश्राद्धनियमः ॥ तदितरस्यतुसपिंडकमपिंडकंवेतिविकल्पः ॥ अत्र-
पिंडकरणाकरणयोःकुलाचारपरत्वेनव्यवस्थाभिहिताहेमाद्रौभविष्यपुराणे ॥ पिंडनिर्वपणं कुर्यान्न
वाकुर्यान्नराधिप ॥ वृद्धिश्राद्धेमहाबाहोकुलधर्ममवेक्ष्यवाइति ॥ सूत्रेपिंडप्राधान्यमुक्तंसंकल्पश्रा-
द्धंकात्यायनानांनभवतित्यभिहितंप्राक् ॥ तथापिसमर्थंयस्तुशक्नोतिकर्तुंनैवेहपार्वणं ॥ अपिसं-
कल्पविधिनाकालेतस्यविधीयतेइतिहेमाद्रौ संवर्त्तेनाशक्तंप्रतिसंकल्पश्राद्धविधानात् ॥ संकल्प-
श्राद्धानुष्ठानस्यैवौचित्येनस्वीकारात् ॥ अनग्निकोयदाविप्रश्छिन्नाग्निरथापिवा ॥ तदावृद्धिषुस-
र्वासुसांकल्पं श्राद्धमाचरेदितिहेमाद्रौषट्त्रिंशन्मतेअनग्निकोछिन्नाग्निकर्तृकासुसर्वासुवृद्धिषुसंकल्प

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

श्राद्धस्यैवविहितत्वात्सांकल्पिकाभ्युदयिक श्राद्धमिहोच्यते ॥ ततःसांकल्पनांदीश्राद्धं ॥ आच-
म्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यपूर्वोच्चारित अमुकाख्येकर्मणिसांकल्पिकंनांदीश्राद्धंकरिष्ये इ-
तिसंकल्पः ॥ ॐ सत्यवसूसंज्ञकाः विश्वेदेवाःनांदीमुखाःभूर्भुवःस्वःइदंवःपाद्यंपादावनेजनंपाद
प्रक्षालनंवृद्धिः । एवंद्वितीयेविश्वेदेवाः ॥ गोत्राःपितृपितामह प्रपितामहाःनांदीमुखाःसपत्नीकाः
ॐ भूर्भुवःस्वःइदंवःपाद्यंपादावनेजनं पादप्रक्षालनंवृद्धिः ॥ द्वितीयगोत्राःमातामहवृद्धप्रमाता-
महाःनांदीमुखासपत्नीका ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःइदंवःपाद्यंपादावनेजनंपादप्रक्षालनंवृद्धिः ॥ ततः
आसनदानं ॥ सत्यवसुसंज्ञकानांविश्वेषांदेवानांयुग्मरूपाणांनांदीमुखानांभूर्भुवःस्वःइदमासनंसु-
खासनंस्वाहासंपद्यन्तामवृद्धिः ॥ नांदीश्राद्धेक्षणौक्रियेतांतथाप्राप्नुतमभवन्तौप्राप्नुवावः ॥ गो-
त्राणांपितृपितामहप्रपितामहानांनांदीमुखानांसपत्नीकानांभूर्भुवःस्वःइदमासनंसुखासनंस्वाहा सं
पद्यन्तामवृद्धिः ॥ द्वितीयगोत्राणांमातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानांनांदीमुखानांसपत्नीका-
नांभूर्भुवःस्वःइदमासनंस्वाहासंपद्यन्तामवृद्धिः ॥ ततोगंधादिनम् ॥ सत्यवसुसंज्ञकेभ्योविश्वेभ्यो

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

देवेभ्योनांदीमुखेभ्यायुग्मरूपेभ्यइदंगांधाद्यर्चनंस्वाहासंपद्यन्तामवृद्धिः ॥ गोत्रेभ्यःपितृपितामह प्रपितामहेभ्यनांदीमुखेभ्य० इदंगंधा०वृद्धिः ॥ द्वितीयगोत्रेभ्योमातामहप्रमातामहवृद्ध प्रमाताम-हेभ्योनांदीमुखेभ्य० इदंगंधा० वृद्धिः ॥ ततोभोजननिष्क्रमद्रव्यदानं ॥ सत्यवसुसंज्ञकेभ्योवि-श्वेभ्योदेवेभ्योनांदीमुखेभ्योयुग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तमन्नंवाताविष्क्रयीभूतंकिंचिद्द्रव्यंहिरण्यं वा अ मृतरूपेणस्वहासंपद्यन्तांवृद्धिः ॥ गोत्रेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहेभ्योनांदीमुखेभ्यो०युग्मब्राह्म-ण० भोजनपर्याप्तमन्नंवातान्निष्क्रयीभूतंकिंचिद्धिरणं अमृतरूपेनस्वाहा संपद्यन्तामवृद्धिः ॥ द्वि-तीयगोत्रेभ्योमातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यो नांदीमुखेभ्यायुग्मब्राह्मणभोजन० ॥ सक्षीर मुदकदानं ॥ सत्यवसुसंज्ञकाःविश्वेदेवाःप्रीयन्ताम् । गोत्राःपितृपितामहप्रपितामहाःनांदीमुखाः प्रीयंताम् ॥ द्वितीयगोत्राःमातामहप्रमातामहवृद्ध प्रमातामहाःनांदीमुखाःसपत्नीकाःप्रीयन्ताम् ॥ गोत्रन्नोवर्द्धताम् इतियजमानोब्रूयात् । अभिवर्द्धतांवोगोत्रंइतिद्विजाः ॥ ॐ दातारोनोभिव-र्द्धताम् ॥ अभिवर्द्धतांवोदातारः ॥ ॐ वेदफलंनोभिवर्द्धताम् ॥ अभिवर्धतामवोवेदफलं ।

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ॐ संततिर्नोभिवर्धतां । अभिवर्धतांवःसंतातिः ॥ श्रध्धाचनोमाव्यगमत् । माव्यगमतवःश्र-
ध्धा ॥ ॐ बहुदेयंचनोस्तु ॥ अस्तुवोबहुदेयं ॥ अन्नंचनोबहुभवेत् ॥ भवेदन्नंवोबहु ॥ अति-
थींश्चलभामहै ॥ लंभंतांवोतिथयः ॥ याचिताशेनःसन्तु । सन्तुवोयाचितारः ॥ एताःआशिषः
सत्याःसंतु । सन्त्वेताआशिषःसत्याः ॥ दक्षिणासंकल्पः ॥ सत्यवसुसंज्ञकेभ्योविश्वेभ्योदेवेभ्योनां
दीमुखेभ्यः कृतस्यनांदीश्राध्धस्यफलप्रतिष्ठासिध्यर्थं इमांद्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयणींदक्षिणांदातु
महमुत्सृजे । गोत्रेभ्यःपितृपितामहप्रपितामहेभ्योनांदीमुखेभ्यःसपत्नीकेभ्यः कृतस्यसांकल्पिक-
नांदीश्राध्धस्पफलप्रतिष्ठासिध्यर्थंइमांद्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयणींदाक्षिणांदातुमहमुत्सृजे द्विती-
यगोत्रेभ्योमातामहप्रमातामहवृध्धप्रमातामहेभ्योनांदीमुखेभ्य० महमुत्सृजे ॥ ततोनांदीश्राध्धं-
संपन्नंसुसंपन्नम् ॥ ॐ व्वाजेव्वाजेवतव्वाजिनोनोधनेषुविप्रअमृताऋतज्ञाः ॥ अस्यमध्वःपिब-
तमादयध्वंतृप्तायातपथिभिर्देवयानैः ॥ इतिविसृज्य ॥ आमाव्वाजस्यप्रसवोजगम्यादेमेद्यावापृ-
थिवीव्विश्वरूपे ॥ आमागंतांपितरामातराचामासोमोमृतत्वेनगम्यात् ॥ इतिअनुव्रज्य ॥ आसि-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

न्नांदीश्राध्धेन्यूनातिरिक्तोयोविधिःसउपविष्टब्राह्मणानांवचनात्नांदीमुखप्रसादात्सर्वःपरिपूर्णोस्तु।
अस्तुपरिपूर्णःप्रतिवचनं ॥ अनेनसांकल्पिकनांदीश्राध्धकृतेननांदीमुखाःपितरःप्रीयन्ताम् ॥
इतिसांकल्पिकनांदीश्राध्धम् ॥

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

अथपुण्याहवाचनप्रयोगः ॥ स्वपुरतःशुद्धायांभूमौपंचवर्णैस्तंडुलैरष्टदलकरणं ॥ तत्रमही-
द्यौरितिभूमिस्पर्शः ॥ ॐ महीद्यौःपृथिवीचन इमंयज्ञम्मिमिक्षताम् । पिपृतान्नोभरीमभिः ॥१॥
तत्रौषधयः समितियवप्रक्षेपः । ॐ ओषधयःसमवदन्तसोमेनसहराज्ञा ॥ यस्मैकृणोतिब्राह्मण
स्तंराजन्पारयामसि ॥ आजिघ्रमितिकलशंस्थापयेत् ॥ ॐ आजिघ्रकलशंमह्यात्वाविशन्त्वि
न्दवः ॥ पुनरूर्ज्जानिवर्त्तस्वसानःसहस्रन्धुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्रयिः ॥ वरुण-
स्योत्तंभनमितिकशलेजलंपूरयेत् ॥ त्वांगंधर्व्वेतिगंधप्रक्षेपः ॥ ॐ त्वांगंर्वाअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वा
म्बृहस्पतिः ॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥ याओषधीरितिसर्वौषधीः ॥ ॐ या
ओषधीःपूर्व्वाजातादेवेभ्यस्त्रियुगंपुरा ॥ मनैनुबभ्रूणामहर्ढशतंधामानिसप्तच ॥ कांडात्कांडादि-
तिदूर्वाः ॥ अश्वत्थेवेतिपंचपल्लवान् ॥ ॐ अश्वत्थेवोनिषदनंपर्णेवोवसतिष्कृता ॥ गोभाज-
इत्किलासथयत्सनवथपूरुषम् ॥ स्योनापृथिवीतिसप्तच्छदः ॥ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी
॥ यच्छानःशर्म्मसप्रथाः ॥ याःफलिनीतिफलं ॥ याःफलिनीर्याअफलायाअपुष्पायाश्चपुष्पि-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

णीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुञ्चंत्वंहसः ॥ परिव्राजपतिरितिपंचरत्नानि ॥ ॐ परिव्राजप-
तिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ॥ दधद्रत्नानिदाशुषे ॥ हिरण्यगर्भेतिहिरण्यं ॥ ॐ हिरण्यगर्भः
समवर्तताग्रेभूतस्यजातःपतिरेकआसीत् ॥ सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम ॥
युवासुवासाःपरिवीतआगात्सउश्रेयान् भवतिजायमानःतंधीरासःकवयउन्नयंतिस्वाध्योमनसादे-
वयंतइतिरक्तसूत्रंकलशेवेष्टयेत्॥ ॐ पूर्णादर्विपरापतसुपूर्णापुनरापत॥ वस्नेवविक्रीणावहाइषमू-
र्जंशतक्रतो ॥ इतिपूर्णपात्रंकलशोपरिन्यसेत् ॥ तत्वायामीतिवरुणमावाह्य ॥ ॐ तत्वायामि
ब्रह्मणावंदमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः ॥ अहेडमानोवरुणेहबोध्युरुशंसमानआयुःप्रमो-
षीः ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंयज्ञंसमिमंदधातु ॥ विश्वेदे-
वासइहमादयंतामो३प्रतिष्ठ ॥ ॐ वरुणायनमःसुप्रतिष्ठितोवरदोभव । इतिप्रतिष्ठाप्य । ॐ वरु-
णायनमः इत्यनेनमंत्रेणवरुणंगंधादिपंचोपचारैःसंपूज्यकलशमभिमन्त्रयेत् ॥ कलशस्यमुखेवि-
ष्णुःकंठेरुद्रःसमाश्रितः ॥ मूलेतस्यास्थितोब्रह्मामध्येमातृगणाःस्मृताः ॥ कुक्षौतुसागराःसर्वेसप्त-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

द्वीपांवसुंधरा ॥ इत्यभिमंत्र्यतीर्थान्यावाहयेत् ॥ अत्रगायत्रीसावित्रीशांतिःपुष्टिकरीतथा ॥
आयांतुममशांत्यर्थंदुरितक्षयकारकाः ॥ सर्वेसमुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदानदाः ॥ आयान्तुम-
म० ॥ इत्यावाह्य ॥ ॐ गायत्र्यादिभ्योनमः इतिसंपूज्यप्रार्थयेत् ॥ देवदानवसंवादेमथ्यमाने-
महोदधौ ॥ उत्पन्नोसितदाकुंभविधृतोविष्णुनास्वयम् ॥ त्वत्तोयेसर्वतीर्थानिदेवाःसर्वेत्वयिस्थि-
ताः ॥ त्वयितिष्ठंतिभूतानित्वयिप्राणाःप्रतिष्ठिताःशिवस्स्वयंत्वमेवासिविष्णुस्त्वंचप्रजापतिः ॥ आ-
दित्यावसवोरुद्राविश्वेदेवाःसपैतृकाः ॥ त्वयितिष्ठंतिभूतानियतः कामफलप्रदाः ॥ सान्निध्यंकुरु-
मेदेवप्रसन्नोभवसर्वदाइतिसंप्रार्थ्य ॥ ततअवनिकृतजानुमंडलःकमलमुकुलसदृशमंजलिंशिरस्या
धायानन्तरंदक्षिणेनपाणिनास्वर्णपूर्णकलशंधारयित्वादीर्घानागानद्योगिरयस्त्रीणिविष्णुपदानिच
॥ ॐ त्रीणिपदाविचक्रमे विष्णुर्गोपाअदाभ्यः ॥ अतोधर्माणिधारयन् ॥१॥ तेनायुःप्रमाणे
नपुण्यंपुण्याहंदीर्घमायुरस्त्विति भवंतोब्रुवंतु ॥ इतित्रिःयजमानोवदेत् ॥ पुण्यंपुण्याहंदीर्घमायुर
स्तुइतिद्विजाः ॥ एवंसर्वत्रयजमानवचनोत्तरंब्राह्मणाःप्रतिवचनंदद्युः ॥ ब्राह्मणानांहस्तेसुप्रोक्षित

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

मस्तु ॥ ॐ शिवाआपःसंतु । संतुतेशिवाआपः ॥ ॐ सौमनस्यमस्तु । अस्तुतेसौमनस्यं॥ ॐ अक्षतंचारिष्टंचास्तु । अक्षतमरिष्टंच॥ ॐ गंधाःपातुसौमंगल्यंचास्त्विति भवं० । गंधाःपांतु सौमंगल्यंचास्तु ॥ ॐ अक्षताःपान्तुआयुष्यमस्त्विति भवं । अक्षताःपांतुआयुष्यमस्तु ॥ ॐ पुष्पाणिपान्तुसौश्रियमस्त्विति भवं० । पुष्पाणि० मस्तु । ॐ तांबूलानिपान्तुऐश्वर्यमस्त्विति-भवं० । ताबूलानिपांतुऐश्वर्यमस्तु ॥ ॐ दक्षिणाःपांतुबहुधनमस्त्विति भवंतो० ॥ दक्षिणाःपांतु बहुधनमस्तु ॥ ततोयजमानआचार्यादीन्प्रणम्य॥ श्रीर्यशोविद्याविनयोवित्तंबहुपुत्रंचायुष्यंचा-स्तुइतिभवंतोब्रुवंतुइतिवदेत् ॥ ततोद्विजाःश्रीर्यशोविद्याविनयोवित्तंबहुपुत्रंचायुष्य चास्तुइतिव-देयुः ॥ अनंतरंदीर्घमायुःशांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्त्वितियजमानमूर्ध्न्यभिषिंचेयुः ॥ यंकृत्वासर्ववेद यज्ञक्रियाकरणकर्मारंभाःशुभाःशोभनाःप्रवर्तंते ॥ तमहमोंकारमादिंकृत्वाऋग्यजुःसामाथर्वाशीर्व-चनंबहुऋषिमतंसंस्थिरैःसमनुज्ञातंभवद्भिरनुज्ञातःपुण्यंपुण्याहंवाचयिष्ये ॥ ॐ वाचताम् ॥ ॐ भ-द्रंकर्णेभिःश्रृणुयामदेवाभद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

दायुः ॥ १ ॥ देवानांभद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवानाᳬंरातिरभिनोनिवर्त्ततम् ॥ देवानाᳬंसख्यमु
पसेदिमाव्वयंदेवानआयुःप्रतिरंतुजीवसे ॥ १ ॥ नतद्रक्षाᳬंसिनपिशाचास्तरन्तिदेवानामोजःप्र-
थमजᳬंह्येतत् ॥ योबिभर्त्तिदाक्षायणᳬंहिरण्यᳬंसदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुःसमनुष्येषुकृणुतेदीर्घमायुः
॥ ३ ॥ दीर्घायुस्तओषधेखनितायस्मैचत्वाखनाम्यहम् ॥ अथोत्वंदीर्घायुर्भूत्वाशतवल्शाविरो-
हतात् ॥ द्रविणोदाइतिऋक् ॥ नवोनवोभवतिइतिऋक् । उच्चादिविऋक् ॥ इत्याशीर्वचनं ॥
ॐ द्रविणोदाःपिपीषतिजुहोतप्रचतिष्ठत ॥ नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत ॥ ॐ सवितात्वासवानाᳬंसुवता
मग्निर्गृहपतीनाᳬंसोमोव्वनस्पतीनाम् ॥ बृहस्पतिर्वाचऽइंद्रोज्यैष्ट्यायरुद्रःपशुभ्योमित्रःसत्योव्वरु-
णोधर्म्मपतीनाम् ॥१॥ ॐ उच्चातेजातमंधसोदिविसद्भूम्याददे ॥ उग्रᳬंशर्म्ममहिश्रवः ॥ १ ॥
नतद्रक्षाᳬंसि० ॥ इतियजुर्वेदिनः । ॐ देवो३वो३द्रविणोदाः ॥ १॥ ॐ अद्यनोदेवसवितःऔ-
होवा० ॥२॥ ॐ चंद्रमाआहुवा० ॥३॥ ॐ उच्चाता३ईजातमंधसाः ॥४॥ उपास्मै० ॥५॥ इति
सामगाः ॥ ॐ धातारातिःसविता० ॥१॥ ॐ येनदेवंसवितारं० ॥२॥ ॐ अहोरात्राभ्यांनक्ष-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

त्रेभ्यःसूर्याचंद्रमसाभ्यां० ॥३॥ ॐ उच्चापतंनमहणं० ॥४॥ इत्यर्थवेवेदिनः ॥ व्रतजपनिमयत-
पःस्वाध्यायक्रतूदयादमदानविशिष्टानांसर्वेषांब्राह्मणानांमनःसमाधीयताम् ॥ इतियजमानः ॥
विप्रासमाहितमनसःस्थः ॥ प्रसीदंतुभवंतःइतियजमानः । प्रसन्नाःस्मःइतिद्विजाः ॥ ॐ शांति
रस्तु ।१। ॐ पुष्टिरस्तु ।२। ॐ तुष्टिरस्तु ।३। ॐ वृद्धिरस्तु ।४। ॐ अविघ्नमस्तु ।५। ॐ
आयुष्यमस्तु ।६। आरोग्यमस्तु ।७। शिवंकर्मास्तु ।८। कर्मसमृद्धिरस्तु ।९। पुत्रसमृद्धिरस्तु
।१०। वेदसमृद्धिरस्तु ।११। शास्त्रसमृद्धिरस्तु ।१२। धनधान्यसमृद्धि० ।१३। इष्टसंपदस्तु ।१४।
अनिष्टनिरसनमस्तु ।१५। यत्पापंरोगंअशुभंअकल्याणंतद्दूरेप्रतिहतमस्तु ।१६। यच्छ्रेयस्तदस्तु
।१७। उत्तरेकर्मणिनिर्विघ्नमस्तु ।१८। उत्तरोउत्तरमहरहरभि वृद्धिरस्तु ।१९। उत्तरोत्तराःक्रियाःशुभा
शोभनाःसंपद्यंतां ।२०। तिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्रलग्नसंपदस्तु ।२१। तिथिकरणेमुहूर्तनक्षत्रग्रहल-
ग्नाधिदेवताःप्रीयन्ताम् ।२२। तिथिकरणेसमुहूर्तेसनक्षत्रेसलग्नेसग्रहेसाधिदेवतेप्रीयेताम् ।२३। दु-
र्गापांचाल्यौप्रीयेताम् ।२४। अग्निपुरोगाविश्वेदेवाःप्रीयंताम् ।२५। इंद्रपुरोगामरुद्गणाःप्रीयंताम्

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

।२६। वसिष्ठपुरोगाऋषिगणाःप्रीयन्ताम् ।२७। माहेश्वरीपुरोगाउमामातरःप्रीयन्ताम् ।२८। अरुं-
धतीपुरोगाएकपत्न्यःप्रीयन्ताम् ।२९। विष्णुपुरोगाःसर्वेदेवाःप्रीयंताम् ।३०। ब्रह्मपुरोगाःसर्वेवे-
दाःप्रीयन्ताम् ।३१। ब्रह्मचब्राह्मणाश्चप्रीयंताम् ।३२। श्रीसरस्वत्यौप्रीयेताम् ।३३। श्रद्धामेधेप्री-
येताम् ।३४। भगवतीकात्यायनीप्रीयताम् ।३५। भगवतीमाहेश्वरीप्रीयताम् ।३६। भगवती ऋ-
द्धिकरीप्रीयंताम् ।३७। भगवतीवृद्धिकरीप्रीयताम् ।३८। भगवतीपुष्टिकरी० ।३९। भगवती-
तुष्टिकरी ।४०। भगवतीसिद्धिकरी० ।४१। भगवंतौविघ्नविनायकौप्रीयेताम् ।४२। सर्वाःकुलदे-
वताःप्रीयंताम् ।४३। सर्वाग्रामदेवताःप्रीयंताम् ।४४। सर्वाइष्टदेवताःप्री० ।४५। हताश्चब्रह्मद्विषः
।४६। हताश्चपरिपंथिनः ।४७। हताश्चविघ्नकर्तारः ।४८। शत्रवःपराभवंयांतु ।४९। शाम्यंतुघो-
राणि ।५०। शाम्यंतुपापानि ।५१। शाम्यंत्वीतयः ।५२। शुभानिवर्द्धतां ।५३। शिवाआपः
संतु ।५४। शिवा ऋतवःसंतु ।५५। शिवाअग्नयःसंतु ।५६। शिवाआहुतयःसंतुः ।५७। शिवा-
ओषधयःसंतु ।५८। शिवावनस्पतयःसंतु ।५९। शिवाअतिथयःसंतु ।६०। अहोरात्रेशिवेस्या-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ताम् ।६१। शंवःकनिक० ऋक् ॥ ॐ कारसर्वत्र ॥ ॐ निकामेनिकामे०ताम् ॥ १ ॥ यजुः ॥
त्वष्टा ३४ नोदैवीयम् वाचायम् इतिसाम ॥ गणास्त्वोपगायंतो०अथर्वः ॥ ॐ शुक्रांगारक
बुधबृहस्पतिश नैश्चरराहुकेतुसोमसहिता आदित्यपुरोगाःसर्वेग्रहाःप्रीयन्ताम् ॥१॥ भगवान्नारा-
यणःप्रीयताम् ॥२॥ भगवान्स्वामीमहासेनःप्रीयताम् ॥३॥ भगवान्स्वामीपर्जन्यःप्रीयताम् ॥४॥
पुरोनुवाक्यययायत्पुण्यंतदस्तु ॥५॥ याज्यययायत्पुण्यंतदस्तु ॥६॥ वषट्कारेणयत्पुण्यंतदस्तु॥७॥
प्रातःसूर्योदयेयत्पुण्यंतदस्तु ॥८॥ पुण्याहकालान्वाचयिष्ये । वाच्यताम् ॥ ब्राह्मंपुण्यंमह-
द्यच्चसृष्ट्युत्पादनकारकम् ॥ वेदवृक्षोद्भवंनित्यंतत्पुण्याहंब्रुवंतुनः ॥ भोब्राह्मणःमह्यंसकुटुंबिनेम-
हाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायमयाक्रियमाणस्यामुककर्मणःपुण्याहंभवंतो ब्रुवं
तुइतिमंदमध्योच्चस्वरेणात्रिर्ब्रूयात् ॥ पुण्याहमितित्रिर्विप्राः ॥ ॐ उद्गातेवशकुने. ऋक् ॥ ॐ पु-
नंतुमादेवजना०इतियजुः ॥ पुनानःसोमा२धार२४इतिसाम ॥ पुनंतुमादेवजना०अथर्व ॥ पृ-
थिव्यामुद्धृतायां तुयत्कल्याणंपुराकृतं ॥ ऋषिभिःसिद्धगंधर्वैस्तत्कल्याणंब्रुवंतुनः ॥१॥ भोब्रा-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ह्मणाःमह्यंसकुटुंबिनेमहाजनान्नमस्कुर्वाणाय०अमुककर्मणः कल्याणंभवंतोब्रुवंतुइतित्रःमेणमंद-
मध्योच्चस्वरेणात्रिर्ब्रूयात् ॥ कल्याणं३त्रिर्विप्राः ॥ ॐ अपाःसोम०ऋक् । ॐ यथेमांवाचमिति-
यजुः ॥ ॐ कांयानश्चा३ईत्राआभुवादितिसाम ॥ ॐ विश्वजित्कल्याणीइत्यथर्व ॥ सागरस्य-
यथावृद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिःकृता ॥ संपूर्णासुप्रभावाचतांच ऋद्धिं ब्रुवंतुनः ॥ भोब्राह्मणाःमह्यं०
अमुककर्मणःऋद्धिंभवंतोब्रुवंतुत्रिः ॥ ऋध्यतामितिविप्राः ॥ ॐ ऋद्धयामस्तोमंइति ऋक् ॐ स-
त्रस्यऋद्धि०ज्योतिरितियजुः ॥ ॐ अहोवा२अहोवा३अगन्म.साम ॥ ॐ ऋध्यंमंत्रोयोनिंयअ-
थर्व ॥ स्वस्तिस्तुयाविनाशाख्यापुण्यकल्याणवृद्धिदा ॥ विनायकप्रियानित्यंतांचस्वस्तिंब्रुवंतु-
नः ॥ भोब्राह्मणःमह्यं०कर्मणेःस्वस्तिंभवंतोब्रुवंतुत्रिः ॥ आयुष्मतेस्वस्तिविप्राः ॥ ॐ स्वस्ति-
ऋद्धि०ऋक् । ॐ स्वस्तिनइंद्रो०यजुः ॥ ॐ त्रातारमिंद्र०साम ॥ ॐ स्वस्तिमात्रउतमित्रे.अ-
थर्व ॥ समुद्रमथनाज्जाताजगदानंदकारिका ॥ हरिप्रियाचमांगल्यातांचाश्रियंब्रुवंतुनः ॥ भो
ब्राह्मणामह्यंसकुटुंबिनेमहाजनान्नमस्कुर्वाणायाशीर्वचनमपेक्षमाणाय मयाक्रियमाणस्यामुक-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

कर्मणः श्रीरस्त्विति भवंतो ब्रुवंतु इति मंदमध्योच्चस्वरेणात्रिर्यजमानो ब्रूयात् ॥ अस्तु श्रीरिति विप्राः॥
शतंजीव शरदो ऋक् ॥ श्रीश्च ते ऽयजुः ॥ आयुर्विश्वायुः साम ॥ आयुरस्मै हि अथर्व ॥ स्वस्तिवाच
नसमृद्धिरस्तु ॥ अस्तु विप्राः ॥ अनेन पुण्याहवाचनेन प्रजापतिः प्रीयताम् ॥ ततोऽभिषेकः ॥
वामे पत्नी उपवेशनं ॥ ब्राह्मणा एकस्मिन्पात्रे कलशोदकं गृहीत्वा पंचपल्लवसहितोदकेनोदङ्मु-
खास्तिष्ठतः सकुटुंबयजमानं वक्ष्यमाणमंत्रैरभिषिंचयुः ॥ अभिषेकमंत्राः ॥ ॐ आपोहिष्ठातिसृ
भिः३ ॥ ॐ त्रातारमिंद्र० ॥ ॐ त्वरुणस्योत्तंभनमसि० ॥ ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधोभगे-
मान्धियमुदवाददन्नः ॥ भगप्रनोजनयगोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवंन्तःस्यामः ॥ १॥ ॐ इदमापः
प्रवहतावद्यंचमलंचयत् ॥ यच्चाभिदुद्रोहानृतंयच्चशेपेअभीरुणम् ॥ आपोमातस्मादेनसःपवमान
श्चमुंचतु ॥२॥ ॐ समुद्रायत्वाऽवातायस्वाहासरिरायत्वाऽवातायस्वाहा ॥ अनाधृष्यायत्वाऽवा-
तायस्वाहाप्रतिधृष्यायत्वाऽवातायस्वाहा॥ अवस्यवेत्वाऽवातायस्वाहाशिमिदायत्वाऽवातायस्वाहा
॥ १ ॥ पुनंतुमापितरःसोम्यासःपुनंतुमापितामहाःपुनंतुप्रपितामहाः पवित्रेणशतायुषा पुनंतु-

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

मापितामहाः पुनंतु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥१॥ अग्न आयूंषि पवस आ-
सुवोर्जमिषं च नः ॥ आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥२॥ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ॥ पुनन्तु
विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥३॥ पवित्रेण पुनीहि मा ॥ शुक्रेण देव दीद्यत् ॥ अग्ने क्रत्वा क-
तूँ२रनु ॥४॥ यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा ॥ ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥५॥ पवमानः सो अद्य नः
पवित्रेण विचर्षणिः ॥ यः पोता स पुनातु मा ॥६॥ उभाभ्यान्देव सवितः पवित्रेण सवेन च ॥ मा
म्पुनीहि विश्वतः ॥७॥ वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्व्यस्तन्वो वीतपृष्ठाः ॥ तया मदं-
न्तः सधमादेषु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ८ ॥ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ॥
भवा वाजस्य संगथे ॥१॥ पंच नद्यः सरस्वतीमपियंति सस्रोतसः ॥ सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत् स
रित् ॥१॥ शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि ॥ राजा मे प्राणो अमृतं सम्राट् चक्षुर्वि-
राट् श्रोत्रम् ॥१॥ जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड् भामः ॥ मोदाः प्रमोदा अंगुलीरंगानि
मित्रम्मे सहः ॥ २ ॥ बाहू मे बलमिंद्रियं हस्तौ मे कर्म वीर्यम् ॥ आत्मा क्षत्रमुरो मम ॥ ३ ॥ पृष्ठी-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

र्म्मेराष्ट्रमुदरमंसौग्रीवाश्चश्रोणी ॥ उरूअरत्नीजानुनीविशोमेंगानिसर्वतः ॥ ४ ॥ नाभिर्म्मे
चित्तंविज्ञानम्पायुर्म्मेपचितिर्भसत् ॥ आनंदनंदावांडौमेभगःसौभाग्यंपसः ॥ जंघाभ्यांपद्भ्यांध-
र्मोस्मिविशिराजाप्रतिष्ठितः ॥ ५ ॥ ॐ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम् ॥
सरस्वत्यैवाचोयंतुर्यन्त्रियेदधामिबृहस्पतेष्ट्वासाम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ ॥ १ ॥ देवस्यत्वासवि-
तुः हस्ताभ्याम् ॥ सरस्वत्यैवाचोयंतुर्यन्त्रेणाग्नेःसाम्राज्येनाभिषिंचामि ॥२॥ ॐ देवस्य०हस्ता
भ्याम् ॥ अश्विनोर्भैषज्येनतेजसेब्रह्मवर्चसायाभिषिंचामिसरस्वत्यैभैषज्येनवीर्यायान्नाद्याया-
भिषिंचामींद्रस्येंद्रियेणबलायश्रियैयशसेभिषिंचामि ॥३॥ ततःपुराणश्लोकैरभिषेकः ॥ सुरास्त्वा
मभिषिंचंतुब्रह्माविष्णुमहेश्वराः ॥ वासुदेवोजगन्नाथस्तथासंकर्षणोविभुः ॥१॥ प्रद्युम्नोऽथानिरुद्धश्च-
भवंतुविभवायते ॥ आखंडलोग्निर्भगवान्यमोवैनिर्ऋतिस्तथा ॥२॥ वरुणःपवनश्चैवधनाध्यक्षस्त
थाशिवः ॥ ब्रह्मणासहिताह्येतेदिक्पालाःपांतुवःसदा ॥३॥ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधापुष्टिश्रद्धाक्रि-
यामतिः ॥ बुद्धिर्लज्जावपुःशांतिर्यायानिद्राचभावना ॥ ४ ॥ एतास्त्वामभिषिंचंतुपुष्टिःकांतिः

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

क्षमातथा ॥ आदित्यश्चंद्रमाभौमोबुधोजीव सितोर्कजः ॥५॥ ग्रहास्त्वामभिषिंचंतुराहुःकेतुश्च-
पूजिताः ॥ देवदानवगंधर्वायक्षराक्षसपन्नगाः ॥६॥ ऋषयोमुनयोगावोदेवमातरएवच । देवप-
त्न्योध्रुवानागादैत्याश्चाप्सरसांगणाः ॥७॥ अस्त्राणिसर्वशस्त्राणिराजानोवाहनानिच ॥ औषधा
निचरत्नानिकालस्यावयवाश्चये॥८॥सरितःसागराःशैलास्तीर्थानिजलदानदाः॥एतास्त्वामभिषिं
चंतुसर्वकामार्थसिद्धये ॥९॥ अमृताभिषेकोस्तु ॥ अस्तुविप्राः॥ केचित्पुराणमंत्रैरभिषेकंनकुर्व-
ति ॥ अस्यस्वस्तिवाचनकर्मणः समृद्ध्यर्थंब्राह्मणेभ्योदक्षिणांदास्ये ॥ ब्राह्मणाआशीर्वादमंत्रान्
पठित्वामंत्रार्थाःसफलाःसंतुसंतुपूर्णामनोरथाः ॥ शत्रूणांबुद्धिनाशोस्तुमित्राणामुदयस्तव ॥ ऋ-
ग्वेदोथयजुर्वेदःसामवेदोह्यथर्वणः॥ब्रह्मतेजोभिवर्द्धतामग्निर्भंतुतवशात्रवान्इतियजमानायाक्षतान्-
दद्युः ॥ ततोयथाचारंनूतनवस्त्रादिपरिधानं ॥ इतिसंस्कारसुबोधनीयेपरिशिष्टानुसारेणपुण्याह-
वाचनप्रयोगः ॥ वसोर्द्धाराकरणंतुकात्यायनानामेवनान्येषां ॥ अथ अमांगल्यनाशार्थमायुष्य
सूक्तजपंकरिष्येइतिसंकल्पः ॥ आयुष्यंवर्चस्यमितित्र्यृचस्यदक्षऋषिःउष्णिक्शक्करीत्रिष्टुप्छंदां-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

सि ॥ हिरण्यगर्भोदेवताजपेविनियोगः ॥ आयुष्यंव्वर्चस्यमितित्र्यृचस्यस्वरेणजपः ॥ॐ आ-
युष्यंव्वर्चस्यर्ठरायस्पोषमौद्भिदम् ॥ इदर्ठहिरण्यंव्वर्चस्वज्जैत्रायाविशतादुमाम् ॥ १॥ नतद्रक्षार्ठ
सिनपिशाचास्तरंतिदेवानामोजःप्रथमजर्ठह्येतत् ॥ योबिभर्त्तिदाक्षायणर्ठहिरण्यर्ठसदेवेषुकृणुतेदी
र्घमायुस्समनुष्येषुकृणुतेदीर्घमायुः ॥ २॥ यदाबध्नंदाक्षायणाहिरण्यर्ठशतानीकायसुमनस्यमानाः
॥ तन्मआबध्नामिशतशारदायायुष्मान्जरदष्टिर्यथासम् ॥ ३ ॥ हेमाद्रिस्त्वानोभद्राइत्यादीनांज
पमाह । एतेषामप्यायुर्धेहितवात् ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

अथषोडशसंस्कारक्रमः ॥ गर्भाधानंपुंसवनंसीमंतोन्नयनंतथा ॥ जातकर्माभिधानंचनिष्क्रमःप्राशनंक्रमात् ॥१॥ चूडोपनयनंवेदव्रतानांचचतुष्टयं ॥ गोदानमेखलोन्मोक्षोविवाहःषोडशःक्रमात् ॥२॥ तत्रप्रथमंगर्भाधानपुंसवनंसीमंतोन्नयनेनसहकार्यं ॥ कालातिक्रमेतुसीमंतोन्नयनदिनेप्रधानहोमात्प्राक्कार्यं ॥ तत्रकारिकायां ॥ एतदेवपुरागर्भचलनादकृतंयदि ॥ सीमंतात्प्राग्विधातव्यंस्पंदतेपिहिहारीतिरिति ॥ अथसीमंतोन्नयनंपुंसवनवत्सूत्रं ॥ इत्यनेनहस्तमूलश्रवणपुनर्वसुमृगशिरःपुष्यअनुराधापिपुंनक्षत्रं ॥ अरिक्तादितिथौपुंनक्षत्रेशुक्रसोमबुधगुरुवासरेपुविष्ट्यादिदोषरहितेदिनेकार्यम् ॥ अत्राप्यधिकमासगुरुशुक्रास्तादीनांनदोषः ॥ अत्रतुनियतकालत्वादेव ॥ प्रथमगर्भेमासेषष्ठेष्टमेवा ॥ तत्रभार्यांस्नापयित्वा ॥ अहतेवाससीपरिधाप्य ॥ देशकालौस्मृत्वाअस्यांममभार्यायांतनुरुधिरप्रियालक्ष्मीभूतराक्षसीगणदूरनिरसनसकलसौभाग्यनिदानभूतमहालक्ष्मीसमावेशनद्वाराप्रतिगर्भबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणजनकातिशयद्वाराचपरमेश्वरप्रीत्यर्थंस्त्रीसंस्काररूपगर्भाधानपुंसवनसीमंतोन्नयनाख्यत्रयंतंत्रेणकर्माहंकरिष्ये तदंगतयावि-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

हितंगणपतिपूजनंपुण्याहवाचनंमंडपप्रतिष्ठामातृकापूजनं वसोर्द्धाराआयुष्यमंत्रजपनांदीश्राद्धा-
निकरिष्येतिकृत्वा ॥ तत्रादौगर्भाधानं ॥ देशकालौस्मृत्वा ॥ अस्याःममभार्यायाःप्रतिगर्भसं-
स्कारातिशयद्वाराअस्यांजनिष्यमाणसर्वगर्भाणां बीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वाराश्रीपरमेश्वर
प्रीत्यर्थंगर्भाधानाख्यंकर्माहंकरिष्ये ॥ अथास्यैदक्षिणार्द्धसमाभिहृदयमालभते ॥ ॐ यत्तेसुशीमे
इतिमंत्रस्यप्रजापतिऋषिः । जगतीछंदः । हृदयंदेवता । हृदयालंभनेविनियोगः ॥ ॐ यत्ते-
सुशीमेहृदयंदिविचंद्रमासिश्रितं ॥ वेदाहंतन्मांतद्विद्यात्पश्येमशरदःशतंजीवेमशरदःशतꣳ शृणुया
मशरदःशतम् । अनेनमंत्रेणहृदयालंभः ॥ इतिगर्भाधानसंस्कारः ॥

स्त्रियायाः ॥ निंद्यर्क्षतिथिवारेषुयदिपुष्पंप्रदृश्यते ॥ तत्रशांतिंप्रकुर्वीतघृतदूर्वातिलाक्षतैः ॥ १ ॥ प्रत्येकमष्ट-
त्रिशतंसावित्र्याजुहुयात्ततः ॥ स्वर्णगोभूतिलांदद्यात्सर्वदोषापनुत्तये ॥ २ ॥ भर्त्तातत्रापिगमनंवर्जयेद्दुर्दर्शनात् ॥
नारदोक्तांशांतिकृत्वाऽन्यस्मिन्नृतौगम्येदनिमातृपूजनपूर्वकंनांदीश्राद्धंकृत्वास्निग्धमधुराहारो लंकृतोलंकृतांपुष्पमाला-
नुलेपनवांस्तथाविधांकामयमानांदक्षिणना सावहेदायौरात्रितृतीययामेन्यस्मिन्वाधर्माविरुद्धेचुंबनदशनघातादिभिश्च
तुरतुर्भुज्ञाक्षयेसकृत् पृष्ठावलंबितयज्ञोपवीतोगच्छेत् ॥ गमनादूर्ध्वंभार्याद्दक्षिणस्कंधावुपरिभार्यायांःपतिर्हस्तंनीत्वाद-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

दयंस्पृशेत् मंत्रेण ॥ प्रत्यृतुगमनेनश्राद्धानिहृदयालंभस्तुआगर्भधारणात् ॥ ऋतावृतौकामिनीकामीगच्छेत् ॥ एवंगच्छतःसायदिगर्भनधत्तेतदौषधंपतिःकुर्यात् ॥ उपोष्यपुष्यनक्षत्रेश्वेतपुष्प्या बृहत्यामूलमुत्थाप्य ॥ चतुर्थेऽहनिस्नातायांरात्रौतन्मूलंउदकेनपेशयित्वातस्यादक्षिणनासापुटेआसिंचति ॥ ॐ इयमोषधीतिप्रजापतिर्ऋषिः । बृहतीछंदः । ओषधीर्देवता ॥ आसेकेविनियोगः ॥ इयमोषधीत्रायमाणासहमानासरस्वती ॥ अस्याअहंबृहत्याःपुत्रःपितुरिवनामजग्रभम् ॥ इतिप्रथमर्तौविधिः ॥ सीमंतोन्नयनसहक्रियतेतदाहृदयालंभएव ॥

अथपुंसवनविधिः ॥ देशकालौस्मृत्वाअस्यांभार्यायांउत्पत्स्यमानस्यगर्भस्यबैजिकगार्भिकदोषपरिहारस्वरूपताज्ञानोदयप्रतिरोधपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंपुंसवनंकरिष्ये ॥ न्यग्रोधावरोहांशुंगांश्चनिशायांउदकेनापिष्ट्वापिष्यमाणेषुकुशकंटकान्सोमांशूनपिक्षिप्त्वावस्त्रेण पात्रयित्वा दक्षिणनासिकासेकायनिधापयेत् ॥ तन्मंत्रौ ॥ हिरण्यगर्भोऽद्भ्यःसंभृतइत्येतयोर्मंत्रयोःक्रमादुत्तरनारायणावृषीत्रिष्टुभौछंदसीप्रजापतिपुरुषौ देवतेआसेकेविनियोगः ॥ ॐ हिरण्यगर्भः० विधेम॥ ॐ अद्भ्यःसंभृतः० नमग्रे ॥२॥ इत्येताभ्यांमंत्राभ्यांआसिंचति ॥ कूर्मपित्तंचोपस्थेकृत्वासयदिकामयेतवीर्यवांस्यादितिविकृत्यैनमभिमंत्रयतेसुपर्णोसीतिप्राग्विष्णुक्रमेभ्यः ॥ अंकेउदकपूर्ण-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

शरावंनिधायविकृतिछंदसा ऋचागर्भिण्याउदरंअनामिकयास्पृशन् विलोकयित्वामंत्रपठतीत्यर्थः ॥ ॐ सुपर्णोसीतिमंत्रस्यप्रजापतिर्ऋषिः विकृतिछंदःगरुत्मांदेवताअभिमंत्रणेविनियोगः ॥ ॐ सुपर्णोसिगरुत्मांस्त्रिवृत्तेशिरोगायत्रं चक्षुर्बृहद्रथंतरेपक्षौ ॥ स्तोमआत्माछंन्दांसियज्ञानियजूंषिनाम ॥ सामतेतनूर्वामदेव्यंयज्ञायज्ञियम्पुछन्धिष्ण्याःशफाः ॥ सुपर्णोसिगरुत्मान्दिवङ्गच्छस्वः पतइत्यभिमंत्रयेत् ॥ इतिपुंसवनसंस्कारः ॥ मातृसमीपेगर्भाधानंचपुंसवनसंस्कारंकृत्वा ॥ पश्चात्सभार्योबहिःशालायांस्थंडिलेपंचभूः संस्कारान्कुर्यात् ॥ तद्यथात्रिभिर्दर्भैःपश्चिमतआरभ्यप्रागंतंउदक्संस्थंत्रिःपरिसमूहेत् ॥ तत्रतथैवगोमयेनोपलिंपेत् ॥ पश्चाद्यज्ञियकाष्ठेनत्रिरुल्लिखेत् ॥ ततोंगुष्ठानामिकाभ्यांअंगुष्ठेना नामिकापर्यंतंपांसून्गृहीत्वाप्रांचमुद्धरेत् ॥ एवमुत्तरेखयोः ॥ एवंप्रतिरेखामभ्युक्ष्य तत्रलौकिकाग्निस्ताम्रपात्रेणमृत्पात्रेणवानीयस्थंडिलेस्थापनं ॥ अग्नेश्चसंधुक्षणं ॥ अग्नेःपश्चाद्दंपतीउपविशतः ॥ पत्नीदक्षिणतः उत्तरतोयजमानउपविशेत् ॥ अत्रपदार्थक्रमः ॥ संकल्पश्चविकल्पश्चऋष्याद्यमरसंस्मृतिः ॥ ब्राह्म्यावृत्तिःप्रणयनंस्तरणंपात्रसादनम्

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥१॥ अग्नेःपूर्वेणब्रह्मणोगमनं ॥ अग्नेःपश्चात्पात्रासादनं । द्वेपवित्रे । ताम्रमयीआज्यस्थाली-चरुस्थालीच । पालाश्यः समिधः । प्रांचावाघारौसमिद्धतमेआज्यभागौ । पूर्णपात्रं ॥ प्रति-महाव्याहृतीभिर्निनयनं ॥ नियुक्तगाथागायनं ॥ एतान्विकल्पकान्यदार्थान्नहंकारयेत् ॥ अ-थार्ष्यादिस्मरणम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वरितिमहाव्याहृतीनांप्रजापतिर्ऋषिः । क्रमेणगायत्र्युष्णिगनु-ष्टुप्छंदांसि । अग्निवायुसूर्यादेवताःत्वंनोअग्नेसत्वंनोअग्नेअयाश्चाग्नेयतेशतमितिमंत्राणांवामदे-वऋषिःत्रिष्टुप्छंदः अग्निवरुणौदेवतेप्रथमयोःतृतीयस्याअग्निर्देवता । चतुर्थस्यवरुणःसविताविष्णु-र्विश्वेदेवामरुतःस्वर्कादेवताः । उदुत्तमामितिशुनःशेपऋषिस्त्रिष्टुप्छंदः वरुणोदेवतासर्वेषामेषा-मंत्राणांगृहहोमेविनियोगः ॥ भूर्भुवःस्वरितिमहाव्याहृतीनांप्रजापतिर्ऋषिःक्रमेणगायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-छंदांसि । अग्निवायुसूर्यादेवताःविनयनेविनियोगः ॥ अयमूर्जावतेतिमंत्रस्यप्रजापतिर्ऋषिःबृह-तीछंदःफालिनीदेवताकर्णीबंधनेविनियोगः ॥ सामएकपस्यप्रजापतिर्ऋषिःगायत्रीछंदःसोमोदेव-तागायनेविनियोगः ॥ ततोदेवतास्मरणं ॥ तत्रप्रजापतिं । इंद्रं । अग्निं । सोमं । एताआ-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ज्येनं । प्रजापतिंचरुणाशेषाग्निंर्वीस्विष्टकृतं । अग्निं । वायुं । सूर्यं । अग्निवरुणौ । अग्निवरुणौ । अग्निंवरुणंसवितारंविष्णुंविश्वान्देवान्मरुतः स्वर्कान्वरुणंप्रजापतिएतापुनराज्येनएतादेवता अंगप्रधानार्थाआस्मिन्कर्मण्यहंयक्ष्ये ॥ अग्नेर्दक्षिणतोब्रह्मासनमास्तीर्य । अग्नेरुत्तरतउपविष्टंब्रह्माणंवृणुयात् । अमुकशर्मन् अस्मिन्कर्मणित्वंब्रह्माभव ॥ भवामीतिउक्त्वाब्रह्मासनेऽभिमुखउपविशेत् ॥ प्रणीतासव्येगृहीत्वादक्षिणहस्तस्थपात्रेणाभ्यात्ममपः क्षिप्त्वादक्षिणयानामिकयालभ्याग्नेरुत्तरतोनातिदूरेनिदध्यात्तस्यनामसंचरः ॥ छिन्नाग्रैर्दर्भैरीशान्यादिपूर्वाग्रैःपरिस्तरणं ॥ अथपात्रासादनमग्नेःपश्चात्तदाप्राग्बिलातोदगग्रण्यासादयेत् ॥ पवित्रछेदनादर्भास्त्रयः । पवित्रेद्वे । प्रोक्षणीपात्रं । आज्यस्थाली । चरुस्थाली । सन्मार्गकुशाः । उपयमनकुशः ॥ समिद्धास्तिस्रः । स्रुवः । आज्यं । तंडुलाःअसकृत्प्रक्षालितास्तिलमुद्गाः ॥ पूर्णपात्रंश्च ॥ अथोपकल्पनीयानि । मृदुपीठं । औदुंबरफलयुग्मयुक्तौदुंबरीसामित् । त्रीणिदर्भपिंजुलानि । त्रेणीशलली । वीरतरस्त्रिविधःबिल्वोश्वत्थशरेषीकेतिएतेषामेकः ॥ पूर्णचात्रं । वीणागाथिनौचेति ॥ पवित्रछेद-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

नैः पवित्रीकरणं ॥ तद्यथाद्वयोरुपरित्रीन्निधायाद्विमूलेनद्वौकुशौप्रदक्षिणीकृत्पसव्यान्युगपद्धृत्वांगु-
ष्ठांगुलिपर्वभ्यांछित्वातानुत्तरतःक्षिपेत् ॥ त्रित्याज्यद्विर्ग्राह्य । प्रणीतानांउत्तरतःप्रोक्षणीपात्रंनि-
धायपात्रांतरेणप्रणीतोदकंक्षिप्त्वातत्पवित्राभ्या उत्पूयपवित्रेतत्रनिधायदक्षिणहस्तेनप्रोक्षणीपात्रं
गृहीत्वासव्येनिदध्याद्दक्षिणहस्तमध्यमानामिकाभ्यांतासामुद्यंगनं । ताभिस्तासामेवप्रोक्षणं ॥
आज्यस्थाल्याःप्रोक्षणं । चरुस्थाल्याः प्रोक्षणं । संन्मार्गकुशनांप्रो० उपयमनकुशानांप्रो०समि-
धांप्रो० । स्रुवस्पप्रो० । आज्यस्यप्रो० । तंडुलानांप्रो० । तिलमुद्गानांप्रो० । पूर्णपात्रस्यप्रो०।
असंचरेप्रोक्षणीर्निधानं । आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः । चरुस्थाल्यांप्रणीतोदकमासिच्यतिल-
मुद्गमिश्रस्तंडुलप्रक्षेपः॥ आज्याधिश्रयणंदक्षिणतोब्रह्माकरोति । चरोरधिश्रयणंमध्येतयोर्युगपत्
॥ उभयोःपर्यग्निकरणंईशानात् श्रपणंचरोरेव ॥ अर्धश्रितेचरौस्रुवस्यप्रतपनंन्युज्बपुष्करस्य ॥
समार्गकुशैःसंमार्जनंउत्तानपुष्करस्य। बुध्नादारभ्याग्रैरग्रादारभ्याधस्तान्मूलैःप्रणीतोदकेनाभ्युक्षणं
। पुष्करादारभ्यपुनःप्रतपनंदेशेनिधानं ॥ आज्योद्वासनंचरुंपूर्वेणाग्नेरुत्तरतःपश्चादग्नरवस्थाप्य ।

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

चरोरुद्वासनमग्नेरुत्तरतएवाज्यंप्रदक्षिणीकृत्याज्यस्योत्तरतश्चरुंस्थापयेत् ॥ पवित्राभ्यामाज्यमुत्पूयावेक्ष्यापद्रव्यंनिरस्यप्रोक्षणीश्चोत्पूयपवित्रेतत्रकृत्वा ॥ दक्षिणहस्तेनातिष्ठसमिधोभ्याधाय ॥ प्रोक्षण्युदकेनसपवित्रहस्तेनईशानकोणादारभ्यअग्निंपर्युक्ष्यपरावृत्य ॥ पवित्रेप्रणीतासुनिधाय । दक्षिणजानुनिपात्यउपयमनसहितंसव्यहस्तंप्रसारितांगुलिंहृदिनिधायब्रह्मणाकुशैरन्वारब्धःस्रुवेणजुहुयात् । एषएवविधिर्यत्रक्वचिद्धोमः ॥ अग्नेरुत्तरभागपूर्वाघारमृजुंप्रांचंसंततंदीर्घं । दक्षिणभाग उत्तरसदृशमेव । मनसाप्रजापतयेस्वाहाइदंप्रजापतयेनममेतिसंस्रवंप्रोक्षणीपात्रेक्षिपेत् ॥ सर्वाहुतीनांप्रणवपूर्वकोमंत्रःसर्वत्र ॥ ॐ इंद्रायस्वाहाइदमिंद्रायनमम ॥ समिद्धतमे ॐ अग्नयेस्वाहाइदमग्नये ॥ ॐ सोमायस्वाहा ॥ इदंसोमाय ॥ ततःस्रुवेणचरुमभिधार्यान्वारंभवर्जितः ॐ प्रजापतयेस्वाहा ॥ इदंप्रजापतयेइयमेकाहुतिःप्रधाना ॥ अन्यसर्वंपुनरन्वारंभःचरोरुत्तरार्द्धाद्गृहीत्वाअग्नेरुत्तरार्द्धेअसंसर्गेणेतराहुतीनांजुहुयात् ॥ ॐ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा । इदमग्नयेस्विष्टकृतेनमम ॥ पुनराज्येनहोमः । ॐ भूःस्वाहा ॥ इदमग्नये । भुवःस्वाहा । इदंवायवे ॥ ॐ स्वःस्वाहा । इदं

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

सूर्याय ॥ त्वन्नोअग्ने० इदमग्निवरुणाभ्यांनमम ॥ सत्वन्न० इदमग्निवरुणाभ्यं ॥ अयाश्चाग्नेस्यन-
भिशस्तिपाश्चसत्वमित्वमयाअसि ॥ अयानोयज्ञंवहास्ययानोधेहिभेषजंस्वाहा ॥ इदमग्नये ॥
येतेशतंवरुणयेसहस्रंयज्ञियाःपाशावितत्तामहांतः तेभिर्न्नोअद्यसवितोताविष्णुर्विश्वेमुंचंतुमरुतःस्व-
र्काःस्वाहा ॥ इदंवरुणायसवित्रेविष्णवेविश्वेभ्योदेवेभ्योमरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च ॥ उदुत्तमं० इदंवरुणा
यादितये ॥ प्रजापतयेस्वाहा । इदंप्रजापतयेनमम ॥ प्रजापतींद्रौ । एतावाघारौ ॥ अग्निसो
मौआज्यभागौ ॥ भूर्भुवःस्वःएतामहाव्याहृतयः त्वन्नःसत्वन्नःअयाश्चाग्नेयेसेशतं० उदुत्तमं । इदं
सर्वप्रायश्चित्तं ॥ प्रजापतिस्विष्टकृत्प्रसिद्धः ॥ एताश्चतुर्दशाहुतयःसर्वहोमेषु ॥ नित्यान्वारब्धश्च ॥
दंतैरनुपस्पृशन्संस्रवप्राशनं ॥ पवित्राभ्यांनाभेरारभ्यदक्षिणकर्णंवामांसंस्पृष्ट्वापुनर्नामिंनीत्वाग्नौ-
प्रक्षिपेत् ॥ पश्चाद्वरंगृहीत्वाप्रणीतोदकंब्रह्महस्तेब्रह्मन्सीमंतोन्नयनकर्मणोंगतयाविहितंपूर्णपात्रंप्र-
तिगृह्यतां ॥ ब्रह्माद्यौस्त्वेतिपठेत् ॥ प्रणीताविमोकउदङ् ॥ पश्चादग्नेर्मृदुपीठंनिधायतत्रभार्यासु-
पवेश्यउपकल्पितउदुंबरयुग्मवतींसामिधंत्रीणिदर्भपुंजलानित्रेणीशलल्लीवीरतरशंकुः पूर्णचात्रंए-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

तान्येकीकृत्यपुलींकृत्वातयापश्चात्सीमंतमूर्ध्निविनयेत् ॥ ॐ भूर्विनयामि । ॐ भुवर्विनयामि । ॐ स्वर्विनयामिमंत्रत्रमेण ॥ अयमूर्जेतिमंत्रेणपुल्यावेणीबंधनं ॥ ॐ अयमूर्ज्जावतोवृक्षऊर्ज्जीवफलिनीभवताभ्इति ॥ वीणागाथिनौप्रेषयति ॥ योवाप्यन्योवीरतरइति ॥ अत्ररामं । कृष्णंनलंयुधिष्ठिरंवागायेतामितिप्रैषः ॥ तौगाथागायतः ॥ ॐ सोमएवनोराजेमामानुषीःप्रजाः ॥ अविमुक्तचक्रआसीरंस्तीरेतुभ्यमसौ ॥ असौस्थानेगंगायमुनासरस्वतीइतिनिर्देशः ॥ यत्तीरेवसतितस्यानामग्रहणं ॥ अनुच्छिष्टपाकेनसीमंतोन्नयनांगतयाविहितंत्रिप्रभृतीन्ब्राह्मणान्भोजयिष्येसीमंतोन्नयनंस्वकालेनकृतंचेत्तदा आप्रसवात्कुर्यात् ॥ तत्रापिनचेत्तदाअंकेगृहीत्वापुत्रायकुर्यात्नोचेत्तदाअन्यगर्भेषष्ठाष्टमेमासिइतिसत्यव्रतवचनात् ॥ अथगर्भिणीधर्माः ॥ पद्मपुराणेकश्यपोदितिमाह ॥ नावस्करेषूपविशेत्मुसलोलूखलादिषु ॥ जलंचनावगाहेतशून्यागारंविवर्जयेत् ॥१॥ वल्मीकंनावतिष्ठेतनचोद्विग्नमनाभवेत् ॥ विलिखेन्ननखैर्भूमिंनचांगारेणभस्मना ॥२॥ नशयालुःसदातिष्ठेत्व्यायामंचविवर्जयेत् ॥ नतुषांगारभस्मास्थिकपालेषुसमाविशेत् ॥३॥ वर्जये-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

त्कलहंलोकेगात्रभंगंतथैवच ॥ नमुक्तकेशीतिष्ठेतनाशुचिस्यात्कदाचन ॥४॥ नाशयीतोत्तरशिरानचैवाधःशिराक्कचित् ॥ नवस्त्रहीनानोद्विग्नानचार्द्रचरणासती ॥५॥ नामंगल्यंवदेद्वाक्यंनचहास्याधिकाभवेत् ॥ कुर्याच्छ्वशुरयोर्नित्यंपूजामांगल्यतत्परा ॥६॥ तिष्ठेत्प्रसन्नवदनाभर्तुःप्रियहितेरतेति ॥ अथगर्भिणीपतिधर्माः ॥ दहनंवपनंचैवचौलंवैगिरिरोहणम् ॥ नावआरोहणंचैववर्जयेद्गर्भिणीपतिः ॥ श्राद्धंचसस्मादूर्ध्वंतद्भोजनमितिकेचित् ॥ इतिसंस्कारसुबोधिनीयेगर्भाधानपुंसवनसीमंतोन्नयनंसंस्काराः ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

तंत्रवचनं ॥ सांवत्सरीकस्यचूडाकरणं ॥ तृतीयेवांप्रतिहते । तच्चपूर्णेद्वे ॥ तृतीयेवाअसंपूर्णेब्देकुर्यादित्यर्थः॥ षोडशवर्षस्यकेशांतः । सप्तदशेवर्षेकेशांतमित्यर्थः ॥ अयंचानियतकालएव ॥ यथामंगलंत्रासर्वेषां । अथवायथाकुलाचारंयस्यकुलेसांवसरिकस्यकुमारस्यचूडाकरणंकुर्यंति । तस्यसांवसरिकस्यैव । यस्यकुलेतृतीयब्देकुर्वंतितस्यतृतीयेअसंपूर्णेकार्यं ॥ प्रयोगपारिजातेतु ॥ आद्यब्देकुर्वंतकेचित्पंचमेब्देद्वितीयके ॥ उपनीत्यासहैवेतिविकल्पाःकुलधर्मतः ॥ गर्भाधानादिकर्मातिक्रांतानिस्वस्वकालेनकृतानिचेत्तदा अनादिष्टपूर्वकंचौलात्प्राक्कार्यं ॥ तत्रशौनकः ॥ आरभ्याधानमाचौलात्कालेतीतेतुकर्मणां ॥ व्याहृत्याज्यंतुसंस्कृत्यहुत्वाकर्मयथाक्रमम् ॥१॥ एतेष्वेकैकलोपेतुपादकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ चूडायाअर्द्धकृच्छ्रःस्यादापदीत्येवमीरितं ॥ अनापदितुसर्वत्रद्विगुणंद्विगुणंचरेत् ॥ कात्यायनः । लुप्तेकर्मणिसर्वत्रप्रायश्चित्तंविधीयते ॥ प्रायश्चित्तेकृतेपश्चात्लुप्तंकर्मसमाचरेत् ॥ तत्रसर्वेषांतंत्रेणनांदीश्राद्धंकुर्यात् ॥ मातरिरजस्वलायांविशेषः ॥ विवाहोत्सवयज्ञेषुमातायदिरजस्वला ॥ तदासमृत्युमाप्नोतिपंचमांदिवसांविना ॥ मदनरत्ने । पुत्रचूडाकृतौमातायदिस्यागर्भिणीभवेत् ॥ शस्त्रेणमृत्युमाप्नोतितस्मात्क्षौरंविवर्जयेत् ॥१॥ एतदपवादोत्रैव ॥ सूनोर्मातरिगर्भिण्यांचूडाकर्मनकारयेत् ॥ पंचाब्दात्प्रागथार्ध्वंतुगर्भिण्यामपिकारयेत् ॥ १ ॥ सहोपनीत्याकुर्याच्चेत्तदादोषोनविद्यते ॥ उदगयनेशुक्लपक्षेगुरुशुक्रयोर्बाल्यवार्द्धकास्तमयाभावेअक्षयेअनधिकमासेशास्त्रोक्तप्रशस्ततिथिवारनक्षत्रलग्नेषुशुभेमुहूर्तेदिनेएवकार्यं ॥ इतिगुरुचरणैःशोधितं ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ अथअतिक्रांतानांजातकर्मादिचूडांतानांतंत्रेणानुष्ठानप्रयोगः ॥

अथप्रयोगः ॥ आचम्यप्राणानायम्य ॥ उपनयनात्पूर्वदिवसेजातकर्मादिकार्यं ॥ तत्रबहिः शालाभवति ॥ तस्मिन्नहनिमाताकुमारमादायाल्याव्याहतवाससीपरिधाय्यपत्पुःसमीपेसंकल्पसमयेतिष्ठेत्तत्रसंकल्पः ॥ अस्मिन्पुण्याहेअस्यकुमारस्यजातकर्मादिचूडांतकर्मांगतयाविहितमविघ्नपूजनमंडपस्थापनमातृपूजनवसोर्द्धाराआयुष्यमंत्रजपपूर्वकं नांदीश्राद्धंचाहंकरिष्ये इतिसंकल्प्य मातृपूजनपूर्वकं नांदीश्राद्धादिकंसमाप्यग्रहशांतिशिष्टाचारात्कुर्यान्नवा ॥ पुनर्देशकालौ स्मृत्वाअस्यकुमारस्यजातकर्मनामकरणनिष्क्रमणान्नप्राशनकर्मणांमुख्यकालातिक्रमजानितप्रत्यवायपरिहारार्थंप्रत्येकंपादकृच्छ्रंप्रायश्चित्ततथाचचूडाकरणकर्ममुख्यकालातिक्रमजनितप्रत्यवायपरिहारार्थमर्द्धकृच्छ्रंप्रायश्चित्तं प्रतिकर्मगोनिष्क्रयप्रत्याम्नायद्वाराहमाचरिष्ये ॥ तेनजातकर्मनामकरणनिष्क्रमणान्नप्राशनचूडाकरणकर्मणांकालातिक्रमजनितप्रत्यवायपरिहारोस्तुइति ॥ ततः सर्वेषांकर्मणांतंत्रेणनांदीश्राद्धादिकं । जातकर्मादिपंचकर्माणितंत्रेणकुर्यात् ॥ ततःपिताबहिःस्थंडि

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

लात्पश्चिमतोयज्ञियदार्वासनेप्रागग्रेवाउदगग्रेकुशोत्तरेप्राङ्मुखोपविश्य ॥ आचम्यप्रा० ॥ देश-
कालौसंकीर्त्य ॥ मम अस्यकुमारस्यगर्भांबुपानजनितसकलदोषनिबर्हणायुर्मेधाभिवृद्धिबीजग
र्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अतिक्रांतंजातकर्म तथाचममास्यकुमारस्यबीजगर्भ
समुद्भवैनोबर्हणायुरभिवृद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमतिक्रांतंनामकरणंतथाचममास्यआयुः श्रीवृ-
द्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वाराश्रीपरमेश्वर० मतिक्रांतंनिष्क्रमणाख्यं कर्मतथाचममकुमार-
स्यमातृगर्भमलप्राशनशुद्ध्यन्नाद्यब्रह्मवर्चसइंद्रियायुर्लक्षणफलासिद्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वा
राश्रीपरमे० मतिक्रांतमन्नप्राशनाख्यंकर्म तथाचममकुमारस्यबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणबला
युर्वर्चोभिवृद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अतिक्रांतंचूडाकरणकर्मचतंत्रेणाहंकरिष्ये ॥ इतिसंक-
ल्प्य । अथवैकल्पिकानि । कालांतरेजातकर्मादि । जातकर्मणिआयुष्यकरणवा सप्राभिमर्श-
नानुप्राणदेशाभिमंत्रणकुमाराभिमर्शनानिकुर्यात् ॥ अन्यल्लोपः ॥ नामकर्मणिदेवशर्मायंकुमा
रइतिनिर्देशमात्रं ॥ अन्नप्राशनेहोममात्रमेव ॥ तत्रपूर्वेणब्रह्मणोगमनं ॥ पश्चिमतःपात्रासादनं।

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

द्वेपवित्रे । ताम्रमयीआज्यस्थालीचरुस्थालीच ॥ पालाश्यःसमिधः । प्रांचावाघारौ । समिद्धतमेआज्यभागौ ॥ पूर्णपात्रद्वयं ॥ हुतेतिप्राशनं । घृतपिंडं । संकेशगोमय पिंडस्योदकांतेनिधानं । एतान्वैकल्पिकपदार्थानहंकरिष्ये ॥ अथऋष्यादिस्मरणं ॥ ॐ प्रणवस्यब्रह्माऋषिः दैवीगायत्रीछंदः । परमात्मादेवता ॥ आघारादिसर्वदेवतानांप्रजापतिरृषिः छंदोहीनाः । लिंगोक्तादेवताः । देवींवाचमितिभार्गवऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः । देवीवाग्देवता । वाजस्येतिदेवाऋषयः त्रिष्टुप्छंदः । अन्नंदेवता । स्विष्टकृन्मंत्रस्यप्रजापतिरृषिः । यजुः । स्विष्टकृद्देवता । भूर्भुवःस्वरितिमहाव्याहृतीनांप्रजापतिऋषिः । क्रमेणगायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छंदांसि । अग्निवायुसूर्यादेवताः । त्वन्नोअग्नेसत्वन्नोअग्नेअयाश्चाग्नेयतेशतमितिमंत्राणांवामदेवऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः । अग्नीवरुणौदेवतेप्रथमयोस्तृतीयस्याग्निर्देवताचतुर्थस्यवरुणःसविताविष्णुर्विश्वेदेवामरुतस्वर्कादेवताः । उदुत्तममितिशुनःशेपऋषिःत्रिष्टुप्छंदः । वरुणोदेवता । सर्वेषामन्नप्राशनचूडाकरणांगप्रायश्चित्तहोमेविनियोगः ॥ उष्णेनवायुरितिमंत्रस्यपरमेष्ठीप्रजापतिरृ-

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥४९॥

षिः । प्रतिष्ठाछंदः । अदितिर्देवतानिरसेकेविनियोगः ॥ सवित्रेतिमंत्रस्यप्रजापतिरृषिः । गा
यत्रीछंदः । आपोदेवता । उंदनेविनियोगः ॥ सवित्रेतिमंत्रस्यप्रजापतिरृषिः । यजुः । तरु-
णस्वधितिर्देवते । अंतर्धानेविनि० । शिवोनामेतिमंत्रस्यप्रजापति० यजुः । क्षुरोदेवता । क्षुर
ग्रहणेविनि० । निवर्तयामीतिप्रजापति० यजुः । लिंगोक्तादेवता । क्षुरगोदानसंलग्नीकरणेवि-
नि० । येनावपत्सवितेतिआलंबायनऋषिः । पंक्तिछंदः । सवितादेवता ॥ सकेशतरुणछेदने-
विनि० । त्र्यायुषमितिमंत्रस्यनारायणऋषिः । उष्णिक्छंःआशीर्देवता । छेदनेवि० । येनभूरि
श्चरेतिवामदेवऋषिः । यजुः । क्षुरोदेवता । छेदनेवि० । यत्क्षुरेणेतिमंत्रस्यवामदेवऋषिः यजुः।
क्षुरोदेवता । शिरःप्रदक्षिणकरणेवि० । अक्षण्वन्नितिमंत्रस्यवामदेवऋषिः । यजुः । क्षुरोदेवता
। क्षुरदानेविनियोगः ॥ अथमरसंस्थितिः ॥ तत्रप्रजापतिं । इंद्रं । अग्निं । सोमं । देवींवा-
चं । पुनर्देवींवाचंवाजंच । एताआज्येन ॥ प्राणं । अपानं । चक्षुः । श्रोत्रं । एताश्चरुणा ॥
शेषेणाग्निर्दस्विष्टकृतं । अग्निं ॥ वायुं । सूर्यं । अग्निवरुणौ२। अग्निं । वरुणं । सवितारं । वि-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ष्णुर्विश्वान्देवान्मरुतःस्वर्कान् । वरुणं । प्रजापतिं । एतादेवताआज्यनंअगप्रधानोर्थेअस्मिन् कर्मण्यहंयक्ष्ये ॥ स्थंडिलेपंचभूःसंस्कारपूर्वकंलौकिकाग्निमुपसमाधाय ॥ दक्षिणतोब्रह्मासनादि- पूर्णपात्रद्वयांतंकृत्वा ॥ उपकल्पनीयेविशेषः ॥ शीतोदकार्थंभांडं । उष्णोदकार्थंभांडं । शीतो- दकं । उष्णोदकं । घृतपिंडं । त्रेणीशलली । सप्तविंशतिदर्भतरुणानि । आयसक्षुरः । गोम यपिंडः । नापितः । वरः । एतान्युपकल्प्य ॥ पवित्रकरणादिपर्युक्षणांतंकुर्यात् ॥ अथानादि ष्टंकथ्यते ॥ देशकालौसंकीर्त्यममकुमारस्यजातकर्मनामकरणनिष्क्रमणान्नप्राशनचूडाकरणक- र्मातानांसंस्काराणांमुख्यकालातिक्रमणदोषपरिहारार्थं अनादिष्टप्रायश्चित्तंहोष्ये ॥ प्रतिनिमित्त माज्यंस्रुवेणपात्रेगृहीत्वा

अन्यस्थंडिलेपंचभूःसंस्कारपूर्वकमग्निंस्थापयेत् निरूपाज्यमग्नौ अधिश्रित्यस्रुक्स्रुवं दसंमृज्यप्रतप्य उद्वास्य उत्पू- यावेक्ष्यापद्रव्यनिरस्यसंख्यापूर्वकंस्रुवेणस्रुचिमध्ये आदायसमित्पूर्वकोहोमः ॥

दक्षिणंजान्वाच्यब्रह्मान्वारब्धेनहोमः ॥ ॐ भूःस्वाहा । इदमग्नयेनमम ॥ ॐ भुवःस्वाहा।

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

इदंवायवे । ॐ स्वःस्वाहा । इदंसूर्याय । ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहा ॥ इदंप्रजापतये ॥ ॐ त्वन्नो-
अग्नेव्वरुणाव्विद्वा० ॥ प्रमुमुग्धास्मत्स्वाहा । इदमग्निवरुणाभ्यानमम ॥ ॐ सत्वन्नोअग्नेव-
मोभवोतीनेदिष्टोअस्याउषसोव्युष्टौ ॥ अवयक्ष्वनोव्वरुणर्ठरराणोव्वीहिमृडीकर्ठसुहवोनएधिस्वा-
हा । इदमग्निवरुणाभ्यां० ॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्चसत्यमित्वमयाअसि ॥ अयानो
यज्ञंवहास्ययानोधेहिभेषजर्ठस्वाहा । इदमग्निभेषजाभ्यां ॥ ॐ येतेशतंवरुणयेसहस्रंयज्ञियाःपाशा
विततामहांतः । तेभिर्न्नोअद्यसवितोतविष्णुर्विश्वेमुंचंतुमरुतःस्वर्क्काःस्वाहा ॥ इदंवरुणायसवित्रे
विष्नवेविश्वेभ्योदेवेभ्योमरुद्भ्यःस्वर्केभ्यः । ॐ उदुत्तमंव्वरुणपाशमस्मदवाधमंविमध्यमर्ठश्रथाय ॥
अथाव्वयमादित्यव्रतेतवानागसोअदितयेस्यामस्वाहा ॥ इदंवरुणायादितयादितये ॥ एतदेवा
नादिष्टप्रायश्चित्तम् ॥ अथायुष्यकरणं कुमारस्यनाभ्यांदक्षिणेकर्णेवाजपेत् ॥ ॐ अग्निरायुष्मां
त्सवनस्यतीभिरायुष्मांस्तेनत्वायुषायुष्मंतंकरोमि ॥ ॐ सोमआयुष्मांत्सओषधीभिरायुष्माँस्तेन-
त्वायुषायुष्मंतंकरोमि ॥ ॐ ब्रह्मायुष्मत्तद्ब्राह्मणैरायुष्मत्तेनत्वायुषायुष्मंतंकरोमि ॥ ॐ देवा-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

आयुष्मंतस्तेमृतेनायुष्मंतस्तेनत्वायुषायुष्मंतं० ॥ ॐ ऋषयआयुष्मंतस्तेव्रतैरायुष्मंतस्तेनत्वा० ॥ ॐ पितरआयुष्मंतस्तेस्वधाभिरायुष्मंतस्तेनत्वायु० ॥ ॐ यज्ञआयुष्मांत्सदक्षिणाभिरायुष्मांस्तेन त्वा० । ॐ समुद्रआयुष्मांत्सस्रवंतीभिरायुष्मांस्तेनत्वा० ॥ त्रिवारंपठेत् ॥ त्र्यायुषंयमदग्नेरिति मंत्रंत्रिर्जपेत् ॥ ततोदिवस्परीत्यारभ्यउशिजोव्विवव्रुरित्यंतेन कुमाराभिमर्शनं ॥ तद्यथा ॥ दिवस्परीत्येकादशर्चांवात्सप्रीर्भालंदनऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । अग्निर्देवता । कुमाराभिमर्शनेवि नियोगः ॥ वात्सप्रीरेकादशकंडिकापठित्वाकुमाराभिमृशेत् ॥ ॐ दिवस्परिप्रथमंयज्ञे अग्निर- स्मद्द्वितीतंपरिजातवेदाः ॥ तृतीयमप्सुनृमणाअजस्रमिंधानएनंजरतेस्वाधीः ॥१॥ व्विद्माते अग्ने त्रेधात्रयाणिव्विद्मातेधामव्विभृतापुरुत्रा ॥ व्विद्मातेनामपरमंगुहायाद्विद्मातमुत्संयतआजगंथ २ समुद्रेत्वानृमणाअप्स्वंतर्नृचक्षाईधेदिवो अग्नऊधन् ॥ तृतीयेत्वारजसितस्थिवांसमपामुपस्थेम- हिषाअवर्द्धन् ॥३॥ अक्रंददग्निस्तनयन्निवद्यौःक्षामारेरिहद्वीरुधःसमंजन् ॥ सद्योयज्ञानोव्वि- हीमिद्धोअख्यदारोदसीभानुनाभात्यंतः ॥४॥ श्रीणामुदारोधरुणोरयीणांमनीषाणांप्रार्प्पणःसोम

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

गोपाः ॥ वसुःसूनुःसहसोअप्सुराजाविभात्यग्रउषसामिधानः ॥५॥ विश्वस्यकेतुर्भुवनस्यग-
र्भआरोदसीअपृणाज्जायमानः ॥ वीडुंचिदद्रिमभिनत्परायंजनायदग्निमयजंतपंच ॥६॥ उशि
क्पावकोअरतिःसुमेधामर्त्तेष्वग्निरमृतोनिधायि ॥ इयर्त्तिधूममरुषंभरिभ्रदुच्छुक्रेणशोचिषाद्यामिन-
क्षन् ॥७॥ दृशानोरुक्मउर्व्याव्यद्यौदुर्मर्षमायुःश्रियेरुचानः ॥ अग्निरमृतोअभवद्वयोभिर्यदेनं-
द्यौरजनयत्सुरेताः ॥८॥ यस्तेअद्यकृणवद्भद्रशोचेपूपंदेवघृतवंतमग्ने ॥ प्रतन्नयप्रतरंवस्योअच्छा-
भिसुम्नंदेवभक्तंयविष्ठ ॥९॥ आतंभजसौश्रवसेष्वग्नउक्यउक्थआभजशस्यमाने ॥ प्रियःसूर्येप्रि-
योअग्नाभवात्युज्जातेनभिनददुज्जनित्वैः ॥१०॥ त्वामग्नेयजमानाअनुद्यून्विश्वावसुदधिरेवार्या-
णि ॥ त्वयासहद्रविणमिच्छमानाव्रजंगोमंतमुशिजोविवव्रुः ॥११॥ ततःप्रतिदिशंपंचब्राह्मणान्
अवस्थाप्य । कुमारस्यप्रतिदिशंचतुरःकुमारसंन्मुखःपंचमनैर्ऋत्यकोणे ॥ पश्चात्तान् पितावैषंकु
र्यात् ॥ इममनुप्राणितेति ॥ पूर्वोब्रूयात्प्राण । व्यानेतिदक्षिणतः । अपानेतिपश्चिमतः । उ-
दानेत्युत्तरतः ॥ समानेतिनैर्ऋत्यः ॥ उपरिष्टादीक्ष्यमाणः ॥ ब्राह्मणालाभेस्वयं प्रैषवर्जितोब्रूया

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

त्क्रमेणानुपरिक्रामं ॥ अस्यानुप्राणनंनाम ॥ ततःप्रसवदेशमभिमंत्रयेत् ॥ वेदतेभूमिरित्यस्य परमेष्ठिऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । भूमिर्देवताअभिमंत्रणेविः ॐ वेदतेभूमिहृदयंदिविचंद्रमसिश्रि- तंवेदाहंतन्मांतद्विद्यात् पश्येमशरदःशतंजीवेमशरदःशतंशृणुयामशरदःशतमिति ॥ अथकुमा- राभिमर्शनम् ॥ ॐ अश्माभवपरशुर्भवहिरण्यमस्तुतंभवआत्मावैपुत्रनामासिसजीवशरदःशतं इति ॥ जातकर्म ॥ मेधाजननसूतिकाग्नेस्थापनस्तनप्रदानानामभावः । एतच्चस्वकालेभवत्ये- वनियतकालत्वात् ॥ अथनामकर्म ॥ शिष्टाचारस्तुकांस्यपात्रेतंडुलान्प्रसार्यतंडुलोपरिसुव- र्णादिशलाकयास्वकुलदेवताभक्तइत्यादिनामचतुष्टयंलेख्यं ॥ तत्रजन्मकालीनंमासनामकुर्यात् ॥ यथाचारंचैत्रादिमार्गशीर्षादिवाक्रमः । चैत्रादिमासगणनेतुवैकुंठादिक्रमः ॥ मार्गशीर्षादौतु- कृष्णादिक्रमःइतिकौस्तुभे ॥ जन्मनक्षत्रपादयुक्ताक्षरादिनामलेख्यं ॥ व्यावहारिकंस्वेष्टनामले- ख्यं । ततोमनोजूतिःप्रतिष्ठा ॥ प्रतिष्ठितनामदेवताभ्योनमःइतियथालब्धोपचारैःसंपूज्य । ततो नामचतुष्टयंक्रमेणाशिशोर्दक्षिणेकर्णेपिताकथयेत् । तच्चैवं । कुलदेवताभक्तनाम्नात्वंचिरंजीवीभू-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

यात् ॥ मासनाम्नाकृष्णशर्मायंकुमारभवतोभिवादयते॥तत्रआयुष्मान्भव त्वंअमुकशर्मन् । एवं सर्वत्रज्ञेयं ॥ कुमार्याअपिनामकरणंअमंत्रकंकार्यं ॥ अथनिष्क्रमणं ॥ ॐ तच्चक्षुरित्यस्यदध्यं-गाथर्वणौपुरउष्णिक्सवितासूर्यदर्शनेवि० ॥ ॐ तच्चक्षुर्देवहितं०शतात् ॥ पितापठित्वाकुमारा-यसूर्यंदर्शयेत् । तस्मिन्नेवमासेशुभेदिनेरात्रौचंद्रमापिदर्शयेत् ॥ इतिनिष्क्रमणं ॥ ततोरक्षांकु-र्यात् ॥ चंद्रार्कयोर्दिगीशानांदिशांचवरुणस्यच । निक्षेपार्थमहंदध्मितेत्वांरक्षंतुसर्वतः ॥१॥ अ-प्रमत्तंप्रमत्तंवादिवारात्रमथापिवा ॥ रक्षंतुसततंसर्वेदेवाइंद्रपुरोगमाः ॥ इतिविभूतिकुमारस्यसर्वां गेलापयेत् ॥ तिष्ठत्समिधोभ्याधायप्रोक्ष

अथकर्णवेधोवर्षेतृतीयेपंचमेवापुष्येंदुचित्राहरिरेवतीषुपूर्वाह्णेकुमारस्यमधुरंदत्वाप्रत्यङ्मुखायो पविष्टायदक्षिणंकर्ण-मभिमंत्रयतेभद्रंकर्णेभिरितिसव्यंवक्ष्यंतीवेदेतिचाथभिंद्यात्ततोब्राह्मणभोजनं ॥ इतिपरिशिष्टं ॥ अत्राभ्युदयादिकंनास्ति-केषांचित्मते ॥

णीशेषोदकेनसपवित्रहस्तेनईशानादिअग्नेःपर्युक्षणंपरावर्तनं ॥ पवित्रयोःप्रणीतासुनिधानं ।

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

दक्षिणजान्वाच्यब्रह्मान्वारब्धेनस्त्रुवेणहोमः ॥ अत्राघारावाज्यभागौद्विःकृत्वोजुहुयात् ॥ मनसा । ॐ प्रजापतयेस्वाहा । इदंप्रजापतयेनमम पुनर्द्विःकृत्वा ॥ ॐ इंद्रायस्वाहा । इदमिंद्रायनमम॥ पुनर्द्विः । ॐ अग्नयेस्वाहा । इदमग्नयेनमम ॥ पुनर्द्विःसोमायस्वाहा । इदंसोमायनमम ॥ ब्रह्मान्वारब्धवर्जितोप्रधानहोमः ॥ आज्येनैवाहुतिद्वयं ॥ ॐ देवींवाचमजनयंतदेवास्तांविश्वरूपाः पशवोवदंति ॥ सानोमंद्रेषमूर्ज्जंदुहानाधेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतुस्वाहा ॥ इदंदेव्यैवाचे ॥ पुनः ॐ देवींवाचमजनयंतदेवास्तांविश्वरूपाःपशवोवदंति ॥ सानोमंद्रेषमूर्ज्जंदुहानाधेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतुवाजोनो अद्यप्रसुवातिदानंवाजोदेवाँ २ ॥ ऋतुभिःकल्पयाति ॥ वाजोहिमासर्ववीरंजजानविश्वाआशाव्वाजपतिर्जयेयंन्स्वाहा ॥ इदंदेव्यैवाचेवाजायनम ॥ चरुमभिघार्यचरुणाप्रधानहोमः ॥ ॐ प्राणेनान्नमशीयस्वाहा । इदंप्राणाय ॥ ॐ अपानेनगंधानशीयस्वाहा । इदमपानाय । ॐ चक्षुषारूपाण्यशीयस्वाहाइदंचक्षुषे ॥ ॐ श्रोत्रेणयशोयशीयस्वाहा । इदंश्रोत्रायइतिचरुहोमः ॥ ततोस्विष्टकृद्धोमेतुब्रह्मान्वारब्धेनहोमः ॐ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

इदमग्नयेस्विष्टकृतेनमममभूराद्यानवाहुतयोद्भिः कृत्वोजुहुयात एताश्चतुर्दशाहुतयःसर्वहोमेषुनित्या न्वारब्धश्च ॥ ॥ द्विःकृत्वोआज्येनपात्रांतरेस्रुवेणगृहीत्वाभूराद्यानवाहुतयः ॥ ॐ भूःस्वाहाइदमग्नये ॥ ॐ भुवःस्वाहाइदंवायवे । ॐ स्वःस्वाहाइदंसूर्याय । ॐ त्वन्नोअग्ने०स्वाहाइदमग्निवरुणाभ्यांनमम । ॐ सत्वन्नो०स्वाहा । इदंमग्निवरुणाभ्यां ॥ ॐ अयाश्चाग्ने०इदमग्निभेषजाभ्यां ॥ ॐ येतेशतंव० इदंवरुणायसवित्रेविष्णवेविश्वेभ्योदेवेभ्योमरुद्भ्यःस्वर्केभ्यः ॥ ॐ उदुत्तमं० इदंवरुणायादितयादितयेनमम । ॐ प्रजापतयेस्वाहा । इदंप्रजापतये ॥ संस्रवप्राशनंदंतैरनुपस्पृशन् कुशपवित्राभ्यांमार्जनं ॥ नाभेरारभ्य दक्षिणकर्णवामौस्पृष्ट्वापुनर्नाभिंनीत्वाग्नौतत्प्रक्षिपेत् ॥ पश्चात्पूर्णपात्र द्वयंगृहीत्वाब्रह्मन्अनयोरन्नप्राशनचूडाकरणकर्मणोरंगतयाविहिताविमौपूर्णपात्रद्वयंप्रतिगृह्यताम् ॥ ब्रह्माद्यौस्त्वेतिजपेत् ॥ प्रणीताविमोकउदक् ॥ प्राशनांतेसर्वान्रसान्सर्वमन्नमेकतोधृत्याथैनंप्राशये-तूष्णींर्ढहंतोतिहंतकारंमनुष्याइतिश्रुतेः ॥ सुवर्णादिपात्रेमधुरादिसर्वान् रसान्पायसादिसर्वमन्नमन्यत्सर्वंचएकतोधृत्य (मातुरुत्संगस्थंबालकंकनकहस्तोमधुशर्कराज्य-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

युक्तमन्नंहंतेतिप्राशयेत् ॥) इत्यन्नप्राशनम् ॥ अथचूडाकरणं ॥ शीतोदकार्थभांडेशीतोदकंक्षिपेत् । उष्णोदकार्थभांडेउष्णोदकंक्षिपेत् ॥ उष्णोदकभांडंगृहीत्वा । ॐ उष्णेनवायुरुदकेनेह्यदितेकेशान्वपेतिमंत्रेणउष्णोदकंशीतोदकेक्षिपेत् ॥ तस्मिन्घृतपिंडंक्षिपेत् । तूष्णींतदुदकंगृहीत्वा ॥ कुमारस्यदक्षिणगोदानआर्द्रंकरोतिमुंदति । ॐ सवित्राप्रसूतादैव्याआपउंदंतुतेतनूंदीर्घायुत्वाय बलायवर्चसेति ॥ तूष्णींत्रेण्याशलल्याकेशान्विनीय ॥ त्रीणिकुशतरुणान्यंतर्दधात्योपधइति । ॐ उंषधेत्रायस्वेतित्रीणिकुशतरुणानिशिराग्राण्यंतर्दध्यात् ॥ शिवोनामेतिलोहक्षुरमादाय । ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेअस्तुमामाहिंसीरितिमंत्रेणक्षुरमादाय । निवर्तयामीतिप्रवपाति ॥ ॐ निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्यायेतिक्षुरं गोदानसंलग्नंकारयेत् ॥ ॐ येनवपत्सविताक्षुरेणसोमस्यराज्ञोवरुणस्यविद्वान् । तेनब्रह्मणोवपतेदमस्यायुष्यंजरदष्टिर्यथासदितिसकेशानिदर्भतरुणानिप्रछिद्यानडुहेंगोमयपिंडेप्रास्यत्युत्तरतोध्रियमाणे ॥ एवंद्विरपरंतूष्णीं । उदकमादायउंदनं । त्रेण्याशलल्याविनयनं । कुशतरुणांतर्धानं ।

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

क्षुराभिधानं । सकेशानांछेदनं । गोमयपिंडेप्रासनं ॥ एवंवारद्वयंतूष्नीं ॥ इतरयोश्चोंदनादि ॥
पश्चिमोत्तरयोगोदानयोरुंदनादिएवमेवसकृन्मंत्रेणद्विस्तूष्नींकर्मकुर्यात् ॥ तत्रक्रमः ॥ ततआदा
यपाश्चिमंगोदानमुंदातिसवित्राप्रसूतादेव्या० मे । त्रीण्याशलल्याविनीय । त्रिणीकुशतरुणां-
न्यतर्दधात्योषधइति ॥ ॐ उंषधेत्रायस्वेति । तूष्नींक्षुरादानं । निवर्तयामीतिप्रवपतीतिगोदा-
नसंलग्नंक्षुरंकरोति ॥ अथपश्चात्त्र्यायुषंजमदग्नेःकश्यपस्यत्र्यायुषम् ॥ यद्देवेयुत्र्यायुषंतन्नोअ-
स्तुत्र्यायुषम् ॥ सकेशानिदर्भतरुणानिप्रछिद्यानडुहेगोमयपिंडे प्रास्यच्युतरतोध्रियमाणे । एवं-
द्विरपरंतूष्नीं ॥ उंदनं । विनयनं । कुशतरुणांतर्धानं । क्षुराभिधानं । सकेशानांछेदनं । गो-
मयपिंडेप्रासनं ॥ अथोत्तरतोपिउंदनादिपूर्वोक्तमंत्रवत् । छेदनेमंत्रः ॥ ॐ येनभूरिश्चरादिवं-
ज्योकपश्चाधिसूर्यं । तेनतेवपामिब्रह्मणाजीवातवेजीवनायसुश्लोक्यायस्वस्तयेइतिछेदनमंत्रः ।
सकेशानिप्रछिद्यानडुहेगोमयपिंडेप्रास्यत्युरतोध्रियमाणे एवंद्विरपरंतूष्नीं ॥ त्रिःक्षुरेणशिरःप्रदक्षि
णंपरिहरतिसमुखंकेशांते । ॐ यत्क्षुरेणमज्जयतासुपेशसावप्त्वावावपतिकेशांछिंधिशिरोमास्या-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

युःप्रमोषीः ॥ सकृन्मंत्रेणाद्भिस्तूष्णीं ॥ ताभिरद्भिःशिरःसमुद्यनापितायक्षुरंप्रयच्छति । ॐ अक्षण्वंपरिवपेति ॥ यथामंगलंकेशशेषकरणं ॥ यथाकुलाचारंशिखास्थापनं ॥ कुलाचाराश्चबहुधाकारिकायां ॥ केशशेषंततःकुर्यात्यस्मिन्गोत्रेयथोचितं ॥ वासिष्ठादक्षिणेभागेउभयत्रापिकाश्यपाः ॥१॥ शिखांकुर्वंत्यांगिरसःशिखाभिःपंचभिर्युताः ॥ परितःकेशपंक्त्यावामुंडाश्चभृगवोमताः ॥ कुर्वंत्यन्येशिखामात्रंमंगलार्थंइहक्वचित्इति ॥ अनुगुप्तमेतत्सकेशंगोमयपिंडंनिधायगोष्ठेपल्वल उदकांतेवस्त्रादिनागोपयित्वानिदध्यात् आचार्यायवरंददाति सकुशोदकमादाय । ममास्यसूतस्यजातकर्मादिचूडाकरणांतकर्मणःसांगतासिध्यर्थंप्रतिकर्म विहितदक्षिणावावरप्रतिनिधिद्रव्यमिदंआग्नेयंअमुकगोत्रायामुकप्रवरायामुकशर्मणे आचार्याय अमुकगोत्रामुकशर्मामुकनामाहंसंप्रददेइत्युक्त्वादद्यात् ॥ जातकर्मादिचूडाकरणांतकर्मणःसांगतासिध्यर्थंयथासंख्याकान्ब्राह्मणान् भोजनेनाहंतर्पयिष्येतेनपुण्येनकर्मांगदेवताःप्रीयंतां ॥ कृतस्यास्यजातकर्मादिचूडाकर्मांतकर्मन्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थंनानागोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योभूयसीदक्षिणांदास्ये ॥ तिलकमंत्राशीर्वादः ॥ इतिसंस्कारसुबोधिनीयेजातकर्मादिचूडाकरणांतानांतंत्रेणप्रयोगः समाप्तः ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ अथव्रतबंधव्रतादेशकेशांतव्रतविसर्गतानिकर्माणितंत्रेणलिख्यते ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

अष्टवर्षेब्राह्मणमुपनयेत्गर्भाष्टमेवा । एकादशवर्षेराजन्यं । द्वादशवर्षेवैश्यं ॥ जन्मतोद्वादशेत्रयोदशेवर्षेराजन्यवैश्ययोरित्यर्थः ॥ यथामंगलंवासर्वेषां ॥ अथत्रास्मृत्यंनरोक्ताकालाः । विष्णुः । षष्ठेतुधनकामस्यविद्याकामस्यसप्तमे । अष्टमेसर्वकामस्यनवमेकीर्तिमिच्छतः ॥ श्रुतिःवसंतेब्राह्मणमुपनयीत । ग्रीष्मेराजन्यं । शरदिवैश्यं । ज्योतिःशास्त्रोक्तमासतिथिनक्षत्रादिदिनेषु ॥ कारिकायाविशेषः अनाध्यायेचतुर्थ्यांचकृष्णपक्षेविशेषतः । अपराह्णेचोपनीत्यापुनःसंस्कारमर्हतियथामंगलं । शुक्लपक्षेद्वितीयादिस्वाध्यायतिथिपुपूर्वाह्णेज्योतिःशास्त्रोक्तशुभेकालेउपनयनंकार्यं॥ तत्रअधिकारसिद्धयेप्रायश्चित्तमाहविष्णुः ॥ कृछ्रत्रयंचोपनेतात्रीन्कृछ्रांश्चबटुश्चरेत् ॥ आचार्योद्वादशसाहस्रंगायत्रींचजपेत्तथा ॥ केचितुद्वादशसहस्रजपंवदंतिकेचित्तुद्वादशाधिकसहस्रमेकं ॥ अत्रयथाशक्तिव्यवस्था ॥ पितापूर्वेद्युःबटोःपरिधानार्थंइषद्धौतवस्त्रंउतरीयार्थं अजिनंयज्ञोपवीतंमेखलांदंडकौपीनंभिक्षाभाजनंचसंपाद्य ॥ आचार्योममउपनेतृत्वाधिकारसिद्धयेत्रीन्कृछ्रान्गोनिष्क्रयद्रव्यमत्याम्नायद्वाराअहमाचरिष्ये । तथाद्वादशसहस्रगायत्रीजपंयथाकालेकरिष्ये ॥ कुमारोपिकामचारकामवादकामभक्षणादिदोषापनोदार्थंत्रीन्कृछ्रान्अमुकमत्याम्नायद्वाराअहमाचरिष्ये ॥ तत्कारयित्वा ॥

अथोपनयनं ॥ तत्रास्मिपुण्याहेअस्यकुमारस्यव्रतारंभव्रतादेशतथाचकेशांतव्रतविसर्गप्रारंभनिमित्तंअविघ्नपूजनमंडपस्थापनमातृकापूजनवसोर्द्धारायुष्यमंत्रजपपूर्वकंनांदीश्राद्धंचाहंकरिष्ये

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ ततःश्रद्धादिसमाप्य ॥ ततोबहिःशालायांस्थंडिलेपंचभूःसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं ॥ तद्यथा ॥
त्रिभिर्दर्भैःपश्चिमतआरभ्यप्रागंतमुदक्संस्थंत्रिःपरिसमूहयेत ॥ तथैवगोमयेनोपलिंपेत् ॥२॥ प
श्चाद्यज्ञियकाष्ठेनहस्ताभ्यांत्रिरुल्लिखेत् ॥३॥ ततोंगुष्ठानामिकाभ्यामंगुष्ठेनानामिकापर्यंतपांसूंनीत्वा
प्रांचमुद्धरेत ॥ एवमुत्तररेखयोः ॥ एवंप्रतिरेखामभ्युक्षेत् ॥ तत्रलौकिकाग्निस्ताम्रपात्रेणानीयपू-
जान्वितेब्रह्मवचनादग्निस्थापनं ॥ अस्यकुमारस्यादौवपनंतदनंतरंसुमंगलद्रव्यैर्बटुंस्नापयित्वाप
श्चात्त्रीन्ब्राह्मणान्भोजयेत् तसंक्तौमुंडितशिरबटुंच ॥ ततःपुष्पमालादिभिरलंकृत्याचार्यशि-
ष्याःआचार्यसमीपमानयेयुः ॥ अग्नेःपश्चादाचार्याभिमुखबटुस्तिष्ठेत् । पितैवाचार्यः ॥आचम्य-
प्राण० । देशकालौस्मृत्वाअस्मिन्पुण्याहेअस्यकुमारस्यद्विजत्वसिद्धिद्वारावेदाध्ययनाधिकारार्थं
उपनयनंकरिष्ये ॥ तत्रपूर्वेणब्रह्मगमनं । पश्चिमतःपात्रासादनं । द्वेपवित्रे । ताम्रमयीआज्य
स्थाली । पालाश्यसमिधः । प्रांचाआघारौ । समित्तमेआज्यभागौ । पूर्णपात्रं । दक्षिणा ।
अमुकवर्षे उपनयनं । इयंदुरुक्तमितिमेखलाबंधनं । पालाशोदंडोमूर्द्धिसंमितः । ऊर्ध्वदंडस्यग्र

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

हणं । अग्नेरुत्तरतआसीनायगायत्रीप्रदानं । अग्नयेसमिधमितिसमिदाधानं । प्रथमाभिक्षामातुः
। अमौनं । एकवेदस्यारंभः । त्रिदिनंब्रह्मचर्यं ॥ एतान्वैकल्पिकान्पदार्थानहंकरिष्ये ॥ अथ-
ऋष्यादिस्मरणं ॥ ॐ भूर्भुवःस्वरितिमहाव्याहृतीनांप्रजापतिर्ऋषिः । क्रमेणगायत्र्युष्णिगनुष्टु-
प्छंदांसिअग्निवायुसूर्यादेवताः । त्वन्नोअग्नेसत्वन्नोअग्नेअयाश्चाग्नेयेतेशतमितिमंत्राणांवामदेवऋ-
षिः । त्रिष्टुप्छंदः । अग्निवरुणौदेवतेप्रथमयोस्तृतीयस्याग्निर्देवता । चतुर्थस्यवरुणःसवितावि-
ष्णुर्विश्वेदेवामरुतःस्वर्कादेवताः उदुत्तममितिशुनःशेपऋषिःत्रिष्टुप्छंदःवरुणोदेवता । सर्वेषाम-
नादिष्टहोमेपश्चादंगप्रधानार्थहोमेविनि० ॥ अथदेवताभिधानं ॥ तत्रप्रजापतिं । इंद्रंअग्निं ।
सोमं । अग्निं । वायुं । सूर्यं । अग्निंवरुणौ २ ॥ अग्नि । वरुणंसवितारं । विष्णुंविश्वान्देवान्
मरुतःस्वर्कान् । वरुणं । प्रजापतिं । अग्निस्विष्टकृतं । एतादेवताआज्येनास्मिन्कर्मण्यहंयक्ष्ये
॥ अग्नेर्दक्षिणतोब्रह्मासनमास्तीर्य अग्नेरुत्तरतउपविष्टंब्रह्माणंवृणुयात् । अस्मिन्उपनयनकर्मणि-
त्वंब्रह्माभव । भवामीति ॥ स्वासनेउपविशेत् ॥ प्रस्थमात्रोदकग्राहीप्रणीतापात्रंदक्षिणहस्तेनस

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

न्येगृहीत्वापात्रांतरेणात्माभिमुखअपक्षिप्त्वादक्षिणयानामिकयालभ्याग्नेरुत्तरतोनातिदूरेनिदध्यात् । तत्रासंचरः । छिन्नाग्रैर्दर्भैरीशानादिपूर्वाग्रैःपरिस्तरणं ॥ अथप्राग्विलांतमुदगग्रंपात्रासादनं । पवित्रछेदनादर्भास्त्रयः । पवित्रेद्वे । प्रोक्षणीपात्रं । आज्यस्थाली । संन्मार्गकुशाः । उपयमनकुशाः । समिधास्तिस्रः । स्रुवः । आज्यं । पूर्णपात्रं ॥ पवित्रकरणं । द्वयोरुपरित्रीन्निधायद्विमूलेनद्वौकुशौप्रदक्षिणीकृत्यसर्वान्युगपदृत्वांगुष्ठांगुलिपर्वाभ्यांछित्वा ॥ तानुत्तरतःक्षिपेत् । ततःप्रणीतोत्तरतःप्रोक्षणीपात्रंनिधायपात्रेणप्रणीतोदकंक्षिप्त्वा । तत्पवित्राभ्यामुत्पूयपवित्रेतत्रनिधायदक्षिणहस्तेनप्रोक्षणीपात्रंगृहीत्वासव्येनिदध्यात् । दक्षिणहस्तमध्यमानामिकाभ्यांतासामुद्यंगनं । उत्पवनं । ताभिस्तासांप्रोक्षणं आज्यस्थाल्यादिपूर्णपात्रांतानिपृथक् २ प्रोक्षणं । असंचरेप्रोक्षणीपात्रंनिधाय । आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः । आज्याधिश्रयणं । पर्यग्निकरणं । अर्धश्रृतेःस्रुवःप्रतपनंन्युब्जपुष्करस्य । संमार्गकुशैःसंमार्जनंउत्तानपुष्करस्य ॥ बुध्नादारभ्याग्रेरग्रादारभ्याधस्तान्मूलैःप्रणीतोदकेनाभ्युक्षणं । पुष्करादारभ्यपुनःप्रतपनंदेशेनिधानं । आज्यो

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ह्मासनंअग्नेरुत्तरतःपश्चादग्नेरवस्थाप्य । पवित्राभ्यामाज्यमुत्पूयावेक्ष्यापद्रव्यंनिरस्यप्रोक्षणीश्चोत्पूयपवित्रेतत्रकृत्वा ॥ दक्षिणहस्तेनोपयमनानादायसव्येकृत्वा ॥ दक्षिणहस्तेनतिष्ठन्समिधोभ्याधाय । प्रोक्षण्युदकेनसपवित्रहस्तेनईशानकोणादारभ्यअग्निंपर्युक्ष्यपवित्रेप्रणीतासुनिधायदक्षिणजानुनिपात्यउपयमनसहितंसव्यहस्तं प्रसारितांगुलिंहृदिनिधायब्रह्मान्वारंभेणस्रुवेणहोमः ॥ पश्चादग्नेरवस्थाप्यस्वस्यदाक्षिणतः ॥ ब्रह्मचर्यमागामितिवाचयतिकुमारं । ब्रह्मचर्यमागामितिकुमारोब्रूयात् ॥ ब्रह्मचार्यसानीतिब्रूहि । ब्रह्मचार्यसानिइतिब्रह्मचारीब्रूयात् ॥ अथैनंवासःपरिधापयति ॥ येनेंद्रायेतिमंत्रस्यअंगिराऋषिः । बृहतीछंदः । बृहस्पतिर्देवतावस्त्रपरिधानेविनियोगः ॥ ॐ येनेंद्रायबृहस्पतिर्वासःपर्यदधादमृतंतेनत्वापरिदधाम्यायुषेदीर्घायुत्वायबलायवर्चसे इत्यनेनमंत्रेणयथोक्तंवासःपरिधापयति । आचमनं । मेखलांबध्नीते ॥ इयंदुरुक्तमितिमंत्रस्यवामदेवऋषिः ॥ त्रिष्टुप्छंदः । मेखलादेवता । मेखलाबंधनेविनियोगः ॥ ॐ इयंदुरुक्तंपरिबाधमानावर्णंपवित्रंपुनतीमआगात् । प्राणापानाभ्यांबलमादधानास्वसादेवीसुभगामेखलेयमितिमंत्रेण-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

माणवकस्यकटिप्रदेशेप्रदक्षिणंत्रिःपरिवेष्टययथाप्रवरग्रंथीन्कुर्यात् ॥ मेखलाबंधनेआचार्यस्यैवमं-
त्रपाठः ॥ युवासुवासाइतिवाबंधनं ॥ तूष्णींवाबंधनं ॥ मेखलाबंधनेकारिका ॥ अत्रयज्ञोपवी-
तपरिधानं । आचार्येणदशगायत्र्याद्भिरभ्युक्षितंयज्ञोपवीतंआचार्येणदत्तंमाणवकःपरिदध्यात्य-
ज्ञोपवीतंमंत्रेण ॥ यज्ञोपवीतमितिमंत्रस्यपरमेष्ठीऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः । लिंगोक्तादेवता । श्रौ-
तस्मार्तकर्मानुष्ठानसिध्यर्थेउपवीतधारणेविनियोगः ॥ ॐ यज्ञोपवीतंपरमंपवित्रंप्रजापतेर्यत्सहजं
पुरस्तात् ॥ आयुष्यमग्र्यंप्रतिमुंचशुभ्रंयज्ञोपवीतंबलमस्तुतेजः । यज्ञोपवीतमसियज्ञस्यत्वायज्ञो-
पवीतेनोपनह्यामीतिमंत्रंपठन्दक्षिणबाहुमुधृत्यवामस्कंधेयज्ञोपवीतंधारयेत् द्विराचमनं ॥ अथा-
जिनंप्रयछति । मित्रस्येतिपरमेष्ठीऋषिः । त्रिष्टुप्० लिंगो० अजिनधारणेविनियोगः । ॐ मि
त्रस्यचक्षुर्द्धरणंबलीयस्तेजोयशस्विस्थविरंसमिद्धं । अनाहनस्यंवसनंजरिष्णुःपरिदंवाज्यजिनंद
धेयंमाणवकस्यमंत्रपाठः । तूष्णीमितिवासुदेवहरिहरौअजिनमुत्तरीयंगृह्णातिदंडंप्रयछतितंप्रतिगृ-
ह्णातिमाणवकः । योमेदंडेतिमंत्रस्यप्रजापति० यजुःदंडोदेवतादंडग्रहणेवि० ॐ योमेदंडःपरा-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

पतत्वैहायसोधिभूम्याम् । तमहंपुनरादद आयुषेब्रह्मणेब्रह्मवर्चसायेतितंप्रतिगृह्णाति ॥ दीक्षावदे
केदीर्घसत्रमुपैतीतिवचनात् ॥ अथास्याद्भिरंजलिनांजलिंपूरयत्यापोहिष्ठेतितिसृभिः ॥ आचार्यः
स्वकीयमंजलिंअद्भिःपूरयित्वापोहिष्ठेतितिस्रऋचमुच्चार्यस्वांजलिस्थाभिरद्भिःमाणवकांजलिंपूरयेत्॥
आपोहिष्ठेतितिसृणांसिंधुद्वीपोगायत्र्यापोउदकपूरणेवि० । ॐ आपोहिष्ठामयो०योवःशिवतमो०
तस्माअरंगमा०तृचेन ॥ अथैनंदक्षसूर्यमुदीक्षयतितच्चक्षुरिति सूर्यमुदीक्षस्वे त्याहआचार्यः । ततो
माणवकस्तच्चक्षुरितिमंत्रस्यदध्यं०पुरउष्णि०सवितासूर्यावेक्षणेविनियोगः ॥ तच्चक्षुमंत्रंपठित्वासू-
र्यंपश्यतिरिक्तपाणिर्नपश्येत् । दोषश्रवणात् ॥ अस्यास्यदक्षिणांदक्षसमधिहृदयमालभते । ममव्र-
तेतिमंत्रस्यप्रजापति० त्रिष्टु० बृहस्पतिर्देवताहृदयालंभनेविनियोगः ॥ ॐ ममव्रतेतेहृदयंदधा
मिममचित्तमनुचित्तंतेअस्तु । ममवाचमेकमनाजुषस्वबृहस्पतिष्ट्वानियुनक्तुमह्यमितिमंत्रेणा-
चार्यःकुमारस्यदक्षिणस्कंधोपरिहस्तंनीत्वामंत्रंपठन्हृदयमालभते ॥ अथास्यदक्षिणंदक्षहस्तंगृही-
त्वाहकोनामासीति कुमारोब्रवीतिअमुकशर्माहंभो३इति । पुनराचार्योब्रूयात्कस्यब्रह्मचार्यसी-

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ति । बटुर्भवतइति । अस्मिन्प्रतिवाक्येकुमारेणोच्चार्यमाणेआचार्योब्रूयात् । इंद्रस्यब्रह्मचार्यस्य-
ग्निराचार्यस्तवाहमाचार्यस्तवासाविति ॥ अमुकशर्मन् । इत्याचार्यःपठेत् ॥ अथैनंभूतेभ्यःपरि-
ददाति । प्रजापतयेत्यादीनांप्रजापति.यजु० लिंगोक्तादेवतारक्षणेविनियोगः ॥ ॐ प्रजापत
येत्वापरिददामिदेवायत्वासवित्रे परिददाम्यद्भ्यस्त्वौषधीभ्यःपरिददामिद्यावापृथिवीभ्यांत्वापरिद-
दामिविश्वेभ्यस्त्वाभूतेभ्यःपरिददामिसर्वेभ्यस्त्वाभूतेभ्यःपरिददाम्यरिष्टचै । इत्याचार्योमंत्रंपठेत् ॥
प्रदक्षिणमग्निंपरीत्योपविशति । अथकुमारःअग्निंप्रदक्षिणीकृत्यआचार्यस्योत्तरतउपविशति ॥ अ
न्वारब्धआज्याहुतीर्हुत्वाप्राशनांते । आचार्यश्चब्रह्मोपवेशादिपर्युक्षणांतंकृत्वा ॥ ब्रह्मान्वारब्धआ
घारावाज्यभागौस्विष्टकृदंताश्चतुर्दशाज्याहुतीर्हुत्वा अयमेवात्रप्रधानहोमः । संस्रवप्राशनं । प-
वित्राभ्यांमार्जनं । पवित्रप्रतिपत्तिः । ब्रह्मणेदक्षिणादानं । ब्रह्मणुपनयनांगभूतायंवरःअथवापू-
र्णपात्रंप्रतिगृह्यतां ॥ प्रणीताविमोकःउदक् ॥ अथैनंदंडशास्ति । अथमाणवकंआचार्यःशिक्षापये
त् ॥ ब्रह्मचार्यसीत्याचार्योवदति । भवामीतिब्रह्मचारी ॥ अपोशानेत्याचार्यः । अश्नामीति-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ब्रह्मचारी । कर्मकुर्वीतिआचार्यः । करवाणीतिब्रह्मचारी । मादिवासुषुप्थाइत्याचार्यः । नदिवास्व
पामीतिब्रह्मचारी । वाचंयच्छेतिआचार्यःयच्छामीतिब्रह्मचारी । समिधमाधेहीत्याचार्यः । आद-
धानीतिबटुः । अपोशानेत्याचार्यः । अश्नामीतिबटुः ॥ अथास्मैसावित्रीमन्वाहोत्तरतोग्नेःप्रत्य-
ङ्मुखायोपविष्टायोपसन्नायसमी क्षमाणायसमीक्षितायदक्षिणतस्तिष्ठतआसीनायवैकेपच्छोर्द्धर्चंशः
सर्वांचतृतीयेनसहानुवर्तयन् । क्षत्रियवैश्ययोर्विकल्पाः । संवत्सेषण्मास्येचतुर्विंशत्यहेद्वादशाहे
षडहेत्र्यहेवाइति ॥ ब्राह्मणेभ्यस्तु । सद्यस्त्वेवगायत्रींब्राह्मणायानुब्रूयादाग्नेयोवैब्राह्मणइतिश्रुतेः॥
अथास्मैब्रह्मचारिणेआचार्यः गायत्रीमन्वाह । कीदृशायउत्तरतोग्नेःप्रत्यङ्मुखायउपविष्टायपादो-
पसंग्रहपूर्वकमुपसन्नायआचार्यंसमीक्षमाणःस्वयमप्याचार्येणसमीक्षिताय । ॐ कारव्याहृतिपू-
र्वकंपच्छः । एकैकंपादं । द्वितीयमर्द्धर्चशः । तथैवतृतीयं । सर्वांस्वयंचबटुनासहपठेत् ॥ इति॥
केषांचित्पक्षेदक्षिणतोग्नेस्तिष्ठतआसीनायआचार्यः उक्तप्रकारेणसावित्रीमन्वाह । इतिगायत्रीप्र-
दानं । ततःशिष्टाचारात्देशकालौस्मृत्वाममाद्विजत्वसिद्ध्यै वेदाध्ययनाधिकारसिध्यर्थंगायत्र्यु-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

पदेशांगभूतंगणपतिसरस्वतीपूजनंतथाच आचार्यपूजनंकरिष्ये । पंचोपचारैःसंपूज्यततोगाय-त्रीप्रदानं । अत्रसमिदाधानंपाणिनाग्निंपरिसमूहतिबटुः । तत्रदक्षिणहस्तेनअग्नेसुश्रवइत्यादीनां ब्रह्माऋषिः । यजुछंदः । अग्निर्देवतासामिंधनोविनियोगः ॥ ॐ अग्नेसुश्रवःसुश्रवःसंमाकुरुइत्ये कंक्षिपेत् । ॐ यथात्वमग्नेसुश्रवःसुश्रवाअसिइतिद्वितीयं ॥ ॐ एवमांदसुश्रवःसौश्रवसंकुरुइति तृतीयं । ॐ यथात्वमग्नेदेवानांयज्ञस्यनिधीपाअसीतिचतुर्थं । ॐ एवमहंमनुष्याणांवेदस्यनि-धियोभूयासमितिपंचमं ॥ एत्यैतैःपंचभिर्मंत्रैःप्रतिमंत्रइंधनप्रक्षेपेणअग्निंसिंधुक्षेत् । ततोदकेनप्र-दक्षिणमग्निंपर्युक्ष्य ॥ ततोत्थायसमिधआदध्यात्तिष्ठन् । अग्नयेसमिधमितिमंत्रस्यप्रजापति० आकृतिछंदःसमिद्देवतासमिदाधानेविनियोगः ॥ ॐ अग्नयेसमिधमाहार्षंबृहतेजातवेदसे । यथा त्वमग्नेसमिधासमिध्यसएवमहमायुषामेधयावर्चसाप्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनसमिंधेजीवपुत्रोममा-चार्योमेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वीतेजस्वीब्रह्मवर्चस्यन्नादोभूयासंस्वाहेत्यनेनमंत्रेण उक्त लक्षणामेकांसामिधमग्नौ आधायानेनैवद्वितीयांतृतीयांचाधत्ते ॥ अथवाएषातेअग्नेसमित्तयाइत्यादि

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

मंत्रेणआदधाति॥अग्नयेसमिधमाहार्षमितिएषातेअग्नेसमिदित्येताभ्यांसमुच्चयाभ्यांमंत्राभ्यांवाएकै
कशःतिस्रः समिधआदधाति ॥ ततउपविश्यपूर्ववत्परिसमूहनपर्युक्षणे ॥ ॐ अग्नेसुश्रवइत्यादि
पंचभिर्मंत्रैःसंधुक्षणंपूर्ववत् अग्नेःपर्युक्षणंच ॥ पाणीप्रतप्यमुखंमृष्टे ॥ तूष्णींपाणीःप्रतप्यसप्तभिर्मं
त्रैःप्रतिमंत्रंमुखंविमार्जनं ॥ ललाटादिचिबुकांतंमुखं ॥ तनूपाअग्नेइत्यादीनांबृहदेवाऋषयः । य
जूंषि । अग्निर्देवमुखमार्जनेविनियोगः ॥ ॐ तनूपाअग्नेसितन्वंमेपाहि ॥१॥ ॐ आयुर्दाअ-
ग्नेस्यायुर्मेदेहि ॥२॥ ॐ वर्चोदाअग्नेसिवर्चोमेदेहि ।३। ॐ अग्नेयन्मेतन्वाऊनंतन्मआपृण।४।
ॐ मेधांमेदेवसविताआदधातु ।५। ॐ मेधांमेदेवीसरस्वतीआदधातु।६। ॐ मेधामश्विनौदेवा-
वाधत्तांपुष्करस्रजौ ।७। इतिसप्तभिर्मुखंविमार्ष्टि ॥ अंगान्यालभ्यजपति ॥ ॐ अंगानिचम
आप्यायतामित्यनेनशिरःप्रभृतिपादांतंसर्वांगालंभनं । ॐ वाक्चमआप्यायतामितिमुखं॥ ॐ
प्राणश्चमआप्यायतांनासारंध्रेयुगपत् ॥ ॐ चक्षुश्चमआप्यायतांचक्षुषीयुगपत् ॥ ॐ श्रोत्रंचम
आप्यायतामितिदक्षिणकर्णं ॥ ॐ यशोबलंचमआप्यायतामितिवामकर्णंस्पृशेत् ॥ त्र्यायुषाणि-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

करोतिभस्मनाललाटेग्रीवायांदक्षिणंसेहृदिचत्र्यायुषमितिप्रतिमंत्रं ॥ त्र्यायुषमितिनारायणऋ-
षिः । उष्णिक्छंदः आयुर्देवता । भस्मनातिलककरणेविनियोगः ॥ ॐ त्र्यायुषंजमदग्नेः ।
ॐ कश्यपस्यत्र्यायुषं । ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषं । ॐ तन्नोअस्तुत्र्यायुषम् ॥ ततोभिवादनं ॥ अ-
मुकगोत्रोत्पन्नःअमुकप्रवरःअमुकवेदशाखाध्यायी अमुकशर्माभो३अहंअभिवादयामि ॥ एवं-
वरुणमाचार्यंच । अन्यानभिवाद्यांश्च ॥ पित्राद्यभिवादनेविधिः ॥ नीचोत्तानेनदक्षिणपाणिना
दक्षिणपादंगृहीत्वाताद्दृशावामेनवामपादंगृहीत्वाशिरःपादयोर्निदध्यात् ॥ आयुष्मान्भवसौम्य
अमुकशर्म३न्इतिप्रत्यभिवादनंपिताकुर्यात् ॥ आत्मनामगुरोर्नामनामातिकृपणस्य ॥ आयुष्य-
कामोनगृह्णीयात्ज्येष्ठापत्यकलत्रयोइत्यादिनिषधस्तु अभिवादनव्यतिरिक्तइतिविज्ञेयं ॥ जन्म-
प्रभृतियत्किंचिच्चेतसाधर्ममाचरेत् ॥ तत्सर्वंनिष्फलंयातिएकहस्ताभिवादनात् ॥ इत्यभिवादन-
विधिः ॥ अत्रभिक्षाचर्यचरणंभवत्पूर्वंब्राह्मणोभिक्षेतभवन्मध्यांक्षत्रराजन्योभवदंत्यांवैश्यः॥तत्रब्रह्म
चारीसुवर्णादिपात्रंगृहीत्वा । ॐ भवतिभिक्षांदेहिइत्येवंभिक्षांयाचेत ॥ ॐ स्वस्तिब्रूयात्ततिस्तो-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

प्रत्याख्यायिन्यःषड्द्वादशापरिमितावामातरंप्रथमामेके ॥ यास्त्रियःनिराकरणंनकुर्वंतिताःभिक्ष-
णीयाइत्यर्थः ॥ आचार्यायभैक्षंनिवेदयित्वाइयंभिक्षालब्धाइति ॥ अत्रमध्याह्नसंध्यांकुर्यादितिप्रयो
गपारिजातेप्रयोगरत्नेनेतिकृष्णभट्टीकारः ॥ ततोभैक्षंभुंक्ष्वेतिगुरुणानुज्ञातोभोजनंकुर्यात् ॥ कृत-
स्योपनयनकर्मणःसमृध्यर्थंयथासंपन्नान्नेनसूत्रोक्तमेकं ब्राह्मणभोजनेनाहंतर्पयिष्ये ॥ तेनश्री
कर्मांगदेवताःप्रीयंतां ॥ वास्मृत्युक्तान्भोजयिष्ये । समाचारादत्रावसरेपुण्याहवाचनंकुर्वंति ॥
कृतस्योपनयनकर्मणःसांगतासिध्यर्थंनानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्योभूयसींदक्षिणांदास्ये ॥ तेनश्री
कर्मांगदेवताःप्रीयंतां ॥ वाग्यतोहःशेषंतिष्ठेदित्येके ॥ अहिंर्दसन्नरण्यात्समिधआहृत्यतास्मिन्न-
ग्नौपूर्ववदाधायवाचंविसृजते ॥ इतःप्रभृतिसूर्यास्तमयंयावत्वाग्यतोभवेत् ॥ ततःसायंकालेसं-
ध्यावंदनपूर्वकमाग्निपरिचरणंपाणिनाग्निंपरिसमूहतीत्यादि अभिवादनांतंपूर्ववत् ॥ इतितद्दिनकृ-
त्यं ॥ उपनयनाग्निस्त्रिरात्रंधार्यः ॥ त्र्यहमेतमग्निंधारयंतीत्यापस्तंबोक्तेः ॥ यावद्ध्रुतमग्निरक्षण-
मितिगर्गपद्धतौ ॥ अतआरभ्यसमावर्तनपर्यंतंब्रह्मचारिणोनियमाःकथ्यंते ॥ अधःशायीस्यात्॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

अक्षारालवणाशीस्यात् । दंडधारणंकर्तव्यं । अग्निपरिचरणंगुरुशुश्रूषाकर्तव्या । भिक्षाचर्यासायंप्रातर्भोजनार्थंकर्तव्या । भैक्षचरणमनिंद्यब्राह्मणगृहेभैक्षंगुर्वाज्ञयायाचयित्वाभोजनविधिनाभोजनं । मधुमांसमशनंनकर्तव्यं । मज्जनंनकर्तव्यं । उधृत्योदकेनस्नायादित्यर्थः ॥ आसनस्योपरिमखुरिकाद्युपधानंकृत्वानोपविशेत् ॥ स्त्रीणांमध्येनगंतव्यं ॥ अनृतंनवक्तव्यं । अदत्तंनगृह्णीयात् । तथा । कार्याभिक्षासदाधार्यंकौपीनंकटिसूत्रकं ॥ कौपीनमहतंधार्यंखंडंवावस्त्रपार्श्वयुक् ॥ त्रुटितानांमेखलादीनांप्रतिपत्तिमाह॥ मेखलामजिनंदंडंउपवीतंकमंडलुं ॥अप्सुप्रास्यविनष्टानिगृहीत्वान्यानिमंत्रवित् ॥ व्रताचरणाभावपक्षेएतेनियमानोपदेशनीयाइतिदर्पणकाराः॥
इति ब्रह्मचारिधर्माः ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

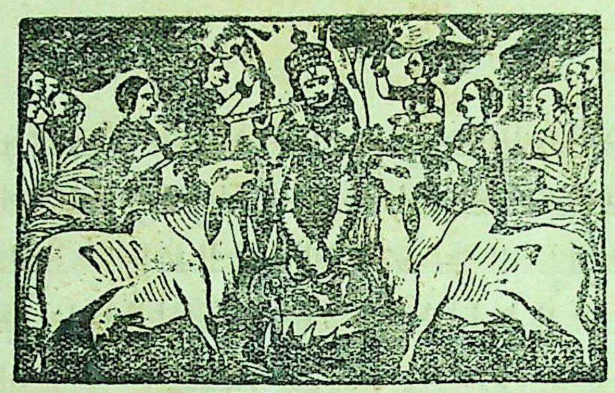

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ अथोपनयनादूर्ध्वंयावद्ब्रह्मचर्यंतावन्नित्यंसायंप्रातरग्निपरिचरणविधिः ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

सायंकालीनसंध्यांकृत्वागृहीतेन्धनाज्यसमिदग्निसमीपंगत्वास्वासने उपविश्याचम्यप्राणानायम्यदेशकालौस्मृत्वाममब्रह्मवर्चससिद्धिद्वारा श्रीअग्निस्वरूपीपरमेश्वरप्रीतयेसायमग्निपरिसमूहनादिकंकरिष्ये ॥ पाणिनाग्निंपरिसमूहनादिनाअभिमुखंकृत्वाग्नेसुश्रवइत्यादिपंचाभिर्मंत्रैःप्रतिमंत्रंघृताक्तेन्धनप्रक्षेपः । तद्यथा ॥ ॐ अग्नेसुश्रवःसुश्रवःसंमाकुरु ।१। यथात्वमग्नेसुश्रवःसुश्रवाअसि ।२। एवमांर्ठसुश्रवःसौश्रवसंकुरु ।३। यथात्वमग्नेदेवानांयज्ञस्यनिधिपाअसि ।४। एवमहंमनुष्याणांवेदस्यनिधिपाभूयासमितिपंचमं ॥ उदकेनप्रदक्षिणमग्निंपर्युक्ष्य । उत्थायसमिधआदध्यात् ॥ ॐ अग्नयेसमिधमहार्षंबृहतेजातवेदसेयथात्वमग्नेसमिधासमिध्यसएवमहमायुषामेधयावर्चसाप्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनसमिंधेजीवपुत्रोममाचार्योमेधाव्यहमसान्यानिराकरिष्णुर्यशस्वीतेजस्वीब्रह्मवर्चस्यन्नादोभूयासर्ठस्वाहा ॥ एवंद्वितीयांतृतीयांचआदध्यात् ॥ पुनरग्नेसुश्रवइत्यादिपंचभिर्मंत्रैरिंधनंप्रक्षिप्यतूष्णींपाणीप्रतप्यतनूपाअग्नेसीत्यादिसप्तमंत्रैःप्रतिमंत्रंमुखंविमार्ष्टि ततोंगालंभं ॥ अंगानिचमआप्यायतामितिसर्वांगालंभनं ॥ वाङ्मआप्यायतामितिवाचि । प्राणोम-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

आप्यायतामितिनासास्पर्शनं ॥ चक्षुर्मआप्यायतामितिदक्षिणसव्यचक्षुषी ॥ श्रोत्रंचमआप्यायतामितिदक्षिणकर्णे । एवमेववामकर्णे ॥ यशोचमआप्यायतामितिमुखे । बलोमआप्यायतामितिदक्षिणबाहु ॥ बलोमआप्यायतामितिवामबाहु ॥ ततस्त्र्यायुषाणिकरोतिभस्मनाललाटेग्रीवायांदक्षिणेंऽसेहृदिचत्र्यायुषमितिप्रतिमंत्रं । ततोयथोक्तमभिवादनं ॥ अनेनसायमग्निपरिचरणेनअग्निस्वरूपीपरमेश्वरःप्रीयतां वाग्यमोगृहीतोयदितदावाचंविसृजेत् । अपोशानंकृत्वामौनंप्राङ्मुखोभुंजीत एवमेवान्वहंभोजनधर्मः । आचार्येणाहुतोब्रह्मचारीशयनश्चेत् । उत्थायवदेत् । गुरुरासिनंचेदाक्रयति । तंतिष्ठंब्रूयात् । तिष्ठंचेद्गुरुराक्रयति । तदाअभिक्रामन्ब्रूयात् । अभिक्रामंतचेदाक्रयति । तदाधावन्ब्रूवात् । एवंकुर्वतःपुण्यमहद्भवति ॥ एवंप्रातःसंध्यांकृत्वाचम्यप्राणानायम्यदेशकालौस्मृत्वाममब्रह्मवर्चससिद्धिद्वारा श्रीअग्निस्वरुपीपरमेश्वरप्रीतयेप्रातरग्निपरिसमूहनादिकंकरिष्यइत्यूहेनेन्धनप्रक्षेपाद्यभिवादनांतंसर्वं सायंकालीनवदितिसुबोधिन्यांब्रह्मचारिणोनित्याग्निपरिचरणविधिः ॥ त्रुटितानांचमेखलादीनांप्रतिपत्तिमाह ॥ मेखलामजिन-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

दंडमुपवीतंकमंडलुं ॥ अप्सुप्रास्यविनष्टानिगृहीत्वान्यानिमंत्रवित् ॥ मेखलाबंधनेकारिकायां ॥
बध्नीयात्त्रिगुणांश्लक्ष्णांइयंदुरुक्तमुच्चरन् ॥ आचार्यस्यैवमंत्रोयंनवटोरात्मनेपदात् ॥१॥ त्रिवृतामे-
खलाकार्यात्रिवारंस्यात्समावृता ॥ तंग्रंथयस्त्रयःकार्यापंचवासप्तवापुनः ॥ २ ॥ अत्रत्र्यार्षेयस्यग्रं
थित्रयं । पंचार्षेयस्यपंच । सप्तार्षेयस्यसप्तइतिगर्गपद्धतौ ॥ उपवीतविधिः । त्रिवृदूर्ध्ववृतंकार्यं-
तंतुत्रयमधोवृतं । त्रिवृतंचोपवीतंस्यात्तस्यैकाग्रंथिरिष्यते ॥ वामावर्तात्त्रिगुणंकृत्वाप्रदक्षिणावृत्तंन
वगुणंविधायतदेवात्रिगुणंकृत्वाग्रंथिमेकंविदध्यात् ॥ पृष्ठवंशेचनाभ्यांचधृतंयद्विंदतेकटिं ॥ तद्धा-
र्यमुपवीतंस्यान्नातिनीचंनचोच्छ्रितं ॥ स्तनादूर्ध्वमधोनाभेर्नधार्यंतत्कथंचन ॥ ब्रह्मचारिणाएकं
स्यात्स्नातकस्यद्वेबहूनिवा ॥ तृतीयमुत्तरीयंवावस्त्राभावेतदिष्यते ॥ अजिनलक्षणं ॥ त्र्यंगुलं-
तुबहिर्लोमयद्वास्याच्चतुरंगुलं ॥ अजिनंधारयेद्विप्रचतुर्विंशाष्टषोडशैः अजिनंद्वादशमुष्टिदश-
हस्ताचमेखला ॥ षट्नवांगुलिसूत्रंचदंडःकेशांतकःस्मृतःइति ॥ अष्टचत्वारिंशद्वर्षाणिवेदब्रह्म-
चर्यंचरेत् ॥ अस्मिन्पक्षेचतुर्णामपिवेदानांएकमेवव्रतादेशःसर्वाश्चवेदाहुतयोहूयंते ॥ द्वादशद्वा-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

दशवाप्रतिवेदं । अथवाएकंवेदंसमाप्यसमावर्त्तनंकृत्वापुनःद्वितीयग्रहणं । यावद्ब्रह्मचर्यंचरित्वा
स्नात्वैववेदांतरेपिब्रह्मचर्यंचरेत् ॥ यावदग्रहणंवा । यद्वायावत्वेदस्यवेदयोर्वेदानांपाठतोर्थतश्च-
स्वीकरणंतावत्ब्रह्मचर्यंचरेत् ॥ अथवर्णक्रमेणपरिधानवस्त्रादीन्याह ॥ वासांसिशाणक्षौमाविका
नि ॥ ब्राह्मणस्यशणमयंवासोभवति । क्षत्रियस्यक्षौमअतसीतद्विकारं ॥ वैश्यस्यआविकंमेषरो
मनिर्मितं ॥ सर्वेषांकार्पासमयंवा ॥ ऐणेयमजिनमुत्तरीयंब्राह्मणस्यऐणीहरणी ॥ रौरवंराज-
न्यस्यरुरुश्चित्रमृगइतिप्रसिद्धः ॥ आजंगव्यंवैश्यस्यसर्वेषांवागव्यमसतिप्रधानत्वात् ॥ मौंजीरश
नाब्राह्मणस्यमौंजःशरः । धनुर्ज्याराजन्यस्य । मौर्वीवैशस्यतृणविशेषः ॥ मुंजाभावेकुशाश्मं-
तकबल्वजानांपालाशोब्राह्मणस्यदंडोबैल्वोराजन्यस्योदुंबरोवैश्यस्य केशसंमितोब्राह्मणस्यललाट-
संमितक्षत्रियस्यघ्राणसंमितोवैश्यस्यसर्वेवासर्वेषां ब्राह्मणादीनांअनियमेनदंडाभवंति ॥ आचा
र्येणाहुतोत्थायप्रतिश्रृणुयाच्छयानंचेदासीनआसीनंचेत्तिष्ठंन्तिष्ठंतंचेदभिक्रामनभिक्रामंचेदभिधावं
सएवंवर्तमानोमुत्राध्यवसत्यमुत्राध्यवसतीतितस्यस्नातकस्यकीर्तिर्भवति। त्रयःस्नातकाभवंतिविद्या

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

स्नातकोव्रतस्नातकोविद्याव्रतस्नातकइतिसमाप्यवेदमसमाप्यव्रतंयःसमावर्ततेसविद्यास्नातकः समाप्यव्रतमसमाप्यवेदंयसमावर्ततेसव्रतःस्नातकःउभयर्ंदसमाप्ययःसमावर्त्ततेसविद्याव्रतस्नातकइति ॥ उपनयनकालपरमावधिमाह । आषोडशाद्वर्षाद्ब्राह्मणस्यनातीतःकालोभवति । आद्वाविंशाद्राजन्यस्य । आचतुर्विंशाद्वैश्यस्यअतऊर्ध्वंपतितसावित्रिकाभवंति । नैनानुपनयेयुर्नाध्यापयेयुर्नयाजयेयुर्नचैभिर्व्यवहरेयुः । कालातिक्रमेनियतवत् ॥ गर्भाधानादीनिनियतकालातिक्रमेसतिप्रायाश्चित्तंनित्यवत् ॥ नियतेश्रौतकालेनैमित्तिकेषुयद्विहितंस्मार्तंतदेवअनादिष्टंभवति । तच्च अविज्ञातेप्रतिमहाव्याहृतिभिसर्वाभिश्चतुर्थर्ंदसर्वप्रायाश्चित्तंचेति॥ कालातिक्रमादन्यत्रापियज्ञोपवीतिनाबद्धशिखिनापवित्रपाणिनाकर्मकर्तव्यमित्यादिस्मृत्यंतरेविहितभ्रेशउत्पन्ने एतदेवभवति ॥ नैमित्तिकांतराभिधानात् ॥ आवसथ्याग्निसाध्यलौकिकाग्निसाध्यकर्मसुचतुर्गृहीतान्येतानिसर्वत्रेतिप्रायश्चित्तसूत्रेउक्तत्वात् ॥ अत्रचतुर्गृहीतंगृहीत्वाहोमःकर्तव्यः । स्रुवेणचतुर्ग्रहणंस्रुच्येवसंभवति । स्मार्तकर्मणिस्रुक्नभवतितत्रस्रुगुत्पाद्येतिरामवाजपेयिभिःप्रायश्चित्तेउक्तं ॥ त्रिपुरुषप

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

तितसावित्रिकाणामपत्येसंस्कारोनाध्यापनंचतेषांदंसंस्कारेष्पुव्रात्यस्तोमेनेष्वाकाममधीयीरन्व्यव-
हार्याभवंतीतिवचनात् ॥ तेषांपितृपुत्रपौत्राणांमध्येयःसंस्कारमिछतिसव्रात्यस्तोमेनेष्वाव्यवहार्यो
भवतिइतिअथषंढमूकादीनांविशेषःप्रयोगपारिजाते ॥ ब्राह्मण्यांब्राह्मणाज्जातोब्राह्मणःसइतिश्रु-
तिः ॥ कारिकायांच ॥ तस्माच्चषंढबधिरकुब्जवामनपंगुषु । जडोगदददरोगार्त्तशुष्कांगविकलां-
गिषु । मत्तोन्मत्तेषुमूकेषुशमनस्थेनिद्रिंद्रिये । ध्वस्तपुंस्त्वेषुचैतेषुसंस्कारास्युर्यथोचितं ॥ मत्तो-
न्मत्तौनसंस्कार्यौइतिकेचित्प्रचक्षते ॥ कर्मस्वनधिकाराच्चपातित्यंनास्तिचैतयोः ॥ पदपत्यंचसं-
स्कार्यमन्येत्वाहुरिहान्यथा ॥ संस्कारहोममंत्रादीन्करोत्याचार्यएवतु ॥ उपनेयाश्चविधिवदाचा
र्यस्यसमीपतः ॥ आनीयाग्निसमीपेवासावित्रींस्पृश्यवाजपेत् ॥ कन्यास्वीकरणादन्यत्सर्वंविप्रेण
कारयेत् ॥ एवमेवाद्विजैर्जातौसंस्कार्यौकुंडगोलकौइतिव्रतबंधः ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

अथवेदारंभः । आचम्यप्राणानायम्य । देशकालौस्मृत्वाअस्यब्रह्मचारिणःब्रह्मयज्ञादिद्वारा-
श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंचतुर्णांवेदानांतंत्रेणव्रतादेशंकरिष्ये । उपनयनोत्तरकालमातृपूजापूर्वकमाभ्यु-
दयिकश्राद्धंविधाय ॥ स्थंडिलेपंचभूःसंस्कारपूर्वकंलौकिकाग्निंस्थापयित्वा ॥ अथवैकल्पिकानि।
एकवेदस्यारंभःपूर्वेणब्रह्मणोगमनं । उत्तरेणपात्रासादनं । द्वेपवित्रे । ताम्रमयीआज्यस्थाली ।
पालाश्यःसमिधः । प्रांचावाघारौ । समित्तमेआज्यभागौ । वरोदक्षिणा । एतान्वैकल्पिकपदा
र्थानहंकरिष्ये ॥ भूरादीनांऋष्यादिस्मरणं । सर्वेषांवेदारंभांगहोमेविनियोग ॥ तत्रप्रजा-
पतिं । इंद्रं । अग्निं । सोमं । अंतरिक्षं । वायुं । पृथिवीं । अग्निं । दिवं । सूर्यं । दिशः ।
चंद्रमसं । ब्रह्माणं । छंदांसि । प्रजापतिं देवान् । ऋषीन् । श्रद्धां । मेधां । सदस्पतिं । अ-
नुमतिं । अग्निं । वायुं । सूर्यं । अग्निवरुणौ २ अग्निंवरुणंसवितारं विष्णुंविश्वान्देवान्मरुतःस्व
र्कान् । वरुणं । प्रजापतिं । अग्निंस्विष्टकृतं । एताअंगप्रधानार्थादेवताआज्येनास्मिन्कर्मण्यहं-
यक्ष्ये । ब्रह्मवरणाद्याज्यभागांतंपूर्ववत् । अथप्रधानहोमः ॥ ॐ अंतरिक्षायस्वाहा । इदमंतरि

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

क्षाय ॐ वायवेस्वाहा । इदंवायवे । ब्रह्मणेस्वाहा । इदंब्रह्मणे । छंदोभ्यःस्वाहाइदंछंदोभ्यः । ॐ पृथिव्यैस्वाहा । इदंपृथिव्यै । अग्नयेस्वाहा । इदमग्नये । ब्रह्मणेस्वाहाइदंब्रह्मणे । छंदोभ्यः । इदंछंदोभ्यः । दिवेस्वाहा । इदंदिवे । सूर्याय०इदंसूर्याय । ब्रह्मणेस्वाहा । इदंब्रह्मणे । छंदोभ्यः स्वाहा । इदंछंदोभ्यः । दिग्भ्यःस्वाहा । इदंदिग्भ्यः । चंद्रमसेस्वाहा । इदंचंद्रमसे । ब्रह्मणे० । इदंब्रह्मणे । छंदोभ्यःस्वाहा । इदंछंदोभ्यः । प्रजापतयेस्वाहा । इदंप्रजापतये । देवेभ्यःस्वाहा । इदंदेवेभ्यः । ऋषिभ्यःस्वाहा । इदंऋषिभ्यः । श्रद्धायैस्वाहा । इदंश्रद्धायै । मेधायैस्वाहा इदं-मेधायै । सदसस्पतयेस्वाहा । इदंसदसस्पतये । अनुमतयेस्वाहा । इदमनुमतये एतत्प्रधान-होमः ॥ ततोभूरादिस्विष्टकृदंतादशाहुतयःब्रह्मान्वारब्धेन ॥ संस्रवप्राशनं । पवित्राभ्यांमार्जनं । पवित्रप्रतिपत्तिः । ब्रह्मन्वेदारंभांगतयाविहितोयंवरःप्रतिगृह्यतां । प्रणीताविमोकः । ततः ब्रह्मचारीदेशकालौस्मृत्वावेदारंभांगभूतंगणपत्यादिपूजनमहंकरिष्ये ॥ अक्षतपुंजेषु । ॐ गणपतयेनमःगणपतिमा० । ॐ सरस्वत्यैनमःसरस्वतीमा० । ॐ लक्ष्म्यैनमः । लक्ष्मीमा० । ॐ

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

नारायणायनमः नारायणमा० । वेदविद्यायैनमः । वेदविद्यामा० ॥ मनोजूतिरितिमंत्रेणप्रति-
ष्ठा ॥ ॐ गणपत्याद्यावाहितदेवताःसुप्रतिष्ठावरदाभवंतु ॥ ॐ गणपत्याद्यावा हितदेवताभ्यो-
नमःआवाहनादिषोडशोपचारैःसंपूज्य । अनेनषोडशोपचारकर्मणाकृतेनगणपत्याद्यावाहितदेव
ताःप्रीयंताम् ॥ ततःब्रह्मचारिणंप्रागग्रदर्भासनेप्रत्यङ्मुखमुपवेश्याचम्यप्राणायामत्रयंकृत्वा ।
आचार्येणसमीक्षिताय ऊर्द्धजानुद्वयस्थितसंयतहस्तद्वयाय । ॐ कारपूर्विकांसप्रणवव्याहृतीपू-
र्विकांगायत्रीमुच्चार्य । गुरोःआदावंतेचपादोपसंग्रहणंकुर्यात् ॥ ॐ इषेत्वोर्जेत्वा०पशून्पाहि ॥
एवंप्रतिदिनंस्वशाखाध्ययनंकृत्वा ॥ पश्चादन्याशाखांपठेत् । ॐ अग्निमीलेपुरोहितंयज्ञस्यदेवम
त्विजम् ॥ होतारंरत्नधातमम् ॥ १ ॥ ॐ अग्नआयाहिवीतयेगृणानोहव्यदातये ॥ निहोतास-
त्सिबर्हिषि ॥१॥ ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयआपोभवंतुपीतये । शंयोरभिस्रवंतुनः ॥१॥ ॐ स्वस्ति
॥ आचार्यःअस्यब्रह्मचारिणःव्रतादेशकर्मणःसांगतासिध्यर्थंयथासंपन्नेनान्नेनस्मृ युक्तान्दशब्रा॰
ह्मणान्भोजयिष्येतेनश्रीकर्मांगदेवताःप्रीयंताम् ॥ अस्यकर्मणःसांगतासिध्यर्थंनानागोत्रेभ्यो-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ब्राह्मणेभ्योयथाशक्तिभूयसींदक्षिणांदातुमहमुत्सृजेतेनकर्मांगदेवताःप्रीयंतां ॥ यस्यस्मृत्या०
इतिवेदारंभः ॥ अथकेशांतंजन्मतःसप्तदशेवर्षेना चेतव्रतविसर्गातपूर्वंकालमपकृष्यशुभमुहुर्तेका
र्यःततोबहिःशालादिगोमय पिंडानिधानांतंपूर्वंचूडा करणवत ॥ एतान्विशेषः। अस्मिन्पुण्याहे-
अस्यब्रह्मचारिणःकेशांतमहंकरिष्ये । विकल्पेषुविशेषः ॥ त्रिरात्रब्रह्मचर्यं । अथवपनं । अत्र-
गौरेववरः ॥ मंत्रऊहविशेषः । उष्णेन०केशश्मश्रुवपअनेनमंत्रेणःकेशवपनं ॥ अथात्रनवनीत-
पिंडंघृतपिंडंवादध्नोवाप्रास्यातिततोआदायदक्षिणगोदानमुंदातिसावित्राप्रसूता० वर्चसे ॥ त्र्येण्या
शलल्याविनीय । त्रीणिकुशतरुणानिअंतर्दधात्योषधइति ॥ शिवोनामेति लोहक्षुरमादाय ।
निवर्तयामीतिप्रवपति ॥ ॐ येनाक्षुवपत्सविताक्षुरेणसोमस्यराज्ञोवरुणस्यविद्वान् । तेनब्रह्माणो
वपतेदमस्यायुष्यंजदाष्टिर्यथासत् ॥ सकेशानिप्रछिद्यानडुहेगोमयपिंडेप्रास्यत्युत्तरतोध्रियमाणे ।
एवंद्विरपरंतूष्णीं । इतरयोश्चोंदनादि ॥ पश्चिमोत्तरयोर्गोदानयोः उंदनादिएवमेवसकृन्मंत्रेणाद्वि
स्तूष्णीं ॥ क्षुरादानंतूष्णीमेव । पश्चिमगोदानछेदनेमंत्रविशेषः ॥ त्र्यायुषंजमदग्नेः०। तथाउत्तर-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

गोदाने । येनभूरिश्चरादिवंज्योक्चपश्चाधिसूर्यं । तेनतेवपामिब्रह्मणाजीवातवेजीवनायसुश्लो-
क्यायस्वस्तये ॥ त्रिःक्षुरेणशिरःप्रदक्षिणंपरिहरतिसमुखं । यत्क्षुरेणमज्जयतासुपेशसावप्तावपति-
केशांछिंधिशिरोमास्यायुःप्रमोषीर्मुखंसकृन्मत्रेणद्विस्तूष्णीं ॥ ताभिरद्भिःशिरःसमुद्य । नापिताय-
क्षुरंप्रयछति । अक्षएवंपरिवप । यथामंगलंकेशशेषकरणं ॥ कुलाचारंशिखास्थापन अनुगुप्तम-
र्तदंसकेशंगोमयपिंडंनिधायगोष्ठेपल्वलउदकांतेवाआचार्यायवरंददातिगांकेशांते । केशांतसमृध्य
र्थंगांचाआचार्यायतुभ्यमहमुत्सृजेततरम्ष्ट युक्तान्दशब्रह्मणान्भोजयिष्ये ॥ इतिकेशांतः ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ब्रह्मचारीगुरुंअर्घ्यदानेनसंपूज्याभिलषितंवरंगुरवेदत्वा ॥ तेनानुज्ञातोज्योतिःशास्त्रोक्तेशुभ-कालेआचार्यगृहेसमावर्तननामकर्मकुर्यात् ॥ ब्रह्मचारीकृतनित्यक्रियःकृतप्रातरग्निकार्यश्च० । ततः आचार्यआचम्यप्राणानायम्यदेशकालौस्मृत्वाअस्यब्रह्मचारिणःगृहस्थाश्रमांतरप्राप्तिद्वारा श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं समावर्तनाख्यंकर्म तथाचकेशांतकर्मएकतंत्रेणाहंकरिष्ये इतिसंकल्प्य ॥ ततः समावर्त्तनांगभूतंवैश्वदेवपूर्वकंमंडपप्रतिष्ठादिनांदीश्राद्धांतंकुर्यात् ॥ उपसंगृह्यगुरुं । उपसंग्रहणं तुदक्षिणोत्तरकराभ्यांगुरोर्दक्षिणोत्तरौचरणौस्पृष्ट्वाशिरसाचरणयोःस्पर्शनं ॥ भोआचार्यअहंस्नास्ये इत्यनुज्ञाप्रार्थितः । स्नाहीत्यनुज्ञांदत्वाब्रह्मचारिणे ॥ ततोगृहादुत्तरतःप्राच्यांवावस्त्रेणकटादि-नावापरिश्रितेपंचभूःसंस्कारपूर्वकंलौकिकाग्नेःस्थापनं ॥ ततोब्रह्मोपवेशनादिपात्रासादनेविशेषः ॥ उपकल्पनीयानि ॥ समिंधनकाष्ठानिदश । समिधस्तिस्रः । पर्युक्षणार्थमुदकं । हरितःकुशाः । अष्टौउदकुंभाः । वासोन्यत् । दधि । नापितः । स्नानार्थमुदकं । औदुंबरद्वादशांगुलदंत-काष्ठंब्राह्मस्य । दशांगुलंक्षत्रियस्य । अष्टांगुलंवैश्यस्य । उद्वर्त्तनद्रव्यं । चंदनं । अहतवाससी

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

। यज्ञोपवीते । पुष्पाणि । उष्नीषं । कर्णवेष्टकौ । कज्जलं । आदर्शः । नूतनछत्रं । उपानहौ । वैणावोदंडः । एतान्युपकल्प्य । ततःपवित्रकरणाद्याज्यभागांतांद्विकृत्व कुर्यात् ॥ ततः स्थाल्याज्येनैवजुहोति ॥ अनन्वारब्धः ॥ ॐ कारसर्वत्र । ॐ अंतरिक्षायस्वाहा । इदमंतरिक्षाय । ॐ वायवेस्वाहा इदंवायवे । ॐ ब्रह्मणेस्वाहा इदंब्रह्मणे । ॐ छंदोभ्यःस्वाहा इदंछंदोभ्यः । ॐ पृथिव्यैस्वाहाइदंपृथिव्यै । ॐ अग्नयेस्वाहा इदमग्नये । ॐ ब्रह्मणे॰इदंब्रह्मणे । ॐ छंदोभ्यः॰छंदोभ्यः ॥ ॐ दिवेस्वाहा इदंदिवे । ॐ सूर्यायस्वाहा इदंसूर्याय । ॐ ब्रह्मणे॰ ॐ छंदोभ्यः॰ इदंछंदोभ्यः । ॐ दिग्भ्यःस्वाहा । इदंदिग्भ्यः । ॐ चंद्रमसेस्वाहाइदंचंद्रमसे ॥ ॐ ब्रह्मणे॰ब्रह्म ॥ ॐ छंदोभ्यःस्वाहाइदंछंदोभ्यः । ॐ प्रजापतयेस्वाहाइदंप्रजापतये । ॐ देवेभ्यःस्वाहाइदंदेवेभ्यः । ॐ ऋषिभ्यःस्वाहाइदंऋषिभ्यः ॥ ॐ श्रद्धायैस्वाहाइदंश्रद्धायै । ॐ मेधायैस्वाहाइदंमेधायै । ॐ सदसस्पतयेस्वाहा । इदंसदसस्पतये । ॐ अनुमतयेस्वाहाइदंअनुमतये ॥ ॐ अन्वारब्धः । भूराद्यानवाहुतयोद्विःकृत्वः । ॐ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वा

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

हाइदमग्नयेस्विष्टकृते० ॥ अपउपस्पर्शः । ततः संस्रवप्राशनं । पवित्राभ्यांमार्जनं । अग्नौपवित्र-
प्रतिपत्तिः ॥ कृतस्यसमावर्तनांगतयाविहितं पूर्णपात्रंसदक्षिणाकंब्रह्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेप्रणीता
विमोकः ॥ ततोब्रह्मचारीउपसंग्रहणपूर्वकंगुरुंनमस्कृत्य ॥ परिसमूहनादित्र्यायुपकरणांतंसमिदा
धानंतास्मिन्नेवाग्नौकुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ अग्नेसुश्रइत्यादिनांब्रह्माऋषिः यजूंषि । अग्निर्देवतासमिं-
धनेविनियोगः ॥ दक्षिणहस्तेन । ॐ अग्नेसुश्रवःसुश्रवःसंमाकुरु ।१। यथात्वमग्नेसुश्रवःसुश्रवा
असि ॥२॥ एवमांहंसुश्रवःसौश्रवःसंकुरु ॥ ३ ॥ यथात्वमग्नेदेवानांयज्ञस्यानिधिपाअसि ॥ ४ ॥
एवमहंमनुष्याणांवेदस्यानिधिपोभूयासं ॥५॥ एतैःपंचभिर्मंत्रैःप्रतिमंत्रंइंधनप्रक्षेपेणअग्निंसंधुक्षय-
ति ॥ ततोग्निंप्रदक्षिणंदक्षिणहस्तेनअद्भिःपर्युक्ष्य । उत्थायतिष्ठन् । अग्नयेसमिधमितिमंत्रस्यप्र-
जा० आकृतिछंदः । समिद्देवता । समिदाधानेविनियोगः ॥ ॐ अग्नयेसमिध०एषातेअग्नेस-
मित्तयावासमुच्चयोवा ॥ एवंद्वितीयां । तथातृतीयां ॥ ततउपविश्यपूर्ववत् अग्नेसुश्रवइत्यादि-
भिरग्निंसंधुक्ष्यपर्युक्ष्य । तूष्णीपाणीप्रतप्यमुखंविमार्ष्टि । ॐ तनूपा०सप्तभिर्मंत्रैःप्रतिमंत्रंमुखंवि-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

मार्ष्टि । अत्रशिष्टाचारप्राप्ताःकेचनपदार्थालिख्यंते ॥ अंगानिचमइत्यादीनांप्रजाप०यजु० लिंगो० अंगाप्यायनेविनियोगः ॥ ॐ अंगानिचमआप्यायतामित्यनेनशिरःप्रभृतिपादांतंसर्वांगमालभते ॥ वांक्मआप्यायतामितिमुखं । प्राणश्चमआप्यायतामितिनासारंध्रेयुगपत् । चक्षुश्चमआप्यायतामितिचक्षुषीयुगपत् ॥ श्रोत्रंचमआप्यायतामितिदक्षिणश्रोत्रं तेनैवमंत्रेणवामं ॥ यशोबलंचमआप्यायतामितिमंत्रंपठेत् ॥ त्र्यायुषमितिनारायणऋषिः उष्णिक्छंदःअग्निर्देव० तिलककरणेविनियोगः ॥ ॐ त्र्यायुषंजमदग्नेःललाटे । ॐ कश्यपस्यत्र्यायुषमितिग्रीवायां । ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषंदक्षिणवामबाह्वोः ॥ ॐ तन्नोअस्तुत्र्यायुषमिहृदि ॥ इतिचतुर्भिर्मंत्रैःप्रतिमंत्रंत्र्यायुषाणिकरोति ॥ ततःआचार्यपुरुषैःपरिश्रितस्योत्तरभागेस्थापितानांदक्षिणोत्तरायतानांअष्टानांसमंत्रजलपूर्णकलशानांपूर्वभागेआस्तृतप्रागग्रकुशेषुउदङ्मुखस्थित्वा येप्स्वंतरितिप्रजापतिंऋषिःयजु०आपोदे०उदकग्रहणेविनियोगः ॥ ॐ येप्स्वंतरग्नयःप्रविष्टागोह्यउपगोह्योमयूखोमनोहास्खलुविरुजस्तनुदूषुरिंद्रियहातान्विजहामियोरोनस्तमिहगृह्णामीति मंत्रेणप्रथमकलशाद्दक्षिण-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

चुलुकेनोदकमादायतेनोदकेनात्मनःशिरःप्रदेशादिसर्वांगमभिषिंचतिमंत्रेण ॥ तेन्मामामितिमंत्र
स्यप्रजाप०यजु०आपादे०अभिंषेचनेविनि० ॥ ॐ तेनमामभिषिंचामिश्रियैयशसेब्रह्मणेब्रह्मव-
र्चसायेति ॥ पुनर्यैप्स्वंतरितिद्वितीयादुदकुंभादुदकंगृहीत्वा ॥ येनाश्रियमितिप्रजापति०यजु०आ
पोदे०अभिषेचनेवि० । ॐ येनश्रियमकृणुतांयेनावमृशतांसुरांयेनाक्ष्यावभ्यषिंचताम् ॥ यद्वांत
दश्विनायशइतिमंत्रेणपूर्ववदात्मानंबटुरभिषिंचति ॥ पुनर्यैप्स्वंतरितिमंत्रेणतृतीयोदकुंभादुदकं-
गृहीत्वा । आपोहिष्ठेतितिसृणांसिंधुद्वीपोगायत्र्यापोदे०अभिषेचनेवि० ॥ ॐ आपोहिष्ठेतिमंत्रे-
णपूर्ववदात्मानंबटुरभिषिंचति । पुनर्यैप्स्वंतरितिमंत्रेणचतुर्थोदकुंभादुदकंगृहीत्वा ॥ ॐ योवः
शिवतमेतिपूर्ववदात्मानमभिषिंचति ॥ पुनर्यैप्स्वंतरितिमंत्रेणपंचमादुदकुंभादुदकंगृहीत्वा ॥
ॐ तस्माअरंगमेतिमंत्रेणपूर्ववदात्मानंबटुरभिषिंचति ॥ त्रिभिस्तूष्णीमितरैः ॥ उदुत्तममितिमे-
खलामुन्मुच्य । उदुत्तममितिशुनःशेपऋषिःत्रिष्टुप्०वरुणो०मेखलान्मोकेवि० । ॐ उदुत्तमं-
स्यामेतिमंत्रेणमेखलांशिरोमार्गेणनिःसार्यभूमौप्रक्षेपः ॥ ततःकृष्णाजिनदंडयोर्निधानंतूष्णीं ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

वासोन्यत्परिधायाचम्यआदित्यमुपातिष्ठते ॥ उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रोमरुद्भिरस्थात्प्रातर्यावभिरस्था-
द्दशसनिरसिदशसनिंमाकुर्वाविदन्मागमयोद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रोमरुद्भिरस्थाद्दिवायावभिरस्थाछतस
निरसिशतसानिम्माकुर्वाविदन्मागमयोद्यन्भ्राजभृष्णुरिंद्रोमरुद्भिरस्थाच्छायंयाव भिरस्थासहस्रस-
निरसिसहस्रसनिंमाकुर्वाविदन्मागमयेत्यादित्योपस्थानमंत्रः ॥ दधितिलान्प्राश्य ॥ दक्षिणहस्त-
मध्यगतसोमतीर्थेनप्राश्याचम्य ॥ जटालोमनखानिवापयित्वास्नात्वा ॥ आचम्य ॥ औदुंबरेण-
दंतानुधावेत् ॥ अन्नाद्यायेतिआथर्वण ऋषिः । अनुष्टुप्छंद । सोमोदेवता । दंतधावनेविनियोगः ॥
ॐ अन्नाद्यायव्यूहध्वंर्ढसोमोराजायमागमत् ॥ समेमुखंप्रमार्क्ष्यतेयशसाचभगेनचेति ॥ अनेन-
मंत्रेणदंतान्क्षालयित्वा ॥ द्वादशगंडुषान्कृत्वाचम्य ॥ सुगंधिद्रव्यमिश्रितेनयवादिचूर्णेनतैल-
समन्वितेनशरीरमुध्दृत्यपुनःसशिरस्कंस्नात्वाचम्य ॥ चंदनाद्यनुलेपनंपाणिभ्यांगृहीत्वामुखना-
सिकांच ॥ प्राणापानावितिप्रजापतिः । यजुछंदः । प्राणापानौदे॰चंदनोपग्रहणेविनियोगः ॥
ॐ प्राणापानौमेतर्प ॥ येत्यनेनमंत्रेणानुलिंपेत् ॥ ततःपाणीप्रक्ष्याल्यतदुदकमंजलिनादाय

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

अपसव्यंकृत्वादक्षिणामुखोभूत्वादक्षिणस्यांदिशि । पितर शुंधध्वमितिप्रजापति॰यजु अश्विसरस्वतींद्रादे॰तर्पणेवि॰ ॥ ॐ पितर शुंधध्वमित्यनेनमंत्रेणभूमौनिषिंचेत्पितृतीर्थेण ॥ अथयज्ञोपवीतीभूत्वोदकमुपस्पृश्य ॥ ततश्चंदनेनात्मानंतूष्णीमनुलिप्य । सुचक्षाअहमितिप्रजापति॰ यजु॰आशीर्दे॰जपेवि॰ ॥ ॐ सुचक्षाअहमक्षीभ्यांभूयासदंसुवर्चामुखेनसुश्रुतकर्णाभ्यांभूयासमितिमंत्रजपः ॥ अहतेवाससीपरिधानं । अरजकधौतस्य ॥ परिधास्याइतिमंत्रस्यआलंबायनऋषि॰पांक्ति॰वासोदेवतावस्त्रपरिधानेवि॰ ॥ ॐ परिधास्यैयशोधास्यैदीर्घायुत्वायजरदष्टिरस्मिशतंचजीवामिशरदःपुरूचीरायस्पोषमभिसंव्ययिष्यइतिमंत्रेण । द्विराचम ।

धारयेद्वैणवींयष्टिंसोदकंचकमंडलुं ॥ यज्ञोपवीतवेदंचशुभेरौक्मेचकुंडलइतिमनुनाब्रह्मचर्यसमाप्तस्ययज्ञोपवीतधारणंस्नातकस्य पुनर्विधानात् ॥ द्वितीयंयज्ञोपवीतधारणंप्राप्तं ॥ तच्चपूर्वधृतेसतीनसंभवति ॥ अतस्तदुत्तार्यजलेप्रक्षिप्य ॥ परंनवंउक्तलक्षणमुपवीतंत्रिसरंद्वयंयज्ञोपवीतमित्यादिनामंत्रेणपरिधाय ॥ यज्ञोपवीतस्यैकदेशविनाशेयातयामत्वं ॥ अतोनतस्यनवेनसंयोगः

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ एकदेशविनाशेपिमंत्रादिकसंस्कारस्यविनष्टत्वात् ॥ अत्रावसरेयज्ञोपवीतद्वयंपरिधानमंत्रेण ॥ आचमनं ॥ २ ॥ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

अथोत्तरीयं ॥ यशसामेतिआथर्वणऋषिः । पंक्तिछंदः । लिंगोक्तादेवता ॥ उत्तरीयवस्त्रधारणेविनियोगः ॥ ॐ यशसामाद्यावापृथिवीयशसेंद्रायबृहस्पती ॥ यशोभगश्चमाविदद्यशोमाप्रतिपद्यतामितिमंत्रेणोत्तरीयं ॥ एकंचेत्पूर्वस्योत्तरवर्गेणप्रच्छादयीत ॥ तत्रापिमंत्रोभवतिक्रियोत्तरत्वात् द्विराचमनं ॥ सुमनसःप्रतिगृह्णाति ॥ याऽआहरज्जमदग्निरितिमंत्रस्य भरद्वाजऋषिः ॥ अनुष्टुपछंदः ॥ सुमनसोदेवता ॥ पुष्पमालाधारणेविनियोगः ॥ ॐ याआहरज्जमदग्निः श्रद्धायैकामायेंद्रियायताअहंप्रतिगृह्णामियशसाचभगेनचेतिमंत्रेणपुष्पाणि अन्यतःप्रतिगृह्य ॥ अथावबध्नीते ॥ यद्यशोप्सरसेतिभरद्वाजऋषिः अनुष्टुपछंदः ॥ सुमनसोदेवता । शिरसिपुष्पमालाबंधनेविनियोगः ॥ ॐ यद्यशोप्सरसामिंद्रश्चकारविपुलंपृथुतेनसंग्रथिताःसुमनसऽआबध्नामियशोमयीतिमंत्रेणशिरसिबध्वा ॥ उष्णीषेणशिरोवेष्टयते ॥ युवासुवासाइतिवि-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

श्वामित्रऋषिः त्रिष्टुपछंदः । सूर्योदेवता । शिरोवेष्टनबंधनेविनियोगः ॥ ॐ युवासुवासाःप-
रिवीतऽआगात् सउश्रेयान्भवतिजायमानः ॥ तंधीरासःकवयऽउन्नयंतिस्वाध्योमनसादेवयंतइ-
तिमंत्रेण ॥ अलंकरणमितिभरद्वाजऋषिः ॥ उष्णिक्छंदः । अलंकरणोदेवता ॥ अलंकरण-
धारणेविनियोगः ॥ ॐ अलंकरणमसिभूयोलंकरणं ॥ भूयादितिकुंडलधारणंमंत्रावृत्त्यादक्षिण-
कर्णेवामकर्णेच ॥ वृत्रस्येतिप्रजा० गायत्री० अंजनोदेवताचक्षुरंजनेविनि० ॥ ॐ वृत्रस्या-
सिकनीनकश्चक्षुर्दाअसिचक्षुर्मेदेहिइति ॥ ततोवामंमंत्रावृत्तिः । रोचिष्णुरसीत्यात्मानमा-
दर्शेप्रेक्षते ॥ रोचिष्णुरितिमंत्रस्यसूर्यऋषिः । यजुःआशीर्दे० आदर्शावेक्षणवि० ॥ ॐ
रोचिष्णुरसिइत्यात्मानमादर्शेविलोक्य ॥ छत्रंप्रतिगृह्णाति । बृहस्पतेरितिगौतम ऋषिः निचृद्गायत्री-
छं०छत्रोदेवता । छत्रग्रहणेवि० । ॐ बृहस्पतेश्छदिरसिपाप्मनोमामंतर्धेहिइ येनेनान्यस्मात्छत्रं-
प्रतिगृह्णाति ॥ प्रतिष्ठेस्थइतिविश्वामित्रऋषिः । यजु०लिंगोक्तादेवता । उपानहौधारणेविनियो-
गः ॥ ॐ प्रतिष्ठेस्थोविश्वतोमापातमित्युपानहौप्रतिमुंचेतपादयोर्युगपत् ॥ विश्वाभ्यइतिमंत्रस्य

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

याज्ञवल्क्यऋषिःत्रिष्टुप्०दंडोदेवता । दंडग्रहणेवि० ॥ विश्वाभ्योमानाष्ट्राभ्यस्परिपाहिसर्वतइ-
तिवैणवदंडमादत्ते ॥ कृतस्यसमावर्तनकर्मणःसमृद्ध्यर्थंयथासंपन्नेनान्नेनब्राह्मणानहंभोजयिष्येते-
नश्रीकर्मांगदेवताःप्रीयंताम् ॥ कृतानांउपनयनादिसमावर्त्तनांतकर्मणांसांगतासिद्ध्यर्थंहिरण्य-
निष्क्रयभूतंद्रव्यंआचार्यायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ तथाचनानागोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योयथाशक्तिभूयसीं
दक्षिणांदातुमहमुत्सृजे । तेनश्रीकर्मांदेवताःप्रीयंताम् ॥ ततोभिषेकमांगल्याशीर्वादः ॥ अत्रमातृपू
जादिब्रह्मणेदक्षिणादानांतंआचार्यकृत्यं । कलशाभिषेकादिदंडग्रहणांतंस्नानकर्तुः ॥ दंतप्रक्षाल
नादीनिनित्यमपिवासस्छत्रोपानहश्चापूर्वाणिचेन्मंत्रः ॥ पश्चाद्वक्ष्यमाणलक्षणेनमधुपर्केणगुरुस्तं
पूजयेत् ॥ तांरात्रिंगुरुसंनिधौवसेत् ॥ अनुज्ञातोगछेद्वा ॥ अथस्नातस्यसमावर्तनप्रभृतीनावत्
गृहस्थाश्रमपर्यंतधर्मान्वक्ष्ये ॥ नृत्यगीतवादित्राणिनकुर्यात् ॥ क्रियमाणानिनगछेत्क्षेमेसानिरा-
त्रौग्रामांतरंनगछेत्नधावेच्च ॥ कूपावेक्षणवृक्षारोहणफलप्रपतनानिनकुर्यात् ॥ अमार्गेणनगछेत्
॥ नग्नौनस्नायात् ॥ विषमंनलंघयेत् । अश्लीषंनवदेत् । उद्यंतमादित्यमस्तमयंतंनेक्षेत् ॥ वा-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥१०१॥

रिस्थमादित्यमाकाशमध्यास्थितंनपश्येत् । नभिक्षेतदेवेवर्षते । अप्रावृतोव्रजेदयंमेवज्रःपाप्मान-
मपहनत्अनेनव्रजेत् ॥ उदकेआत्मानंनेक्षेत् । अजातलोम्नींप्रमदांतथैवपुरुषाकृतिंषंढंचनोपग
छेत् ॥ षण्मासावधिगर्भिणींविजन्येतिब्रूयात् ॥ सकुलमितिनकुलंब्रूयात् ॥ मणिधनुरितींद्रधनुः
। धीयमानांगांपरस्मैनाचक्षीत । कपालमितिभगालं । सस्यमालिन्यांभूमौअन्यस्यामनंतर्हिता-
यांचउत्सर्पस्तिष्ठन्मूत्रपुरीषेकुर्यात् ॥ स्वयंप्रशीर्णेनकाष्ठादिनागुदंप्रमृजीत ॥ नीलयादिरक्तेनना-
च्छादयीत ॥ दृढव्रतोभवेत् वधात्सर्वान्रक्षेत् ॥ सर्वेषांमित्रमिवभवेत् ॥ एतेयावज्जीवंस्नातक-
धर्माः ॥ अधुनातस्यैवत्रिरात्रधर्मास्तेउच्यंते ॥ मांसाशनंनकुर्यात् ॥ मृन्मयपात्रेणोदकंपि-
बेत् ॥ स्त्रीशूद्रशवकाकशूदर्शनंनकुर्यात् । नस्त्रियादिभिःसहसंभाषेत ॥ शवशूद्रसूतकान्ना-
निचनाद्यात् ॥ मूत्रपुरीषष्ठीवनंचातपेनकुर्यात् ॥ सूर्याच्चात्मानंनांतर्दधीत ॥ तप्तेनोदकार्थानकु-
र्वीत ॥ अवज्योत्यरात्रौभोजनं । सत्यवदनमेववा ॥ दीक्षितोप्यातपादीनिकुर्यात्प्रवर्ग्यवांश्चेत्
इतिस्नातकस्यत्रिरात्रधर्माः ॥ आदिष्टिनोदकंकुर्यादाव्रतस्यसमापनात् ॥ समाप्तेतूदकंदत्वात्रि

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

रात्रमशुचिर्भवेदिति।विज्ञानेश्वरः ॥ आदिष्टीब्रह्मचारी ॥ आचार्यायसंकल्पपूर्वकंवस्त्रयुग्ममुष्णी षंमणिकुंडलमुपानहौछत्रंचदद्यात् ॥ ततःस्वस्वकुलाचारप्रासंकुर्यात् ॥ ततःकृताचारोगृहंगच्छेत्॥ ततःआचार्यंप्रणम्यवृद्धांश्चप्रणमेत् ॥ ततस्तस्मिन्दिनेनिषिद्धवर्जमभीप्सितमन्नंभुंजीत ॥ इति-श्रीसंस्कारमंजर्यांसूत्रानुसारीउपनयनादिसमावर्तनांतप्रयोगः ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ अथ विवाहः ॥ तत्रपूर्ववाग्दानं ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

तत्रकन्यादाताप्राङ्मुखउपविश्यदेशकालौस्मृत्वाकरिष्यमाणविवाहांगभूतंवाग्दानमहंकरिष्येतदंगभूतंगणपतिपूजनंचकरिष्ये ॥ गंधादिभिर्गणपतिंपूजयेत् । ततोवरपितरमुदङ्मुखमुपवेश्य । तंगंधादिभिःपूजयित्वा । कन्यापितःहरिद्राखंडपंचपूगीफलानिचगृहीत्वा ॥ अमुकगोत्रोत्पन्नांअमुकप्रवरांअमुकनाम्नींइमांकन्यांज्योतिर्विदादिष्टेमुहूर्तेदास्येवाचासंप्रददे ॥ अव्यंगेपतितेल्कीबेदशदोषविवर्जिते ॥ इमांकन्यांप्रदास्यामिदेवाग्निद्विजसंन्निधौ ॥ वाचादत्तामयाकंन्यापुत्रार्थेस्वीकृतात्वया ॥ कंन्यावलोकनविधौनिश्चितस्त्वंसुखीभव ॥ वरपिताचब्रूयात् ॥ वाचादत्तात्वयाकन्यापुत्रार्थेस्वीकृतामया ॥ वरावलोकनाविधौनीश्चितस्त्वंसुखीभव ॥ ततोवरपित्रादिगंधाक्षतवस्त्रयुग्मभूषणपुष्पादिभिःकंन्यांयथाचारंपूजयेत् ॥ ततोब्राह्मणाआशीर्मंत्रान्पठेयुः ॥ इतिवाग्दानं ॥

अथविवाहात्पूर्वकृत्यं । तत्रकंन्यापितावासिष्ठोक्तप्रकारेणश्रीधरीवेदीगृहान्निर्गमोत्तरेसिकतोपकीर्णांविवाहवेदींकारयेत् ॥ ततःसंकल्पंकुर्यात् ॥ तत्रपूर्वाह्णेसपत्नीकःशुभासनेउपविश्यआचम्यप्राणानायम्य । इष्टदेवताभ्योनमःगुरुभ्योनमःगुरुगणपतीन्नत्वा ॥ देशकालौसंकीर्त्यअस्मिन्पुण्याहेअस्याःममकुमार्याःश्वःकरिष्यमाणविवाहांगभूतंगणपतिपूजनं स्वस्तिवाचनंमंडपप्रतिष्ठांमातृकापूजनंवसोर्द्धाराआयुष्यमंत्रजपंनांदीश्राद्धमहंकरिष्ये ॥ श्राद्धांतंसमाप्य ॥ ग्रहशां-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

तिंकृत्वा ॥ एवंवरपितास्वगृहेकुर्यात् । ततोवरःसुमुहूर्तेशांतिपाठतूर्यघोषादियुक्तःपित्रादीन्नम-
स्कृत्ययथाविभवंअश्वादियानमारुह्यकन्यापितुर्गृहंगच्छेत् । पुरंध्रीजनैःनीराजितोअंतरगृहंप्रविश्य
प्राङ्मुखस्तिष्ठेत् ॥ ततोकन्यापितागणपतिस्मरणपूर्वकं देशकालौसंकीर्त्यकरिष्यमाणविवाहांग
भूतंवरवरणंकरिष्ये । ततोवरस्यपादौप्रक्षाल्यचंदनपुष्पादिभिःपूजनंकुर्यात् ॥ अमुकगोत्रोत्पन्नं
अमुकप्रवरंअमुकवेदांतर्गत अमुकशाखाध्यायिनंएभिःपूगीफलाक्षततांबूलद्रव्यवासोभिःकन्या-
दानार्थंत्वामहंवृणे ॥ वृतोस्मीतिप्रतिवचनं । व्रतेनदीक्षाऽप्यते ॥ उपवीतंफलंपुष्पंवासांसिवि-
विधानिच ॥ देयंवरायवरणेकन्याभ्रात्रादिजायवै ॥ पश्चात्कन्यापितामधुपर्केणतमर्चयेत् । उ-
दङ्मुखोपविष्टसपत्नीककन्यापितादेशकालौसंकीर्त्यममसमस्तपितॄणांनिरतिशयानंदब्रह्मलोका-
वाप्त्यादिकंन्यादानकल्पोक्तफलावाप्तये अनेनवरेणअस्यांकन्यायांउत्पादयिष्यमाणसंतत्याद्वा-
दशावरान् द्वादशपरान्पुरुषांश्चपवित्रीकर्तुंआत्मनश्चश्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतयेब्राह्मविवाहविधिना
कन्यादानमहंकरिष्ये । तदंगत्वेनगृहागतंवरंमधुपर्केणार्चयिष्ये ॥ अथमधुपर्कः ॥ आसनमा-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

हार्याह ॥ साधुभवानास्तामर्चयिष्यामोभवंतं ॥ अर्चयेतिवरः ॥ विष्टरोविष्टरोविष्टरःप्रतिगृह्य-तामित्यन्योब्रूयात् ॥ तंविष्टरंकन्यापितावरायप्रयच्छेत् । तूष्णींवरःप्रतिगृह्णीयात् ॥

विष्टरलक्षणंपरिशिष्टे ॥ प्रादेशमात्रंत्रिवृतंकौशंवाकाशनिर्मितं ॥ विष्टरंऋषयःप्राहुरभावेवल्वजादिभिः ॥ यज्ञवास्तुनिसृष्टौचस्तंबेदर्भचटौतथा ॥ दर्भसंख्यानविहिताविष्टरास्तरणेषुच ॥ त्रिंशद्दर्भदलाकारंबाहुमात्रप्रमाणतः॥ वर्त्तुलंवेणिकाकारंविष्टरंपरिकीर्तितं ॥ १ ॥

उदग्रग्रमासनेनिदध्यात्तदुपरिवर्ष्मोस्मीतिमंत्रेणोपविशेत् ॥ वर्ष्मोस्मीतिमंत्रस्यआथर्वणऋ-षिः । अनुष्टुप्छंदःविष्टरोदेवता । विष्टरोपवेशनेविनियोगः ॥ ॐ वर्ष्मोस्मिसमानानामुद्यता मिवसूर्यः । इमंतमभितिष्ठामियोमाकश्चाभिदासतिइति ॥ एवंपादार्थमुदकंपादार्थमुदकंप्रतिगृ-ह्यतामित्युदकंज्ञापयेदन्यः ॥ तदुदकंकन्यापितुर्हस्ताद्वरस्तूष्णींगृहीत्वा ॥ विराजोदोहइतिमंत्र-स्यप्रजापतिर्ऋषिः । यजुः । आपोदेवता । पादप्रक्षालनेविनियोगः ॥ ॐ विराजोदोहोसि-विराजोदोहमशीयमयिपाद्यायैविराजोदोह ॥ इतिमंत्रेणदक्षिणपादंप्रक्षालयेत्स्वयं ॥ एवंवामपा दप्रक्षालनंचमंत्रेणैव ॥ विष्टरो३प्रतिगृह्यतामितिब्रूयादन्यः । तूष्णींकन्यापितादत्तंवरोगृहीत्वा-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

भूमौउत्तराग्रंनिधाय । ॐ वर्ष्मोऽस्मिसमानानामुद्यतामिवसूर्यः । इमंतमभितिष्ठामियोमाकश्चा
भिदासति ॥ अनेनमंत्रेणतदुपरिपादौनिदध्यात् ॥ अर्घो३प्रतिगृह्यतामित्यन्योब्रूयात् ॥ कन्या
पित्रादत्तंवरः ॥ आपस्थइतिप्रजापतिर्ऋषिः । यजुः । आपोदेवता । अर्घग्रहणेविनियोगः ॥
ॐ आपस्थयुष्माभिःसर्वान्कामानवाप्नवानिइतिगृह्णीयात् ॥ ततोर्घंशिरसाभिवंद्यप्राग्वोदग्वानि-
नयेत्मंत्रेण समुद्रंवइतिमंत्रस्यआथर्वणऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । आपोदेवता । अभिमंत्रणे-
विनियोगः ॥ ॐ समुद्रंवःप्रहिणोमिस्वांयोनिमभिगछत । अरिष्टास्माकंवीरामापरासेचिमत्पय
इतिनिनयनं ॥ आचमनीयमुदकमाचमनीयं३प्रतिगृह्यतामित्यन्योब्रूयात् । ततःकन्यापित्राद-
त्तंवरआचामति ॥ आमागन्यशसेतिमंत्रस्यपरमेष्ठीऋषिः । बृहतीछंदः । आपोदेवता । आच
मनेविनियोगः ॥ ॐ आमागन्यशसासंसृजवर्चसातंमाकुरुप्रियंप्रजानामाधिपतिंपशूनामरिष्टं
तनूनामितिमंत्रेणद्विस्तूष्णीं ॥ ततोमधुपर्को३कःप्रतिगृह्यतामित्यन्योब्रूयात् ॥ वरःकन्यापित्रा
हस्तस्थंमित्रस्यत्वेतिप्रतीक्षते ॥ मित्रस्येतिबृहस्पतिऋषिः । यजुः । मधुपर्कोदेवता । मधुप-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

कविक्षणेवि० । ॐ मित्रस्यत्वाचक्षुषाप्रतीक्षे। देवस्यत्वेतिप्रजापतिर्ऋषिः। गायत्रीछंदः॥ सवि- तादेवता । मधुपर्कग्रहणेविनियोगः ॥ ॐ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि । इतिमंत्रेणवरोदक्षिणहस्तेगृहीत्वासव्यहस्तेनिदध्यात् । ततोवरोदक्षिणहस्तानामि कयामधुपर्कंप्रदक्षिणंसकृदालोडयेत् ॥ नमःश्यावेतिप्रजापतिर्ऋषिः । यजुः । सवितादेवता । त्रिरालोडनेविनियोगः॥ ॐ नमश्यावास्यायान्नशनेयत्तआविद्धंतत्तेनिष्कृंतामिइतिमंत्रेणानामि- कांगुष्ठाभ्यांप्रागुदग्वातूष्णींसकृत्प्रक्षिपेत् ॥ एवमालोडनमंत्रेणपुनर्द्विवारंकुर्यात् ॥ तूष्णीमेवनि रुक्षणंप्रत्यालोडनं॥ ततोमधुपर्कंप्राश्नाति। यन्मधुनइतिकुत्सऋषिः । जगतीछंदःमधुपर्कोदेवता। मधुपर्कप्राशनेविनि० ॥ ॐ यन्मधुनोमधव्यंपरमंरूपमन्नाद्यंतेनाहंमधुनोमधव्येनपरमेणरूपे- णान्नाद्येनपरमोमधव्योन्नादोसानि इतिमंत्रेणत्रिवारंप्राशयेत् ॥ भूमौपात्रंनिधायप्रतिप्राशनमं- त्रस्यावृत्तिरुच्छिष्टस्यापि ॥ उच्छिष्टशेषंप्रागसंचरेक्षिपेत् ॥ ततःशुध्यर्थंद्विराचमनंप्राणान्संस्पृशेत् ॥ ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः । ॐ वाङ्मआस्येस्तु । इतिमुखमालभेत् ॥ ॐ नसोर्मेप्राणोस्तुइ-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

तितर्जन्यंगुष्ठाभ्यांदक्षिणोत्तरेनासारंध्रे ॥ ॐ अक्ष्णोर्मेचक्षुरस्त्वित्यनामिकांगुष्ठाभ्यामक्षिणी ॥
कर्णयोर्मेश्रोत्रमस्तुइतिदक्षिणकर्णे । पुनःमंत्रावृतिःवामकर्णे ॥ ॐ बाह्वोर्मेबलमस्तुकराग्रेणभु-
जमूलेचद्वये ॥ ॐ ऊर्वोर्मेओजोस्तुइतिकराग्रेणउरुद्वयंसकृत् ॥ ॐ अरिष्टानिमेंगानितनूस्त
न्वामेसहसंत्विति सर्वांगानि ॥ ॐ मातारुद्राणांदुहितावसूनांदस्वसादित्यानाममृतस्यनाभिः ।
प्रनुवोचंचिकितुषेजनायमागामनागामदितिंवधिष्ठ । ममचामुष्यचपाप्माहतः । ॐ उत्सृजततृ
णान्यत्विति ब्रूयात् ॥ इतिमधुपर्कः ॥ ततःकन्यापितावरायवाससीदद्यात् ॥ वरःपरिधास्यइति-
मंत्रस्यआलंबायनऋषिः । पंक्तिछंदः । वासोदेवता । वस्त्रपरिधानेविनि० ॥ ॐ परिधास्यय-
शोधास्यैदीर्घायुत्वायजरदष्टिरस्मि । शतंजीवामिशरदःपुरूचिरायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये ॥ इतिमं
त्रेणवस्त्रंपरिदधीत ॥ अथोत्तरीयं ॥ यशसामेतिआथर्वणऋषिःपंक्तिश्छंदःलिंगोक्तादेवता ।
उत्तरीयधारणेवि० ॥ ॐ यशसामाद्यावापृथिवीयशसेंद्राबृहस्पतीयशोभगश्चमाविदद्यशोमाप्र-
तिपद्यताम् ॥ इत्युत्तरीयं ॥ यज्ञोपवीतइतिपरमेष्ठीऋषिः ॥ त्रिष्टुप्छंदःलिंगोक्तादेवता । उपवी-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

तधारणेविनि० ॥ ॐ यज्ञोपवीतंपरमं०यज्ञोपवीतमसियज्ञस्यत्वायज्ञोपवीतेनोपनह्यामिइतिधार-
येत्ततोद्विराचमनं ॥ ततःकन्यापित्रादत्तेनगंधेनानुलिप्य ॥ सुचक्षाअहमितिप्रजापतिर्ऋषिः ।
यजुः । आशीर्देवता । जपेविनियोगः ॥ ॐ सुचक्षाअहमक्षीभ्यांभूयासंसुवर्चामुखेनसुश्रु-
त्कर्णाभ्यांभूयासम् ॥ याआहरइतिभरद्वाजऋषिः । अनुष्टुप्छंदः सुमनसोदेवतापुष्पग्रहणेवि०
॥ ॐ याआहरज्जमदग्निःश्रद्धायैकामायेंद्रियायताअहंप्रतिगृह्णामियशसाचभगेनच।तिगृहीत्वा ॥
यद्यशइतिभरद्वाजऋषिः अनुष्टुप्छंदः । सुमनसोदेवतापुष्पबंधनेवि० यद्यशोप्सरसामिंद्रश्चकार
विपुलंपृथुतेनसंग्रथिताःसुमनसआबध्नामियशोमयीतिमंत्रेणवरःपुष्पबंधनं । स्वशिरसिबध्नाति॥
तेनैवदत्तौकर्णवेष्टकौ ॥ अलंकरणमसीतिमंत्रस्यभरद्वाजऋषिः । उष्णिक्छंदः । अलंकरण-
देवता । अलंकरणधारणेविनियोगः ॥ ॐ अलंकरणमसिभूयोलंकरणंभूयादितिदक्षिणसव्यक
र्णयोःक्रमेणधारयेत् ॥ ततःकर्ताअयंवोधूपःसुधूपः । अयंवोदीपःसुदीपः । आचारात्स्वपादौ-
प्रक्षाल्य । आचमनंप्राणायामः । स्वस्तिनेतिदिग्बंधः ॥ आयातुउपकल्पितोपहाराणांपवित्रता-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

स्तु । देशकाल० अस्तु । अत्राद्येतिकन्यादानप्रारंभनिमित्तंवरणांगार्चनमहंकरिष्ये ॥ प्रजा-
पतिरूपिणेवरायइदमासनं । यथादत्तंगांधर्ववानस्पत्यानिगंधपुष्याणिसौर्याणिकास्यपात्राणिरौद्रा
॥१११॥ णितास्रपात्राणिबार्हस्पत्येवाससीप्राजापत्येह्युपवीते आग्नेयानिकुंडलमुद्रिकालंकरणानिवरणांगम
धुपर्कार्चनसमृद्ध्यर्थंप्रजापतिरूपिणेवरायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ इदमर्चितंवोज्योतिसूर्योज्योतिपुष्पं
। अस्यवरणांगार्चनविधे०स्तु ॥ यथादास्यमानंमनःसंकल्पितंभोज्नंदक्षिणामुखवासतांबूलंप्र-
जापतिरूपिणेवरायाहंसंप्रददे सुप्रोक्षितादिकरणंतिलकमंत्राशीर्वादःअद्यपूर्वोच्चरित०मधुपर्कवर-
णांगार्चनविधेःपरिपूर्णतास्तु ॥ इतिमधुपर्कः ॥ अथचतुर्हस्ताविवाहवेदीमध्येईशान्यांवाहस्त-
मात्रंस्थंडिलंकृत्वा । आचम्यप्राणानायम्य । देशकालौसंकीर्त्यअस्मिन्पुण्याहेधर्मार्थकामप्र-
जासिध्यर्थंप्रजापतिप्रीयतेदारापरिग्रहणमहंकारिष्ये ॥ तदंगभूतमग्निस्थापनंचकरिष्ये दर्भैःपरि-
समुह्य३गोमयेनोपलिप्य३कुशेनोल्लिख्य३अनामिकांगुष्टेनोधृत्य३ उदकेनाभ्युक्ष्य३तत्रयोजकना-
मानमग्निंस्थापयामीतिसंस्थाप्य ॥ पश्चादग्नेःकटंस्थापयेत् ॥ मातुलादिनाकन्यानयनं ॥ साच

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

प्रत्यंङ्मुखीउपविशति । वरःप्राङ्मुखश्च ॥ तयोर्मध्येवस्त्रेणांतर्द्धानं ॥ अथैनांवासःपरिधापयति-जरांगच्छेतिवरः ॥ जरांगच्छेतिमंत्रस्यप्रजापतिर्ऋषिः ॥ त्रिष्टुप्छंदः ॥ वासोदेवता ॥ वस्त्रपरिधानेविनियोगः ॥ जरागच्छपरिधत्स्ववासोभवाकृष्टीनामभिशस्तिपावा ॥ शतंचजीवःशरदः सुवर्चारयिंचपुत्राननुसंव्ययस्वायुष्मतीदंपरिधत्स्ववासऽइति ॥ अथोत्तरीयं ॥ याऽअकृन्तन्निति प्रजापतिर्ऋषिःत्रिष्टुप्छंदः ॥ वासोदेवता ॥ उत्तरीयपरिधानेविनियोगः ॥ ॐ याकृन्तन्नवयं याअतन्वत ॥ याश्चदेवीस्तंतूनभितोततन्थ॥ तास्त्वादेवीर्जरसेसंव्ययस्वायुष्मतीदंपरिधत्स्वासः॥ इत्युत्तरीयंच ॥ अथकन्यापितावधूवरौप्रतिपरस्परंसमंजेथामितिब्रूयात् ॥ समंजंत्वि त्याथर्वणऋषिः ॥ अनुष्टुप्छंदः ॥ लिंगोक्तादेवता ॥ समंजनेविनियोगः ॥ ॐ समंजंतुविश्वेदेवाः। समापोहृदयानिनौ ॥ सम्मातरिश्वासंधातासमुदेष्ट्रीदधातुनौइतिपरस्परंसन्मुखंगच्छतः ॥ वरस्यैवमंत्रपाठः ॥ अथकन्यादानम् ॥ कन्यापितापत्नीसहितउदङ्मुखोपविश्य ॥ आचम्यप्राणायम्य ॥ अत्राद्येति० ॥ कन्यादानांगप्रवरवाचनब्राह्मणपूजनमहंकरिष्ये ॥ यथासंभवंप्रवरवा-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

चकंसंपूज्य॥वरस्यप्रवरान्पूर्वान्वाचयेच्चयथाविधि ॥ अमुकगोत्रस्य । अमुकप्रवरस्य । अमुक-
वेदशाखाध्यायिनः । अमुकशर्मणःप्रपौत्राय ॥ अमुकगो० । अ० प्र० पौत्राय । अमुकगो.
। अ० प्र० । अमु०वेद० । अमुकश०पुत्राय ॥ कन्यापक्षे । अमुकगोत्रस्य । अमुकप्रवरस्य
। अमुकवेदशाखाध्यायिनः ॥ अमुकशर्मणःप्रपौत्रीम् ॥ पौत्रीं ॥ अमु०श०पुत्रीम् ॥ अमु-
कगोत्राय । अमुकप्रवराय । अमुकवेदशाखाध्यायिने ॥ अमुकशर्मणेवराय ॥ अमुकगोत्रो-
त्पन्नाम् । अमुकप्रवराम् । अमुकवनाम्नींप्रजापतिदैवत्यां ॥ इमांकन्यां । ममसमस्तपितृणांनिर-
तिशयानंदब्रह्मलोकावाप्त्यादिकन्यादानकल्पोक्तफलावाप्तये । अनेनवरेणअस्यांकन्यायांउत्पा-
दयिष्यमाणसंतत्याद्वादशावरान् । पुरुषांश्चपवित्रीक-र्तुआ मनश्चश्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये (क-
न्यालक्षणसंपन्नांकनकाभरणैर्युतां । दास्यामिब्रह्मणेतुभ्यंब्रह्मलोकजिगीशया ॥१॥ विश्वंभरःसर्व
भूतःसाक्षिण्यः सर्वदेवताः ॥ इमांकन्यांप्रदास्यामिपितृणांतारणायच ॥२॥) यथाशक्त्यलंकृतां॥
प्रजापतिदेवतां ॥ प्रजोत्पादनार्थं ॥ तुभ्यमहंसंप्रददे ॥ इत्युक्त्वा॥वरहस्तेकन्याहस्तंकांस्यपात्रेणा-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

विच्छिन्नधारयाभार्ययादीयमानंजलयुक्तंपुष्पाक्षतादियुक्तंक्षिपेत् ॥ ॐ स्वस्तीतिवरोब्रूयात् ॥ द्यौस्त्वांददातु । पृथ्वीत्वांप्रतिगृह्णातु ॥ इतिजपेत् ॥ पत्नींमयापिदत्ताइतिवदेत् ॥ ततोदाता ॥ ममवंशकुलेजातापोषितावर्षचाष्टकं ॥ तवविप्रमयादत्तापुत्रपौत्रादिवर्द्धनी ॥ कन्यारत्नमिदंदानंमयादत्तंत्वयानघ ॥ स्वदेशपरदेशेवाममवंशकुलोचितं ॥ गौरीकन्यामिमांविप्रयथाशक्तिविभूषिताम् ॥ गोत्रायशर्मणेतुभ्यंदत्तांविप्रसमाश्रय ॥ कन्यममाग्रतोभूयात्कन्यमेदेविपृष्ठतः॥ कन्यमेपार्श्वयोर्भूयात्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयात् ॥ कृतैतत्कन्यादानप्रतिष्ठासांगतासिद्ध्यर्थंहिरण्यदक्षिणांतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ अथाचारादन्यदपि ॥ जलभाजनभोजनपात्रगोहास्तिमुद्रादिकंयथासंभवंदद्यात् ॥ कोदादितिकामस्तुतिंपठेत् ॥ (सूत्रेअनुपनिबद्धमपिवधूवरयोर्गलसूत्रमालाधारणं । उभयोर्वस्त्रान्तेग्रंथिकरणं । न्यग्रोधपुटिकाधारणंवरागमनेनासिकास्पर्शादिकुर्यात्इति ॥ वरकन्ययोर्हस्तेमदनफलबंधनंदक्षिणहस्ते ॥ कलशस्थापनपूर्वकंस्वस्तिवाचनंयथोक्तं ॥ इतिशिष्टाचारः) ॥ कन्यादानकर्मणोन्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थंनानागोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योभूय-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

सौंदक्षिणांदास्ये ॥ तेनपुण्येनगणेशांबिकयोःप्रीयेताम् ॥ सुप्रोक्षितादिकरणंतिलकमंत्राशीर्वादः
॥ अद्य० तिथौकन्यादानकृतस्यविधेःसर्वेषांब्राह्मणानांवचनात् श्रीगणेशांबिकयोःप्रसादाच्चपु-
ण्याहंदीर्घमायुरस्तु । उत्तरेक०स्तु । बहुपुत्रं०स्तु ॥ इतिमधुपर्ककन्यादानविधिः ॥ पित्राप्रत्ता
मादायगृहीत्वानिष्क्रामतियदैषीति॥ यदैपीतिआथर्वणानुष्टुप्लिंगोक्तानिष्क्रमणेविनियोगः॥
ॐ यदैषिमनसादूरंदिशोनुपवमानोवाहिरण्यपर्णोवैकर्णःसत्वामन्मनसांकरोतुइत्यसावितिअमुक
नाम्नीइत्यनेनगृहात्बहिर्निष्क्रामति।निष्क्रमप्रभृतिएकःपुरुषोदक्षिणस्कंधेःजलपूर्णकलशंदूर्वाम्रप-
ल्लवादियुक्तंगृहीत्वावधूवराभ्यांसहनिष्क्रामति ॥ सोप्रेरुत्तरतोवाग्यतस्तिष्ठेत ॥ पश्चात्कन्यापि-
तावेदीसमीपेवधूवरौब्रूयात् ॥ परस्परंसमीक्षेथामिति ॥ अघोरचक्षुरितिचतुर्णांप्रजापतिस्त्रिष्टुप्
कुमारिदेवतापरस्परावेक्षणेविनियोगः॥ ॐ अघोरचक्षुरपतिघ्न्येतिशिवापशुभ्यःसुमनाःसुवर्चाःवी
रसूर्देवकामाःस्योनाशंनोभवद्विपदेशंचतुष्पदे ॥ सोमःप्रथमोविविदेगंधर्वोविविदउत्तरस्तृतीयो-
ग्निष्टेपतिस्तुरीयस्तेमनुष्यजाः ॥ सोमोददद्गंधर्वायगंधर्वोददद्ग्नये । रयिंपुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

इमां । सानःपूषाशिवतमामेरयसानऊरूउशतीविहर ॥ यस्यामुशंतःप्रहरामशेपंयस्यामुकामाबा
हवोनिविष्टयैइत्यंतंपरस्परौवधूवरौपश्यतः । वरस्यमंत्रपाठः ॥ पश्चाद्दंपतीदक्षिणपादेन वेदिमा-
रोहतः ॥ अग्निंप्रदक्षिणीकृत्यअग्नेःपश्चिमतःप्रागुपकल्पितेतृणपुलकेपादंदत्वादंपतीउपविशेतां ॥
दक्षिणतोवधूरुपविशेत् । उत्तरतोवरएकस्मिन्नेवासनेउपविश्य ॥ ईशानेद्रुपदंरुद्रकलशंचस्थाप-
येत् ॥ आचम्यप्राणानायम्यअत्राद्येति॰तिथौअस्मिन्पुण्याहेधर्मार्थकामप्रजासिध्यर्थंदाराप-
रिग्रहणमहंकरिष्ये ॥ तथाचविवाहांगभूतंचतुर्थीकर्मांतंएकतंत्रेणाहंकरिष्ये ॥ अथवैकल्पिकानि
॥ लौकिकाग्नेःस्थापनं । गौरीपरिणयनं । अग्नेरुत्तरतःकुंभधृक् ॥ तेजन्यादक्षिणपादेनपरिवर्त-
नं । पूर्वेणब्रह्मणोगमनं । उत्तरेणपात्रासादनं । द्वेपवित्रे । ताम्रमयीआज्यस्थाली । पालाश्यःस-
मिधः । प्रांचावाघारौ । समिद्धतमेआज्यभागौ । वरोदक्षिणा । राष्ट्रभृद्धोमः । जयाहोमः ।
अभ्यातानाहोमः।सुगंन्नुपंथामित्याहुत्यंतेपरंमृत्योइत्याहुतिः ॥ वध्वाआनडुहेचर्मोपवेशनं ।
त्रिरात्रंब्रह्मचर्यमुभयोः । एतान्वैकल्पिकपदार्थानहंकरिष्ये ॥ ततोवरःकन्यादिस्मरण-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

देवताभिधानंकुर्यात् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःमहाव्याहृतीनांप्रजापतिर्ऋषिः । क्रमेणगायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छंदांसि । अग्निवायुसूर्यादेवताः । त्वन्नोअग्नेसत्वन्नोअग्नेअयाश्चाग्नेयेतेशतमितिमंत्राणांवामदेवऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः । अग्निवरुणौदेवतेतिप्रथमयोः । तृतीयस्याग्निर्देवता ॥ चतुर्थस्यवरुणःसविताविष्णुर्विश्वेदेवामरुतःस्वर्कादेवताः । उदुत्तममितिशुनःशेपऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः । वरुणोदेवता ॥ राष्ट्रभृन्मंत्राणांसर्वेषांप्रजापतिऋषिःसाध्यावाऋषयः ॥ सर्वाणियजूंषि । लिंगोक्तादेवता । चित्तंचेतिद्वादशमंत्राणांपरमेष्ठी ऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः । लिंगोक्तादेवता ॥ प्रजापतिर्जयानितिपरमेष्ठी ऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः । लिंगोक्तादेवता ॥ अग्निर्भूतानामित्यादिद्वात्रिंशतिमंत्राणांप्रजापतिर्ऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः ॥ लिंगोक्तादेवता । परंमृत्योइतिमंत्रस्यसंकर्षणऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः । पितरोदेवता ॥ अर्यमणंदेवमित्यादित्रयाणांआथर्वणऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । अग्निर्देवता । सर्वेषांमंत्राणांहोमेविनियोगः ॥ गृभ्णामीतिमंत्रस्ययाज्ञवल्क्यऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः । अमोहमितिभरद्वाजऋषिः । उष्णिक्छदः । तावेहीतिआथर्वणऋ-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

षिः । अनुष्टुप्छंदः । तेसंतुजरदष्टयेतिप्रजापतिर्ऋषिः । यजुः । चतुर्णामपिभगाद्यादेवताःपाणिग्रहणेविनियोगः ॥ आरोहेममितिआथर्वणऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । वधूर्देवता । दृषदारोहणेविनि० ॥ सरस्वतीप्रेदेतिविश्वावसुऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । सरस्वतीदेवता । जपेवि. । तुभ्यमितिआथर्वणोनुष्टुप् अग्निर्देवता । परिक्रमणेवि० ॥ आपःशिवाइतिप्रजापतिर्ऋषिः । यजुः । लिंगोक्तादेवता । मूर्द्धाभिषेचनेवि० ॥ आपोहिष्ठेतितिसृणां । सिंधुद्वीपोगायत्र्यापोअभिषेचनेवि० ॥ तच्चक्षुरित्यस्यदध्यंगाथर्वणोपुरउष्णिक् सूर्योसूर्यावेक्षणेवि० । ममव्रतेतिप्रजापतिस्त्रिष्टुप्प्रजापतिः हृदयालंभनेवि० । सुमंगलीतिमंत्रस्यप्रजापतिर्ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । वधूर्देवता । अभिमंत्रणेवि० ॥ इहगावइतिमंत्रस्यप्रजापतिर्ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । लिंगोक्तादेवता । उपवेशनेवि० ॥ ध्रुवमसीतिप्रजापतिऋषिःपंक्तिश्छंदः । लिंगोक्तादेवता । ध्रुवावेक्षणेविनियोगः ॥ इतिस्मृत्वा ॥ विवाहेणसहचतुर्थीकर्मश्चेतत्तदाअग्नेप्रायाश्चित्तइत्यादिपंचानांपरमेष्ठीऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः । लिंगोक्तादेवता । आज्यहोमेविनियोगः ॥ यातेपतिघ्नीतिमंत्रस्यप्रजापतिर्ऋषिः ।

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

त्रिष्टुप्छंदः । वधूर्देवता । अभिषेचनेवि० ॥ प्राणैस्तइतिमंत्रस्यप्रजापतिर्ऋषिः । यजुः । वधूर्देवता । चरुशेषभोजनेविनियोगः ॥ ततोवरोदेवताभिधानंकुर्यात् ॥ तत्रप्रजापतिं । इंद्रं । अग्निं । सोमं ।द्विकृत्वआज्येन। ऋताषाढं। ऋतधामानं। अग्निं। गंधर्वं। ओषधीः। अप्सरसः। मुदः। संहितं। विश्वसामानं। सूर्यं। गंधर्वं। मरीचीः। अप्सरसः। आयुः। सुषुम्णं। सूर्यरश्मीन्। चंद्रमसं। गंधर्वं। नक्षत्राणि। अप्सरसः। भेकुरीः। इषिरं। विश्वव्यचसं। वातं। गंधर्वं। आपः। अप्सरसः। ऊर्जः। भुज्यं। सुपर्णं। यज्ञं। गंधर्वं। दक्षिणाः। अप्सरसः। स्तावाः। प्रजापतिं। विश्वकर्माणं। मनसं। गंधर्वं। ऋक्सामानि। अप्सरसः। एष्टीः। चित्तं। चित्तिं। आकूतं। आकूतिश्च। विज्ञानं। विज्ञातिं। मनः। शक्करीः। दर्शं। पौर्णमासं। बृहत्। रथंतरं। प्रजापतिं। अग्निर्भूतानामधिपतिं। इंद्रोज्येष्टानामधिपतिं। यमःपृथिव्यानामधिपतिं। वायुरंतरिक्षानामधिपतिं। सूर्योदिवानामधिपतिं। चंद्रमानक्षत्राणामधिपतिं। बृहस्पतिर्ब्रह्मणोधिपतिं। मित्रःसत्यानामधिपतिं । वरुणोपानामधिपतिं।

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

समुद्रःस्रोत्यानामधिपतिं । अंन्नर्द्दसाम्राज्यानामधिपतिं । सोमउंषधीनामधिपतिं । सविताप्र-
सवानामधिपतिं । रुद्रःपशूनामधिपतिं । त्वष्टारूपाणामधिपतिं । विष्नुःपर्वतानामधिपतिं ।
मरुतोगणानामधिपतिं । पितरःपितामहाःपरेवरेततास्ततामहाः । अग्निं । वैवस्वतं । एताआ-
ज्येन । अग्निंत्रिर्ल्लाजैः । भगंसकृल्लाजैः । अग्निं । प्रजापतिं । अग्निं । वायुं । सूर्यं । चंद्र-
मसं । गंधर्वंएताआज्येन । प्रजापतिंचरुणा । चरुशेषेणाग्निंर्द्दास्विष्टकृतं ॥ अग्निं । वायुं । सूर्यं
। अग्निवरुणौ२ । अग्निं । वरुणंसवितारंविष्नुंविश्वान्देवान्मरुतःस्वर्कान् । वरुणं । प्रजापतिं।
एतादेवताद्विःकृत्वःआज्येन । एतादेवता अंगप्रधानार्थाअस्मिन्कर्मण्यहंक्ष्ये ॥ ततोब्रह्मवरणा-
दिप्रणीताप्रणयनपात्रासादनांन्तंकुर्यात् । एतान्युपकल्पयेत् । कुमार्याभ्राता । एकस्मिन्-
शूर्पेशमीपलाशमिश्रान्लाजान् । लाजाशब्द्रेनभृष्टाव्रीहयः।दृषदं। .शंगितानडुहच्चर्मः । गोरभा
वेगोनिष्क्रयं ॥ एतान्युपकल्प्य ॥ प्रणीताद्याज्यभागांतंद्विःकृत्वोजुहुयात् ॥ ततोराष्ट्रभृद्धो-
मः । ॐ ऋताषाड्ऋतधामाग्निर्गंधर्वःसनइदंब्रह्मक्षत्रंपातुतस्मैस्वाहाव्वाट् ॥इदमृताषाडेऋतधाम्ने-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

अग्नयेगंधर्वाय । नमम ॥१॥ ॐ ऋताषाड्ऋतधामाग्निर्गंधर्वस्तस्यौषधयोप्सरसोमुदोनामताभ्यः
स्वाहा ॥ इदमोषधीभ्योप्सरोभ्योमुदभ्यनमम ॥ २ ॥ ॐ संहितोविश्वसामासूर्योगंधर्वसनइदं
ब्रह्मक्षत्रंपातुतस्मैस्वाहावाट् ॥ इदंसंहितायविश्वसाम्नेसूर्यायगंधर्वायनमम ॥३॥ ॐ संहितो-
विश्वसामासूर्योगंधर्वस्तस्यमरीचयोप्सरसआयुवोनामताभ्यःस्वाहा ॥ इदंमरीचिभ्योप्सरोभ्यऽ
आयुभ्योनमम ॥४॥ ॐ सुषुम्णःसूर्यरश्मिश्चंद्रमागंधर्वः सनइदंब्रह्म०वाट् ॥ इदंसुषुम्णायसूर्य
रश्मयेचंद्रमसेगंधर्वायनमम ॥ ५ ॥ ॐ सुषुम्णःसूर्यरश्मिश्चंद्रमागंधर्वस्तस्यनक्षत्राण्यप्सरसोभे-
कुरयोनामताभ्यःस्वाहा ॥ इदंनक्षत्रेभ्योप्सरोभ्योभेकुरिभ्योनमम ॥६॥ ॐ इषिरोविश्वव्यचा-
वातोगंधर्वःसनइ०वाट् ॥ इदमिषिरायविश्वव्यचसेवातायगंधर्वायनमम ॥७॥ ॐ इषिरोविश्व-
व्यचावातोगंधर्वस्तास्यापोप्सरसऊर्जोनामताभ्यःस्वाहा ॥ इदमद्भ्योप्सरोभ्यऊर्ग्भ्योनमम ॥ ८॥
ॐ भुज्युःसुपर्णोयज्ञोगंधर्वःसनइ०वाट् ॥ इदंभुज्यवेसुपर्णाययज्ञायगंधर्वायनमम ॥ ९ ॥ ॐ
भुज्युःसुपर्णोयज्ञोगंधर्वस्तस्यदक्षिणाप्सरसस्तावानामताभ्यःस्वाहा ॥ इदंदक्षिणाभ्योप्सरोभ्यस्ता-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

वाभ्यःनमम ॥१०॥ ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मामनोगंधर्वःसनईऽवाट् ॥ इदंप्रजापतयेविश्वकर्मणे-
मनसेगंधर्वायनमम ॥११॥ ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मामनोगंधर्वस्तस्यऋक्सामान्यप्सरसएष्टयोना
मताभ्यःस्वाहा ॥ इदंमृक्सामभ्योप्सरोभ्योएष्टिभ्यनमम ॥१२॥ इतिराष्ट्रभृद्धोमः ॥ अथजया
होमः ॥ ॐ चित्तंचस्वाहा । इदंचित्ताय । ॐ चित्तिश्चस्वाहा । इदंचित्यै ॥ आकूतंचस्वाहा
इदमाकूताय आकूतिश्चस्वाहा । इदमाकूत्यै ॥ ॐ विज्ञातंचस्वाहा । इदंविज्ञाताय । ॐ
विज्ञातिश्चस्वाहा । इदंविज्ञात्यै । मनश्चस्वाहा । इदंमनसे ॥ शक्करीश्चस्वाहा । इदंशक्करीभ्यः
। दर्शश्चस्वाहा । इदंदर्शाय । ॐ पौर्णमासंचस्वाहा । इदंपौर्णमासाय । ॐ बृहच्चस्वाहा ।
इदंबृहते । ॐ रथंतरंचस्वाहा । इदंरथंतराय । ॐ प्रजापतिर्जयानिंद्रायवृष्णेप्रायच्छदुग्रःपृतना
जयेषुतस्मैविशःसमनमंतः सर्वाःसउग्रःसइहव्योबभूवस्वाहा ॥ इदंप्रजापतयेनमम ॥ अथा-
भ्यातानाहोमः ॥ ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिःसमावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षेत्रस्यामाशिष्यस्यां-
पुरोधायामास्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्यांस्वाहा ॥ इदमग्नये भूतानामधिपतयेनमम ॥ ॐ

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

इंद्रोज्येष्टानामधिपतिःसमाव० इदामिंद्रायज्येष्ठानामाधिपतयेनमम । ॐ यमःपृथिव्यना-
मधिपतिःसमाव० । इदंयमायपृथिव्यानामाधिपतये । ॐ वायुरंतरिक्षस्याधिपतिःसमा०
इदंवायवेअंतरिक्षस्याधिपतये ॥ ॐ सूर्योदिवोधिपातिसमा० इदंसूर्यायदिवोधिपतये ॥ ॐ चं-
द्रमानक्षत्राणामधिपतिःसमा०इदंचंद्रमसेनक्षत्राणामधिपतये॥ ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मणोधिपतिः०समा०
इदंबृहस्पतयेब्रह्मणोधिपतये ॥ ॐ मित्रःसत्यानामधिपतिःसमा०इदंमित्रायसत्यानामधिपतये ॥
ॐ वरुणोपामधिपतिःस०इदंवरुणायापामधिपतये ॥ ॐ समुद्रःस्रोत्यानामधिपतिःसमाःइदंस-
मुद्रस्रोत्यानामधिपतये ॥ ॐ अंन्नंर्ढसाम्राज्यानामधिपातिसमा०इदमन्नायसाम्राज्यानामधिपतये
॥ ॐ सोमर्उषधीनामधिपातिसमा०इदंसोमायौषधीनामधिपतये ॥ ॐ सविताप्रसवानामधिप-
तिःसमा०इदंसवित्रेप्रसवानामधिपतये ॥ ॐ रुद्रःपशूनामधिपतिःसमा०इदंरुद्रायपशूनामधिपत
येनमम उदकोपस्पर्शनं ॥ ॐ त्वष्टारूपाणामाधिपतिःसमा०इदंत्वष्ट्रेरूपाणामधिपतये ॥ ॐ
विष्नुःपर्वतानामधिपतिःसमा०इदंविष्नवेपर्वतानामाधिपतये ॥ ॐ मरुतोगणानामधिपतयस्ते-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

मावत्वास्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यांदेवहूत्याठःस्वाहा ॥ इदं-
मरुद्भ्योगणानामाधिपतिभ्यः ॥ ॐ पितरःपितामहाःपरेवरेततास्ततामहाइहमावत्वास्मिन्ब्रह्मण्य०
इदंपितृभ्यःपितामहेभ्यःपरेभ्योवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यश्चनमम ॥ उदकोपस्पर्शनं ॥ ॐ अ-
ग्निरैतुप्रथमोदेवतानांढसोस्यैप्रजांमुंचतुमृत्युपाशात् । त्तदयंढंगजावरुणोनुमन्यतांयथेयंढंस्त्रीपौ-
त्रमघन्नरोदात्स्वाहा ॥ इदमग्नयेनमम ॥ ॐ इमामग्निस्त्रायतांगार्हपत्यःप्रजामस्यैनयतुदीर्घमायुः
अशून्योपस्थाजीवतामस्तुमातापौत्रमानंदमभिविबुध्यतामियंढंस्वाहा ॥ इदमग्नये ॥ ॐ स्वस्ति
नोअग्नेदिवापृथिव्याविश्वानिधेह्ययथायदत्र । यदस्यांमहिदिविजातंप्रशस्तंतदस्मासुद्रविणंधेहिचि
त्रंढंस्वाहा ॥ इदमग्नये ॥ ॐ सुगंनुपंथांप्रदिशन्नएहिज्योतिष्मध्येह्यजरंनआयुः अपैतुमृत्युरमृतंम
आगाद्वैवस्वतोनोअभयंकृणोतुःस्वाहा ॥ इदंवैवस्वताय । अपउपस्पृश्य ॥ ॐ परंमृत्योअनुपरे
हिपंथांयस्तेअन्यइतरोदेवयानात्चक्षुष्मतेशृण्वतेब्रवीमिमानः । प्रजांढंरीरिषोमोतवीरात्स्वाहा ॥
इदंमृत्यवे ॥ उदकोपस्पर्शस्तु प्रणीतोदकेन ॥ अथलाजाहोमः ॥ कुमार्याभ्राताशमीपलाश-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

मिश्रांल्लाजानंजलिनागृहीत्वाकुमार्यंजलावावपेत् ॥ तांल्लाजान्कुमारीस्वांजलिस्थान् त्रिवारंजु-
हुयात्तिष्ठतिदेवतीर्थेनप्राजापत्यतीर्थेनवा ॥ ॐ अर्यमणंदेवंकन्याअग्निमयक्षतसनोअर्यमादेवः
प्रेतोमुंचतुमापतेस्वाहा ॥ अनेनमंत्रेणअंजलिस्थितानांलाजानांतृतीयांशंजुहोति ॥ इदमग्नये-
नमम । मंत्रत्रयंकन्यैवपठति ॥ ॐ इयंनार्युपब्रूतेलाजानावपंतिकाआयुष्मानस्तुमेपतिरेधंतांज्ञा
तयोममस्वाहा इदमग्नयेनमम ॥ इत्यर्द्धंजुहोति ॥ ॐ इमांल्लाजानावपाम्यग्नौसमृद्धिकरणंतव॥ मम
तुभ्यंचसंवननंतदग्निरनुमन्यतामियंढस्वाहा ॥ इदमग्नयेनमम ॥ सर्वान्जुहोति ॥ ततोवरःक-
न्यायादक्षिणपाणिंसांगुष्ठमुत्तानंगृह्णाति ॥ ॐ गृभ्णामितेसौभगत्वायहस्तंमयापत्याजरदष्टिर्यथासः।
भगोअर्यमासवितापुरंधिर्मह्यंत्वादुर्गार्हपत्यायदेवाः । अमोहमस्मिसात्वंढसात्वमस्यमोअहं ।
सामाहमस्मिऋक्त्वंद्यौरहंपृथिवीत्वंतावेहिविवहावहैसहरेतोदधावहै ॥प्रजांप्रजनयावहैपुत्रान्विंदा-
वहैबहूंस्तेसंतुजरदष्टयःसंप्रियौरोचिष्णूसुमनस्यमानौ । पश्येमशरदःशतंजीवेमशरदःशतंशृणुया
मशरदःशतम् पश्चात्उभौवह्नेरुत्तरतोगच्छेत् ॥ अथैनामश्मानमारोहयतिउत्तरतोग्नेर्दक्षिणपादे-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

नवरः ॥ ॐ आरोहेममश्मानमश्मेवत्वंस्थिराभव । अभितिष्ठप्रतन्यतोवबाधस्वपृतनायतइति॥
अथगाथांगायति । सरस्वतीप्रेदमवसुभगेवाजिनीवती । यांत्वाविश्वस्यभूतस्यप्रजायामस्याग्रतः
। यस्यांभूतंसमभवद्यस्यांविश्वमिदंजगत् ॥ तामद्यगाथांगास्यामियास्त्रीणामुत्तमंयशः । इति॥
पुनर्दक्षिणपाणिंदक्षिणहस्तेनवरोगृहीत्वाउभौपरिक्रामेतकुंभधारिणंप्रदक्षिणीकृत्य ॥ ॐ तुभ्यमग्रे-
पर्यवहन्त्सूर्यांवहतुनासह । पुनःपतिभ्योजायांदाअग्नेप्रजयासह ॥ एवंलाजावपनादिपरिक्रमणांतं-
पुनर्द्वित्रारंमंत्रवत् ॥ चतुर्थेकुमारीभ्राताशूर्पकुष्ठ्यासर्वांलाजान्कुमार्य्यंजलावावपेत् ॥ तांकुमारी
भगायस्वाहाइतिसकृत्सर्वान् लाजान्जुहुयात् इदंभगायनमम ॥ पाणिग्रहणादिपरिक्रमणांतंतू-
ष्णीमेवइतिलाजाहोमः ॥ समाचारात्तूष्णींपरिक्रमणंनैतरथावृत्तिः ॥ त्रिःपरिणीतांप्राजापत्यंहु-
त्वा ॥ ॐ प्रजापतयेस्वाहा । इदंप्रजापतये ॥ अथैनामुदीचींसप्तपदानिप्रक्रामयति ॐ एकमिषे-
विष्णुस्त्वानयतु । द्वेऊर्जेविष्णुस्त्वानयतु।त्रीणिरायस्पोषायविष्णुस्त्वानयतु । चत्वारिमायोभवाय
विष्णुस्त्वानयतु । पंचपशुभ्योविष्णुस्त्वानयतु । षट्ऋतुभ्योविष्णुस्त्वानयतु । सखेसप्तपदाभव-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

सामामनुव्रताभवविष्णुस्त्वानयतु । वरस्यमंत्रपाठः ॥ ततोवरःपूर्वघृतोदकुंभात्उदकमादाय-
ततएनांमूर्ध्निअभिषिंचति ॥ ॐ आपःशिवाःशिवतमाःशांताःशांततमा । स्तास्तेकृण्वंतुभेषजं
। आपोहिष्ठेतितिसृभिः ॥ ॐ आपोहिष्ठा०से । योवः०रः । तस्माअरं०नः ॥ अथैनार्दंसूर्यमु-
दीक्षयतितच्चक्षुरितिवरोब्रूयात् ॥ ॐ तच्चक्षुर्देवहितं०शृणुयामशरमदःशतं ॥ एतत्सूर्यविक्षणं
॥ अथास्यैदक्षिणार्दंसमधिहृदयमालभते ॥ ॐ ममव्रतेतेहृदयंदधामिममचित्तमनुचित्तंतेअस्तु।
ममवाचमेकमनाजुषस्वप्रजापतिष्ट्वानियुनक्तुमह्यंइति अथैनामभिमंत्रयते ॐ सुमंगलीरियंवधू-
रिमार्दंसमेतपश्यत ॥ सौभाग्यमस्यैदत्वायाथास्तंविपरेतनेति ॥ सुवासिन्यःसौभाग्यंदद्युः ॥
सौभाग्यंब्रह्मसावित्र्योः लक्ष्मीमाधवयोरिव ॥ शिवशक्तिद्वयोश्चैवसौभाग्यंवरकन्ययोः ॥ तांदृ
ढपुरुषउन्मथ्यप्राग्वोदग्वानुगुप्तागारआनडुहेचर्मण्युपवेशयति । दृढपुरुषोवरः । ॐ इहगावो-
निषीदंतिवहाश्वाइहपूरुषाःइहोसहस्रदक्षिणोयज्ञइहपूषानिषीदंत्विितिमंत्रेण ॥ विवाहहोमसहचतुर्थी
कर्मश्चेतत्तदाअग्नेप्रायश्चित्ते इत्यादिपंचमंत्राणामाज्याहुतीर्हुत्वास्थालीपाकेनाहुतिंजुहोतितद्यथा

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ ॐ अग्नेप्रायश्चित्तेत्वंदेवानांप्रायश्चित्तिरसिब्राह्मणस्त्वानाथकामउपधावामियास्यैपतिघ्नीतमू-
स्त्वामस्यैनासशयस्वाहा । इदमग्नये । ॐ वायोप्रायश्चित्ते०स्यैप्रजाघ्नीतनूस्तामस्यैनाशयस्वाहा
। इदंवायवे ॥ ॐ सूर्यप्रायश्चित्ते०स्यैपशुघ्नीस्तनू०स्वाहाइदंसूर्याय । ॐ चंद्रप्रायश्चित्ते०स्यैगृ-
हघ्नीतनूस्तामस्यैनाशयस्वाहा । इदंचंद्रमसे ॥ ॐ गंधर्वप्रायश्चित्ते०स्यैयशोघ्नीतनूस्तामस्यैना-
शयस्वाहा । इदंगंधर्वायनमम ततोस्थालीपाकस्यजुहोति । ॐ प्रजापतयेस्वाहा । इदंप्रजा-
पतये ॥ हुत्वाहुत्वैतासामाहुतीनामुदपात्रेसंस्रवान्समवनीय ॥ स्थालीपाकेनब्रह्मान्वारंभेण ।
ॐ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा इदमग्नयेस्विष्टकृतेनमम ॥ भूराद्यानवाहुतीर्हिः कृत्वोजुहोति ॥ संस्रव-
प्राशनं ॥ पवित्राभ्यांमार्जनं । पवित्रप्रतिपत्तिः । प्रणीताविमोकः । ब्रह्मणेपूर्णपात्रद्वयंदद्यात
॥ ततःस्वकीयाचार्यायगांददातिग्रामवचनंचकुर्यात् विवाहस्मशानयोर्ग्रामंप्राविशादितिवच-
नात्तस्मात्तयोर्ग्रामप्रमाणमितिश्रुतेः ॥ वृद्धाणांस्त्रिणांवाक्यंकुर्यात् ॥ आचार्यायवरंददातिगौर्ब्रा-
ह्मणस्यवरोग्रामोराजन्यस्यअश्वोवैश्यस्य ॥ अस्यविवाहकर्मणोंगतयाविहितंगोनिष्क्रयभूतंआ-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

चार्यायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थंनानागोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योभूयसींदक्षिणा-
दातुमहमुत्सृजे ॥ अधिरथंदशतंदुहितृमते ॥ अस्तामितेध्रुवंदर्शयतिवरः ॥ ॐ ध्रुवमसिध्रुवंत्वा
पश्यामि ध्रुवैधिपोष्येमयिमह्यंत्वादात् बृहस्पतिर्मयापत्याप्रजावतीसंजीवःशरदःशतं ॥ इतिवर-
स्यैवमंत्रपाठः ॥ सायंदिनपश्येत्पश्यामीत्येवब्रूयात् ॥ त्रिरात्रमक्षारालवणाशिनौस्यातामधः
शयीयाताम् ॥ संवत्संनमिथुनमुपेयातांद्वादशरात्रंषडरात्रंत्रिरात्रमंततः ॥ त्रिरात्रपक्षेपिपंचम्यां-
रात्रावभिगमनं । कुतएतत् ॥ चतुर्थीकर्मण्यकृतेभार्यात्वमेवनाद्यापि विवाहैकदेशत्वाच्चतुर्थी-
कर्मणइतिविवाहकर्मसमाप्तम् ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ चतुर्थ्यामपररात्रेभ्यंतरतोग्निमुपसमाधाय ॥ देशकालौस्मृत्वाअस्मिन्पुण्याहेविवाहांगभूतंचतुर्थीकर्माहंकरिष्ये ॥ ततःस्थंडिलेपंचभूःसंस्कारपूर्वकंवैवाहिकंलौकिकंवाअग्निंस्थापयेत् ॥ दक्षिणतोब्रह्माणमुपवेश्यउत्तरतउदपात्रंप्रतिष्ठाप्यस्थालीपाकदंश्रपयित्वाप्रणीताप्रणयनादि आज्यभागांतंसीमंतवत् । आज्यभागाविष्टाज्याहुतीर्जुहोति ॥ अग्नेप्रायश्चित्तेत्वंदेवानांप्रायश्चित्तिरसिब्राह्मणस्त्वानाथकामउपधावामियास्यैपतिघ्नीतनूस्तामस्यैनाशयस्वाहा ॥ इदमग्नये ॥ वायो० प्रजाघ्नीतनू०स्वाहा ॥ इदंवायवे ॥ सूर्य०पशुघ्नीतनू०स्वाहा ॥ इदंसूर्याय । चंद्रप्रायश्चित्त०गृहघ्नींतनू०स्वाहा ॥ इदंचंद्रमसे । गंधर्व०यशोघ्नी०स्वाहा । इदंगंधर्वाय । स्थालीपाकस्यजुहोतिप्रजापतयेस्वाहा इदंप्रजापतयेनमम ॥ हुत्वाहुत्वैतासामाहुतीनामुदपात्रेसंस्रवान्समवनीय । अन्यसामन्यत्र । स्थालीपाकेनअग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा इदमग्नयेस्विष्टकृते ॥ उदकोपस्पर्शः ॥ ततोभूराद्यानवाहुतयः ॥ संस्रवप्राशनं । पवित्राभ्यांमार्जनं । पवित्रप्रतिपत्तिः । ब्रह्मणेपूर्णपात्रदानं । प्रणीताविमोकः ॥ ततएनांमूर्द्धन्यभिषिंचतिवरःयातपतिघ्नीप्रजाघ्नीपशुघ्नीगृहघ्नी-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥१३१॥

यशोग्नीनि। दैंतातनूर्जारग्नीततएनांकरोमिसाजीर्यत्वंमयासहअमुकीत्यनेनमंत्रेण ॥ अथैनार्दस्था
लीपाकंप्राशयतिवरः । ॐ प्र।णैस्तेप्राणांत्संदधाम्यस्थिभिरस्थीनिमार्दसैर्मार्दसानित्वचात्वचं ।
इत्यनेनमंत्रेणसकृत् ॥ द्विस्तूष्णींअत्रवरोपिकन्याहस्तेनभोजनंकरोतीत्याचारः ॥ वधूसंस्कारए
वायंप्रतिपत्तिः ॥ स्त्रियासहभोजनेपिनदोषइत्याहहेमाद्रौ ॥ एकयानसमारोहएकपात्रेचभोजनं
॥ विवाहेपाथियात्रायांकृत्वाविप्रोनदोषभाक् ॥ अन्यथादोषमाप्नोतिपश्चाच्चांद्रायणंचरेत् ॥ तस्मा
देवंविच्छ्रोत्रियस्यदारेणनोपहासमिच्छेत् ॥ हियस्मादस्याएतेनप्राशनाख्यसंस्कारेणभर्त्रासहऐक्यं
सूचितं ॥ तस्माछ्रोत्रियस्यदारेण उपहासंअभिगमनंनेछेत् ॥ सचैवंवित् । एवंकुर्वन्नपराभवति-
पराभवंगछति । यद्वाएवंवित्श्रोत्रियःपरःशत्रुर्भवतिउतअप्यर्थेनिदार्थवादोयं ॥ परदाराभिगम-
नंअतोनकार्यं ॥ इतिचतुर्थीकर्मसमाप्तम् ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

अथग्रहशांतिप्रयोगः ॥ अंगणादौशुचौदेशेगोमयोपालिप्तेचतुःकोणमंडलस्वास्तिकोपेतेचंद-
नादिभिरर्चितेसदीपेश्रीपर्णाद्यासनेप्राङ्मुखेनसपत्नीकेनयजमानेनोपवेशनम् ॥ यजमानदक्षिण
तःपत्न्याच । आसनगंधाक्षतपुष्पमाल्यादिवरणोपहाराणांदक्षिणतउपकल्पनम् ॥ ब्राह्मणास्तुउ
दङ्मुखापीठोपर्युपवेशनंपवित्रपाणिर्यजमानेनाचमनंप्राणायामः । स्वस्तिनइंद्रेतितिलकंवस्त्रग्रं-
थिबंधनं ॥ अर्घबंधनं । दधिदुग्धंयवादुर्वागंधाःसिद्धार्थसंयुताः ॥ जलपुष्पसमायुक्तःपादार्घ-
एभिरष्टभिरितिविप्रैर्दीयमानमष्टांगंपादार्घयजमानःप्रतिगृह्णीयात् ॥ पत्नीहस्तेश्रीफलसहितंकल
शंदत्वा ॥ साचार्यविप्राः ॐ ३पुण्याहं३ ॥ वदंतःसपत्नीकाययजमानायसमर्पयंति ॥ एवंवि-
प्रैर्दत्तंपादार्घंगृहीत्वा ॥ स्वासनात्पश्चिमतःप्राङ्मुखसपत्नीकयजमानास्तिष्ठत् ॥ आनोभद्रा
इत्यनुवाकमाशुःशिशानइत्यादिकं द्वादशर्चमप्रतिरथंवाद्यौःशांतिरितिवायथाचारंसर्वजपंति ॥
ततस्तिष्ठंनेवयथासंभवोपविष्टान्ब्राह्मणान्प्रार्थयेत् ॥ ॐ पावनाःसर्ववर्णानांब्राह्मणाब्रह्मरू-
पिणः ॥ अनुगृह्णंतुमामद्यअमुकाख्येचकर्मणि ॥ स्वस्वकर्मरतानित्यंवेदशास्त्रार्थकोविदाः ॥ श्रो

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

त्रियाःसत्यवाचश्चदेवध्यानरताःसदा ॥ यद्वाक्यामृतसंसिक्तावृद्धिंयांतिनरद्रुमाः ॥ अंगीकुर्वंतु-
मत्कर्मकल्पद्रुमसमाशिषः ॥ यथोक्तनियमैर्युक्तामंत्रार्थस्थिरबुद्धयः ॥ यत्कृपालोकनात्सर्वाऋ-
द्धयोवृद्धिमाप्नुयुः ॥ स्वागतंवोद्विजश्रेष्ठामदनुग्रहकारकाः ॥ अयमर्घइदंपाद्यंभवद्भिःप्रतिगृह्यतां
॥ चरणक्षालनाद्देवास्तुष्यंतिशुद्धमानसाः ॥ तज्जलेनचसंसिक्ताःपूर्णकामाभवंतुमे ॥ इमंवो-
र्घंप्रयच्छामिगृह्णंतुप्रीतिमानसाः ॥ पावयंतुचमांनित्यंपूरयंतुमनोरथानिति ॥ अर्घोर्घोर्घइतित्रिरन्ये
नोक्तेयजमानःप्रतिगृह्यतामित्युक्ता ॥ ॐ प्रतिगृह्णीमइतिसर्वेषांप्रतिवचनं ॥ ततःसपत्नीकय-
जमानस्वासनेउपविश्य ॥ प्राङ्मुखोपविष्टमाचार्यत्वकर्तुयोग्यंविप्रंप्रार्थयेत् ॥ ग्रहयज्ञंकरिष्येतत्र
मेत्वमाचार्योभव ॥ भवामीतिप्रत्युक्तेसाक्षतनपाणिनाविप्रस्यदक्षिणजान्वालभ्य । अमुकगो-
त्रोत्पन्नःअमुकप्रवरामुकशर्माहं । अमुकसगोत्रोत्पन्नंअमुकवेदशाखाध्यायिनंअमुकशर्माणंब्रा-
ह्मणंग्रहयज्ञाख्यकर्मणि आचार्यत्वेनत्वामहंवृणे । वृतोस्मीतिप्रतिवचनं ॥ ॐ व्रतनदीक्षामि-
तिमंत्रंजपेत् ॥ ततोयजमानआचार्यएततेपाद्यं । पादावनेजनं । पादप्रक्षालनंएषतेर्घःएषतेगं

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

धः एतत्तेपुष्पमित्येवंपाद्यादिभिरभ्यर्चनं ॥ ततोप्रार्थना । आचार्यस्तुयथास्वर्गेशक्रादीनांबृहस्प
तिः ॥ तथात्वंममयज्ञेऽस्मिनाचार्योभवसुव्रत ॥ त्वत्प्रसादाच्चयज्ञस्यसमग्रंफलमाप्नुयाम् ॥ संसार
॥१३५॥ भयभीतेनत्वयंयज्ञःसुविस्तरः ॥ आरब्धस्त्वत्प्रसादेनविर्विघ्नंममस्वेभवेदितिप्रार्थना ॥ कर्ताप्राङ्मु
खंब्राह्मणंब्रह्मत्वंकर्तुंयोग्यंप्रार्थयेत् ॥ ग्रहयज्ञंकरिष्ये । तत्रमेत्वंब्रह्माभव । ॐ भवामीतिप्रतिव
चनं ॥ साक्षतेनपाणिनादक्षिणजान्वालभ्यअमुकगोत्रोत्पन्नोहं अमुकवेदशाखाध्यायीअमुकश-
र्माहं । अमुकगोत्रोत्पन्नं॰अमुकवेदशाखाध्यायिनंब्राह्मणंअस्मिन्कर्मणिकृताकृतावेक्षकत्वेनत्वावृ
णे । ॐ व्रतोस्मीतिप्रतिवचनं । व्रतेनदीक्षामितिजपः ॥ ततोपाद्यादिभिर्ब्रह्मणोभ्यर्चनं ॥ त-
तोप्रार्थना॥यथाचतुर्मुखोब्रह्मा॰सुव्रतइति॥गोत्राद्युच्चार्य॰अमुककर्मणिऋत्विकत्वेनत्वांवृणेइति-
व्रतोस्मीतिप्रतिवचनं । व्रतेनदीक्षामितिजपः ॥ ततोपाद्यादिभिरभ्यर्चनं ॥ ततःसदस्यत्वेनत्वा
वृणेइतिसदस्यवरणं ॥ सर्वकर्मणामुपद्रष्टाभवेतिप्रार्थना । भवामीतिप्रत्युक्तिः ॥ ततोपाद्यादि
भिरभ्यर्चनं ॥ एवंनवग्रहजपार्थंवृणुयात् ॥ एवंगाणपतिस्त्वंवृत्वा ॥ रुद्रजपार्थंवृत्वाएवंवृद्धपुरःस-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

रमृत्विजांपादप्रक्षालनंविधायक्षालितचरणेषुऋत्विजेषुद्विराचांतेष्वात्मनश्चरणौ प्रक्षाल्यद्विराचम्य ॥ ततोवरणश्राद्धंतद्यथा ॥ आचम्यप्राणानाम्य ॥ देशकालौसंकीर्त्य ॥ वृतानामाचार्यादीनां-वरणश्राद्धमहंकरिष्ये ॥ स्वस्तिनेतिदिग्बंधः ॥ वरणश्राद्धोपहाराःशुचयोभवंत्वितिवरणश्राद्धो-पहाराणांप्रोक्षणं ॥ ततआसनगंधादिभिराचार्यादीनामभ्यर्चनं आचार्यादिभ्यःसर्वेभ्यो यथादत्ता निगंधमाल्यादीनि वस्त्रयुग्मोपवीतकुंडलमुद्रिकाकेयूरांगदकंठाभरणादीनियथादैवतानिवातान्नि-ष्क्रयद्रव्यंआचार्यादिभ्यःसर्वेभ्यऋत्विक्भ्यःस्वाहासंपद्यंतांनममेति ॥ अयंवोज्योतिःसूर्योज्यो-तिरित्युक्त्वाअर्चनम् ॥ अर्चनाविधेःपरिपूर्णतास्त्वित्युक्तेः। अस्त्वितिविप्राःप्रतिब्रूयुः ॥ आचमनं ॥ यथादास्यमानानितृप्तिपर्याप्तान्यन्नानिसोपस्कराणि आचार्यादिभ्यःसर्वेभ्यःस्वाहासंपद्यंतांन-ममेतिभोजनसंकल्पः ॥ अस्यऋत्विग्वरणकर्मणःसांगत्वसिद्ध्येगांवातान्निष्क्रयद्रव्यं आचार्या-दिभ्यःसर्वेभ्यऋत्विग्भ्यःस्वाहासंपद्यंतांनममेतिवाक्येनगोहिरण्यादिदक्षिणादानं ॥ योयस्यभागः सःसप्रतिगृह्यतामितिवक्तव्यं।अस्यऋत्विग्वरणविधेर्यन्यूनमतिरिक्तंतत्सर्वंगणेशांबिकयोःप्रसादात

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ब्राह्मणवचनाच्चपरिपूर्णमस्तुइतिब्राह्मणान्प्रार्थयेत् ॥ अस्तुपरिपूर्णमितिब्राह्मणाःप्रतिब्रूयुः ॥ स्वस्तिनइंद्रेतितिलकं ॥ यजमानहस्तेकंकणबंधनम् यदाबध्नेति ॥ तंपत्नीभिरितिमंत्रेणपत्नीवामहस्तेबंधनम् ॥ कांडात्कांडादितिदूर्वामार्जनं ॥ दधिक्राव्णइतिदधिवंदनं ॥ याःफलिनीरितिफलग्रहणं ॥ ततःआशीषदानं ॥ इतिऋत्विग्वरणं ॥ अथगृहीतकुसुमांजलिर्यजमानःब्राह्मणान्प्रार्थयेत् ॥ ब्राह्मणाःसंतुमेशास्ताःपापात्पांतुसमाहिताः ॥ देवानांचैवदातारस्त्रातारःसर्वदेहिनाम् ॥ जपयज्ञैस्तथाहोमैर्दानैश्चविविधैःशुभैः ॥ देवानांचपितृणांचतृप्त्यर्थंयाचकाःस्मृताः ॥ येषांदेहेस्थितावेदाःपावयंतिजगत्त्रयम् ॥ तेमांरक्षंतुसततंजपयज्ञव्यवस्थिताः ॥ अक्रोधनाःशौचपराःसततंब्रह्मचारिणः ॥ देवध्यानपरानित्यंप्रसन्नमनसःसदा ॥ माश्लीलभाषणाःसंतुमासंतुपरनिंदकाः ॥ ममाप्येतेहिनियमाभवंतुसततंद्विजा इतिसंप्रार्थ्यसाष्टांगप्रणमेत ॥ ततोयजमानसहितब्राह्मणाःगौरसर्षपान्गृहीत्वादिग्रक्षणंकुर्यात् ॥ रक्षोहणंबलगहनं किरामि ॥१॥ ॐ रक्षोहणोवो०वैष्णवास्थ ॥२॥ ॐ रक्षोहाविश्व०सदतु ॥३॥ ॐ रक्षसांभागोसि०गच्छतम् ॥४॥ ॐ

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

अपसर्पंतुयेभूतायेभूताभुविसंस्थिताः ॥ येभूताविघ्नकर्त्तारस्तेनश्यंतुशिवाज्ञया ॥ यदत्रसंस्थितं-
भूतंस्थानमाश्रित्यसर्वदा ॥ स्थानंत्यक्त्वातुतत्सर्वंयत्रस्थंतत्रगच्छतु ॥ अपक्रामंतुभूतानिपिशा-
चाःसर्वतोदिशं ॥ सर्वेषामविरोधेनब्रह्मकर्मसमारभेत्॥ भूतप्रेतपिशाचाद्याःअपक्रामंतुराक्षसाः॥
स्थानादस्माद्व्रजंत्वन्यत्स्वीकरोमिभुवंत्विमां ॥ भूतानिराक्षसावापियेत्रातिष्ठंतिकेचन ॥ तेसर्वे-
प्यपगच्छंतुग्रहयागंकरोम्यहं ॥ इत्यादिभिरभिमंत्रितान्सर्षपान्दिक्षुविकिरेत् ॥ ततःपंचगव्यक
रणं ॥ गायत्र्यागोमूत्रं ॥ मानस्तोकेतिगोमयं ॥ आप्यायस्वेतिक्षीरं ॥ दधिक्राव्णेतिदधि ॥
तेजोसीत्याज्यं ॥ देवस्यत्वेतिकुशोदकं ॥ इत्यादिकांस्यादिपात्रेवापर्णपुटेएकीकृत्य ॥ प्रणवेन-
यज्ञकाष्ठेनालोड्य ॥ आपोहिष्ठेतित्रिभिर्मंत्रैर्यज्ञभूमिंयज्ञसंभारांश्चप्रोक्षयेत ॥ अथभूमिपूजनं ॥
ॐ भूरसिभूमिरसीःइत्यंतंपठित्वा ॥ ॐ पृथिवीकूर्मानंतदेवताभ्योनमः ॥ इत्यादिआवाहना-
दिपुष्पांजल्यंतंयथासंभवंपूजयेत् ॥ स्थंडिलस्यपश्चिमतउपविश्य ॥ आचम्यप्राणानायम्य ॥
देशकालौस्मृत्वापंचभूःसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनमहंकरिष्ये ॥ पंचभूःसंस्कारान्कृत्वा ॥ आत्मा

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

भिमुखमग्निंस्थापयेत् ॥ अग्निप्रार्थना ॥ चत्वारिशृंगेति० ॥ ॐ अग्निंप्रज्वलितंवंदेजातवेदं-हुताशनं ॥ हिरण्यवर्णममलंसमृद्धंविश्वतोमुखं ॥ त्वंमुखंःसर्वदेवानांसप्तार्चिरमितद्युते ॥ आगच्छभगवन्देवयज्ञेऽस्मिन्सन्निधोभव ॥ इत्यग्निंसंप्रार्थ्य ॥ ईशान्यांपीठोपरिग्रहस्थापनम् ॥ तदुपरिश्वेतवस्त्रप्रसारितेचंदनादिनावाप्रक्षालिततंडुलेनयथोक्तमष्टदलेग्रहमंडलानिर्मापयेत् ॥

अथग्रहवेद्यांसर्वतोभद्रंलिखेत् ॥ तल्लेखनप्रकारस्तुहेमाद्रिस्कांदे ॥ यजमानान्वितआचार्योग्रहवेद्यांसर्वतोभद्रे-मंडलदेवतास्थापयेत्पूजयेच्च ॥ अन्येतुसर्वतोभद्रमंडलदेवतास्थापनंतत्पूजनंविनैवग्रहवेद्यामास्तृतवस्त्रेरचिताष्टदलपद्मे लिखितवक्ष्यमाणमंडलेष्वादीत्यादिग्रहान्स्थापयंति ॥ वाजसनेयिनामाचारोप्येवं ॥

अथादित्यादीग्रहाणांस्थापनं ॥ तद्यथा ॥ आचम्यप्राणानायम्य ॥ देशकालौसंकीर्त्या-मुककर्मणि आदित्यादिग्रहाणांस्थापनप्रतिष्ठापूजनमहंकरिष्येइतिसंकल्प्य ॥ ग्रहपीठमध्येवर्तुले द्वादशांगुलेमंडलेप्राङ्मुखंसूर्यंरक्तपुष्पाक्षतैःस्थापयेत् ॥ प्रणवस्यब्रह्माऋषिःदैवीगायत्रीछंदः । परमात्मादेवता ॥ महाव्याहृतीनांप्रजापतिर्ऋषिः ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छंदांसि ॥ अग्निवायु-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

सूर्यादेवता ॥ सूर्याद्यावाहनेविनियोगः ॥ अथवालिंगोक्तमंत्रग्रहगे ॥ आकृष्नेनेत्यस्यहिरण्य स्तूपआंगिरसऋषिः । त्रिष्टुपछंदः ॥ सवितादेवतासूर्यावाहनेविनियोगः ॥ ॐ आकृष्णेनरज सार्व्वर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्यंञ्च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥१॥ ॐ भूर्भुवःस्वःकलिंगदेशोद्भवकाश्यपसगोत्ररक्तवर्णभोसूर्यइहागच्छेहतिष्ठ । ॐ सूर्यायनमःसूर्य आ० ॥ ततआग्नेयदलेचतुर्विंशांगुलेचतुरस्रेश्वेतमंडलेप्रत्यङ्मुखंसोमं श्वेतपुष्पाक्षतैः ॥ इमंदेवाइ य स्यवरुणऋषिः । यजुः । सोमोदेवता । सोमावाहनेविनियोगः ॥ ॐ इमन्देवा असपत्नर्ठसु- वध्वम्महतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठयायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इममसुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रम- स्यैविशएषवोमीराजासोमोस्माकंब्राह्मणानार्ठराजा ॥ २ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःयमुनातीरोद्भवआत्रे यसगोत्रशुल्कवर्णभोसोमइहागच्छेहातिष्ठ ॥ ॐ सोमायनमःसोमंआ मि ॥ ततोदक्षिणदलेत्रि- कोणेरक्तत्र्यंगुलमंडलेदाक्षिणमुखंभौमंरक्तपुष्पाक्षतैः ॥ अग्निर्म्मूर्द्धेतिविरूपाक्ष षि । गायत्रीछं दः । अंगारकोदेवता । अंगारकआवाहनेविनियोगः ॥ ॐ अग्निर्म्मूर्द्धादिव ककुत्पति पृथि-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ञ्याऽअयम् ॥ अपाँरेताँसिजिन्वति ॥३॥ ॐ भूर्भुवःस्वःअवंतीदेशोद्भवभारद्वाजसगोत्ररक्तवर्णभोभौमइहागच्छेहतिष्ठ ॥ ॐ भौमायनमःभौमंआ०मि ॥ ततईशानदलेबाणाकारेपीतेचतुरंगुलमंडलेउदङ्मुखंबुधंपीतपुष्पाक्षतैः ॥ उद्बुध्यस्वेतिपरमेष्ठीऋषिःत्रिष्टुप्छंदः। बुधोदेवता। बुधआवाहने० ॥ ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्त्तेसँसृजेथामयंच ॥ अस्मिन्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवायजमानश्चसीदत ॥४॥ ॐ भूर्भुवःस्वःमगधदेशोद्भवआत्रेयसगोत्रपीतवर्णबुधइहागच्छेहतिष्ठ ॥ ॐ बुधायनमःबुधमावाह०मि ॥ ततउत्तरदलेदीर्घचतुरस्रेपीतषडंगुलेमंडलेउदङ्मुखंबृहस्पतिंपीतपुष्पाक्षतैः ॥ बृहस्पतेतिगृत्समदऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः । बृहस्पतिर्देवता । बृहस्पत्यावा०गः ॥ ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्योऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजाततदस्मासुद्रविणन्धेहिचित्रम् ॥५॥ ॐ भूर्भुवःस्वःसिंधुदेशोद्भवआंगिरसगोत्रपीतवर्णभोबृहस्पतेइहागच्छेहतिष्ठ । ॐ बृहस्पतयेनमःबृहस्पतिंआवा०मि ॥ ततःपूर्वदलेपंचकोणेनवांगुलेश्वेतमंडलेप्राङ्मुखंशुक्रंशुक्लपुष्पाक्षतैः ॥ अन्नात्परिस्रुतइत्यस्यप्रजापत्यश्विसरस्व

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

तींद्राऋषयः । अतिजगतीछंदः । शुक्रोदेवता । शुक्रावाहनेविनियोगः ॥ ॐ अन्नात्परिस्रुतो-
रसम्ब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः ॥ ऋतेनसत्यमिन्द्रियम्विपानᳪंशुक्रमन्धसऽइन्द्र-
स्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु ॥६॥ ॐ भूर्भुवःस्वःभोजकटदेशोद्भवभार्गवसगोत्रपीतवर्णशुक्रइहा
गछेहतिष्ठ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःशुक्रायनमःशुक्रमावा०मि ॥ ततःपश्चिमदलेधनुषाकारेद्व्यंगुलेकृष्न
मंडलेप्रत्यङ्मुखंशनिश्चरंकृष्णपुष्पाक्षतैः शन्नोदेवीतिदध्यङ्ङाथर्वणऋषिः । गायत्रीछंदः । शनि-
श्चरोदेवता । शन्यावाहनेविनियोगः ॥ ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शय्योर-
रभिस्रवन्तुनः ॥७॥ ॐ भूर्भुवःस्वःसौराष्ट्रदेशोद्भवकाश्यपसगोत्रकृष्णवर्णभाशनिश्चरइहागछे-
हतिष्ठ ॥ ॐ शनिश्चरायनमःशनिश्चरंआ०मि ॥ ततोनैर्ऋत्यदलेवृत्ताकारपंचविंशांगुलेमंडले-
दक्षिणाभिमुखंराहुंकृष्णपुष्पाक्षतैः ॥ कयानश्चित्रइत्यस्यवामदेवऋषिः । गायत्रीछंदः । राहुर्दे-
वता । राहुआवाहनेविनियोगः ॥ ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधःसखा ॥ कयाशचिष्ठया
वृता ॥८॥ ॐ भूर्भुवःस्वःबर्बरदेशोद्भवपैठिनसगोत्रकृष्णवर्णभोराहोइहागच्छेहतिष्ठ ॥ ॐ राहवे

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

नमः राहुमावा०मि ॥ ततोवायव्यदलेध्वजाकारेसार्द्धचतुर्दिशांगुलमंडलेदक्षणाभिमुखंकेतुंधूम्रपु
ष्पाक्षतैः ॥ ॐ केतुंकृण्वन्नित्यस्यमधुच्छंदाऋषिः ॥ गायत्रीछंदः ॥ केतवोदेवता ॥ केतुराव-
हनेविनियोगः ॥ ॐ केतुङ्कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे ॥ समुषद्भिरजायथाः ॥ १ ॥
ॐ भूर्भुवःस्वःअंतर्वेदिसमुद्भवजैमिनिसगोत्रधूम्रवर्णभोकेतोइहागछइहातिष्ठ ॥ ॐ केतवेनमः
केतुमावाहयामिस्था०सर्वान्आदित्याभिमुखान्स्थापयेदित्युक्तंमात्स्ये ॥ अथाधिदेवताःप्रत्यधि-
देवताःसर्वाःश्वेतपुष्पाक्षतैःस्थापयेत् ॥ ॐ त्र्यंबकमितिवासिष्ठऋषिः ॥ अनुष्टुप्छंदः ॥ रुद्रोदे-
वता ॥ रुद्रस्थापने० ॥ ॐ त्र्यम्बकंयजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृ
त्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥१॥ सूर्यस्यदक्षिणपार्श्वे ॐ भूर्भुवःस्वःईश्वरइहागछइहातिष्ठ ॥ ॐ ईश्वराय
नमः ॥ ईश्वरंआ० ॥१॥ श्रीश्चतेतिनारायणऋषिः ॥ त्रिष्टुप्छंदः ॥ उमादेवता ॥ उमास्था-
पनेविनियोग ॥ ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥ इष्ण-
न्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥२॥ सोमदक्षिणे ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःउमेइहागछइहातिष्ठ

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥ उमायैनमः ॥ उमांआ० ॥ २ ॥ यदक्रंदेत्यस्यभार्गवोयमदीर्घतमा ऋषिः ॥ त्रिष्टुप्छंदः ॥
स्कंदोदेवता ॥ स्कंदावाहनेवि० ॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथमंजायमनऽउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीपात् ॥
श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्यम्महियातन्तेअर्व्वन् ॥ ३ ॥ भौमदक्षिणे ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः
स्कंदइहागच्छइहातिष्ठ ॥ ॐ स्कंदायनमः । स्कंदआ० ॥३॥ विष्णोरराटमित्यस्यप्रजापतिऋषिः
॥ यजुःछंदः ॥ विष्णुर्देवता ॥ विष्णुरावाहनेवि० ॥ ॐ विष्णोरराटमसिव्विष्णोःश्नप्त्रेस्थोव्वि-
ष्णोःस्यूरसिव्विष्णोर्ध्रुवोसि ॥ व्वैष्णवमसिव्विष्णवेत्वा ॥४॥ बुधदक्षिणे ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःवि-
ष्णोइहागच्छइहातिष्ठ ॥ ॐ विष्णवेनमः ॥ विष्णुंआ० ॥४॥ आब्रह्मन्नित्यस्यप्रजापतिऋषिः ॥
यजुछंदः ॥ ब्रह्मादेवता ॥ ब्रह्मास्थापनेवि० ॥ ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणोब्रह्मवर्चसीजायतामाराष्ट्रेरा
जन्यःशूरऽइषव्योतिव्याधीमहारथोजायतान्दोग्ध्रीधेनुर्वोढानड्वानाशुःसप्तिःपुरन्धिर्योषाजिष्णूर-
थेष्ठाःसभेयोयुवास्ययजमानस्यव्वीरोजायतान्निकामेनिकामेनःपर्जन्योव्वर्षतुफलवत्योनऽओषध
यःपच्यन्तांन्योगक्षेमोनःकल्पताम् ॥५॥ बृहस्पतिर्दक्षिणे ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःब्रह्मन्इहागच्छ इहंतिष्ठ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ॐ ब्रह्मणेनमः ॥ ब्रह्माणंआ० ॥५॥ सजोषाइंद्रेतिमंत्रस्यविश्वामित्रऋषिः ॥ त्रिष्टुपछंदः ॥
इंद्रोदेवता ॥ इंद्रस्थापनेवि० ॥ ॐ सयोषाइन्द्रसगणोमरुद्भिः सोमम्पिबवृत्रहाशूरविद्वान् ॥ ज
हिशत्रूँ२रपमृधोनुदस्वाथाभयंकृणुहिविश्वतोनः ॥६॥ शुक्रदक्षिणे ॥ ॐ भूर्भुवःस्व इंद्रइहाग-
च्छहतिष्ठ । इंद्रायनम इंद्रआ० ॥ यमायत्वेतिदध्यङ्ङाथर्वणऋषिः । यजुः । यमोदेवतायमस्थाप-
नेवि० ॥ यमायत्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा ॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्म पित्रे ॥७॥ शनिदक्षि-
णे ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःयमइहा०इहतिष्ठ ॥ यमायनमःयमंआ० ॥ कार्षिरसीतिप्रजापतिऋषिः ॥
अनुष्टुप्छंदः । कालोदेवता । कालस्थापनेवि० ॥ ॐ कार्षिरसिसमुद्रस्य त्वाक्षित्याउन्नयामि॥
समापोऽअद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः ॥८॥ राहुदक्षिणपार्श्वे ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःकालइहागच्छह-
तिष्ठ ॥ कालायनमःकालंआ० ॥ चित्रावसोइत्यस्यचित्रगुप्तऋषिः । यजुः । चित्रगुप्तोदेवताचित्र
गुप्तस्थापनेवि० ॥ ॐ चित्रावसोस्वस्तितेपारमशी ॥९॥ केतुदक्षिणपार्श्वे ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः
चित्रगुप्तायनमःचित्रगुप्तंआ० ॥ अथप्रत्यधिदेवताः ॥ शुक्लपुष्पाक्षतैःस्थापयेत् ॥ अग्निंदूतमि-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

त्यस्यविरूपाक्षऋषिः । गायत्रीछंदः । अग्निर्देवता । अग्निस्थापनेवि० ॥ ॐ अग्निन्दूतम्पुरोद-
धेहव्यवाहमुपब्रूवे ॥ देवाँऽऽआसादयादिह ॥१॥ सूर्यवामपार्श्वे ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःअग्नइहागच्छे-
हतिष्ठ ॥ अग्नयेनमःअग्निंआ०आपोहिष्ठेतिसिंधुद्वीपऋषिः । गायत्रीछंदः । आपोदेवताः ।
आपस्थापनेवि० ॥ ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥२॥ सो-
मवामपार्श्वे ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःआपइहा०अद्भ्योनमःअपआ० ॥ स्योनापृथिवीतिमेधातिथिऋ-
षिः । गायत्रीछंदः । पृथिवीदेवता । पृथिवीस्थापनेवि० ॥ ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानि
वेशनी ॥ यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः ॥३॥ भौमस्यवामपार्श्वे । ॐ भूर्भुवःस्वःपृथिवीइहा०पृथिव्यै-
नमःपृथिवींआ० ॥ इदंविष्णुरितिमेधातिथिऋषिः । गायत्रीछंदः । विष्णुर्देवता । विष्णुस्था-
पने० ॥ ॐ इदम्विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपांसुरेस्वाहा ॥४॥ बुधवामपा
र्श्वे ॥ भूर्भुवःस्वःविष्णोइहा० विष्णवेनमः विष्णुंआ० ॥ त्रातारमितिगर्गऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः
। इंद्रोदेवता । इंद्रस्था० ॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिंद्रहवेहवेसुहवंशूरमिंद्रम् ॥ ह्वयामिश-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

कम्पुरुहूतमिन्द्रर्ठंस्वस्तिनोमघवाधातिवन्द्रः ॥५॥ गुरुवामपार्श्वे ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः इंद्रइहा० इंद्राय-
नमः इंद्रंआ० अदित्यैरास्नेतिदध्यङ्ङाथर्वणऋषिः । यजु स्त्रिष्टुप्वा । इंद्राणीदेवता । इंद्राणी-
स्था० ॐ अदित्यैरास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः ॥ पूषासिघर्मायदीष्व ॥ ६ ॥ शुक्रवाम० ॥ ॐ
भूर्भुवःस्वःइंद्राणिइहा०इंद्राण्यैनमःइंद्रानींआ० ॥ प्रजापतेरित्यस्यप्रजापतिर्ऋषिः । अनुष्टुप्छं-
दः प्रजापतिर्देवता ॥ प्रजापतिस्था० । ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योविश्वारूपाणिपरिताबभूव
॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुवयर्ठंस्यामपतयोरयीणाम् ॥ ७ ॥ शनिवाम० । ॐ भूर्भुवः
स्वः प्रजापतेइहा० प्रजापतयेनमः प्रजापतिंआ. ॥ नमोस्तु सर्पेभ्य इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः ।
अनुष्टुप्छंदः । सर्पो देवता सर्पस्था० ॥ नमोस्तुसर्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु ॥ येअंतरिक्षे-
येदिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः ॥ ८ ॥ राहुवामपार्श्वे । ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पाइहा० तिष्ठत सर्पेभ्यो
नमः सर्पान् आ० ॥ ब्रह्मयज्ञानमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः । ब्रह्मादेवता । ब्र-
ह्मास्था० ॐ ब्रह्मयज्ञानंप्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः ॥ सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

व्विष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चाव्विवः ॥ ९ ॥ केतुवाम॰ ॐ भूर्भुव स्व ब्रह्मन्इहा॰ । ब्रह्मणेनमः
ब्रह्माणंआ॰ मि ॥ ततः शुक्ल पुष्पाक्षतैः विनायकादिपंचदेवतास्थापयेत् ॥ गणानांत्वेत्यस्य
प्रजापतिर्ऋषिः ॥ यजुः ॥ गणपतिर्देवता ॥ गणपतिस्थापनेविनियोगः ॐ गणानांत्वागण-
पतिर्ठ हवामहेप्प्रियाणांत्वाप्प्रियपतिर्ठ हवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिर्ठ हवामहेव्वसोमम ॥१॥
राहेरुत्तरतः ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतेइहाग॰ ॐ गणपतयेनमः गणपतिमावाहयास्थापयामि ॥
अंबेअंबिकेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप् ॥ दुर्गादेवता दुर्गास्थाप॰ ॥ अम्बे अम्बिकेम्बालि-
केनमानयतिकश्चन ॥ ससस्त्यश्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् ॥ ५ ॥ शनेरुत्तरतः ॐ भू
र्भुवःस्वः दुर्गेइहा॰ दुर्गायैनमःदुर्गामा॰ आनोनीयु॰ गृत्समद ऋषिः ॥ गायत्री॰ ॥ वा-
युर्देवता ॥ वायोस्था॰ ॥ ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वरंर्ठसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम् ॥
वायोऽअस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयम्पातस्वस्तिभिःसदानः ॥ ३ ॥ रवेरुत्तरतः ॐ भूर्भुवःस्वः ॥
वायोइहाग॰ वायवेनमः ॥ वायुमावाह॰ ॥ घृतंघृतपावेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः ॥ पंक्तिः॰ आ-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

काशोदेवता ॥ आकाशस्थापनेवि० ॥ ॐ घृतघृतपावानःपिबतवसाम्बसापावनःपिबनान्त-
रिक्षस्यहविरसिस्वाहा ॥ दिशःप्रदिशऽआदिशोविदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यःस्वाहाः ॥ ४ ॥ राहो-
र्दक्षिणे ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःआकाशइहा० इहा० आकाशायनमः ॥ आकाशंआ० ॥ यावांकशे-
त्यस्यमेधातिथिरृषिः ॥ गायत्री० ॥ अश्विनौदेवता ॥ अश्विनौआस्था० ॐ यावाङ्कशामधुम-
त्याश्विनासूनृतावती ॥ तयाय ज्ञंम्मिमिक्षताम् ॥ ५ ॥ केतोर्दक्षिणे ॐ भूर्भुवःस्वः ॥ अश्वि-
नौइहा० इहा० आश्विभ्यांनमः आश्विनौआ० ॥ एतेषां विनायकादिनां मंडलोत्तरत स्थापये-
त् ॥इतिचिंतामणौ॥ क्षेत्राधिपतिर्वास्तोस्पतिश्चोत्तरतः ॥इत्येके॥ नहिस्पशइत्यस्यविश्वामित्रऋ-
षि॥ त्रिष्टुप्० क्षेत्राधिपति० क्षेत्राधिपतिस्थापनेविनियोगः ॥ नहिष्पशमविदंनन्यस्माद्वैश्वान-
रात्पुरऽएतारमग्नेः ॥ एमे नमवृधन्नमृताऽअमर्त्यंवैश्वानरंक्षैत्रजित्यायदेवाः ॥७॥नहिस्पश०जित्या-
यदेवाः ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः क्षेत्राधिपतइहा० इहा० क्षेत्राधिपतयेनमः ॥ क्षेत्राधिपतिंआ० ॥
वास्तोष्पतइत्यस्यवसिष्ठऋषिः ॥ त्रिष्टुप्छंदः ॥ वास्तोष्पतिर्देवता ॥ वास्तोष्पतिरावाह० ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मात्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः ॥ यत्तेमहेप्रतितन्नोजुषस्वशन्नोभव-
द्विपदेशंचतुष्पदे ॥ ६ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःवास्तोष्पतइहा० इहा० ॥ वास्तोष्पतयेनमः ॥ वास्तो-
ष्पतिंआ० ॥ सूर्याभिमुखान्दिक्पालान् स्वस्वदिक्षुस्थापयेदि युक्तंहेमाद्रौ ॥ त्रातारमितिमंत्र-
स्य ॥ गर्गऋषिः ॥ त्रिष्टुप्० इंद्रोदेवता ॥ इंद्रस्थापने० ॐ भूर्भुवःस्वः ॥ इद्रइहा० इ-
हा० ॥ इंद्रायनमःइंद्रमा० ॥ त्वन्नोअग्नेइत्यस्यहिरण्यस्तूपऋषिः ॥ त्रिष्टुप्० अग्निर्देवता
॥ अग्निस्थापने० ॐ ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःअग्नेइहा० इहा० अग्नये० अग्निंआ० ॥
सुगन्नुपंथामित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप्० ॥ यमोदेवता ॥ यमस्थापने ॐ सु-
गन्नुपंथा कृणोतुनः ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः ॥ यमइहा० इहा० ॥ यमायनमः ॥ यमं ॥
असुन्वंतामित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप्० ॥ निर्ऋतिस्था० ॐ असुन्वन्तमयजमान-
मिच्छस्तेनस्येत्यामान्विहितस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्या नमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु ॥
ॐ भूर्भुवःस्वःनिर्ऋतेइहा० इहा० निर्ऋते० निर्ऋतिमा० ॥ तत्वायामित्यस्य शुनःशेपऋषिः

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

॥१५१॥

॥ त्रिष्टुप्० ॥ वरुणोदेवता ॥ वरुणास्था० ॥ ॐ तत्वायामि० ॥ ५ ॥ ॐ भूर्भुवःस्व वरु-
णइहा० इहा० वरुणाय० वरुणंआ० ॥ ॐ आनोनियुद्भिरित्यस्यवसिष्ठऋषिः ॥ त्रिष्टुप्० ॥
वायुर्देवता ॥ वायुस्था० ॥ ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वरं० ॥ ६ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः-
वायोइहा० इहा० वायवेनमः ॥ वायुंआ० ॥ वयंसोमेत्यस्य बंधु ऋषिः ॥ गायत्री० ॥ सो-
मोदेवता ॥ सोमस्थाप० ॥ ॐ व्वयंसोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः प्रजावन्तःसचेमहि ।७।
ॐ भूर्भुवःस्वःकुबेरइहा० इहा० कुबेराय० कुबेरंआ० ॥ तमीशानमित्यस्य गौतम ऋषिः ॥ ज-
गतीछंदः ॥ ईशानोदेवता ॥ ईशानस्था० ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिन्धियंजिन्वमवसे-
हूमहेव्वयम् ॥ पूषानो यथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये ॥ ८ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः-
ईशानइहा० ईहा० ईशानाय० ईशानंआ० ॥ पूर्वेशानयोर्मध्येब्रह्मागम् ॥ अस्मेरुद्राइत्यस्य प्र-
गाथऋषिः ॥ त्रिष्टुप्० ॥ ब्रह्मादेवता ॥ ब्रह्मस्था० ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्व्वतासोवृत्रहत्येभर-
हूतौसजोषाः ॥ यःशंसतेस्तुवतेधायिपज्रऽइन्द्रज्येष्ठाऽ अस्माँऽअवन्तुदेवाः ॥ ९ ॥ ॐ भू-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

र्भुवःस्वःब्रह्मन्इहा० इहा० ब्रह्मणेनमः ब्रह्माणंआ० निर्ऋतिवरुणयोर्मध्येअनंतं ॥ स्योनापृ-
थिवित्यस्यमेधातिथिर्ऋषिः ॥ गायत्री० अनंतस्थापने० ॐ स्योनापृथिवि० ॥ १० ॥ ॐ भू-
र्भुवःस्वः ॥ अनंतइहा० इहा० अनंतायनमःअनंतंआ० ॥ एवंदेवतासंस्थाप्यामनोजूतिरित्य-
स्यांगिरिसोबृहस्पतिऋषिः ॥ यजुः० ॥ विश्वेदेवादेवता ॥ आदित्यानांप्रतिष्ठापनेवि० ॥ ॐ
मनोजूति०प्रतिष्ठा ॥ ॐ सूर्याद्यावाहितग्रहपीठमंडलदेवताः मूर्त्तिसहिताःसुप्रतिष्टितावरदाभव-
त ॥ प्रतिष्ठां तेयथालब्धोपचारैःपूजांकुर्यात् ॥ एवंप्रतिष्ठाप्यआकृष्णेनेत्यादिस्वस्वस्थापितमंत्रे-
णनाममंत्रेणवाऽदित्यादीनांसर्वेषांकांडानुसमयेनपदार्थानुसमयेनवाषोडशोपचारैःपूजनंकुर्यात ॥
यद्वा ॐ भूर्भुवःस्वःआदित्याद्यावाहितदेवताभ्योनमइतिमंत्रेणपदार्थानुसमयेनषोडशोपचारैः
संपूजयेत् ॥ तत्रसूर्यादीनांग्रहाणांस्वस्ववर्णानिवासांस्यनुलेपनानिकुसुमानिशेषेभ्यश्चासितव-
स्त्रगंधपुष्पाणिदातव्यानि ॥ धूपस्तुसर्वेषांगुग्गुलः ॥ प्रागुक्तप्रकारेणदीपनैवेद्यफलतांबूलद-
क्षिणाश्चदेयाः ॥ यथोक्तद्रव्याद्यालाभेयथालाभंग्राह्यम् फलादीनामलाभेतुयथालाभं ॥ एवं-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

संपूज्य ॥ ततो नीराजनं । नववर्त्तियुतंदीपंघृतेनपरिपूरितम् ॥ ग्रहाणामग्रतः कार्यं ते-
जोसीतिचमंत्रत ॥ इतिनीराजनम् ततःपुष्पांजलिः । विशेषार्घः ॥ फ॰पुष्पाक्षतचंदनो-
दकेनार्घः तत्रमंत्रः आदित्याद्याग्रहाःसर्वेपीठेचात्रप्रतिष्ठिताः अनेन अर्घदानेनफलदास्तुसदा-
मम ॥ आवाहितदेवताभ्योनमःअर्घ्यंसमर्पयामि ॥ ततःप्रार्थयेत् ॥ आदिदेवनमस्तुभ्यंसप्तस-
प्तदिवाकर ॥ त्वंरवेतारयस्वास्मानस्मात्—संसारसागरात् ॥१॥ रोहिणीशसुधामूर्त्तेसुधारूपसुधाशनः
॥ सोमसौम्योभवास्माकंसर्वदातेनमोनमः ॥ २ ॥ कुजकुप्रभवोपित्वंमंगलःपरिगद्यसे ॥ अ-
मंगलंनिहत्याशुसर्वदायच्छमंगलं ॥ २ ॥ बुधस्त्वंबुधजननोबोध्यवान्सर्वदानृणाम् ॥ तत्वा-
वबोधंकुरुमेसोमपुत्रनमोनमः ॥ ४ ॥ धर्मशास्त्रार्थतत्वज्ञज्ञानविज्ञानपारग ॥ विबुधार्त्तिहरा-
चिंत्यदेवाचार्यनमोस्तुते ॥ ५ ॥ भार्गवोभर्गजननश्रुतिस्मृतिविशारदः ॥ हित्वाग्रहकृतान्दो-
षानायुरारोग्यदोस्तुसः ॥ ६ ॥ नमस्तेमंदसंज्ञायशनैश्चरनमोस्तुते ॥ प्रसादंकुरुदेवेशदीन-
स्यप्रणतस्यच ॥ ७ ॥ अर्धकायमहावीर्यचंद्रादित्यविमर्दन ॥ सिंहिकागर्भसंभूतपीडांहरमहा-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

तम ॥ ८ ॥ धूम्रवर्णमहाकायघोररूपमहोत्कट ॥ महाकेतोनमस्तुभ्यंममपीडांनिवारयइति ॥
॥ ९ ॥ आयुर्विद्यांधनंसौख्यंयशःशौर्यंवपुष्कलम् ॥ पुत्रान्देहिधनंदेहिसर्वान्कामांश्चदत्तमे
॥ १० ॥ एवं संप्रार्थ्य ॥ अनयापूजयाआदित्याद्यावाहितदेवताःप्रीयंताम्नमम ॥ ततोग्र-
हवेदीशानभागेगोमयोपलिप्तेसितैस्तंडुलैरष्टदलंकृत्वातत्कर्णिकायांअक्षतपुंजं कृत्वा तत्र अव्र-
णंकलशंहारिद्रादध्यक्षतविभूषितंचंदनपुष्पमालाम्रपल्लवार्चितंपूर्ववत् कलशस्थापनविधिनापूर्ण-
पात्रनिधानांतंसंस्थाप्य ॥ तत्वायामीतिवरुणमावाह्याभ्यर्च्यसर्वेसमुद्राःसरितइतिगंगाद्यावाहये-
त् ॥ कलशस्यमुखेविष्णुरित्यादिकै प्रसन्नोभवसर्व देत्यंतैर्मंत्रैःकलशाभिमंत्रणंकुर्यात् ॥ तत इदं-
फलपुष्पमालाशोभितंविचित्रवर्णवितानंबृहस्पतिदैवतंसूर्यादिभ्योनमम त्युसृज्यवेद्युपरिबध्नीयात् ।
तत्रैकब्राह्मणःकुंभंस्पृष्ट्वासांगरुद्रंजपेत् ॥ असंख्येतिमंत्रेणरुद्रंरुद्रघटांभसीतिवासिष्ठोक्तेः ॥ तस्मि-
न् कलशेअसंख्यातासहस्राणीतिमंत्रेणरुद्रमावाह्य संपूज्यकलशेसांगरुद्रजपःकार्यः ॥ कर्मांता-
भिषेकवेलायामस्योदकेनसकलत्रंयजमानमभिषिंचेत् ॥ इतिग्रहस्थापनप्रयोगः ॥ यजुषाम-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

न्वाधानंहरिहरगदाधरादिभिर्नोक्तंतथापिप्रयोगरत्नादावन्वाधानोक्तेःप्रचुरतरशिष्टाचारप्राप्तत्वाच्चा
त्रलिख्यते अन्वाधानंतथागृह्येयजुषांवैप्रकीर्तितम् ॥ श्रौतेकर्मणि सर्वत्रदेवतान्वाहितिर्भवेत् ॥
॥ तद्यथा ॥ आचार्योग्नेःपश्चिमतउपविश्यआ॰प्रा॰ देशकालौस्मृत्वास्मिन् अमुककर्मांगे-
ग्रहमखशांत्याख्यकर्मणि ॥ वैकल्पिकपदार्थावधारणंदेवताभिधानंचकरिष्ये इतिसंकल्पंकुर्या-
त् ॥ तद्यथा ॥ पूर्वेणब्रह्मणोगमनमपरेणवा ॥ अग्नेःपश्चिमतःपात्रासादनमुत्तरतोवा ॥ द्वे-
पवित्रेत्रीणिवा ॥ आज्यस्थालीचरुस्थालीचतैजसीमृन्मयीवा ॥ पालाश्यः सामिध्योयज्ञवृ-
क्षोद्भवावा ॥ प्रांचावाघारौविदिशौवा ॥ समिध्यतमेआज्यभागौ पूर्णपात्रंवरोवा ॥ एतान्वैक-
ल्पिकपदार्थानहंकरिष्ये ॥ अथदेवताभिधानं ॥ प्रजापतिं । इंद्रं । अग्निं । सोमं । एताज्य-
नैकैकयाहुत्या ॥ अत्रप्रधानं । आदित्यादिनवग्रहान् अर्कादियथालाभसमिच्चरुतिलाज्यद्रव्यैः
प्रत्येकंप्रतिद्रव्येणाष्टाष्टसंख्याकाभिराहुतिभिरधिदेवताप्रत्यधिदेवताश्चतैरेवद्रव्यैःप्रत्येकंप्रतिद्रव्येणै
कैकयासंख्यया राहुत्यातथैवविनायकादिपंचा लोकपालान्क्षेत्रपालं वास्तोष्पतिमिंद्रादिदश-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

दिक्पालांश्चतैरेवद्रव्यैः प्रत्येकंप्रतिद्रव्येणैकैकयाहुत्यान्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थमनादिष्टप्रायश्चि त्ताहुतिभिः शेषेणस्विष्टकृतमग्निंवायुंसूर्यंअग्निवरुणौअग्निवरुणौअग्निंवरुणंसवितारंविष्णुंविश्वान्देवान् मरुतःस्वर्कान्वरुणंप्रजापतिमिताअंगप्रधानार्थादेवता अस्मिन्कर्मण्यहंयक्ष्ये ॥ अग्न्यायतनाद्दक्षिणतोवितस्त्यंतरेसंस्थापितवारणादिपीठेउदगग्रान्कुशानास्तीर्यवह्नेरुत्तरतः पूर्वाभिमुखमासीनंब्रह्माणंस्वयंचोदङ्मुखासीनोब्रह्मणोसव्येतरहस्तंगृहीत्वाभोब्रह्मन् अत्रोपविशेतिवदेत् ॥ तेनोपविशामीतिपठित्वांदक्षिणपादेनाग्निपूर्वेणगत्वास्वासनादंगुष्ठानामिकाभ्यामेकं तृणं गहीत्वा तन्नैर्ऋत्यांत्यक्त्वाग्न्य भिमुखउपविशतीति ब्रह्मोपवेशनं ॥ यदाब्रह्माप्रत्यक्षाभावेतदाकौशःकार्यइतिहरिहरः ॥ कौशश्चेत्तदाप्रैषानुप्रैषौनभवतः ॥ ततो यथाविधिप्रणीताप्रणयनादिप्रोक्षण्युदकेनसपवित्रेणाग्नेःपर्युक्षणम्परावर्तनम् पवित्रयोः प्रणीतासुनिधानांतं कृत्वा ॥ ततो दक्षिणजान्वालभ्यउपयमनकुशसहितंप्रसारितांगुलिहस्तंहृदिनिधाय कुशैर्ब्रह्मान्वारब्धःस्रुवेणहोमः ॥ मनसा ॥ ॐ प्रजापयतयेस्वाहा ॥ इदं प्रजापतये ॥ इति त्यागोयजमानेनकार्यःसर्वत्र ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

(होमावशिष्टस्यसंस्रवशब्दवाच्यस्य पात्रांतरेभक्षार्थंक्षिपेत्) ॐ इंद्रायस्वाहाइति प्रांचावाघारौ । इदमिं-
द्राय ॥ ॐ अग्नयेस्वाहा । इदमग्नये ॥ ॐ सोमायस्वाहाइदं सोमाय ॥ एतावाज्यभागौ स-
मिध्धतमेग्नौहोतव्यौ ॥ ततोयजमानोद्रव्यत्यागंकुर्यात् ॥ यथाकालंप्रत्यग्हुतित्यागकर्तुमशक्य-
त्वात् ॥ इदंसंपादितंसमिच्चरुतिलाज्यादिहविर्द्रव्ययायायक्ष्यमाणदेवतास्तस्यैतस्यैदेवतायैत्यजा
मीति ॥ यथादैवतमस्तु ॥ ततआकृश्नेनेत्याद्यावाहितमंत्रैरादित्यादिनवग्रहानूक्रमेण पूर्वोक्ता-
र्कादिसमिच्चरुतिलाज्यद्रव्यैरष्टाष्टसंख्ययाहुत्वा । पूर्वोक्तग्रहहोमद्रव्येणावाहितमंत्रैरधिदेवता प्रत्य-
धिदेवता संख्ययाहुत्वा । यस्यग्रहस्ययासमित्सातस्याधिदेवतायाःप्रत्यधिदेवतायाश्चयोज्या । वि-
नायकादिदिकपालां यथा देवतानां पलाशोदुंबरान्यतमसमिच्चरुतिलाज्यद्रव्येणावाहितमंत्रै यथा
संख्ययाहुत्वा ॥ आज्यद्रव्येणानादिष्टंजुहुयात् ॥ एवंहोमंसमाप्याग्नेः स्थापितदेवता नां-
चोत्तरपूजनंकार्यं ॥ अद्यपू० कृतस्यकर्मणःसांगतासिध्यर्थं स्थापितदेवतानांमृडाग्नेश्चोत्तरपूज-
नंकरिष्ये ॥ (बटुर्वाकन्यापूजनंकुर्यादित्याचारः ॥ यज्ञपार्श्वेरुद्रकल्पद्रुपेचमृडाग्निलक्षणग्रोक्तं ॥ पूर्वंप्रज्वलितो-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

ह्यग्निर्हविर्द्रव्यंबुभुंजितः ॥ तस्मोनिर्धूमनिर्ज्वालोमृडाग्निः परिकीर्तितइति ॥) ॐ अग्नेनयसुपथारायेऽअस्मा-
न्विश्वानिदेववयुनानिविद्वान् ॥ युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्टान्तेनमऽउक्तिंविधेम ॥ ॐ
मृडाग्नयेनमइतिगंधादिपंचोपचारैःसंपूज्य ॥ ॐ आदित्याद्यावाहितदेवताभ्योनमः गंधादिपं-
चोपचारैःसंपूजयेत् ॥ पूजासाद्गुण्यार्थेदक्षिणांसमर्पयामि ॥ पूजांतेअनयापूजयामृडाग्निःस्था-
पितदेवताश्चप्रीयंतांनमम ॥ ततोहुतशेषहविर्द्रव्यंगृहीत्वा ब्रह्मान्वारब्धःस्विष्टकृद्धोमंकुर्यात् ॥
ॐ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा ॥ इदमग्नयेस्विष्टकृतेनमम ॥

आचम्यप्राणानायम्य ॥ अत्राद्य० अस्मिन्कर्मणिजलादिनाग्न्युपघातजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं तथा० आसा
दितप्रणीतास्कंदनशोषणप्रस्रवणादिजनित० अस्मिन्हवनीयद्रव्याणामक्षेश्वकेशनखकीटपिपीलिकामक्षिकाद्युपघातज
नितप्र० त० परिस्तरणबर्हिरादीनांदाहादिनाशजनित० त० आयतनाद्बहिरंगारपतनजनित० त० स्वराक्षरपदवर्णभ्रं-
शजनित० स्वाहाकारहविःप्रदानासमकालजनितप्रत्य० नियमासनवाग्लोपजनितप्रत्यवायपरि० होमद्रव्याणां स-
मिदादीनांमध्येउक्तसंख्यातोन्यूनातिरिक्तत्वजनितप्रत्य० देवताग्न्योर्मध्ये ऋत्विगग्निमध्येचपुरुषांतरगमनजनित्व-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

प्रत्यवाय० प्रधानाहुत्युपरिस्विष्टकृदाहुतिप्रक्षेपजनित० हूयमानाहुतिस्कंदनजनितप्र० अग्नेरुक्तस्थानादन्यत्रनासाकर्णादौकृताहुतिप्रक्षेपजानितप्र० वेदिका कुंडकलशप्रतिमादीनामुक्तप्रमाणाध्यीनाधिकताजनितप्र० होमसंपूर्णसांगतासिध्यये व्याहृतिहोमपूर्वकसर्वप्रायश्चित्तंहोष्येब्रह्मान्वारंभेहोम अथवा अग्नये स्वाहाइत्येकामाज्याहुतिहोष्ये ।। महाव्याहृतयः सर्वप्रायश्चित्तप्राजापत्यतत् ।। सर्वप्रायश्चित्तस्तु त्वन्नोऽअग्नइत्यारभ्यउदुत्तममित्यतंआहुतिपचकं प्राजापत्यः ।। महाव्याहृतिस्तुप्रसिध्याः चरौश्रप्यमाणेलापादुत्सिस्कोचस्तसेकजनितप्रत्यवाय० पूर्वस्यांइंद्रायस्वाहादक्षिणस्यांयमायस्वाहा ।। प्रतीच्यांवरुणाय० उदीच्यां सोमायस्वाहाविदिक्षुभूर्भुवःस्वःस्वाहा ।।

ततो भूराद्यानवाहुतयः ।। ॐ भूर्भुवःस्वःमहाव्याहृतीनांप्रजापतिर्ऋषिः ।। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छंदांसि ।। अग्निवायुसूर्यादेवतासर्वप्रायश्चिताज्यहोमेविनियोगः ।। ॐ भूःस्वाहा ।। इदमग्नये ।। ॐ भुवःस्वाहा । इदंवायवे ।। ॐ स्वःस्वाहा ।। इदंसूर्यायनमम ।। ॐ त्वन्नोअग्नेसत्वन्नोअग्नेअयाश्चाग्नेयेतश्शतामितिमंत्राणांवामदेवऋषिः ।। त्रिष्टुप्छंदः ।। अग्निवरुणौदेवतातिप्रथमद्वितीययोस्तृतीयस्या अग्निर्देवता । चतुर्थस्यमरुतःस्वर्कादेवताः उदुत्तममितिशुनःशेपऋ-

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

षिः ॥ त्रिष्टुप्छंदः ॥ वरुणोदेवतासर्वेषांप्रायश्चित्ताज्यहोमेविनियोगः ॥ ॐ भूःस्वाहा । इद-
मग्नये । ॐ भुवःस्वाहाइदंवायवे । ॐ स्वःस्वाहाइदंसूर्याय ॐ त्वन्नो अग्नेव्वरुणस्यविद्वा-
न्देवस्यहेडो अवयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठोव्वह्नितमःशोशुचानोविश्वाद्वेषांꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वा-
हा ॥ इदमग्निवरुणाभ्यांनमम ॥ ॐ सत्वन्नोअग्नेवमोभवोतीनेदिष्ठो अस्याऽउषसोव्युष्टौ ॥
अवयक्ष्वनोव्वरुणꣳरराणोव्वीहिमडीकꣳसुहवोनएधिस्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यां ॥ ॐ अयाश्चा-
ग्नेस्यनभिशस्तिपाश्चसत्यमित्वमयाअसि अयानोयज्ञंव्वहास्ययानोधेहिभेषजꣳस्वाहा ॥ इदम-
ग्नयेअयसेनमम ॥ ॐ येतेशतंवरुणयेसहस्त्रंयज्ञियाःपाशाविततामहान्तः ॥ तेभिर्न्नोअद्यसवि-
तोतविष्णुर्विश्वेमुंचंतुमरुतःस्वर्क्काःस्वाहा ॥ इदंवरुणायसावित्रेविष्णवेविश्वेभ्योदेवेभ्योमरुद्भ्यः स्वर्के-
भ्यश्चनमम ॥ ॐ उदुत्तमंव्वरुणपाशमस्मदवाधमंव्विमध्यमꣳश्रथाय ॥ अथाव्वयमादित्यव्व्र-
तेतवानागसोअदितयेस्यामस्वाहा ॥ इदंवरुणायादित्यायादितयेचनमम ॥ ॐ प्रजापतयेस्वा-
हाइदंप्रजापतये ॥ इति नवाहुतयः ॥ ततो बलिदानं । तच्चेत्थं ॥ अग्न्यायतनसमंताद्दिक्षु-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

विदिक्षुचमाषक्तबलिंदिक्पालेभ्योदद्यात् ॥ आचम्यप्राणानायम्य ॥ देशकालौस्मृत्वा कृतस्यक-
र्मणःसांगतासिध्यर्थंदिक्पालेभ्यआदित्यादिस्थापितदेवताभ्यश्चपूजनपूर्वकंबलिदानंकरिष्ये ॥
ॐ त्रातारमिंद्र० प्राच्यां सांगायसपरिवारायसायुधायसशक्तिकायेन्द्रायनमःगंधाक्षतपुष्पाणि
समर्पयामि ॥ इंद्रायसांगायसपरिवारायसायुधायसशक्तिकायेमंसदीपमाषभक्तबलिंसमर्पयामि
॥ भोइंद्रदिशंरक्षबलिंभक्षममसकुटुंबस्याभ्युदयंकुरु ॥ आयुःकर्त्ताक्षेमकर्ताशांतिकर्तापुष्टिकर्ता-
तुष्टिकर्तानिर्विघ्नकर्तावरदोभव ॥ अनेनबलिदानेद्रःप्रीयताम् ॥ एवंसर्वत्र ॥ ॐ त्वन्नोअग्नेत-
वदेवपा० ॥ आग्नेयां ॥ सांगाय० सशक्तिकायेमंसदीपमाषभक्तबलिंसमर्पयामि ॥ भोअग्नेदि-
शंरक्षबलिंभक्ष० निर्विघ्नकर्तावरदोभव ॥ अनेनबलिदानेनाग्निःप्रीयताम् ॥ ॐ यमायत्वाङ्गिर-
स्व० । दक्षिणस्यां । सांग।० सप० सायु० सशक्तिकाययमायनमः गंधाक्षत० ॥ यमायसां-
गा० सप० सायु० सश० येमंसदीपंमाषभक्तबलिंस० ॥ भोयमदिशंरक्षबलिंभक्षममसकुटुंब-
स्याभ्युदयंकुरु आयुः क्षेम० शांति० पुष्ठि० तुष्टि० निर्विघ्नकर्तावरदोभव ॥ अनेन बलिदाने-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

।१६२।

नयमःप्रीयताम् ॥ ॐ अखुन्वन्तमयजमान० नैर्ऋत्यां ॥ सांगा० सप० सायु० सशक्तिकायनै-
र्ऋतयेनमः गंधाक्षत० । निर्ऋतयेसांगा० सप० सायु० सशक्ति० येमंसदीपंमाषभक्तबलिंस०
॥ भोनिर्ऋतेदिशंरक्षबलिंभक्षमम० कुरु । आयुक० क्षेम० शांति० पुष्टि० तुष्टि० निर्विघ्नक-
र्तावरदोभव । अनेनबलिदानेननिर्ऋतिःप्रीयताम् ॥ ॐ तत्वायामिब्र० पश्चिमायां ॥ सांगा०
सप० सायु० सशक्तिकायवरुणायनमःगंधा० ॥ वरुणायसां० सप० सायु० सश० येमंसदीप-
माषभक्तबलिंस० ॥ भोवरुणदिशंरक्षबलिंभक्षममसकुटुंबस्याभ्यु० ॥ आयुःक० क्षेम० शांति०
पुष्टि० तुष्टिक० निर्विघ्नकर्तावरदोभव ॥ अनेनबलिदानेनवरुणःप्रीयताम् ॥ ॐ आनोनियु-
द्भिःश० ॥ वायव्यां । सांगा० सप० सायु० सशक्तिकायवायवेनमःगंधा० ॥ वायवे सांगा०
सप० सायु० सश० येमंसदीपमाषभक्तबलिंस० ॥ भोवायोदिशंरक्षबलिंभक्षममसकुटुंबस्याभ्यु-
दयंकुरु ॥ आयुःक० क्षेम० शांतिक० पुष्टिक० तुष्टि० निर्विघ्नकर्तावरदोभव ॥ अनेनबलि-
दानेनवायुःप्रीयताम् ॥ ॐ व्वयर्ठंसोमव्रते० ॥ उदीच्यां ॥ सांगा० सप० सायु० सशक्तिकाय

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

सोमायनमः गंधा० ॥ सोमायसांगा० सप० सायु० सश० येमंसदीपमाषभक्तबलिंस० ॥ सोमदिशंरक्षबलिंभक्षमम० भ्युदयंकुरु ॥ आयुःक० क्षेम० शांति० पुष्टि० तुष्टिक० निर्विघ्नकर्तावरदोभंव ॥ अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम् ॥ ॐ तमीशानंजगत० । ईशान्यां ॥ सांगा० सप० सायु० सशक्तिकायईशानायनमगंधा० ॥ ईशानायसांगा० सप० सायु० सश० ईशानायेमंसदीपमाषभबलिंस० ॥ भोईशानदिशंरक्ष० बलिं० मम० कुरु । आयुक० क्षेमक० शांतिक० पुक्तष्टिक० तुष्टि० निर्विघ्नकर्तावरदोभव ॥ अनेनबलिदानेनईशानःप्रीयताम् ॥ पूर्वेशानयोर्मध्येऊर्ध्वायां ॥ ॐ अस्मेरुद्रामे० ॥ सांगा० सप० सायु० सश० ब्रह्मणेनमः गंधा० ॥ ब्रह्मणेसांगा० सप० सायु० सशक्तिकायेमंसदीपमाषभक्तबलिंस० ॥ भोब्रह्मन्दिशंरक्ष० बलिं भ० ममसकुटुंबस्याभ्युदयंकुरु ॥ आयुःक० क्षेमक० शांति० पुष्टिक० तुष्टिक० निर्विघ्नकर्तावरदोभव ॥ अनेन बलिदानेन ब्रह्माप्रीयताम् ॥ निर्ऋतिपाश्चिमयोर्मध्येअधः ॥ ॐ स्योनापृथि ॥ सांगा० सप० सायु० सश० अनंतायनमः गंधा० ॥ अनंतायसांगा० सप० सायु० स-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

शक्तिकायेमंसदीपमाषभक्ति बलिंस० ॥ भोअनंतादिशंरक्ष० बलिंभ० ममसकुटुंबस्याभ्युदयं कु-
रु आयुःक० क्षेमक० शांतिक० पुष्टिक० तुष्टिक० निर्विघ्नकर्तावरदोभव ॥ अनेनबलिदाने-
नानंतःप्रीयताम् ॥ ततोग्रहवेद्यांसमंतात् ग्रहाणांबलिः ॥ ग्रहपीठस्थसूर्यादिदेवताभ्यएकएवब-
लिः ॥ ॐ ग्रहाऊर्ज्जाहुतयोव्व्यंन्तोव्विप्प्रायमतिम् ॥ तेषांव्विशिष्प्रियाणांव्वोहमिषमूर्ज्जंदं
समग्रभमुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वा जुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम् ॥ सम्पृचौस्स्थःसं-
म्माभद्रेण पङ्क्ताव्विपृचौस्स्थोव्विमापाप्मनापृङ्क्तम् ॥ १ ॥ सांगाभ्यः सपरिवाराभ्यः सश-
क्तिकाभ्यःअधिप्रत्यधिदेवतादेवताविनायकादिपंचलोकपालवास्तोष्पतिसहिताभ्यआदित्यादि-
नवग्रहदेवताभ्योनमःगंधा० ॥ सांगा० सप० सश० अधिदेवताप्रत्यधिदेवताविनायकादिपंच-
लोकपालवास्तोष्पतिसहिताभ्यआदित्यादिनवग्रहदेवताभ्यइमंसदीपमाषभक्तबलिंस० ॥ भो-
भोआदित्यादिनवग्रहदेवताअधिप्रत्यधिदेवताविनायकादिपंचलोकपालवास्तोष्पतिसहिताःइमं-
बलिंगृह्णीतममसकुटुंबस्याभ्युदयंकुरुध्वं ॥ आयुःक० क्षेम० शांति० पुष्टि० तुष्टि० निर्विघ्न० व-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

रदाः भवत ॥ अनेन बलिदानेनाधिप्रत्यधिदेवताविनायकादिपंचलोकपालवास्तोष्पतिदेवता-
सहितआदित्यादिनवग्रहदेवताः प्रीयंताम् ॥ एवंमातृणामेकएवबलिः ॥ ॐ समख्येदेव्याधि-
यासंदक्षिणयोरुचक्षसा ॥ मामआयुःप्रमोषीर्म्मोअहंतववीरंव्विदेयतवदेविसंदशि ॥ १ ॥ सां-
गा॰ सप॰ सश॰ गौर्यादिमातृभ्योनमःगंधा॰ ॥ गौर्यादिमातृभ्यः सांगाभ्यः सप॰ सशक्ति-
काभ्यःइमंसदीपमाषभक्तबलिंस॰ ॥ भोभोगौर्यादिमातरइमंबलिंगृह्णीतममसकुटुंबस्याभ्युदयं-
कुरुध्वं ॥ आयुःकर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शांति॰ पुष्टि॰ तुष्टि॰ निर्विघ्नकर्त्र्यःवरदाःभवत । अनेन-
बलिदानेनगौर्यादिमातरःप्रीयंताम् ॥ अथ क्षेत्रपालमहाबलिः ॥ अत्रशिष्टाचारान्नृत्यगीतवा-
दित्राणांघोषःकार्यः ॥ कुशास्तृतैकस्मिन्वंशपात्रेपुरुषचतुष्टयाहारपर्याप्तंतदर्धंवाप्राषभक्तादिब-
लिद्रव्यंजलपात्रंचनिधायक्षेत्रपालंपूजयेत् ॥ देशकालौस्मृत्वासकलारिष्टशांतिपूर्वकंमारीप्सित-
स्यकर्मणःसांगतासिध्यर्थंक्षेत्रपालपूजनंबलिदानंचकरिष्ये ॥ ॐ नहिस्पशमविदंनन्न्यमस्माद्वै-
श्वानरात्पुरएतारमग्नेः ॥ एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरंक्षैत्रजित्यायदेवाः ॥ १ ॥ इति क्षे-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

त्रपालायनमः गंधाद्युपचारैः संपूज्य ॥ क्षेत्रपालायसांगायसपरिवारायभूतप्रेतपिशाचराक्षसशाकि-
नीडाकिनीवेतालादिपरिवारयुतायसायुधायसशक्तिकायसवाहनायइमंसदीपमाषभक्तबलिंस० ॥
भोभोक्षेत्रपालसर्वतोदिशंरक्षबलिंभक्षममसकुटुंबस्याभ्युदयंकुरु ॥ आयुःकर्ता क्षेम० शांति० पुष्टि०
तुष्टि० निर्विघ्न० वरदोभव ॥ अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालःप्रीयताम् ॥ ततःपश्चादनवेक्षमाणो-
दुर्बलब्राह्मणेनबलिंनीत्वा चतुष्पथेक्षिपेत् ॥ ततोयजमानस्य पृष्टजलंक्षिपेदध्विंकारेतिमंत्रेण
॥ ॐ हिंकारायस्वाहाहिंकृतायस्वाहाक्रंदतेस्वाहावक्रन्दायस्वाहाप्रोथतेस्वाहाप्रप्रोथायस्वाहा गं-
धायस्वाहाघ्रातायस्वाहानिविष्ठायस्वाहोपविष्टास्वाहासंदितायस्वाहावल्गतेस्वाहासीनायस्वाहा-
शयानायस्वाहास्वपतेस्वाहाजाग्रतेस्वाहाकूजतेस्वाहाप्रबुध्धायस्वाहाविजृंभमाणायस्वाहाविवि-
च्चृत्तायस्वाहासंदं०हानायस्वाहोपस्थितायस्वाहायनायस्वाहाप्रायणायस्वाहा ॥ १ ॥ ततोयज-
मानःपाणिपादंप्रक्षाल्याचम्यपूर्णाहुतिहोमंकुर्यात् ॥ ततोदेशकालौस्मृत्वाकृतस्यकर्मणःसांगता-
सिध्यर्थंवसोर्धारासमन्वितपूर्णाहुतिहोमं करिष्ये ॥ तत्रान्यदाज्यमाज्यस्थाल्यांनिरूप्याग्नाव-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

धिश्रित्यस्रुक्स्रुवौप्रतप्यतौचसंमार्गकुशैः संमृज्यपुनःप्रतप्यदेशेनिदध्यात् ॥ आज्यमुद्वास्यप-
वित्राभ्यांसमुत्पूययावेक्ष्यापद्रव्यंनिरस्य चतुष्कृत्वोद्वादशकृत्वोवाज्यंस्रुचिगृहीत्वाशिष्टाचारात्तस्यां
रक्तसूत्रवस्त्रवाबध्धपुष्पमालापरिवेष्टितंनारिकेलादिफलंनिधायाधोमुखस्रुवाछिन्नांपूर्वंहस्तेनशंख-
संनिभमुद्रयातामादायपश्चाद्वामेनगृहीत्वानाभिमूलाद्वामस्तनांतमानीयपूर्णाहुतिंयजमानान्वा-
रब्धआचार्योजुहुयात् ॥ तत्रमंत्राः ॥ ॐ समुद्रादूर्म्मिर्मधुमाँ२ऽउदारदुपांशुनासममृतत्वमान-
ट् ॥ घृतस्यनामगुह्यन्यदस्तिजिह्वादेवानाममृतस्यनाभिः ॥१॥ व्वयन्नामप्रब्रवामाघृतस्यास्मि-
न्यज्ञेधारयामानमोभिः ॥ उपब्रह्माशृणवछस्यमानंचतुः शृङ्गोव्वमीद्गौरऽएतत् ॥ २ ॥ चत्वारि-
शृङ्गात्रयोअस्यपादाद्वेशीर्षेसप्तहस्तासोअस्य ॥ त्रिधाबध्धोव्वृषभोरोरवीतिमहोदेवोमर्त्याँ२ऽआ-
विवेश ॥ ४ ॥ त्रिधाहितम्पणिभिर्गुह्यमानङ्गविदेवासोघृतमन्वविदन् ॥ इन्द्रएकंदर्सूर्यऽएकंय-
जानव्वेनादेकंर्दस्वधयानिष्टतक्षुः ॥ ५ ॥ एताऽअर्षन्तिहृद्यासमुद्राच्छतव्रजारिपुणानावचक्षे ॥
घृतस्यधाराऽअभिचाकशीमिहिरण्ययोव्वेतसोमध्यऽआसाम् ॥ ६ ॥ सम्यक्स्रवंन्तिसरितोनधे-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

नाअन्तर्हृदामनसापूयमानाः ॥ एतेऽअर्षन्त्यूर्मयोघृतस्यमृगाइवक्षिपणोरीषमाणाः ॥ ७ ॥ सिं-
न्धोरिवप्राध्वनेशूघनासोव्वातप्रमियः पतयान्तियह्वाः ॥ घृतस्यधाराऽअरुषोनव्वाजीकाष्ठाभिन्द-
न्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ॥ ८ ॥ अभिप्रवन्तसमनेव्वयोषाःकल्याण्यः स्मयमानासोऽअग्निम् ॥
घृतस्यधाराः समिधोनसन्तताजुषाणोहर्यतिजातवेदाः ॥ ९ ॥ कन्याऽइवव्वहतुमेतवाऽउअञ्ज्य
ञ्जानाऽअभिचाकशीमि ॥ यत्रसोमःसूयतेयत्रयज्ञोघृतस्यधाराअभितःपवन्ते ॥ १० ॥ अभ्य-
र्षतसुष्टुतिङ्गव्यमाजिमस्मासुभद्राद्रविणानिधत्त ॥ इमंयज्ञन्नयतदेवतानोघृतस्यधारामधुमत्पव-
न्ते ॥ ११ ॥ धामन्तेव्विश्वंभुवनमाधिश्रितमन्तः समुद्रेहृद्यन्तरायुषि ॥ अपामनीकेसमिथेयऽ-
आभृतस्तमस्याममधुमन्तन्तऽऊर्म्मिम् ॥ १२ ॥ मूर्द्धानंदिवोअरतिम्पृथिव्याव्वैश्वानरमृतआ-
जातमग्निम् ॥ कविंद्ठसंम्राजमतिथिंजनानामासन्नापात्रंजनयंतदेवाः ॥ १२ ॥ पुनस्त्वादित्या-
रुद्राव्वसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः ॥ घृतेनत्वन्तन्वंवर्धयस्वसत्याः संतुयजमान-
स्यकामाः ॥ १४ ॥ सप्त ते अग्नेसमिधःसप्तजिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्तधामाप्रियाणि ॥ सप्तहोत्राः

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

सप्तधात्वायजन्तिसप्तयोनीरापृणस्वघृतेनस्वाहा ॥१५॥ पूर्णादर्विपराप० ॥१६॥ पूर्णादर्विपरापत-
सुपूर्णापुनरापत ॥ व्वस्नेवव्विक्रीणावहाऽइषमूर्जंदं शतक्रतोस्वाहा ॥ ॥ इदमग्नयेवैश्वानरायव-
सुरुद्रादित्येभ्यःशतक्रतवेसप्तवतेअग्नयेअद्यश्वनमम ॥ ॥ ततोवसोर्धारांजुहुयात ॥ तत्रायं-
प्रकारः ॥ वह्निरुपरिस्तंभद्वयविधृतामौदुंबरींमृज्वीमकोटरांबाहुप्रमाणामार्द्रांचतुर्गृहीतंस्रुचंप्रागग्रां-
निधायतदुपरिशृंखलावधृतेनानिर्मलघृतपूरितेनताम्रादिकुंभेनाधोयवमात्रच्छिद्रेणाज्यंविमुंचतोपरु
परिवसोर्धारांपातयेत् ॥ तत्रमंत्राः ॥ व्वाजश्चमेत्यादिसप्तविंशतिकंडिकान्पठेत् ॥ समास्त्वा०
अनुवाकंपठेत् ॥विष्णोर्नुकंषड्चंपठेत्॥ नमस्तेरुद्राध्यायः ॥आप्यायस्वस० महावैश्वानरंसामद्वयं
॥तथाज्येष्टसामंचपठेत॥सप्ततेअग्ने०स्वाहा॥ शुक्रज्योतिश्चचित्रज्योतिश्चसत्यज्योतिश्चज्योतिष्माँ-
श्च॥ शुक्रश्चऋतपाश्चात्यंहाः ॥१॥ ईदृङ्चान्यादृङ्चसदृङ्चप्रतिसदृङ्च॥ मितश्चसंमितश्च सभ-
राः ॥ २ ॥ ऋतश्चसत्यश्चध्रुवश्चधरुणश्च ॥ धर्ताचव्विधर्ताचव्विधारयः ॥ ३ ॥ ऋतजिच्चस-
त्यजिच्चसेनाजिच्चसुषेणश्च ॥ अंतिमित्रश्चदूरेअमित्रश्चगणः ॥ ४ ॥ ईदृक्षासऽएतादृक्षासऽऊषु-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

णःसहक्षासःप्रातिसहक्षासऽएतन ॥ मितासश्चसाम्मितासोनोऽअद्यसभरसोमरुतोयज्ञेऽअस्मिन् ॥
॥ ५ ॥ स्वतवाँश्चप्रघासीचसान्तपनश्च गृहमेधीच ॥ क्रीडीचशाकीचोय्येषि ॥ ६ ॥ इन्द्रन्दै-
वीर्व्विशोमरुतोनुवर्त्मानोभवन्यथेन्द्रन्दैवीर्व्विशोमरुतोनुवर्त्मानोभवन् ॥ एवमिमंयजमानन्दै-
वीश्चव्विशोमानुषीश्चानुवर्त्मानोभवन्तु ॥ ७ ॥ इमंदेस्तनमूर्ज्जस्वन्तन्धयापाम्प्रपीनमग्नेसरिर-
स्यमध्ये ॥ उत्संजुषस्वमधुमन्तमर्व्वन्त्समुद्रियंदसदनमाविशस्व ॥ ८ ॥ घृतम्मिमिक्षे० ॥ अथा-
तोव्वसोर्धारांजुहोतिइति ब्राह्मणमपिकेचित्पठंति ॥ यत्कर्मणात्यरीरिचन्यद्वान्यूनामिहाकृतम् ॥
अग्निष्टंदस्विष्टकृद्विद्वान्स्विष्टंदसुहुतंकरोतुस्वाहा ॥ इदमग्नये नमम ॥ एवंवसोर्धारांकृत्वा ॥ श्र-
द्धांमेधांयशःप्रज्ञांविद्यांपुष्टिंश्रियंबलं ॥ तेजआयुष्यमारोग्यंदेहिमेहव्यवाहन ॥ १ ॥ अथत्र्या-
युषकरणं ॥ त्र्यायुषाणिकरोतिभस्मनाललाटेग्रीवायांदक्षिणेंदसेहृदि च त्र्यायुषमितिप्रतिमंत्रं ॥
अनेनयथोक्तस्थानेभस्मधारयेत् ॥ ततःसंस्रवप्राशनं ॥ पवित्राभ्यांमार्जनं ॥ अग्नौपवित्रप्रति-
पत्तिः ॥ ब्रह्मणेपूर्णपात्रदानंप्रणीतोदकेन ॥ कृतस्यकर्मणःसांगतासिध्यर्थंब्रह्मन्पूर्णपात्रंसद-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

क्षिणाःकंतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ प्रतिगृह्यताम् ॥ प्रतिगृह्णातिदेवस्यत्वेति ॥ प्रणीताविमोकःउदक् ॥
विमोकोदकंआपः शिवेतियजमानःस्वमूर्ध्न्यभिषिंचेत् ॥ ॐ आपःशिवाःशिवतमाःशान्ताः-
शान्ततमास्तास्तेकृण्वंतुभेषजं ॥ (ततः श्रेयः संपादनं ॥ एतच्चाग्निमूर्त्याद्यजमानपर्यन्तमेवेतिकाशिदी-
क्षितानंतदेवादयः) ततआचार्यादीनांगंधवस्त्रालंकारादिभिर्यथाविभवंपूजनंकार्यम् ॥ ततोतिल-
पात्रघृतपात्रादिदानं ॥ महर्षेर्गोत्रसंभूताःकाश्यपस्यतिलाःस्मृताः ॥ तस्मादेषां प्रदानेनमम-
दोषादिनश्यतु ॥ १ ॥ द्रोणपरिमितानेतांस्तिलान्यथादैवतान्वाताग्निष्ठ.य० अस्यकर्मणःसांग-
र्थंब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददेनमम ॥ ततोघृतपात्रदानं ॥ ततोब्राह्मणभोजनसंकल्पः ॥ अस्यकृ-
तस्यकर्मणःसांगतासिध्यर्थंयथाशक्तिब्राह्मणान् तथाचयथासंख्याकांसुवासिनींतथाचकुमारिका-
न् तथाचबटुकान् भोजयिष्ये ॥ तेन श्रीकर्मांगदेवताःप्रीयंतांनमम ॥ कर्मसांगतासि-
ध्यर्थंनानागोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योयथाशक्तिभूयसींदक्षिणांदातुमहमुत्सृजेइतिदत्वा ॥ अथाभिषे-
कः ॥ अथाचार्यादयःसर्वेऋत्विजास्तिष्ठंतउदङ्मुखाःग्रहवेदीसमीपस्थकलशोदकेनदूर्वापंचपल-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

वैः प्राङ्मुखोपविष्टंसकुटुंबयजमानंतद्वामतउपविष्टांपत्नींचाभिषिंचेयुः ॥ गीतवाद्यादिमंगलघोषपुरःसरोभिषेकःकार्यः ॥ ॐ आपोहिष्ठेतितिसृभिः ॥ त्रातारमिंद्रा० ॥ वरुणस्योत्तंभन० ॥ १ ॥ भगप्रणेतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्नः ॥ भगप्रनोजनयगोभिरश्वैर्भगप्रनृवंतःस्याम ॥ १ ॥ इदमापःप्रवहता वद्यंचमलंचयत् ॥ यच्चाभिदुद्रोहान्नृतंयच्चशेपेअभीरुणम् ॥ १ ॥ समुद्रायत्वाव्वातायस्वाहासरिरायत्वाव्वातायस्वाहा अनाधृष्यायत्वाव्वातायस्वाहाप्रतिधृष्यायत्वाव्वातायस्वाहा ॥ अवस्यवेत्वाव्वातायस्वाहाशिमिदायत्वाव्वातायस्वाहा ॥ १ ॥ पुनं तुमेतिनवर्चः ॥ आप्यायस्वसमेतुतेविश्वतःसोमव्वृष्णम् ॥ भवाव्वाजस्यसंगथे ॥ १ ॥ पंचनद्यःसरस्वतीमपियंतिसस्रोतसः ॥ सरस्वतीतुपंचधासोदेशेभवत्सरित् ॥ ॥ १ ॥ शिरोमेश्रीर्यशोमुखंत्विषिःकेशाश्चश्मश्रूणि ॥ राजामेप्राणो अमृतंसम्राट्चक्षुर्व्विराट्श्रोत्रम् ॥ १ ॥ जिह्वामेभद्रंवाङ्महोमन्युःस्वराड्भामः ॥ मोदाःप्रमोदाऽअंगुलीरङ्गानिमित्रम्मेसहः ॥ १ ॥ बाहुमेबलमिंद्रियंहस्तौमेकर्म्मव्वीर्यम् ॥ आत्माक्षत्रमुरोमम ॥ १ ॥ पृष्टिर्म्मे-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

राष्ट्रमुदरमंसौग्रीवाश्चश्रोणी ॥ ऊरूअरत्नीजानुनीविशोमेङ्गानिसर्वतः ॥१॥ नाभिर्मेचित्तं-
विज्ञानंपायुर्मेपचितिर्भसत् ॥ आनन्दनन्दावाण्डौमेभग:सौभाग्यंपसः ॥१॥ जंघाभ्यांपद्भ्यां-
धर्मोस्मिविशिराजाप्रतिष्ठितः ॥ १ ॥ देवस्यत्वा० ॥ सरस्वत्यैवाचोयंतुर्यंत्रियेदधामिबृहस्पते-
ष्ट्वासाम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ ॥ १ ॥ देवस्यत्वा० सरस्वत्यैवाचोयंतुर्यंत्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभि-
षिंचामि ॥ १ ॥ देवस्यत्वा० अश्विनोर्भैषज्येनतेजसेब्रह्मवर्चसायाभिषिंचामिसरस्वत्यैभैषज्ये-
नवीर्यायान्नाद्यायाभिषिंचामींद्रस्येंद्रियेणबलायश्रियैयशसेभिषिंचामि ॥ १ ॥ शिष्टास्तु ॥ पा-
लाशंभवति० ॥ औदुंबरंभवति० ॥ नैग्रोधंभवति० आश्वत्थंभवति० ॥ यद्देवकल्पांजुहोति०
॥ अथसामगायतिइत्येता ब्राह्मणकंडिकाश्चपठंतीति ॥ पौराणोक्तमंत्रास्तु ॥ सुरास्त्वामभि-
षिंचंतुब्रह्माविष्णुमहेश्वराः ॥ वासुदेवोजगन्नाथस्तथासंकर्षणोविभुः ॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्चभवंतु-
विजयायते ॥ १ ॥ आखंडलोग्निर्भगवान्यमोवैनैर्ऋतिस्तथा ॥ वरुण पवनश्चैवधनाध्यक्षस्त-
थाशिवः ॥ २ ॥ ब्रह्मणासहिताःसर्वेदिक्पालाःपांतुतेसदा ॥ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधापुष्टिःश्रद्धा

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

क्रियामतिः ॥ ३ ॥ बुध्धिर्लज्जावपुःशांतिस्तुष्टिः कांतिस्तुमातरः ॥ एतास्त्वामभिषिंचंतु । देवपत्न्यः समागता ॥ ४॥ आदित्यश्चंद्रमाभौमबुधजीवसितार्कजाः ॥ ग्रहास्त्वामभिषिंचतुरा- हुःकेतुश्चतर्पिताः ॥ ५ ॥ देवदानवगंधर्वायक्षराक्षसपन्नगाः ॥ ऋषयोमानवागावोदेव मातर- एवच ॥ ६ ॥ देवपत्न्योद्रुमानागादैत्याश्चाप्सरसांगणाः ॥ अस्त्राणिसर्वशस्त्राणिराजानोवाह- नानिच ॥ ७ ॥ औषधानिचरत्नानिकालस्यावयवाश्चये ॥ सरितः सागराःशैलास्तीर्थानि- जलदानदाः ॥ एतेत्वामभिषिंचंतुसर्वकामार्थसिध्धये ॥ ८ ॥ द्यौःशांतिरन्त० ॥ अमृताभि- षेकोस्तु ॥ एवमभिषेकानंतरंसर्वौषधीरनुलिप्यदंपतीभ्यांशुध्धोदकेनस्नानं(वोभयोः स्नानवस्त्र- त्यागः ॥ आचार्यायदद्यात् ॥ शुक्लमाल्यांबरधराघृतकुंकुमतिलकःसपत्नीकोयजमानसंस्कार्य- श्चस्वासनेउपविश्याचम्यप्राणानायम्य ॥ आज्यावलोकनंकुर्यात् ॥ ॐ रूपंगवोरूपमभ्यागां- तुथोवोऽविश्ववेदाऽविभजतु ॥ ऋतस्यपथाप्रेतचंद्रदक्षिणाऽविस्वःपश्यव्यन्तारिक्षंयतस्वसदस्यैः ॥ इदं सदक्षिणाकंआज्यपात्रंब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ अथोत्तरपूजाविसर्जनं च ॥ ग्रहपीठदेव-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

तानांगंधाद्युपचारैरुत्तरपूजांदक्षिणानमस्कारांतंकृत्वा ॥ क्षमांप्रार्थयेत् ॥ आवहनंनजानामि०
॥ अपराधसहस्राणि० ॥ यस्यस्मृत्यार्चना० ॥ मंत्रहीनंक्रियाहीनं ॥ इतिक्षमापयेत् ॥ ॐ उ-
त्तिष्ठब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ॥ उपप्रयन्तुमरुतःसुदानवइन्द्रप्राशूर्भवासचा ॥ आवाहितदे-
वताःस्वस्थानेगछत ॥ यांतुदेवगणाःसर्वेपूजामादायपार्थिवीम् ॥ इष्टकामसमृध्यर्थंपुनरागम-
नायच ॥ मंत्राभ्यांपुष्पाक्षतप्रक्षेपेणस्थापितदेवतांविसर्जयेत् ॥ ततोपूजोपस्कराणिग्रहपीठंच-
आचार्यायसर्वंदद्यात् ॥ गछगछसुरश्रेष्ठस्वस्थानेपरमेश्वर ॥ यत्रब्रह्मादयोदेवास्तत्रगछहुताशन
॥ १ ॥ ॐ यज्ञयज्ञङ्गछयज्ञपतिङ्गछस्वाँयोनिङ्गछस्वाहा ॥ एषतेयज्ञोयज्ञपतेसहसूक्तवाकःसर्ववी-
रंस्तन्जुषस्वस्वाहा ॥ मयाद्ययथाकालंयथादेशंयथाज्ञानंयथाशक्तियत्कृतंग्रहशांत्याख्यंकर्मतत्का-
लहीनंभक्तिहीनंश्रध्धाहीनंभवतांब्राह्मणानांवचनात् श्रीगणपतिप्रसादात्सर्वंपरिपूर्णमस्त्वितियज-
मानः ॥ अस्तुपरिपूर्णमितिब्राह्मणाः ॥ प्रमादात्कुर्वतांकर्मप्रच्यवेताध्वरेषुच ॥ स्मरणादेवतद्वि-
ष्णोःसंपूर्णंस्यादितिश्रुतिः ॥ यस्यस्मृत्याचनामोक्त्यातपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनंसंपूर्णतांयातिस-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

द्योवं देतमच्युतम् ॥ ॐ विष्णवेनमः ॥ एवंयः कुरुतेशांतिंवासिष्ठोक्तप्रमाणतः ॥ तदनिष्टंतु-
सकलंसद्यएव।विनश्यतीति ॥

॥ इति ग्रहशांतिप्रयोगः ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

||१७७||

|| ग्रहपीठमाहवसिष्ठः || कुंडस्यरुद्रदिग्भागेद्विहस्तंपीठमाचरेत् || किंचिन्मध्योन्नतंकुर्यादुच्चंचद्वादशांगुलं || त्रिंशांगुलंप्रकर्त्तव्यमंतरं कुंडपीठयोः || वस्त्रेणाछादयेत्पीठंतत्प्रमाणेनधीमता || तत्रचाष्टदलंपद्मंकुर्यात् चंद्रैः सिताक्षतैरिति || शास्त्रोक्तविधिनामंत्रीततःपद्मंसमालिखेत् || पद्मक्षेत्रस्यसंत्यज्यद्वादशांशंबहिःसुधीः || तन्मध्यंविभजेद्वृत्तैस्त्रिभिःसमविभागतः || आद्यस्यात्कर्णिकास्थानंकेसराणिद्वितीयकं || तृतीय स्तत्रपत्राणांमुक्तांशेनदलाग्रकं || बाह्यवृत्तांतरालस्यमानंयद्विधिनासुधीः || निधायकेसराग्रेषुपरितोर्ध्वनिशाकरान् || लिखित्वासंधिसंस्थानि तत्र सूत्राणिपातयेत || दलाग्रागांचयन्मानंतन्मानादवृत्तमालिखेत् || तदंतरालतन्मध्यसूत्रस्योभयतः सुधीः || आलिखेद्बाह्यहस्तेनदलाग्राणिसमंततः || दलमूलेषुयुगशःकेसराणिप्रकल्पयेत् || एतत्साधारणंप्रोक्तंपंकजंतंत्रवेदिभिः ततःपत्रांतरालेषु कृतचंद्रार्ध्यादिसंमार्ज्यपत्राष्टकसम्यग्विदध्यात् || तद्बहिश्चतुरस्रंचतुर्द्वारयुतंविधायकर्णिकामारभ्यग्रहाणांमंडलानिकुर्यात् || ग्रहमंडलव्यासश्च || द्वादशांगुलकःसूर्येसोमेतुद्विगुणोभवेत् || त्र्यंगुलस्तुभ-

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

वद्धौमेबुधेतच्चतुरंगुलं ॥ गुरौषडंगुलःप्रोक्तःशुक्रेचैवनवांगुलः ॥ द्व्यंगुलस्तुशनश्चैवराहोश्चद्वाद-
शांगुलः ॥ केतौषडंगुलोव्यासोमंडलेकथितोबुधैः ॥ तदभिप्रायेणमंडलकरणप्रकारमाहुर्गणि-
ताभिज्ञाः ॥ चंद्राद्रिषट्संप्रमितांगुलादिव्यासार्ध्वसूत्रेणतुमंडलंयत् ॥ तद्वादशैवांगुलमर्कहर्म्यं-
पद्मांतरेक्षेफलेनविद्यात् ॥ सोमंतथाग्नेयदलेयुगाद्रिनेत्रैश्चतुःकोणयुतंजिनांशं ॥ भौमस्ययुग्मां-
गुलमूलभूस्याद्रामांगुलंमध्यगुणंत्रिकोणं ॥ २ ॥ अथेशगतस्यबु...य ॥ वेदांगुलैर्मध्यभवंच-
सूत्रम् ॥ तिर्यग्द्वयंप्रागपरंत्रिभूमिमानांत्रिकोणद्वयतोत्रबाणं ॥ ३ ॥ गुणांगुलैरायतगत्रनेत्र-
विस्तारितंपट्टिशमुत्तरत्र ॥ भृगोःपुरस्ताच्चतुरंशदीर्घंत्रिविस्तृतपार्श्वयुजेचमित्तिः॥ युग्मांशकेत-
त्पुरतस्त्रिकोणंनवांगुलंक्षेत्रफलंप्रशस्तं ॥ ४ ॥ शनेर्धनुःश्चंद्रहयैकजीवंपुर्णाद्रिवेदाब्धिशरेणयुक्तं-
युग्मांगुलंपश्चिमदिग्मुखंतत् ॥ युग्माद्रिविस्तारदलेनवृत्तंराहोश्चतत्वांगुलमाखुरतत् ॥ नवांश-
दीर्घंशररामबाणततंध्वजाकारगृहंध्रुवाग्रं ॥ जिनांगुलैरर्धयुतैःफलेनवायुर्दलेकेतुगृहंत्रिकोणं इ-
ति नवग्रहाणांमंडलरचनाप्रकारः ॥ ग्रहाणांमंडललेखनेप्रमाणनियममाहर्हानेकृतेभवेध्यानिर्व्या-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

घिशोकस्तथाधिके ॥ प्रमाणैस्तुभवेत्सिध्धिस्तस्मात्प्रमाणमालिखेत् ॥ देवतापूजनेप्राचीनियम-
माह ॥ शुक्रार्कौप्राङ्मुखौज्ञेयौगुरुसौम्यावुदङ्मुखौप्रत्यङ्मुखै शनिसोमौशेषादक्षिणतोमुखाः
॥ एतेवैदिङ्मुखाःखेटाःस्वस्वलोकेनिवासिनः यजमानात्माभिमुखाःसर्वेतिष्ठंतिसांप्रतं पूज्यपू-
जकयोर्मध्येमध्येप्राचीप्राकल्पयेत् ॥ तत्रसन्मुखसंस्थाप्यइतिन्यायोयथातथं ॥ देवतापूजनेप्रा-
चीमध्येपूजकपूज्ययोः ॥ इंद्रादयःस्वदिक्ष्वेवपूजनीयादिगीश्वराः ॥ धर्मादिपूजनेप्राचीतथैवा-
वरणार्चने ॥ पूजकस्यपुरःकल्प्याशक्रादिषुयथाक्रमं ॥ अधिदेवतादीनांस्थानानि ॥ ग्रहस्य-
दक्षिणेभागेस्थापयेदधिदेवताः ॥ ग्रहस्यवामभागेतुस्थाप्याप्रत्यधिदेवताः ॥ इति ॥

॥ पंचलोकपालस्थापनविधिः ॥ पीठा दुत्तरतस्थाप्या लोकपालन्न्यसिताक्षतैः इति प्र-
योग पारिजाते वशिष्ठ संहितायांतुशनैःपश्चीमतः स्थाप्य वीनायकमथार्चयेत् तस्य दक्षिण-
तो दुर्गांजातवेदस्यइत्यृचावायुंचदक्षीणेकोणे शीशुमंत्रेणचार्चयेत् दक्षिणेतस्यचाकाशं जावांङ्क-
शतीचार्चयेतअश्वीनौदक्षिणेतस्यकार्यापूजाविशेषतः उत्पलपरीमले ततोविनायकंदुर्गांवायुमंब-

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

रम श्वीनौग्रहमंडलदुत्तरतःस्थाप्यावै सीताक्षतैः इतीश्रयो ।पारिजातेवासष्ठियां यांतुपंचलोकपाला-
नांस्थापनप्रकारमाहशनीश्वरातकेतोःपूर्वस्यगुरोः सूर्यस्य पश्चिमेएतस्मिन्नंतराले पंचलोकपा-
लानांस्थापनंमध्येगणेशः गणेशःपुर्वेअश्वीनौगगेशपाश्चिमे अंतरीक्षंगणेशउत्तरस्यदुर्गा गणेश
वायव्यांवादक्षीणादिशींवायुं ॥ इति ॥

CC-0. Arthur Avalon Atal Bihari Ghosh Coll. at Sri Aurobindo Library, Pondicherry